सन्मति साहित्य रत्नमाला का १०८ वां रत्न

चन्दन की सौरभ

संपादिका
प्रसिद्धवक्ता, श्री पुष्करमुनि जी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी
विदुषी महासती श्री शीलकुंवर जी की सुशिष्या
साध्वी चन्दनबाला, जैन सिद्धांताचार्य

प्रकाशक
सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा—२

२—कान बजावे बांसुरी, गोपी नाचे ताली छंद के।
पाए नेवर रुण झणे, हस हस रामत रमे आणंद के ॥
हूं बलिहारी नेम की ॥

३—बिच मेलिया 'नेम' ने, दोली फिर रही सगली नार के।
नंदन वन में आणंद सूं, कोयल रा तिहां हुवे टहुकार के ॥
हूं बलिहारी नेम की

पुस्तक
चन्दन की सौरभ

संपादिका
साध्वी चन्दनबाला, जैन सिद्धान्ताचार्य

आवृत्ति
प्रथम : मार्च १९६९

प्रकाशक
सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामंडी, आगरा-२

मूल्य
चार रुपए पचास पैसे

मुद्रक
रामनारायन मेड़तवाल
श्री विष्णु प्रिन्टिङ्ग प्रेस
राजा की मंडी, आगरा-२

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तक 'चंदन की सौरभ' प्राचीन जैनचरित्र साहित्य की एक महत्वपूर्ण संकलना है।

राजस्थानी भाषा के चरित्र साहित्य की अपनी एक गौरवपूर्ण परंपरा रही है, उसका स्वारस्य और माधुर्य आज भी जीवित है, उसकी प्रेरकता और श्रेष्ठता का मूल्य वर्तमान युग में भी किसी प्रकार कम नहीं हुआ है। प्रस्तुत संकलन राजस्थानी भाषा के प्राचीन कवि-मनीषियों की कृतियों का सरस संकलन है, जो भाषा, भाव और उपादेयता की दृष्टि से एक अनूठापन लिए हुए है।

सन्मति ज्ञानपीठ, जहाँ साहित्य के नवनिर्माण की दिशा में अपनी नवीन उपलब्धियों के साथ अग्रसर हो रहा है, वहाँ प्राचीन साहित्य के संपादन, अनुसंधान व प्रकाशन की दिशा में भी सतत प्रयत्नशील है।

प्राचीन कृतियों का अनुसंधान एवं वर्गीकरण करके प्रस्तुत करने का यह श्रम-साध्य कार्य महासती श्री शीलकुंवर जी की शिष्या साध्वी चंदनबालाजी ने किया है। इस संपादन में उनकी साहित्यिक सुरुचि एवं ऐतिहासिक कृतियों के प्रति अनुशीलनात्मक अनुराग परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति हमारे जिज्ञासु पाठकों को प्रिय लगेगी, विशेषकर उनको, जिनकी कि मातृभाषा राजस्थानी है और जिन्हें प्राचीन रास एवं चौढालियों से विशेष लगाव है। इसके प्रकाशन में राजस्थान के कुछ विशेष महानुभावों ने अर्थ सहयोग करके अपनी उदारता का परिचय दिया है, जिन्हें हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। पुस्तककी पांडुलिपि कहीं-कहीं अस्पष्ट व अशुद्ध होने के कारण विदुषी महासती श्री सुमतिकुंवर जी ने अपना बहुमूल्य समय देकर शुद्ध करने की कृपा की उसके लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं। तथा पुस्तक को कलात्मक एवं शुद्ध रूप में मुद्रित कराने में हमारे कार्यकर्ता श्रीचन्द सुराना 'सरस' ने मनोयोग पूर्वक जो श्रम किया है उसके लिए विशेष प्रसन्नता के साथ ही धन्यवाद !

आशा है यह प्रका—न पाठकों की सुरुचि को परिपुष्ट करेगा।

मंत्री
सन्मति ज्ञानपीठ

अर्थसहयोगी

१९००) शाह हस्तीमल जी, जेठमल जी जिनाणी, गढ़सिवाना

५००) शाह सुखराज जी छोगालाल जी जिनाणी, गढ़सिवाना

५००) शाह ऋखबचन्द जी पारसमल जी जिनाणी,
सुपुत्र श्री मिश्रीलाल जी जिनाणी, गढ़सिवाना

५००) शाह धींगडमल जी मुलतानमल जी कानुगा, गढ़सिवाना

४००) श्रीमती प्यारीवाई के सुपुत्र वादरमल जी अमीचंद जी
जवेरीलाल जी वागरेचा, गढ़सिवाना

चंदन की सौरभ के प्रकाशन में उपरोक्त महानुभावों ने
अर्थ सहयोग दिया, तदर्थ हार्दिक धन्यवाद !

श्री पुरुषोत्तमलाल जी मेनारिया ने राजस्थानी साहित्य को सात भागों में विभक्त किया है[1] :—

१ जैन-साहित्य
२ डिंगल-साहित्य
३ पिंगल-साहित्य
४ पौराणिक-साहित्य
५ सन्त-साहित्य
६ लोक-साहित्य
७ आधुनिक-साहित्य

श्री नरोत्तमदास स्वामी ने शैली की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य को तीन भागों में विभक्त किया है[2] :—

१ जैन-शैली
२ चारणी-शैली
३ लौकिक शैली

डाक्टर हीरालाल माहेश्वरी ने राजस्थानी साहित्य की चार शैलियाँ मानी हैं[3] :—

१ जैन-शैली
२ चारण-शैली
३ सन्त-शैली
४ लौकिक-शैली

राजस्थानी जैन साहित्य भी अनेक विभागों में है। विज्ञों ने उसका वर्गीकरण भी इस प्रकार किया है[4] (१) कथाकाव्य अथवा चरितकाव्य, (२) ऋतु-काव्य, (३) उत्सवकाव्य (४) नीतिकाव्य, (५) स्तवन, (६) ढाल, (७) टब्बा, बालावबोध, (८) ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, आयुर्वेद, रीति ग्रन्थ प्रभृति।

---

१ मुनि हजारीमल स्मृति ग्रन्थ पृ० ७८२
२. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय
३. राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० ५
४. मरुधर केसरी अभिनन्दन ग्रन्थ

कथा काव्य के अन्तर्गत आदर्श व्यक्तियों के पवित्र चरित्र आते हैं। चरित्र के माध्यम से दान, शील, तप और भावना आदि सद्‌गुणों को ग्रहण करने पर बल दिया जाता है, इन गुणों को ग्रहण करने से जीवन कितना पवित्र, निर्मल बनता है, यह चरित्र के पात्र द्वारा प्रकट किया जाता है और क्रोध, मान, माया और लोभ आदि दुर्गुणों से जीवन का कितना अधः पतन होता है, यह बताया जाता है। कहा भी है :—

दान, शील तप भावना, चार चरित कहेस।
क्रोध मान माया वली, लोभादिक पभणेस।[1]

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन जैन मुनियों द्वारा रचित विविध चरित्रों का संकलन है। ये चरित्र भाव-भाषा और शैली की दृष्टि से प्राचीन हैं। इनमें सिनेमा की राग-रागिणियों की तरह चमक-दमक का अभाव है, तथापि जहाँ हृदय का प्रश्न है, भावनाओं का सवाल है, वहाँ प्राचीन होते हुए भी चिरनवीन हैं। आज भी इनमें हृदय को झकझोरने की अद्‌भुत शक्ति है। जब पाठक तन्मय होकर इन्हें गाता है, तो श्रोता झूम उठते हैं। उनमें वैराग्य की भव्य भावना अंगड़ाइयाँ लेने लगती हैं।

मुझे स्मरण है—इन चरित्रों को एक साथ प्रकाश में लाने की इच्छा मेरी दाद गुरुणी जी परमविदुषी शान्तमूर्त्ति श्री धूलकुंवर जी म०, एवं स्थविर-पद विभूषित स्व० माता जी श्री शंभूकुंवर जी महाराज के अन्तर्मानस में उत्पन्न हुई थी, उन्होंने संग्रह भी किया था, पर किन्हीं कारणों से वे उन्हें मूर्त रूप प्रदान नहीं कर सकीं।

सन् १९६८ का वर्षावास परम श्रद्धेय गुरुदेव राजस्थानकेसरी प्रसिद्ध-वक्ता श्री पुष्कर मुनि जी महाराज की आज्ञा से श्रद्धेया सद्‌गुरुणी जी शीत-कुंवर जी महाराज ठा० ४ ने गढ़सिवाना किया। गुरुणी जी महाराज ने एक दिन वार्तालाप के प्रसंग में मुझे कहा कि स्वर्गीया सद्‌गुरुणी जी महाराज व माता जी म० की इच्छा को पूर्ण करना है। गुरुणी जी महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर मैं चरित्रों के संकलन करने में लग गई। सद्‌गुरुणी जी महाराज का दिशादर्शन व सेवामूर्ति मातृस्वरूपा सायरकुंवर जी महाराज की प्रबल प्रेरणा से मैं प्रस्तुत कार्य सम्पन्न कर सकी। यदि सद्‌गुरुणी जी महाराज व

---

१. अमरकुमार की चौपाई

सायर कुंवर जी महाराज की अपार कृपा दृष्टि नहीं होती तो यह कार्य इतना शीघ्र पूर्ण नहीं हो सकता था। कितने ही चरित्र गुरुणी जी महाराज व सायर कुंवर जी महाराज से सुनकर लिखे हैं और कितने ही चरित्र प्राचीन पन्नों के आधार से लिखे हैं। अतः इनमें कहीं-कहीं पर भाषा आदि की दृष्टि से स्खलनाएं हैं परन्तु शुद्ध प्रति के अभाव में मन से परिवर्तन करना योग्य नहीं समझा गया अतः उन्हें उसी प्रकार रहने दिया गया है।

पाण्डुलिपि तैयार करने के पश्चात् श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी महाराज ने समयाभाव होने पर भी आत्मीय भाव से प्रारंभ से प्रान्त तक अवलोकन कर अनेक स्थलों पर परिमार्जन किया, अतः सद्गुरुदेव का मैं हृदय से आभार मानती हूँ। साथ ही मेरे ज्येष्ठ गुरु भ्राता पं० श्री हीरामुनि जी महाराज के प्रबल प्रयास से इसका प्रकाशन सुप्रसिद्ध साहित्य-संस्थान सन्मति ज्ञानपीठ से हो रहा है अतः मैं पं० श्री हीरामुनि जी महाराज की कृपा-दृष्टि को भी भूल नहीं सकती। मेरे स्नेह भरे आग्रह को सम्मान देकर श्री देवेन्द्र मुनि जी, शास्त्री, साहित्यरत्न ने ग्रन्थ पर मननीय मूल्यांकन लिखकर जो मुझे अनुगृहीत किया है, उसे व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द मेरे पास नहीं है।

अन्तमें मैं उन श्रद्धालु श्रावकों की अपार गुरु भक्तिको भी विस्मृत नहीं कर सकती, जिनके उदार अर्थ सहयोग से ही प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और महासतीजी श्री सौभाग्य कुंवर जी, श्री लहर कुंवरजी, सुन्दर कुंवरजी, मोहन कुंवर जी, दया कुंवरजी, क्षमा कुंवर जी, चेलना जी तथा प्रताप कुंवर जी व ऐजाजी प्रभृति सतीमण्डल का स्नेहपूर्ण सद्व्यवहार भी सदा स्मृति पटल पर चमकता रहेगा। उन सभी का मैं हृदय से आभार प्रदर्शित करती हूँ जिनका ज्ञात व अज्ञात रूप से मुझे सहयोग मिला है।

श्री व० स्थानकवासी जैनस्थानक
गढ़सिवाना
कातिकपूर्णिमा

साध्वी चन्दनबाला

चन्दन की सौरभ : एक मूल्यांकन

भारतीय साहित्यरूपी सुमनवाटिका को सजाने, संवारने का जितना कार्य जैन मनीषियों ने किया है, संभव है, उतना अन्य किसी सम्प्रदाय विशेष के विज्ञों ने नहीं किया। उन्होंने ज्ञान विज्ञान, धर्म और दर्शन, साहित्य और कला के क्षेत्र में जो रंग-विरंगे चटकीले फूल खिलाये हैं, वे अपने असीम सौन्दर्य और सौरभ से जन-जन के मन को आकर्षित करते रहे हैं। जैन साहित्य जितना प्रचुर है, उतना ही प्राचीन भी। जितना परिमार्जित है उतना ही विषय-वैविध्यपूर्ण भी, और जितना प्रौढ़ है उतना ही विविध-शैली सम्पन्न भी। इसमें तनिकमात्र भी संशय नहीं कि जब कभी भी निष्पक्ष दृष्टि से सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का इतिहास लिखा जाएगा उसका मूल आधार जैन साहित्य ही होगा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे आलोचक साधन सामग्री के अभाव में यदि प्रस्तुत-साहित्य को 'धार्मिक नोट्स' मात्र कहकर उपेक्षित करते हैं तो वह साहित्य की कमी नहीं, पर अन्वेषणा की ही कमी कही जाएगी, किन्तु वर्तमान अन्वेषणा के तथ्यों के आधार से यह मानना ही पड़ेगा कि भारतीय चिन्तन के क्षेत्र में जैन साहित्य का स्थान विशिष्ट है, जितना गौरव शुद्ध साहित्य का है उतना ही महत्व धर्म सम्प्रदाय के पास सुरक्षित चरित्र-साहित्य राशि का है।

जैन साहित्यकार आध्यात्मिक परम्परा के सृजक रहे हैं। आत्मलक्ष्यी संस्कृति में गहरी आस्था रखने के बावजूद भी वे देश, काल एवं तज्जन्य परिस्थितियों के प्रति अनपेक्ष नहीं रहे हैं, उनकी ऐतिहासिक दृष्टि हमेशा खुली रही है। उनका अध्यात्मवाद वैयक्तिक होकर के भी जन-जन के कल्याण की मंगलमय भावना से ओत-प्रोत रहा है। यही कारण है कि उनके द्वारा सम्प्रदाय मूलक साहित्य का निर्माण करने पर भी उसमें सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथ्य इतने अधिक हैं कि वैज्ञानिक पद्धति से उनका सर्वेक्षण किया जाए तो भारतीय इतिहास के कई तिमिराच्छन्न पक्ष आलोकित हो सकेंगे।

जैन लेखकों ने मौलिक साहित्य के निर्माण के साथ ही विभिन्न ग्रन्थों पर सारगर्भित एवं पांडित्यपूर्ण टीकाएं लिखकर साहित्य की अविस्मरणीय सेवा व संरक्षा की है, वह कभी भी विस्मृत नहीं की जा सकती। समीक्षकों ने जैन साहित्य को पिष्टपेषण से पूर्ण माना है, यह सत्य है कि औपदेशिक वृत्ति के कारण जैन साहित्य में विषयान्तर से परम्परागत बातों का विवेचन-विश्लेषण हुआ है, किन्तु सम्पूर्ण जैन साहित्य में पिष्टपेषण नहीं है। और जो पिष्ट-पेषण हुआ है वह केवल लोकपक्ष की दृष्टि से ही नहीं, अपितु भाषा-शास्त्र की दृष्टि से भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। जैन लेखकों ने भारतीय चिंतन के नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, मान्यताओं को जन-भाषा की समुचित शैली में ढालकर, पिरोकर, संवारकर राष्ट्र के आध्यात्मिक स्तर को उन्नत, समुन्नत किया। उन्होंने साहित्य परम्परा को संस्कृत के कूप-जल से निकालकर भाषा के बहते प्रवाह में अवगाहन कराया, अभिव्यक्ति के नये-नये उन्मेष द्योतित किये।

विभिन्न जैन परम्परा के प्रकृष्टप्रतिभासम्पन्न मुनिवरों ने जो साहित्य की अपूर्व सेवा की है, उसका संपूर्ण लेखा-जोखा लेने का न तो यहाँ अवसर ही है और न अवकाश ही, यहाँ तो प्रस्तुत कृति के सम्बन्ध में ही संक्षेप में कुछ विचार अभिव्यक्त किये जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में एक ही कवि की रचनाओं का संग्रह नहीं किया गया है, अपितु विभिन्न परम्परा के मुनिवरों की रचनाओं का सुन्दर संकलन-आकलन किया गया है। प्रत्येक चरित्र में त्याग वैराग्य का पयोधि उछालें मार रहा है। प्रत्येक चरित्र आत्मा को असत् से सत् की ओर, तमस् से ज्योति की ओर, एवं मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने की अपूर्व क्षमता रखता है।

भगवान् नेमिनाथ के चरित्र में राजीमती के मुंह से रथनेमि को फटकारते हुए साध्वाचार का निरूपण कर रहे हैं :—

अमृत भोजन छोड़ने हो, मुनिवर !
लुसिया को कुण खाय।
देवलोक रा सुख देखने हो मुनिवर !
नरक न आवे दाय ॥
खीर खांड भोजन करी हो मुनिवर,
वमियो कर्दमकीच ।

वमिया री वांछा करे हो, मुनिवर
काग कुत्ता के नीच ॥

राजीमती के हृदयग्राही उपदेश से रथनेमि पुनः साधना के मार्ग में स्थिर हो जाते हैं। उनकी हृत्तंत्री के तार झनझना उठते हैं कि अयि राजमती! तूने मुझे नरक में गिरते हुए को बचालिया, धन्य है तुझे—

नरक पड़ंता राखियो हे राजुल,
इम बोल्यो रहनेम।
मुझने थिरता कर दियो हे राजुल,
वचन-अंकुश गज जेम ॥

महारानी देवकी के चरित्राङ्कन में कवि ने वात्सल्य रस के संयोग के चित्र अत्यन्त तन्मयता के साथ अंकित किये है। महारानी देवकी के छहों पुत्र देवता के उपक्रम से मृत घोषित हो जाते हैं। श्री कृष्ण का लालन-पालन भी वह नहीं कर पाई। जब उसे भगवान् नेमिनाथ के द्वारा यह सूचना मिलती है कि ये छहों मुनि तुम्हारे ही पुत्र हैं, तो उसका मातृत्व बरसाती नदी की तरह उमड़ पड़ता है। वह उन छहों मुनिवरों के पास जाती है। देखिए कवि श्री जयमल्ल जी के शब्दों में संयोग वात्सल्य का सफल चित्र :

तड़ाक से तूटी कस कंचू तणी रे,
थण रे तो छूटी दूधाधार रे!
हिवड़ा माहे हर्ष मावे नहीं रे
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ॥
रोम रोम विकस्या, तन-मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आंसू धार रे
बिलिया तो बांहा मांहे मावे नहीं रे,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हार रे ॥

प्रस्तुत चरित्र में वियोग वात्सल्य का वर्णन भी कम सुन्दर नहीं है। माता देवकी के हृदय की थाह वही माता पा सकती है जिसने सात पुत्रों को पैदा करके भी मातृत्व का सुख नहीं लिया। उसके हृदय में शल्य की तरह यह बात चुभ रही है कि उसने अपने प्यारे लालों को हाथ पकड़कर चलाया नहीं, रोते बिलखते हुओं को बहलाया नहीं। वह अपने प्यारे पुत्र श्री कृष्ण से कहती है :—

हूं तुज आगल सूं कहूं कन्हैया,
बीतक दुख री बात रे, गिरधारी लाल।
दुखणी जग में छे घणी कन्हैया,
पिण थणी दुखणी थारी मात रे....
जाया मैं तुम सारिखा, कन्हैया,
एकण नाले सात रे।
एकण ने हुलरायो नहीं, कन्हैया,
गोद न खिलायो खण मात रे॥
रोवतो मैं राख्यो नहीं, कन्हैया,
पालणिये पोढाय रे।
हालरियो देवा तणो, कन्हैया,
म्हारे हूंस रही मन मांय रे॥
ओडणियो पहराव्यो नहीं, कन्हैया,
टोपी न दीधी माथ रे।
काजल पिण सार्यो नहीं, कन्हैया,
फदिया न दीधा हाथ रे॥

सच तो यह है महाकवि सूरदास जो वात्सल्य रस के सम्राट् माने जाते हैं वे भी इस प्रकार का चित्र प्रस्तुत नहीं कर सके हैं।

भगवान् नेमिनाथ के पावन प्रवचन को श्रवण कर गजसुकुमाल संयम के कंटकाकीर्ण महामार्ग पर बढ़ना चाहते हैं। माता देवकी ने ज्यों ही यह बात सुनी त्योंही वह मूच्छित होकर जमीन पर ढुलक पडती है :—

वचन अपूरब एह, पुत्र ना सांभली-री माई।
घणी मूर्छा-गति खाय, धमके धरणी ढली॥
खलकी हाथा री चूड, माथे रा केश बीखर्‌या री माई।
ओढण हुवो दूर, आंखें आंसू झर्‌या॥

मेघकुमार के चरित्र में माता धारणी को मेघकुमार कहते हैं कि मां भौतिक पदार्थ के सुख सच्चे सुख नहीं है, ये आकाश में उमड़-घुमड़ कर आते हुए बादलों की तरह क्षणिक हैं। कवि कहता है :—

संसार ना सुख सहु काचा,
इणलोक-अर्थी जाणे साचा।

भोग विषय में रह्या कलीजे,
मैं तो जाणी ए काची माया,
विललावे जिम बादल छाया,
ऐसी जाणी कहो कुण रीझे ॥

इस प्रकार चरित-कथाओं में कतिपय स्थल अत्यन्त मार्मिक बन पड़े हैं। भृगुपुरोहित के चरित्र में जब भृगुपुरोहित अपनी विराट् सम्पत्ति का परित्याग कर श्रमण बनने के लिए प्रस्तुत होता है तब राजा उसकी सम्पत्ति को लेने के लिए उद्यत होता है। इस प्रसंग पर महारानी कमलावती का उद्बोधन नितान्त मर्मस्पर्शी है। वह कहती है—राजन्! एक ब्राह्मण के द्वारा परित्यक्त सम्पत्ति को आप ग्रहण न करें। राजा का भाग्य बड़ा होता है। उच्छिष्ट आहार की इच्छा तो कौवा और कुत्ता ही करता है, तुम्हें प्रस्तुत वृत्ति शोभा नहीं देती है, यह कार्य लज्जास्पद है। सारे विश्व की विभूति भी प्राप्त हो जाय तो भी तृष्णा शान्त नहीं हो सकती। एक दिन इस विराट सम्पत्ति को छोड़कर एकाकी ही प्रस्थित होना पड़ेगा अतः वीतराग धर्म को ग्रहण करो, वही त्राण और कल्याण का मार्ग है। कवि की काव्यमयी वाणी सुनिए :—

सांभल महाराजा, ब्राह्मण छांड़ी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो।
वांछा कुण करे,
करे छे कुतरो ने काग ॥
काग वे कुत्ता सरीखा
किम हुवो, नहीं प्रसंसवा जोग ॥
भृगुपुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
थे जाणो आसी मारे भोग।
एकदिन मरणो हो राजाजी, यदा तदा,
छोड़ो नी काम विशेष ॥
बीजो तो तारण जग में को नहीं,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥

रानी राजा से आगे चलकर कहती है कि एक तोते को रत्न जड़ित पिंजड़े में भले ही बन्द कर दिया जाय, पर वह उसे बंधन मानता है, वैसे ही राजमहलों को मैं बंधन मानती हूँ। यहाँ मुझे तनिक मात्र भी आनन्द की उपलब्धि नहीं हो रही है, अतः मैं संयम को ग्रहण करना चाहती हूँ। वह राजा से नम्र निवेदन करती है :—

'रत्न जडित हो राजा जी पिंजरो,
सुवो तो जाणे है फंद।
इसडी पण हूं थांरा राज में,
रति न पाऊं आणंद॥
स्नेहरूपिया तांतां तोड़ने,
और बंधन सूं रह सूं दूर।
विरक्त थई ने संजम मैं ग्रहूँ,
थे भी पण होय जाओ सूर॥

मुनि का वेश धारण करके भी यदि मन में श्रमणत्व नहीं है, तो वह वेश भी कलंकरूप है। आषाढ़भूतिअनगार के चरित्र में आभूषणों से लदी हुई साध्वी को निहार कर आचार्य कहते हैं :—

सुण महासती, या लखणांसु जैन धर्म अति लाजे।
गुण नहीं रती, लोकां माहे निर्गन्थणी यूं वाजे॥
थूं चाले छे चाला करती,
शुद्ध ईर्यासमिति नहीं धरती।
लोक लाज सुं नहीं डरती,
थूं लावे गोचरी झरभरती॥

कपटसहित साधना—साधना नहीं, अपितु विराधना है। वह आत्म-वंचना है। अनन्तकाल से आत्मा इस प्रकार साधना करता रहा, किन्तु जीवनोत्थान नहीं हुआ, अतः कवि कह रहा है :—

कपट क्रिया से नहीं तरिया,
वाज आचारी पेट भरिया।
इसा सांग तो वहु करिया,
महिमा कारण करि माया॥

भोला नर ने भरमाया,
स्यूं कपट धरम प्रभु फरमाया।

इस प्रकार चन्दन की सौरभ की सभी रचनाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं प्रत्येक पक्ष को समुन्नत बनाने की पुनीत प्रेरणा प्रदान करती हैं। काव्य के भाव पक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टियों से यह संग्रह मूल्यवान है। राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र में चन्दन की सौरभ अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगी, ऐसी आशा है।

मैं परम विदुषी महासती श्री शीलकुंवर जी की सुशिष्या महासती चन्दन-बाला जी को हृदय से धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने प्राचीन जैन कवियों के चरित्रों का सुन्दर संकलन किया है। संकलन सुन्दर है, बालक से लेकर वृद्धों तक के लिए उपयोगी है। सम्पादन, आकलन अपने आप में एक कला है, आनेवाला युग प्रस्तुत सम्पादन का और महासती चन्दनबाला जी की प्राचीन चरित्रों के प्रति गहरी निष्ठा का समादर करेगा। आभ्यन्तर सुन्दरता के साथ पुस्तक की बाह्य सुन्दरता भी चित्ताकर्षक है। मैं आशा करता हूँ महासती चन्दनबाला जी भविष्य में मौलिक साहित्य का निर्माण कर जैन साहित्य की श्रीवृद्धि कर यशस्वी बनें।

जैन स्थानक, रविवार पेठ
नासिक सिटी, फरवरी १९६९

—देवेन्द्रमुनि, शास्त्री
साहित्यरत्न

रानी राजा से आगे चलकर कहती है कि एक तोते को रत्न जड़ित पिंजड़े में भले ही बन्द कर दिया जाय, पर वह उसे बंधन मानता है, वैसे ही राजमहलों को मैं बंधन मानती हूँ। यहाँ मुझे तनिक मात्र भी आनन्द की उपलब्धि नहीं हो रही है, अतः मैं संयम को ग्रहण करना चाहती हूँ। वह राजा से नम्र निवेदन करती है :—

'रत्न जडित हो राजा जी पिंजरो,
सुवो तो जाणे है फंद।
इसडी परण हूं थांरा राज में,
रति न पाऊं आणंद ॥
स्नेहरूपिया तांतां तोड़ने,
और बंधन सूं रह सूं दूर।
विरक्त थई ने संजम मैं ग्रहूँ,
थे भी परण होय जाओ सूर ॥

मुनि का वेश धारण करके भी यदि मन में श्रमणत्व नहीं है, तो वह वेश भी कलंकरूप है। आषाढ़भूतिअनगार के चरित्र में आभूषणों से लदी हुई साध्वी को निहार कर आचार्य कहते हैं :—

सुरण महासती, या लखरणांसु जैन धर्म अति लाजे।
गुरण नहीं रती, लोकां माहे निर्गन्थरणी यूं वाजे ॥
थूं चाले छे चाला करती,
शुद्ध ईर्यासमिति नहीं धरती।
लोक लाज सुं नहीं डरती,
थूं लावे गोचरी झरझरती ॥

कपटसहित साधना—साधना नहीं, अपितु विराधना है। वह आत्म-वंचना है। अनन्तकाल से आत्मा इस प्रकार साधना करता रहा, किन्तु जीवनोत्थान नहीं हुआ, अतः कवि कह रहा है :—

कपट क्रिया से नहीं तरिया,
वाज आचारी पेट भरिया।
इसा सांग तो बहु करिया,
महिमा कारण करि माया ॥

भोला नर ने भरमाया,
स्यूं कपट धरम प्रभु फरमाया।

इस प्रकार चन्दन की सौरभ की सभी रचनाएं जीवन के अनेक अंग एवं प्रत्येक पक्ष को समुन्नत बनाने की पुनीत प्रेरणा प्रदान करती है। कविता के भाव पक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टियों से यह संग्रह सुन्दरतम है। स्थानकवासी साहित्य के क्षेत्र में चन्दन की सौरभ अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगी, ऐसी आशा है।

मैं परम विदुषी महासती श्री शीलकुंवर जी की सुशिष्या महासती श्री चन्दनबाला जी को हृदय से धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने अनेक जैन कवियों के चरित्रों का सुन्दर संकलन किया है। संकलन सुन्दर है, बालक से लेकर वृद्धों तक के लिए उपयोगी है। सम्पादन, संकलन करना भी एक कला है, आनेवाला युग प्रस्तुत सम्पादन की ओर महासती चन्दनबाला जी की प्राचीन चरित्रों के प्रति गहरी निष्ठा का समादर करेगा। अन्तरंग सुन्दरता के साथ पुस्तक की बाह्य सुन्दरता भी चित्ताकर्षक है। मैं आशा करता हूँ महासती चन्दनबाला जी भविष्य में मौलिक साहित्य का निर्माण कर जैन साहित्य की श्रीवृद्धि कर यशस्वी बनें।

जैन स्थानक, रविवार पेठ
नासिक सिटी, फरवरी १९६१

—देवेन्द्रमुनि, शास्त्री
साहित्यरत्न

चंदन की सौरभ

विषयानुक्रम

ढाल १ राग— करो दान शील ने तप

१— 'शंख' राजा ने 'यशोमती' रानी,
जिण साधां ने वैरायो दाखांरो पानी ।
हुवा नेम कंवर राजुल नारो,
सुध–दान थकी खेवो पारो ।।

२— 'अपराजित' थी चव आया,
ज्यांरी दिप दिप दीप रही काया ।
जस फेल्यो सहू संसारो,
सुध दान थकी खेवो पारो ।।

ढाल २ राग— चन्द्रायण

१—नगर 'शोरीपुर' राजियो रे, 'समुद्रविजय' राय धीरो ।
तस नंदन श्री 'नेमजी' रे, सांवल वरण शरीरो ।।
सांवल वर्ण शरीर विराजे,
एक सहस्र आठ लक्षण छाजे ।
दिन दिन अधिकी ज्योत विराजे,
दर्शन दीठां दारिद्रय भाजे ।
श्री नेमीश्वरजी हो ।।

२—एक दिवस श्री नेमजी रे, आया आयुधशालो ।
पंचायन शंख पूरियो रे, चाढ्यो धनुष करालो ।।
चाढ्यो धनुष कियो टंकारो,
शब्द सुण्यो श्री 'कृष्ण' मुरारो ।
ए नर उठ्यो कोई अवतारो,
आय ने जोवे तो नेमकुमारो ।। जी० ।।

ढाल ३ राग—आवे काल लपेटा लेतो रे

१— बाबा मल अखारे चालो रे,
मांने थांरो बल देखालो रे।
अखाड़े मंड्या दोनूं भाई रे,
घणा देखें लोग लुगाई रे॥

२— देखो यां में कुण जीते कुण हारे रे,
गोप्यां मन एम विचारे रे।
'हरि' तब कर ऊँचो कीधो रे,
'नेमजी' पाछो दीधो रे॥

ढाल ४ राग—चंद्रायण

१— तब वलतो 'हरि' झुंवियो रे सार्यो 'नेम' नो हाथो।
हिंडोला जिम हींचियो रे, गोप्यां तणो इज नाथो॥
सोले सहस्र गोप्यां रो स्वामी,
खांचे घणी आमी ने सामी।
'नेम' री बाँह नमावण-कामी,
तो पिण 'नेम' री बांह न नामी। जी०॥

२— बल देखी श्री 'नेम' नो रे, 'कृष्ण' थया दिलगीरो।
बावीसमां जिनजी अछे रे, इण सूं नहीं विगारो॥
इण सूं नही विगाड़ रे भाई,
मन चिंता म करो कांई।
तो पिण पूरी समता न आई,
एक नारी इणां ने दो परणाई॥ जी०॥

ढाल ५ राग—हूँ बलिहारी यादवां

१—'हरि' हरखी ने चालियो, साथे गोप्यां रो वृन्द के।
नंदन वन विच परवर्या, 'नेम' सहित खेले गोविंद के॥
हूँ बलिहारी यादवां॥

ढाल १० **राग—चंद्रायण**

१— पटहस्ती श्री कृष्ण नो रे, आप हुवा असवारो।
चतुरंगणी सेना सजी रे, साथे दसूं दसारो॥
साथे दसूं दशार रे भाई,
वागा वेश बहुत सजाई।
नर नारी बहु देखण आई,
घर घर मांहे बधाई॥जी०॥

२— जानी वणिया जुगत सूं रे, जादव लाखां कोड़ो।
दल मांहे दीपे घणी रे, नेम कृष्ण नी जोड़ो॥
नेम कृष्ण री दीपे जोड़ी,
कंवर मिल्या साढे तीन कोड़ी।
रथ पालखियां जावे दोड़ी,
चाल्या जावे होडा होडी॥जी०॥

३— भेरी मादल झालरी रे, सुरणाई शंख भेरो।
इत्यादिक वाजित्र घुरे रे, पड़ं नगारां री घोरो॥
नगारां री घोरज वाजे,
आकाशे जाणं अंबर गाजे।
नेम कवर रथ बेठां छाजे,
ग्रह नक्षत्र में जिम चंद्र विराजे॥जी०॥

सवैया

१— लाल घोड़ा लाल वाग, लाल हिज लेवे जान,
लाल ही जड़ियो पिलाण लाल रोम चामडी।
ऊपर चढ़्यां नेम लाल, वांधी शिर पाग लाल,
केशरी गुलाल लाल, लाल हाथ कावड़ी॥
मूंग्यां हीं की माला लाल मोत्यां विचे पेरी लाल,
तिलक निलाड़ लाल, लाल ओढ़ी फांवड़ी।
गहन ज्ञान सुन्दर लाल, जादु माथ वण्यो लाल,
[illegible] [illegible] [illegible] लगी मेरे घन-साम नै॥

ढाल ११

राग—चन्द्रायण

१— इण विध जान जलूस सु'रे, मन में अधिक जगीसो ।
आगे आय ऊभा रह्या रे शक्रेन्द्र ने ईशो ॥
शक्रेन्द्र ने ईशज दोई,
ऊभा जान रह्या छे जोई ।
नेंम कंवर परणे नहीं कोई,
तिणसूं मोने अचिरज होई ॥जी०॥

२— कृष्ण कहे इंद्रा भणी रे, थे रहिजो अबोला सीधा ।
विगर बुलायां आविया रे, थाने किण पीला चावल दीधा ॥
किण दीधा थाने पीला चावल,
जान बणी छे रंग वेलाबल ।
म्हारे काम पड्यो छे सावल,
रखे बजावो दिखणी बावल ॥जी०॥

ढाल १२

राग—चलत

१— मैं नीठ नीठ व्याव मनायो रे,
थे विगर बुलाया क्यूं आया ।
थे रहजो अबोला सीधा रे,
पिण पीला चावल किण दीधा ॥

२— एतो इन्द्र बोले विसेखा रे,
कान्हा ! मैं पिण मेलो देखां ।
थे जान जोरावर खाटी रे,
किम उतरे नेम पीली पाटी ॥

ढाल १३

राग—चंद्रायण

१— इन्द्र बोल्या बेऊं कृष्ण ने हो, लाया थे जान विसेखो ।
नेम कंवर परणे जिको हो, मैं पिण लेसां लेखो ॥
म्है पिण जोवां व्याव री वाटी,
किम उतरे नेम पीली पाटी ।

बाजा बाज रह्या गहगाटी,
पिण किण विध उतरेला पीली पाटी ।।जी०।।

ढाल १४

१— गजल-सखी आई मिल सगली, निरखण नेमकुंवार ।
बडी बरात यादवन की निरखी, हुवो हर्ष अपार ।।
देखो सहियां बनड़ो है नेमकुंवार ।।

२— सांवल सूरत मोहिनी मूरत, यादव-कुल-सिणगार ।
तीन भवन में नहीं कोई उपमा, इन्द्र तणं अनुहार ।।देखो०।।

३— धन माता जिण उदर धरिया, धन जिण कुल अवतार ।
निरखत नेण चेन अति उपजत, मोय रहा नरनार ।।देखो०।।

४— कानां-कुंडल जड़त छवि, कंठ अमोलक हार ।
मुकुट छिव छाये शिर ऊपरे, बरसे अमृत धार ।।देखो०।।

५— सर्व सखी रही देख अचंभे, फिर आई तिण वार ।
राजमती पासे इम भाखे, नेम तणो अधिकार ।।देखो०।।

ढाल १५

राग – सोरठी

१— साहियां राजुल ने कहे,
थारां मोटा भागोए, अथागो ए ।
नेम सरीखो वर मिल्योक सहियां ए ।।

२— वलती राजुल इम कहे,
म्हारे जीमणो फड़के गातो ए, जग-नाथो ए,
मिलसी के मिलसी नहींक-सहियां ए ।।

३— वलती सहियां इम कहे,
बाई ! बोलतां मती चूको ए, परो थूको ए,
तोरण ऊपर आवियोक सहियां ए ।।

४—सांवरिया री सूरत मूरत,
सोभे रंगी चंगी ए,
पंचरंगी ए,
[illegible] सहियां ए ।।

५—नेम कुंवर तोरण चढ्या,
पशुवां करी पुकारो ए, हाहाकारो ए,
फूट्यो सगली जानमें क—सहियां ए ॥

प्रक्षिप्त ढाल राग—थे तो माला पेहरो जडावरी रे लाल

ये तो वें वें करता बोकडा रे लाल, ये तो करे रे नेमसुं अरदास।
हो दयालराय ॥
मोंडाई व्याव मनावियो रे लाल, नहीं अन्तर मन री आश।
हो दयाल राय ॥१॥
थां विन करुणा कुण करे रे लाल ॥टेक॥

ये तो हिरणा हिरणी मिल करी रे लाल, सामर सूअर सियाल
हो दया० ॥
केई वाडे केई पिंजरे रे लाल, ज्यांरे पड रह्या अश्रु असराल
हो दया० ॥२॥

सुवटो सुवटी ने कह रह्या रे लाल, म्हांरा वाहर रह्य गया वाल
हो दया० ॥
व्हांने चुगो पाणी कुण देवसी रे लाल, कुण करसी साल संभाल
हो दया० ॥३॥

ढाल १६ राग—फाग

१—सींचाणा सारस घणा, जीव तणी घणी जात।
जादव राय ! रोकी ने राख्या पींजरे, दुख करे दिनरात ॥
जादव राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

२—हरिण सूसा ने बाकरा, सूर सांवर ने मोर।
दयालराय ! केई वाड़े केई पिंजरे, दुखिया कर रया शोर ॥
दयाल राय ! तुम विन करुणा कुण करे ॥

३—हिरण्यो हिरणी ने कहे, वाहिर गया बाल।
दयालराय ! चुगो पाणी लेवा भणी, कुण करसी साल संभाल॥द०॥

४—पूरे मासे पारेवड़ी इम करे अरदास ।
जादवराय ! बंधन पड़्या पग माहरे, ढ़ीला करे कोई पास।।जा०।।

५—तीतरी कहे तीतरी भणी,
गर्भ छे उदर मांय ।
जादव राय ! संकट पामूं अति घणूं
कोइक करुणा कर दे छोडाय ।।जा०।।

६—अशरण थका केई पंखिया,
बिल बिल करे निरधार ।
दयाल राय ! छोडावण वालो कोई नहीं,
छोडावे तो नेमकुमार ।।दयाल०।।

ढाल १७   राग—चंद्रायण

१— नेम कहे मावत भणी रे, ए जीव किण काजो ।
बलतो बोले सारथी रे, सांभल जो महाराजो ।।
सांभल जो महाराज—कुमारो,
ब्यांव मंडयो छे एह तुम्हारो ।
यां जीवां रो होसी संहारो,
पोखीजसी तुमरो परिवारो ।।जी०।।

२— वचन सुणी सारथी तणा रे, नेमजी चिंते आपो ।
इतरा जीव विणाससी रे, परणीजण में पापो ।।
परणीजण में पापज मोटो,
जीव—हिंसा से सहज खोटो ।
ए तो दीसे परतख तोटो,
नो लेऊं दयाधर्म रो ओटो ।।जी०।।

३— करुणा [illegible] सागर रे, जीवां रो करुणा कीधो ।
माथा रो मुगट [illegible] ने रे, गहणा वधाई में दीधो ।।
गहणा सब वधाई में दीधो,
नेम जिणंद समता रस पीधो ।
[illegible] उत्तम काज कीधो,
तीन लोक में हुवा प्रसिद्धो ।।जी०।।

४— नफर भणी हलकार ने रे, तोड़्या बंधन जालो।
केई जीवड़ा दोड़ी गया रे, केई उड़्या तत कालो॥
उड गया जीव तत-कालो,
जवान बूढा नान्हा बालो।
नेम रह्या छे ऊभा भालो,
जीवां रे बर्त्या मंगलमालो॥जी०॥

ढाल १८

१—गगन जातां जीव देवे ग्रासीस के,
पशु ने पंखिया जगदीश।
जादव ! हिवे चिरंजीव जो,
बलिहारी तुम बाप ने माय के,
पुत्र रतन जिन जनमियो।
स्वामी ! थे सारिया, ग्रम्ह तणा काज के,
तीन भवन रो पाम जो राज के—
शील ग्रखंडित पाल जो॥

ढाल १९

राग—चंद्रायण

१— वैरागे मन बाल ने रे, तोरण सूं फिर जायो।
इण ग्रवसर श्रीकृष्णजी रे, ग्राडा फिरिया ग्रायो॥
कृष्ण फिर्या छे ग्राडा ग्राई,
हिवड़े धीरज रख चतुराई।
तेल चढी ने किम छिटकाई,
जादव केरी जान लजाई॥जी०॥

२— नेम कहे सुण बंधवा रे, ए संसार ग्रसारो।
कुटुम्ब कबीलो छोडनें रे, हूं लेसूं संजम-भारो॥
हूं लेसूं संजम—भारो,
कामभोग जाण्या खारो।
ए नारी न लगाऊं लारो,
मुक्ति-रमणी सूं छे मन म्हारो॥जी०॥

३—जो थांरे मन में आ हुंती रे, हूं नहीं परणूं नारो।
तो इसड़ी जान जुलूस सूं रे, मोने नहीं लावणा था लारो॥
मोने नहीं लावणा था लारो,
जो मन वर्त्यो हो इम थांरो।
हूं तो लेसं संजम—भारो,
तो इतरो कांई कियो विस्तारो॥जी०॥

४—मन माडाणी मनावियो रे, कान्हा! थेहिज म्हारो व्यांवो।
म्हारे तो पेलां हुंतो रे, संजम ऊपरे चावो॥
चारित्र ऊपर चाव हमारो,
वचन न लोप्यो एकज थांरो।
तिण सूं एह हुवो विसतारो,
पिण विरक्त ने कुण राखणहारो।जी०॥

५— कृष्ण मन फेरो दियो रे, इन्द्र कह्यो थो एमो।
नेम कंवर परणे नहीं रे, वचन खाली जावे केमो॥
इन्द्र-वचन किम जावे खाली,
कृष्ण रह्या विवाह रो सोस पाली।
वीनणी विहूणी जानज चाली,
वैरागी मूंडे इधकी लाली॥जी०॥

६— कृष्ण भणी समजाय ने रे, पाछी वाली जानो।
लोकांतिक प्रतिबोधसूं रे, दीधो छमच्छर दानो॥
एक बरस तक दान ज देई,
कुटुम्ब कबीलो साथे लेई।
सुर नर वृन्द मिल्या छे केई.
लोच कियो सिर नो स्वयमेई॥जी०॥

ढाल २० राग—म्हाला उचारी रे

१—मास सावण छठ चांनणी, चित्रा नक्षत्र नें मांय रे।
सहस्र पुरुष साथे करी रे, संजम लियो जिनराय रे॥
हूं तो नेम नमूं रे वावीसमां॥

२—पांच से तेसठ जादवाँ, कंवर विचक्षण जाण रे।
एक सो आठ कृष्ण तणा, बहोतर बलभद्र ना बखाण रे ॥हूं तो०॥

३—वले आठ पुत्र उग्रसेण ना, अठावीस नेम ना भाय रे।
सात कह्या देवसेन ना, वलि आठ मोटा महाराय रे ॥हूं तो०॥

४—एक वरदत्त पुत्र अक्षोभ' नो, दोय से पांच यादव भेल रे।
श्री नेम साथे संजम लियो, ओ सहस्र पुरुष रो मेल रे। हूं तो०॥

५—एतो दश दशारज हरसिया, वले हरस्या हरि वलदेव रे।
सुर नर हरख्या अति घणा, सारें प्रभुजी री सेव रे ॥हूं तो०॥

ढाल २१

१— सखी-मुख सांभल्यो राजुल वाल,
नेम गया रथ पाछो वाल के।
धरणी ढली ने लही मूरछा—
चंदन लागे छे जेम अंगार के ॥
सखी मोने पवन म लावजो,
हिरदा में वसे नेम कुंवार के—
राजमती इम विल विले ॥

ढाल २२

राग—फांईक ल्योजी ल्योजी

१—आठ भवां री नेहज तूंनो, नवमें दी छिटकाई।
तुमसा पूत पनोता होय ने, जादव-जान लजाई ॥
ऊभा रोजो, थे रीजो रीजो रीजो, ऊभा रीजो ॥

२—सांवलिया—साहिब ऊभा रीजो
थे छो म्हांरा ठाकुर ऊभा रीजो
म्हे छां थांरा चाकर ऊभा रीजो ॥

३—हरि हलधर सा भाई वागिया, तुम ने कोमय न काई।
विन परमारथ छोड चल्या, शोभ कहां थे पाई ॥ऊभा०॥

४—जो कोई खून हुवे मुज अन्दर, तो तूं माफ करांई।
पिण कहो जुग में न्याव करे कुण, तो हुवे राय अन्याई। ऊभा०॥

ढाल २३

१— तरसत अखिआँ, हुई द्रुम-पखियां ।
जाय मिलो पिव सूं सखियां ! ।।
यदुनाथजी रे हाथ री ल्यावे कोई पतियां
नेमनाथजी-दीनानाथजी ।।

२— जिण कूं ओलंभो एतो जाय कहणो,
थे तज राजुल किम भये जतिया ।।नेमनाथजी० ।।

३— जांकूं दूंगी जरावरो गजरो,
कानन कूं चूनी मोतिया ।।नेमनाथजी०।।

४— अंगुरी कूं मूंदड़ी-ओढण कूं फुमड़ी,
पेरण कूं रेशमी धोतिया ।।नेमनाथजी०।।

५— महल अटारी – भए कटारी,
चन्द – किरण तनूं दाझतिया ।। नेमनाथजी०।।

६— क्या गिरनार में छाय रहे प्रभु,
वनचर नी करत थितिया ।।नेमनाथजी०।।

ढाल २४

राग—नवकार मन्त्र नो

१—म्हें चित उम्मेद पेर्यो चूड़ो,
म्हारे मेंदी रो रंग आयो रूड़ो ।
पिण सावा री वेला क्यूं टली भागी,
नेमीसर बनो भयो वेरागी ।।

२— हूं शिवा दे सासू री बाजी रे बहू,
मांने जग सगलाँ में जांणी ए सहू ।
हूं नेमजी री राणी जो वाजो ।।नेमीसर०।।

३— कुण ताके तारां ने, छोड शशी—
म्हारे सांवरिया सरीखी सूरत किसी ।
म्हें दूजा भरतार नी तृष्णा त्यागी ।।नेमीसर०।।

४— म्हारी मन री हूंस रही मन में,
हूं तड़फा तोड़ रही तन में ।
हूं बात किसी कहूं पाछी ने आगी ।।नेमीसर०।।

ढाल २५

१— माता कहे कंवरी ! मत रोय के,
मणि मंडित झारी लेई मुख धोय के ।
नेम गयो तो ए जाण दे,
नेम बिना जग सूनो न होय के ।।
तोने परणाऊं म्हारी लाडली !

२— चाव तूं पान, फूल सूंघ के,
अजे तांई बाई ! कोरा मूंग के ।
माता आई इम धीर दे ।।

ढाल २६

राग—हंस गया बटाऊ

१—किन के सरणे जाऊं, नेम बिना किन के शरणे जाऊं ।
इण जग मांय नहीं कोई मेरो, ताकी मैज कहाऊं ।।नेम०।।

२—मात पिता सुण सखी सहेल्यां, लिख कर दूत पठाऊं ।
किण गुन्हें मोय तजी पियाजी, मैं भी संदेसो पाऊं ।।नेम०।।

३ - म्हें तो पल एक संग न छोडूं, छोड कहो किहां जाऊं ।
अब टुक धीरप रथ-हाको, चालो मैं भी थांरे लार आऊं ।।नेम०।।

ढाल २७

१— अरि ! मेरा दुख मत कर जननी !
म्हैं जाऊंगी गिरनार ।
दीक्षा लेऊंगी भव-तरणी ।।

२— अरि मात पिता सुण सखी सहेली,
करो क्षमास जननी ।
अब रहण की नाय भई,
मैं करूं श्याम-मिलणी ।।अरि०।।

३— छपन कोड़ जादव मिल आये,
खूब वरात वनी ।
विन परण्यां मुझ नाथ फिरे,
सो कीधी बात घनी ॥अरि०॥

४— छिन में काया माया पलटे,
ज्यूं जल डाभ-अणी ।
कुञ्जर-कान, पान पीपल को,
ऐसी आय वनी ॥अरि०॥

५— मोसूं रे मोह तज्यो मुज प्रीतम,
करी निर्मल करणी ।
पशुवन के शिर दोष दिया,
प्रभु मुगत-वधू परणी ॥अरि०॥

ढाल २८

१— सहियां कहे राजुल ! सुणो,
बाई ! कालो नेम कुरूपो ए ।
भल भूपो ए-
ओर भलेरो लावसां क सहियां ए ॥

२— करी कुसामदी ताहरी,
पिण म्हारे दाय न आयो ए-
न सुहायो ए ।
कालो वर किण काम रो क सहियां ए ॥

ढाल २९

१— राजुल भाखे हे सहियां ! थे तो मूढ गिवार ।
काला में किसी खोड़-पीत किजे मन भावती ॥
कालो हाथी हे सहियां ! सोहे राज दुवार ॥
काली घटा जल-धार ॥

२— काली हुवे किस्तूर ड़ी-काली कीकी हे सहियाँ !
सोहे आंख मझार।
जिम काला नेम कंमार–
अवर वरेवा आंखड़ी ॥

ढाल ३० राग—चंद्रायण

१— साजन ने परजन तणी हो, घणी जण्या ने तारो।
नेम जिणेसर वांदवा रे, पहुँती गढ़-गिरनारो ॥
सती पहुँती छे गढ़-गिरनारो,
विच में वर्षा हुई अपारो।
भींज गया कपड़ा ने साड़ी,
एकल जई गुफा-मझारी ।जी०॥

२— कपड़ा खोल चोड़ा किया रे, थई उघाड़ी देहो।
झवको पड्यो पुरुष नो रे, स्यूं दीसे छ एहो ॥
इहां तो नर दीसे छे कोई,
सती तिहां हे कंपे होई।
राखे शील भांगेला मोई,
हेठी बेठी अग गुपोई ॥जी०॥

३— डरती देख सती भणी रे, इम बोल्यो रहनेमो।
हूं समुद्रविजयजी रो डीकरो रे, तूं सोच करे छे केमो ॥
तूं सोच करे छे केमो,
हे सुन्दर! घर मोसूं पेमो,
दुर्लभ मिनख जनम एमो,
आदरसां वले संजम-नेमो ॥जी०॥

ढाल ३१

१— चित चलियो मुनिवर नो देखी, राजमती कहे एम।
काम केल करणी इण काया, मोने साचे मन नेम ॥
२— मुनिवर दूर खराड़ो रे, लोगो भर्म धरेगा।
नारी-संग कियां थी रे, पापे पिंड भरेगा ॥मुनि०॥

३— जुवती रच्यो इण मंडल जग में मोटो जाल।
कामी-मिरग मारग के तांई, मूढ मरे दे फाल ॥मुनि०॥

४— नाक-रींट देखी माखी, चित में चिंते गट के।
पिण पग पांख लपट जद जावे, मरे शीस पटके ॥मुनि०॥

५— केसरी वरणी कोमल काया, मूढ करे मन हूंस।
ए पिण जहर हलाहल जाणो, जैसो थली रो तूस ॥मुनि०॥

६— देखो नेण काजल रा भरिया, जांणे दल उत्पल का।
कामी देव मारण के तांई, काम देव रा भलका। मुनि०॥

७— ऊजल कुल ने कलंक लगावे, नाखे दुर्गति ऊंडी।
खोवे लाज जनम री खाटी, पर नारी नरक री कूंडी ॥मुनि०॥

८— राजा जाणे तो घर लूंटे, खर चाढ़े सिर मूंडी।
जग सगलो जाणे भूंडो, ए करणो सहू भूंडी ॥मुनि०॥

९— फिरतां गिरतां राज दुवारे, संचरतां पर गलियां।
हस हाथ दे बजावे ताली, देखाड़े आंगुलियां ॥मुनि०॥

१०— दुर्जन ज्यूं क्यूं चिंते, सांभल वात तूं मीणी।
खाख बजावी करसी हासी, जासी लाज लाखिणी ॥मुनि०॥

११— वंश छोत लागे तुम कुल ने, सहू जग लेसी खींचो।
तुम पर वार उतरसी पाणी, यादव जोसी नीचो ॥मुनि०॥

१२— महासती सूं एह अकारज, उत्तम ने नहीं छाजे।
जो अति मीठो तो पिण मुनिवर! अखज कहो किम खाजे ॥मु०॥

१३— जातिवंत कुलवंत कहीजे वमिया तूं मती रींझे।
खिण सुख कारण वहु दुख पामो, एहवो काम न कीजे ॥मु०॥

ढाल ३२ राग—सुरसा गरब हुदे भर्यो

१— गज असवारी छोडने हो—मुनिवर!
खर ऊपर मती बेस।
देव लोग रा सुख देखने हो—मुनिवर!
पाताले मती पेस॥
सुगणा साधुजी हो मुनि! थांरा मन ने पाछो घेर॥

२— अमृत भोजन छोडने हो—मुनिवर !
तुसिया को कुण खाय।
देव लोक रा सुख देखने हो मुनिवर !
नरक न आवे दाय ॥सुगणा०॥

३— खीर खांड भोजन करी हो--मुनिवर !
वमियो कर्दम-कीच।
वमिया री वांछा करे हो —मुनिवर !
काग कुत्ता के नीच ॥सुगणा०॥

४— इण परिणामे थाहरो हो—मुनिवर !
संयम थिर नहीं होय।
गन्धण-कुल रा सर्प ज्यूं हो—मुनिवर !
वमिया ने मत जोय ॥सुगणा०॥

५— वचन सुणी राजुल तणा हो—मुनिवर !
चित ने आण्यो ठाम।
धन धन राजुल तू सही हे—राजुल !
धन थारो परिणाम ॥सुगणा०॥

६— नरक पडंता राखियो हे राजुल !
इम बोल्यो रहनेम।
मुजने थिरता कर दियो—हे राजुल !
वचन-अंकुश गज जेम ॥सुगणा०॥

७— नेम समीपे जायने हो—मुनिवर !
शुद्ध थया अणगार।
निर्मल संजम पालने हो-मुनिवर
पहुंता मुगत मझार ॥सुगणा०॥

८— शिव सुख राजमती लही हो—मुनिवर !
पामी परमानन्द।
चौपन दिन छद्मस्थ रह्या हो—मुनिवर !
धन धन नेम—जिणंद ॥सुगणा०॥

ढाल ३३   राग—चंद्रायण

१— तीन से बरस घर में रह्या हो, रख्या रूड़ा भावो।
संजम पाल्यो सात से हो, सहस्र वरस नी आवो॥
सहस्र वरस नी आयज पूरी,
जिनवर करणी कीधी रूडी।
कर्म किया सगला चक चूरी,
पाँच से छत्तीस सूं शिव पूरी॥जी०॥

२— समत अठारे चोड़ोतरे रे, भाद्रवा मास मझारो।
शुद्ध पांचम सनीसरं रे, कीधो चरित्र उदारो॥
कीधो चरित्र उदार आणंदा,
इम जाणी छोडे घर फंदा।
धन धन समुद्र विजयजीरा नंदा,
रिख 'जयमलजी' कहे नेम जिणंदा॥जी०॥

दोहा

१— 'भद्दलपुर' पधारिया, बावीसमां जिनराय।
भव-जीवांने तारता, मेले मुगत रे मांय॥
२— 'वसुदेवजी' रा डीकरा, 'देवकी' रा अंग-जात।
सुलसा रे घरे वध्या, ते सुणजो साक्षात॥
३— छऊं वय में सारिखा, सारिखे, उणियार।
वैराग पाम्या किण विधे, ते सुणजो विस्तार॥

ढाल १ राग—अलवेल्या

१— नेम जिणंद समोसर्या रे लाल,
भद्दलपुर के बाग हो, भविक जन।
सुणने लोग राजी हुवा रे लाल,
भवि जीवां रे भाग हो, भविक जन॥नेम०॥
२— सहस अठारे साधुजी रे लाल,
अज्जा चालिस हजार, भविक जन।
तिण ने आण मनावता रे लाल,
शासन रा सिरदार हो, भविक जन॥नेम०॥
३— नर नारी ने हुवो घणो रे लाल,
नेम वांदण रो कोड हो, भविक जन।
कोई पाला ने पालखी रे लाल,
चाल्या होडा-होड हो, भविक जन॥नेम०॥
४— केई कहे दरसण देखस्यां रे लाल,
केई कहे सुणस्यां वाण हो, भविक जन।
केई कहे परसन पूछस्यां रे लाल,
केई कुतुहल जाण हो, भविक जन॥नेम०॥

५— राजा प्रमुख आविया रे लाल,
लारे नर नार्यां ना थाट हो, भविक जन ।
लोग बहु लटका करे रे लाल,
बोले विरुदावली चारण-भाट हो, भविक जन ।।नेम०।।

६— नाग सेठ वांदण चालियो रे लाल,
लारे छः बेटा लेई साथ हो, भविक जन ।
प्रभुजी रो दर्शन देखने रे लाल,
हिवड़े हर्षित थाय हो, भविक जन ।।नेम०।।

७— जिनवर दीधी देशना रे लाल,
सुण ने हर्षित थाय हो, भविक जन ।
परिषदा सुण पाछी गई रे लाल,
छऊं भाई जोड़्या दोनूं हाथ हो, भविक जन । नेम०।।

८— ए संसार छे कारमो रे लाल,
मैं लेस्यां संयम भार हो, भविक जन ।
जिम सुख होवे तिम करो रे लाल,
मन करो ढील लिगार हो, भविक जन ।।नेम०।।

९— घर आवी कहे मात ने रे लाल,
नेम दीठा मैं आज हो, भविक जन ।
वाणी सुण ने सरदही रे लाल,
प्रभु सारे पर ना काज हो, भविक जन ।।नेम०।।

१०— बीहना जनम मरण थी रे लाल,
म्हां चावां उत्तम ठाम हो, भविक जन ।
आज्ञा दो तमे मो भणी रे लाल,
म्हें सारां आतम-काम हो, भविक जन ।।नेम०।।

११— सुण माता विलखी थई रे लाल,
वात काढी कैसी आज हो, भविक जन ।
संयम छे वछ ! दोहिलो रे लाल,
एतो सूरां नो काज हो, भविक जन ।।नेम०।।

१२— मात पिता पाल्या घणा रे लाल,
एतो रुड़ा नहीं लीगार हो, भविक जन ।

नार्यां विलविलती रही रे लाल,
नहीं आण्यो मोह तिवार हो, भविक जन ।।नेम०।।

१३— संयम लीधो वैराग सूं रे लाल,
घणो लाड ने कोड हो, भविक जन
मुगती महल र कारणे रे लाल,
ऊभा घर दिया छोड हो, भविक जन ।।नेम०।।

१४— नेमजी साथे छऊं जणा रे लाल,
करता उग्र विहार हो, भविक जन ।
वैराग रस मांहे झलता रे लाल,
संयम तपस्या धार हो, भविक जन ।।नेम०।।

दोहा

१— वैरागे मन वाल ने, दे तपस्या री नींव ।
बेले बेले पारणो, प्रभु ! करादो जावजीव ।।

२— नेम जिणंद समोसर्या द्वारिका नगरी मझार ।
समोसरण देवां रच्यो देशना दे हितकार ।।

ढाल २ राग—बिनो करीजे बाई वि०

१— पहली पोरसी सूत्र चितारे,
बीजी पोरसी अर्थ विचारे ।
जाणे तीजी पोरसी जागी,
वेदन रे वस खुध्या जागी ।।

२— मुनिवर मिलि जिणंद पे आया,
हाथ जोड़ी ने बोले वाया ।
प्रभु ! तमारी आज्ञा थाय,
तो म्हां द्वारिका में गोचरी जाय ।।

३— भगवंत बोल्या इसड़ी वाय,
देवाणुपिया ! जिम सुख थाय ।
रखे घड़ी री ढील न ल्यावो,
आहार पाणी ने वेगा जावो ।।

दोहा

१—वचन सुणी भगवंत रो मुनिवर हर्ष अपार।
पड़िलेही झोली पातरा, सुन्दर षट अणगार॥

२—चरण करण में ऊजला, च्यार महाव्रत धार॥
रूप-गुणे अति शोभता, नल-कूबर अणुहार॥

ढाल ३

राग—वीर बखाणी राणी चेलणा

१—आज्ञा ले भगवंत री जी, षट् बांधव मुनि जोय।
गोचरी करवा ने नीकल्या जी, मुनिवर टोलेटोले दोय।
साधुजी उठया मुनि गोचरी जी॥

२—गोचरी करवा ने नीसर्या जी, द्वारिका नगरी मजार।
पाड़े पाड़े में फिरता थका जी, लेवे छे शुद्ध ते आहार। साधु०॥

३—ऊंच नीच मज्झम कुले जी, इर्या ए जोवता जाय।
दोष बयालिस टालता जी, लीना छे संयम माय॥साधु०॥

४—बेला तणो मुनि ने पारणो जी, ताक ताक नहीं जाय।
अनुक्रमे फिरता थका जी, आया वसुदेव-घर मांय॥साधु०॥

५—बैठी सिंहासन देवकी जी, आपरा मंदिर मांय।
गज गति दीठा मुनि आवता जी, रोम रोम हर्षित थाय॥साधु०॥
साधुजी भलां पधारियाजी आज॥

६—सिंहासण थी राणी ऊठनेजी, सात आठ पग साम्ही जाय।
तिक्खुता रो पाठ गिणी करीजी, लुल लुल नीची जी थाय॥साधु०॥

७—भाव सुं भगति करे घणी जी, पांचे ई अंग नमाय।
आज कृतारथ हुँ थई जी, फली फूली विकसी घणी काय॥साधु०॥

८—आज भली दशा माहरी जी, दीठी छे मुनि तणी जोड़।
आज भलो भानु ऊगियो जी, पूगा म्हारे मन तणा कोड़॥साधु०॥

९—मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर मांहे थी लाय।
केशरीसिंह जटा जिसा जी, वेहराया उलटे जी भाव। साधु०॥

१०—मुनिवर वेहर पाछा वल्या जी,
लागी छे थोड़ी सी वार ।
बीजो सिंघाड़ो इहां आवियोजी,
देवकी — घर — वार ॥ साधुजी०॥

दोहा

१— उठी ने साम्ही गई, जोड़ी दोनूं हाथ ।
विनय सहित वंदना करी, मन में थई रलियात ॥

ढाल ४ राग—हमीरिया के गीत

१— देवकी हरखी अति घणी,
भले पधारिया रिषिराय, मुनीसर ।
पेहला सिंघाड़ा तणी परे,
भाव सहित बहराय, मुनीसर ॥

२— धन धन राणी देवकी,
प्रतिलाभ्या अणगार, मुनी० ।
चित्त वित्त पात्र तीने भला,
राणी सफल कियो अवतार ॥मुनी०धन०॥

३— जाता ने पोहचाय ने,
पाछी आई तिण ठाई, मुनीसर ॥
तीजो सिंघाड़ो आवियो,
चिंतवे राणी चित मांय ॥मनी०धन०॥

४— पहिला याने जो पूछ सूं,
तो नहीं लेसी मुनि आहार मुनी० ।
वेहर्यां पछे ऊभा नहीं रहे,
इम मन में करे विचार ॥मुनी०धन०॥

५— जहाज आई हम बारणें,
सहजे पुण्य प्रमाण, मुनीसर ।
मोदक पहलां बहराय ने
हूं पूछसूं जोड़ी पाण ॥मुनी०धन०

६— भाव सहित वेहराय ने,
देवकी चिंते एम, मुनीसर ।
साधां रे लोभ हुवे नहीं
वलि वलि आवे छे केम ॥मुनी०घन०॥

दोहा

१— आडी फिर ने देवकी, लुल लुल नीची थाय ।
एक संदेहो ऊपनो, दीजे मोहि बताय ॥

ढाल ५ राग—जगत गुरु त्रिसला-नन्दन वीर

१— भगवंत नगरी द्वारिका जी,
बारे जोजन प्रमाण ।
कृष्ण नरेसर राजवी जी,
ज्यांरी तीन खंड में आण ॥
मुनीसर एक करूं अरदास ॥
२— सोवन कोट रतन कांगुरा जी,
सोभे रूड़ा आवास ।
झिग-मिग करने दीपता जी,
देवलोक जिम सुख-वास ॥मुनी०॥
३— साठ कोड़ घर बाहिरे जी,
मांहे बहोतर कोड़ ।
लोग सहु सुखिया वसे जी,
राम कृष्ण री जोड़ ॥मुनी०॥
४— भाविक लोक वसे घणा जी,
दातार बहुला थाय ।
चवदे प्रकार नो सूझतो जी,
अढलक दान दिराय ॥मुनी०॥
५— सेठ सेनापति मंत्रवी जी,
ज्यांरे घर में घणो धन्न ।
साधां रे दरसण विना जी,
मुख में न घाले अन्न ॥मुनी०॥

६— लाखां कोड़ां रा धणी बसे जी,
नगरी में बहु लोग।
खाणे पीणे खरचणे जी,
पुन्य सूं मिलियो जोग ॥मुनी०॥

७— घणी पुन्याई बाई ताहरीजी,
इम बोल्या मुनिराय।
देवकी मन में जाणियो जी,
यां ने तो खबर न काय ॥मुनी०॥

८— वात छे अचिरज सारिखी जी,
माहरे हिये न समाय।
कह्यां में नफो नहीं नीपजेजी,
बिन कह्यां रह्यो न जाय ॥मुनी०॥

९— मैं आगे इम सांभल्यो जी,
नहीं बारं - बार।
यो मोने अचिरज थयो जी,
पुच्छा करूं निरधार ॥मुनी०॥

१०— हूं पूछं इस कारणे जी,
मुनि ने न लाभे आहार।
म्हारा पुण्य तणें उदेजी,
आप आया तीजी बार ॥मुनी०॥

११— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई शंका मूल म आण।
थारे घर बहरी गया जी,
ते मुनिवर दूजा जाण॥
देवकी लोभ नहीं छे कोय॥

१२— हाथ जोड़ी कहे देवकी जी,
सांभल जो ऋषि-राय!
मैं स्व-हाथां सुं बहरावियो जी,
मो सं इण किम नटियो जाय ॥मुनी०॥

१३— वलि ते मुनिवर इम कहे जी,
बाई ! नगरी में बहु दातार।
तीन संघाड़े आविया जी,
अमे छां छउ अणगार ।।
देवकी लोभ नहीं छे कोय ।।

१४— सारखी रूप संपदा जी,
बाई ! सारिखे अणुहार।
साथे संजम आदर्यो जी,
बाई ! सारिखो तप धार ।।देवकी०।।

१५— हाथ जोड़ी ने कहे देवकी जी,
सांभल जो मुनि-राय !
उतपत थांरी किहां अछे जी,
हूं सुणसूं चित लाय ।।मुनी०।।

१६— किसा नगर रा नीकल्या जी,
स्वामी ! बसता कुण से ग्राम।
किण रा छो दीकरा जी,
पिता रो कहो नाम ।।मुनी०।।

१७— 'भदलपुर' रा वासिया जी,
बाई ! 'सुलसा' म्हांरी मांय।
नाग सेठ रा दीकरा जी,
घर छोड्या छऊं भाय ।।देवकी०।।

१८— बत्तीसे रंभा तजी जी,
बत्तीसे बत्तीसे दात।
कुटुम्ब मेलो सहू रोवतो जी,
बाई विल-विल करती मात ।।देवकी०।।

दोहा

१— हाथ जोड़ी कहे देवकी, सांँभल जो रिख-राय।
वैराग पाम्या किण विधें, दीजे मोहि बताय ।।

२— साध वचन इसड़ा कहें, सांभल मोरी बाय।
माहरी रिध कहां किसी, ते सुणजो चित्त लाय ।।

ढाल ६

राग—राजगृही नगरी

१— बत्तीस कोड़ सोनैया,
बत्तीस रूपां री कोड़ री माई।
बत्तीसे बाजुबंध दीधा,
बत्तीस कांकरण री जोड़ री माई।
पुण्य तरणा फल मीठा जाणो॥

२— बत्तीस तो हार एकावली,
बत्तीस अर्द्धसरा जाण री माई।
बत्तीसे नवसरा दीधा,
बत्तीस मुकुट प्रमाण री माई॥पुण्य०॥

३— अरण सरिया वले हार बत्तीसे,
बत्तीस कनकावली हार री माई।
हार मक्तावली ऊजल सोहे,
बत्तीस रत्नावली सार री माई॥पुण्य०॥

४— हीर चीर वले रत्नां जड़िया,
पट कुल रा बहु वृन्द री माई।
झीणा सूत रा वस्तर दीधा,
पहिर्यां अति सोहंदरी माई॥पुण्य०॥

५— बत्तीसे तो पिलंग सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री माई।
बत्तीसे सोना रूपा रा झेला,
पागा रतना में वखाण री माई॥पुण्य०॥

६— बत्तीसे तो थाल सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जाण री, माई।
बत्तीसे तो प्याला दीधा,
दूध पीवण ने वखाण री, माई॥पुण्य०॥

७— बत्तीसे बाजोट सोना रा,
बत्तीस रूपा रा जांण री माई।
बत्तीसे तो तवा सोना रा,
बत्तीस रूपा रा प्रमाण री माई॥पुण्य०॥

८— बत्तीसे तो गोकुल गायां रा,
दूध पीवरण ने दीध री माई।
दास्यां बडारण खोजा दीधा,
बत्तीस चंदण-पीसणा लीध री माई ।।पुण्य०।।

९— इण रीते छऊ कुमारां ने,
सरीखी दातां री तोल री माई।
पगे लागतां सासूजी दीधा,
एक सौ ने बाणुं बोल री माई ।।पुण्य०।।

दोहा

१— कितरो काल संसार में भोगविया सुख सार।
देव दोगुंधक नी परे, बहुलो छे विस्तार ।।

ढाल ७

राग—करेलणा घड़दे रे

१— जातो काल न जाणता जी, म्हे रहता महलां मझार।
दास्यां रा परिवार सूं जी, बत्तीसे वत्तीसे नार।।
देवकी हे लोभ नहीं माहरे कोय ।।
२— चन्द्र-वदन मृग-लोयणी जी, चपल-लोचनी बाल।
हरीलंकी, मृदु-भाषिणी जी, इन्द्राणी सी रूप रसाल ।।देव०।।
३— प्रीतवती मुख आगले जी, मुलकंती मोहन-वेल।
चतुरां ना मन मोहती जी, हंस-गमणी सूं करता बहुकेल ।।देव०।
४— नित नवी चीजां खावणी जी, नित नित नवला वेश।
सुंदर सूं भीना रहे जी, सुपना में नहीं कलेश ।।देव०।।
५— राग छत्तीसे होवती जी, मादल ना धोंकार।
नाटक विध बत्तीसना जी, रंग विनोद अपार ।।देव०।।
६— भगवंत नेम पधारिया जी साधां रे परिवार।
म्हे भगवंत ने वांदिया जी, सफल कियो अवतार ।।देव०।।
७— नेम तणी वाणी सुणी जी, मीठी दूधाधार।
प्रतिबोध्या छऊं जणा जी, जाण्यो अथिर संसार ।।देव०।।

८—कुटुम्ब कबीलो छोडियो जी, सुन्दर बत्तीसे नार।
धन कंचन रिध छोडने जी, लीधो संयम-भार ।।देव०।।

९—बेले बेले पारणो जी, जाव-जीव मन धार।
मुक्ति भणी मैं उठिया जी, लेवां सुध आहार ।।देव०।।

१०—दोय दोय मुनिवर जुवा जुवा जी, आया नगर मझार।
तीन सिंघाड़े उठिया जी, द्वारिका नगर मझार ।।देव०।।

११—तिण साधां रा वचन में जी, शंका मूल म आण।
ताहरे घर बेहरी गया जी, ते मुनिवर दूजा जाण ।।देव०।।

दोहा

१— तिण कारण मोदक तणो, लालच नहीं मोय।
घर री रिध एहवी तजी, मुगती साहमो जोय ।।

२— इतरो सुण शंका पड़ी, देवकी करे विचार।
मोने खबर न का पड़ी, देखूं यांरो अणुहार ।।

ढाल ८

राग— कर्म परीक्षा करण कु०

१— नेण निहाले हो राणी देवकी रे,
मुनिवर साम्हो न्हाल।
जोति कांति यांरी दीपती रे,
मुनिवर रूप रसाल ।।नेण०।।

२— जिण घर थी ए छऊं नीकल्या रे,
किस्यूं रह्यूं छे लार।
छऊं सहोदर दीसे सारिखा रे,
नल-कूबर उणिहार ।।नेण०।।

३— छप्पन कोड़ जादवां री साहिबी रे,
हरिवंश-कुल सिणगार।
दीठा म्हारा सगला राज में रे,
नहीं कोई यांरे उणिहार ।।नेण०।।

४— इण उणिहारे म्हारे राज में रे,
अवर दीसे न कोय।

जो छे तो कांइक म्हारो 'कान' छे रे,
ए मोने अचिरज होय ।।नेण०।।

५— नेड़ो तो सगपण को दीसे नहीं रे,
म्हारो हिवड़ो सगपण जेम ।
लागे मुनिवर म्हाने सुहावणा रे,
इम किम जाग्यो प्रेम ।।नेण०।।

६— श्रावक रो साधां ऊपरे रे,
होवे छे धर्म-सनेह ।
मो जिम परवश कांई ना पड़े रे,
इम किम उलस्यो माहरो नेह ।।नेण०।।

७— लाडु बहराया राणी देवकी रे,
लागी थोड़ी सी वार ।
मुनिवर बहरी ने पाछा नीसर्या रे,
ऊभा न रहे अणगार ।।नेण०।।

८— सूरत थांरी प्यारी लागे घणी रे,
कह्यो कठा लग जाय ।
जाणे थांने देखवो हूं करूं रे,
इम माहरो मोहज थाय ।।नेण०।।

९— मोहणी कर्म मोटो छे घणो रे,
दोरो जीत्यो जाय ।
जीते कोई बड सूरमो रे,
मन में धीरज लाय ।।नेण०।।

दोहा

१— देवकी देख हर्षित थई, दिया मुगति रा सूत ।
करणी ज्यांरी दीपतो, मुनिवर काकरा-भूत ।।

२— सारिखी जेहनी चामड़ी, सारिखे अणुहार ।
वरण सारिखो जेहनो, यौवन रूप उदार ।।

३— इम चिंतवतां तेहने, उपनो मन संदेह ।
कुण माता पुत्र जनमिया, भरत क्षेत्र में एह ।।

४— बालपणे भाख्यो हुँतो, अयवंते अणगार ।
आठ जणसी हूँ देवकी, जिसा नहीं जणे भरत मझार ॥

ढाल ९ राग— रे जीव विषय न राचिए

१— भरत खेतर में सांमठा, किण मां बेटा जाया रे ।
तीन संघाड़े आविया, मैं हाथा सूं बेहराया रे ॥
करे विमासण देवकी ॥

२— मो आगे कह्यो हुँतो, अयवंते ऋषिरायो रे ।
तेतो बात मिलती नहीं, स्यूं रिख वाणी मृषा थायो रे ॥करे०॥

३— आज्ञा देतां मात नी, जीभ बुही छे केमो रे ।
एहवा बेटा बाहरी, दिन काढ़ेला केमो रे ॥करे०॥

४— सूरत दीसे सोहती, घणोइज ज्यांरो हेतो रे ।
जिण घर सूं ए नीकल्यां, लारे रह्यो छे केतो रे ॥करे०॥

दोहा

१— एहवा पुत्र जनम्यां बिना, किम थावे आणंद ।
हाथ कांकण सी आरसी, इहां छे नेम जिणंद ॥

२— इसड़ी मन में ऊपनी, वांदूं भगवंत-पाय ।
भाव-सहित वंदन करूं, तन मन चित्त लगाय ॥

३— शंका छेऊं अणगार नी, मुझ मन उपनी सोय ॥
नेम जिणंद ने पूछ ने, संसो भांजु मोय ॥

४— इम चित मांही विचार ने, सज सोले सिणगार ।
जिण वांदण जावा भली, करे सजाई त्यार ॥

ढाल १० राग — वीछिया का गीत

१— चाकर पुरुष बुलाइने,
देवकी बोले इम वाया रे लाला
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
तूं रथ वेगो जोताय रे ॥
श्री नेम वांदण ने जावस्यां ॥

२— चाकर पुरुष राजी थयो,
जाय संभाले जाण रे लाला।
उवट्ठाणशाला छे बाहिरली,
रथ ऊभो राख्यो आण रे ॥श्री०॥

३— रथ हलको घणो वाजणो,
वले च्यार पेड़ां रो जाण रे लाला॥
अशुद्ध शब्द करे नहीं,
लागे लोकां ने सुहाण रे ॥श्री०॥

४— हलवा काष्ट नो झूंसरो,
वले चोड़ा पेड़ा जोत रे लाला।
मोत्यां री जाली लग रही,
छती शोभा को उद्योत रे ॥श्री०॥

५— रथ सिणगार्यो फूटरो,
जुहारां सूं हालो जोय रे लाला।
समिल सुंहाली हलकी घणी,
ज्यूं बलदां एल न होय रे ॥श्री०॥

६— खोली झूल विराजती,
पाखतियां घूंघर माल रे लाला।
सामग्री सगली सज करो,
जाय बांदू दीनदयाल रे ॥श्री०॥

७— दीसत दीसे सोभता,
एहवी बलदां री जोड़ रे लाला॥
चालत अति ही उतावला,
सींग पूंछ में नहीं खोड़ रे ॥श्री०॥

८— धवला ने माता घणा,
वले छोटी सिंगड़ियां जाण रे लाला।
दोनूं बराबर दीसता,
तूं एहवा ऋषभ आण रे ॥श्री०॥

९— बलदां रे झूलज सोभती,
नाके नथर साल रे लाला ।
राखड़ी सींगां में सोभती,
गल बांधी गुघर-माल रे ।श्री०॥

१०— सोना री गले में सांकली,
रूपा रो टोकरियो जाण रे लाला।
सोना री खोली सींग में,
दोय इसड़ा बलदज आण रे ॥श्री०॥

११— कमल रो सोहे सेहरो,
लटके सींगा रे मांय रे लाला।
नाथ सोने रेशम री भली,
तिणसूं नाक दोरो नहीं थाय रे ॥श्री०॥

१२— इण रीते सेवग सुणी,
रथ जोतर कियो तयार रे लाला।
देखत लागे सुहावणो,
रथ चढण रो करे विचार रे ॥श्री०॥

१३— न्हाई ने मंजन करी,
पहिर्यां नव-नवा वेश रे लाला।
माणक मोती माला मूंदड़ी,
गहणा हार विशेष रे ॥श्री०॥

१४— हाथों में कांकण सोभता,
कंठे नवसर हार रे लाला।
पगे नेवर दीपता,
जाणे देवांगना उणिहार रे ॥श्री०॥

१५— अलंकार एहवा सजी,
आई उवट्ठाण-साला मांय रे लाला।
रथ सजियो कसियो थको,
कलपवृक्ष समो ते थाय रे ॥श्री०॥

१६— करी सजाई एहवी,
चढ बठी रथ रे मांय रे लाला।
बारलां ने दीसे नहीं,
मांहे देखंती जाय रे।।श्री०।।

१७— लीधी साथे सहेलियां,
राणी चाली मज्झ बाजार रे लाला।
चतुर बेसाण्यो सागड़ी,
ए गृहस्थ नो ग्राचार रे।।श्री०।।

दोहा

१— बाजारे विच विच थई, रथ पवनवेग चलाय।
राणी सांसो भांजवा, नेम जिणंद पे जाय।।
२— ग्रतिशय देखी जिणंद नो, उतरी रथ रे बार।
पाली होय ने देवकी, वांदे वारं-वार।।
३— वंदणा कीधी नेम ने, भांत भांत नम सेव।
जिण आगूंच इसड़ो कहे, मन संदेह छे तेह।।
४— पुत्र छऊं ए ताहरा, सुलसा रा मति जाण।
देवकी सुण हर्षित थई, सांभल जिनवर-वाण।।

ढाल ११ राग – जगत गुरु त्रिशला नंदन वीर

१— हिवे उपजत्त एहनी जी, दिखाड़े जिन-राय।
कर्म तणी गति वांकड़ी जी, देवकी! सुणचित लाय।।
जिणेसर सांसो टाले एम।।
२— भद्दलपुर मांहे वसे जी, 'नाग' सेठ रिधवंत।
'सुलसा' तेहने भारिया जी, रूप में घणी सोहंत।।जिणे०।।
३— तेहने कह्यो निमित्तिये जी, बाल पणे निमंत।
जणसी पुत्र मुवा थका जी, कर्म तणे विरतंत।।जिणे०।।
४— 'हरिणगवेषी' देवनी जी, प्रतिमा पूजा कराय।
भगते राझ्यो देवता जी, तूठो बोले वाय।।जिणे०।।

५— सुलसा कहे तूठो मुझ भणी जी, मुझ करवो तुरत काज ।
पुत्र जीवाड़ो माहरा जी, कृपा करो महाराज ।।जिणे०।।

६— देव कहे नहीं मुझ थकी जी, तुझ नंदन जीवाय ।
पिण हुं आपिस जीवता जी, पर ना बालक लाय ।।जिणे० ।

७— सुलसा ने तूं एकण समेजी, गर्भ धरे समकाल ।
साथे जणे देव जोग थी जी अनुक्रेमे षट् ही बाल ।।जिणे०।।
देवकी सांसो मति कर कोय ।।

८— मुवा बालक सुलसा जणे जी, ते मेले तुम पास ।
ताहरा मेले जीवता जी, सुरसा री पूरे आस ।।देव०।।

९— ते भणी पुत्र छे ताहरा जी, सुलसा रा नहीं एह ।
मुनि-भाषित मृषा नहीं जी, न टले कर्म नी रेह ।।
देवकी ! कर्म न छोडे कोय ।।

१०— पाछले भव ते देवकी जी. दीधी छाती में दाह ।
सात रतन ते शोक ना जी, चोर्या नाणी त्राह ।।देव०।।

११— तिण ने रोती देखने जी. तें मन में करुणा आण ।
एक रतन पाछो दियो जी, सोले घड़ी थी जाण । देव०।।

१२— तिण कर्मे चोर्या गया जी, ए थारा छऊं पूत ।
सोले वर्ष थी कृष्णजी ए, आय राख्यो घर-सूत ।।देव०।।

१३— सुख दुख संच्या आपणा ए, जिके उदे हुवे आय ।
समो विचार्यां सुख हुवे ए, चिंता म करो काय ।।देव०।।

१४— कर्म सबल संसार में ए, विन भुगत्यां न टलंत ।
देव दाणव नर राजवी ए, एकण पंथे वहंत ।।देव०।।

दोहा

१— नेम जिणेसर वांद ने, आई साधां रे पास ।
निरखे वांदे हेत सूं हिवड़े हरस उलास ।।

२— मोक्ष तणी किरिया करे, ज्यांरो घणोहीज वान ।
सहस्र अठारे साध में, कठे ही न रहे छान ।।

ढाल १२

राग—बे बे तो मुनिवर वहरण०

१— देवकी तो आई नंदन वांदवा रे,
ऊभी रही मुनिवर पास रे।
नेणां साधां ने राणी देखने रे,
करवा तो लागी इम अरदास रे ॥देवकी०॥

२— हाथ जोड़ी ने राणी वंदना करे रे,
विनय सूं पांचे अंग नमाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा दीवी हाथ सूं रे,
लटका करे लुल लुल नीची थाय रे ॥देवकी०॥

३— आज कृतार्थ आशा मुझ फली रे
रोम रोम में प्रगट्यो आनन्द रे।
म्हारी कूख मां एहवा ऊपना रे,
धन धन यादव कुल-चंद रे ॥देवकी०॥

४— तड़के से तूटी कस कंचू तणी रे,
थण रे तो छूटी दूधाधार रे।
हिवड़ा मांहे हर्ष मावे नहीं रे,
जाणे के मिलियो मुझ करतार रे ॥देवकी०॥

५— रोम रोम विकस्या. तन मन ऊलस्या रे,
नयणे तो छूटी आंसू-धार रे।
बिलिया तो बाहां मांहे मावे नहीं रे,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हार रे ॥देवकी०॥

६— देवकी आंख्या ने अण हलावती रे,
निरख्या बेटा ने घणी वार रे।
वलि वांदी ने आई जिन कने रे.
हिये उपनो कवण विचार रे ॥देवकी०॥

दोहा

१— देवकी मन मांहे चिंतवे, देखो कर्म-संयोग।
मैं जनम्या छः बालुड़ा, पाल्या किण ही लोग।

२— इम चिंतव प्रभु वांद ने, आई आपणे गेह।
दुख मन मांहे ऊपनो, कह्यो न जावे जेह ॥

३— चिंता सागर झूलती, नजर धरणी पर राख।
मुख विलखे जोवे नहीं, किण ही सूं नहिं भाख ॥

४— इण अवसर श्री कृष्णजी, मा ने वंदन काज।
आवे प्रणमी चरण युगल, बेठा श्री महाराज ॥

५— देवकी तो बोली नहीं, पुत्र थकी तिण वार।
तव कृष्णजी मन चितवे, मा! तोने चिंता अपार ॥

६— माहरा सहू इण राज में, थे ही जो दुखिया होय।
तो कहो इस संसार में सुखियो न दीसे कोय।

७— वहुवां थांरे हुकम में, लुल लुल लागे पाय।
सगली पगे लगावतां पिड्यां को शल जाय ॥

ढाल १३

राग—चंद्रायण

१— माताजी! किण कारणे हो, वदन तमारो आजो।
चिंतातुर दीसे घणो हो, इण वाते आवे लाजो ॥
इण वाते मोने लाज कहावे,
पुत्र थकां मां दुखणी थावे।
हूं समझूं थांरे समझावे,
वात कहो वेला घनी थावे ॥
जी मातजी हो ॥

२— थांने चिंता रो कुण हेत, कहो तुमे हम भणीजी।
हूं करसूं हो चिंता दूर के, जामण! तुम तणी जी ॥

३— बोले माता देवकी हो, मुझ नंदन थया सातो।
लाल्या पाल्या में नहीं हो, ए मुझ दुख री वातो ॥
ए दुख मुजने दिन दिन शाले,
साजन सो, जो ए दुख पाले।
एसो भाग्य लिखो मुज भाले।
जो आवे हिव वात विचारे।
जी कान्हजी ओ ॥

दोहा

१— वले माता इम कहे, सांभल तूं अंग-जात !
　दुख मुझ ने शाले घणो, ते सुण दुख री बात ।।

ढाल १४

राग—वालेसर मुझ वीनति

१— हूँ तुज आगल सी कहूं कन्हैया !
　　वीतक दुख री बात रे, गिरधारी लाल ।
　दुखणी जग में छे घणी कन्हैया,
　　पिण घणी दुखणी थारी मात रे, गिरधारी लाल ।।हूँ०।।

२— आज लगे हूँ जाणती, कन्हैया,
　　पूरब करम विशेष रे, गिर० ।
　फासू जाया मैं छ जणा कन्हैया !
　　इहां नहीं मीन ने मेष रे गिर० ।।हूँ०।।

३— ते वधिया सुलसा घरे कन्हैया !
　　प्रत्यक्ष दीठा मैं आज रे गिर० ।
　वात कही सहू मांडने कन्हैया !
　　आपण पे जिनराज रे गिर० ।।हूँ०।।

४— सोले वरस छांनो वध्यो-कन्हैया !
　　तूं पिण यमुना री तीर रे, गिर० ।
　नंद यशोदा ने घरे कन्हैया !
　　कहिवाणो अहीर रे गिर० ।।हूँ०।।

५— यमुना-तीरे जायने कन्हैया !
　　तें नाथ्यो काली नाग रे, गिर० ।
　कंस राजा ने पछाड़ियो,
　　पछे खुलिया थारा भाग रे गिर० ।।हूँ०।।

६— छ तो इम छाना वध्या, कन्हैया !
　　एक रह्यो तूं पास रे, गिर० ।
　तोन्न मायां रा राखतो कन्हैया !
　　तूं थाने छट्ठे मास रे गिर० ।।हूँ०।।

७— जाया मैं तुम सारिखा कन्हैया !
एकण नाले सात रे, गिर० ।
एकण ने हुलरायो नहीं कन्हैया !
गोद न खिलायो खण मात रे, गिर० ॥हूं०॥

८— बालपण रा बोलड़ा कन्हैया !
पूरी नहीं कांई आस रे, गिर० ।
आशा अलूधी हूं रही कन्हैया !
भार मुई नव मास रे गिर० ॥हूं०॥

९— रोवतो मैं राख्यो नहीं, कन्हैया !
पालणिये पौढ़ाय रे, गिर० ।
हालरियो देवा तणी, कन्हैया !
म्हारे हूंस रही मन मांय रे, गिर० ॥हूं०॥

१०— आंगणिये न करावी थिरी, कन्हैया !
आंगुलियां विलगाय रे, गिर० ।
हाऊ बेठो छे तिहां, कन्हैया,
अलगो तूं मति जाय रे, गिर० ॥हूं०॥

११— ओढणियो पहराव्यो नहीं, कन्हैया,
टोपी न दीधी माथ रे, गिर० ।
काजल पिण सार्यो नहीं, कन्हैया
फदिया न दीधा हाथ रे, गिर० ॥हूं०॥

१२— रोवाण्यो नहीं हासी मिसे, कन्हैया—
म्हैं आंख तोषण काज रे, गिर० ।
न कर्यो एक नो सासरो, कन्हैया !
करिस्यां तेवड़ आज रे, गिर० ॥हूं०॥

१३— न कह्यो केहने मीमलो, कन्हैया,
ए माहरे मन चाय रे, गिर० ।
इतरा बोलां मायलो, कन्हैया !
एक न पाम्यो थारो माय रे, गिर० ॥हूं०॥

१४— पुत्र तणी आरती घणी कन्हैया !
हर्ष नहीं मुज तन्न रे, गिर०
गोद खिलावे पुत्र ने, कन्हैया !
ते माता छे धन्न रे, गिर० ॥हूँ०॥

१५— मोटी जग मांहे मोहणी, कन्हैया !
उदे थई मुज आज रे, गिर० ।
बीजो कोई जाणे नहीं, कन्हैया !
जाणे श्री जिनराज रे, गिर० ॥हूँ०॥

दोहा

१— एह वचन सुण मात ना, कृष्ण करे अरदास ।
सोच कोई राखो मती, पूरस्यूं थांरो आस ॥

२— जिम तुझ नंदन थाहस्ये, करस्यूं तेह उपाय ।
मीठा मधुरा वचन सूं, संतोषी निज माय ॥

३— माता इण पर सांभली, हिवड़े हर्ष अपार ।
सत्पुरुष वचन चले नहीं, जो होवे लाख प्रकार ॥

ढाल १५ राग—चंद्रायण

१— कृष्ण कहे मातजी ! सांभलो हो चिंता म करो लिगारो ।
जिम मुझ बांधव थायसी हो, तिम हूं करसूं विचारो ॥
तिम हूं करसूं विचारो रे माई !
म करो मन में चिंता कांई ॥
दीजो मोने भली बधाई,
जब होवे नानो भाई ॥
जी मातजी हो ।

२— माता रे पगे लागने हो, आया पौषध-शालो ।
हरिणगमेसी देवता हो, मन चिंतवे ततकालो ॥
मन चिंतवे ततकाल मुरारी,
तेलो तप मन मांही धारी ।

आवी देव कहे तिण वारी,
काम कहो मुझ ने सुविचारी ॥
जी कान्हजी हो ॥

३—देवकी रे पुत्र आठमो हो, जिम होवे करो तेमो ।
इण कारण मैं सिमर्यो हो, बीजो नहीं कोई प्रेमो ॥
बीजो नहीं कोई प्रेम हमारे,
पुत्र थयां मां दुख विसारे ।
बालक नी लीला चित धारे,
स्त्री ने एहिज सुख संसारे ॥
जी देवाजी हो ॥

४— देव कहे पुत्र थायस्ये हो, पिण होश्चे जब मोटो ।
चारित्र लेस्ये ए भलो हो, वचन हमारो न हो खोटो ॥
वचन हमारो खोटो न थावे,
इम कही सुर निज ठामे जावे ।
कृष्ण हिवे सुर ना गुण गावे ।
माताजी ने हर्ष मनावे ॥
जी माताजी हो ॥

दोहा

१— कोइक सुर ते चव करी, गर्भ लियो अवतार ।
रग विनोद वधावणा, हरस्यो सहु परिवार ॥

२— भविक जीव प्रतिबोधता, जिनवर करे विहार ।
पाप तिमिर निर्घाटवा, सहस्र-किरण दिन-कार ॥

३— गर्भ दिवस पूरा करी, जायो सुन्दर नन्द ।
घर घर रंग वधावणा, घर घर मांहे आणंद ॥

ढाल १६ राग—जीहो मिथिला नगरी रो राजियो

१— जीहो शुभ वेला शुभ मुहूर्त्त लाला,
राणी जनम्यो बाल ।
जीहो कोमल गज तालुओ लाला,
देव कुंवर सुकुमाल ॥

राणीजी कुमर जायो जी ।।

२— जीहो हरस्यो श्री हरि राजवी लाला,
हरस्या दशे ही दशार ।
जीहो हरसी माता देवकी, लाला,
हरस्यो सहू परिवार ।।राणीजी०।।

३— जीहो बंदीखाना मोकल्या-लाला,
कीधा बहु मंडाण ।
जीहो नगरी नी शोभा करी लाला,
बाजे विविध निशाण ।।राणी जी०।।

४— जीहो-तोला मापा वधारिया लाला
दश दिन महोच्छव थाय ।
जीहो-बांध्या तोरण, वांटे सीरणी लाला,
चंदन केशर हाथां दिराय ।।राणी जी०।।

५— जीहो-यादव नारी सांवठी लाला,
आवे गावे गीत ।
जीहो-चोक पुरावे मांडणा, लाला
साचविये शुभ रीत ।।राणी जी०।।

दोहा

१— बाजा बाजे अति भला, वरत्या मंगल-माल ।
संतोषे याचक सुहासणी, हर्ष्या बाल गोपाल ।।

२— मरता जीव छोडाविया, सगले नगर मझार ।
मुह मांग्या दीजे घणा, मणि माणक भंडार ।।

ढाल—वही

६— जीहो-दीधा मंगल मोतीड़ा, लाला
दीधा हयवर हार ।
जीहो-दीधा सोनो साबटू, लाला,
दीधा अर्थ भंडार ।।राणी जी०।।

७— जीहो बारसमो दिन आवियो, लाला,
नाम दियो अभिराम।
जीहो चंद्रकला जिम बधतो, लाला,
रूप—कला—गुण—धाम ॥राणी जी०॥

दोहा

१— हाथी नो जिम तालवो, देही तिम सुकुमाल।
बालक हुवो तेहवे, नामे गज—सुकुमाल॥

२— बालक पांच धाये करी, वाधे आनंद-कंद।
एक ग्रही दूजी ग्रहे, दिन दिन अधिक आणंद॥

ढाल-वही

८— जीहो खेलावण-हुलरावणे लाला,
चूगांवण ने पाय।
जीहो न्हवरावयण पेहरावणे, लाला,
अंगो अंग लगाय ॥राणीजी०॥

९— जीहो आंखड़ली अंजावणी, लाला.
भाल करावण चंद।
जीहो गालां टीकी सांवली, लाला,
आलिंगन आनन्द ॥राणीजी०॥

१०— जीहो पग-मांडण ग्रही अंगुली, लाला,
ठुमक ठुमक री चाल।
जीहो बोलण भाषा तोतली, लाला,
रिझावण अति ख्याल ॥राणीजी०॥

११— जीहो दही रोटी जिमावणे, लाला,
अरू चबावण तंबोल।
जीहो मुख सू मुख में दिरीजतां, लाला,
लीला अधर अमोल ॥राणीजी०॥

१२— जीहो बतलावण ने चालवे लाला,
दीरावग मुख, गाल ।
जीहो आलकरावण आकरी लाला,
सीखावण सुर-साल ॥राणीजी०॥

१३— जीहो वरस सरस आठां लगे लाला,
लीला बाल, विनोद ।
जीहो सब ही पर मा देवकी, लाला,
पावे अधिक प्रमोद ॥राणीजी०॥

१४— जीहो पढियो गुणियो मति आगलो, लाला,
माधव जीवन जोय ।
जीहो सहू ने प्यारो प्राण थी लाला,
माताजी ने सोय ॥राणीजी०॥

दोहा

१— बालक-क्रीड़ा तेहनी, देखी त्रिविध प्रकार ।
हर्षी माता देवकी, हिवे सफल गिणे अवतार ॥ ॥

२— यौवन वय आव्यां थकां, कीवी सगाई अभिराम ।
'द्रुम' राजा नी पुत्रिका, 'प्रभावती' इण नाम ॥

३— 'सोमल' ब्राह्मण नी धिया, 'सोमा' नामे एक ।
प्रत्यक्ष जाणे अपछरा, चतुराई रूप विशेष ॥

४— क्रीड़ा करतां तेह ने देखी कृष्ण नरेश ॥
लघु भाई लायक अछे, बाला यौवन-वेश ॥

५— कीवी सगाई तेहसूं, 'सोमा' आई दाय ।
थापी तेहनी भारिया, मेली कुमारी-अंतेउर मांय ॥

६— तिण काले ने तिण समे, करता उग्र विहार ।
भगवंत नेम पधारिया, द्वारिका नगर मझार ॥

७— वन पालक अनुमत लही, उतर्या बाग मझार ।
वन-पालक दीवी वधावणी, हर्ष्या कृष्ण मुरार ॥

ढाल १७ राग—रंग मेहल में हो चोपड़ खेलस्यां

१— वस्त्र ने गेहणा हो घणा शरीर ना,
सोनैया लाख साढ़ी बार ।
प्रीतज दान हो दियो तेहने,
हर्ष्यो वधाई-दार ॥

२— यादवपति जावे हो प्रभुजी ने वांदवा,
नगरी द्वारिका सिणगार ।
घर घर मांहे हो महोच्छव मंड रह्यो,
हर्ष सूं जावे नर-नार ॥यादव०॥

३— नर ने नारी ने हो हर्ष हुवो घणो,
नेम वांदण रो कोड ।
कोई पाला ने हो कोई पालखी,
चाल्या जावे होडा-होड ॥यादव०॥

४— मंजन-घर में हो कृष्ण न्हावण करी,
सर्व पहेर्या सिणगार ।
चंदन-लेप हो शरीर लगाविया,
जाणे इन्द्र-अवतार ॥यादव०॥

५— एक सौ आठ हो हाथी सिणगारिया,
चरच्या तेल सिंदूर ।
दीसत दीसे हो पर्वत-टूंक ज्यूं,
चाले आगे हजूर ॥यादव०॥

६— एक सौ आठ कोतल हय सिणगारिया,
सुन्दर-सोवन-जड़ित पिलाण ।
एक सौ ने आठ रथ सिणगारिया,
चाले असवारी आगीवाण ॥यादव०॥

७— लाख वेंयालिस हाथी सिणगारिया,
वले लाख वेंयालिस घोड़ ।
लाख वेंयालिस रथ सिणगारिया,
पायदल अड़तालिस कोड़ ॥यादव०॥

८— हरि नें हलधर दोनूं गज चढ्या,
साथे लियो गजकुमार।
छत्र ने, चामर दोनूं विजे रह्या,
बाजे बाजां रा झणकार ॥यादव०॥

६— देवकी माता आदे राणिया,
साथे सहू परिवार।
बोले विरुदावलियां, चारण सुजन सब,
जय जय शब्द अपार ॥यादव०॥

दोहा

१— अतिशय देखी ने उतर्या, वांद्या दीन दयाल।
पांच अभिगम साचवी, पाप कियो पेमाल॥

२— भगवंत दीधी देशना, भवि जीवां हितकार।
आगार ने अणगार नो, धर्म करो सुखकर॥

३— परिषदा सुण पाछी गई, वलिया कृष्ण नरेश।
गज-सुकुमार वंरागियो, लागी धर्म री रेश॥

४— हाथ जोड़ी कहे नेम ने, आणी मन वंराग।
मात पिता भाई पूछ ने, करसूं संसार नो त्याग॥

५— जिम सुख होवे तिम करो, म करो ढील लिगार।
घर आवी कहे मात ने, चरण गमी तिण बार॥

ढाल १८ राग—जोधाण जसराज

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पड़ी—रे माई।
आज अंदर री आंख, जामण म्हारी ऊघड़ी॥

२— वलती बोले माय, 'वारी जाऊं तुम तणो—रे जाया।
सुणी प्रभुजी री वाण, पुन्याई ताहरी घणी॥

३— कुंवर कहे माय! वाण, साची मैं सरहदी—री माई?
मीठी लागी जेम, दूध शाकर दही॥

४— अनुमति दीजो मोय, दीक्षा लेसूं सही—री माई।
हिवे आज्ञा री जेज, जामण ! करवी नहीं॥

५— वचन अपूरव एह, पुत्र ना सांभली—री माई।
घणूं मूर्छा—गति खाय, धमके धरणी ढली॥

६— खलकी हाथां'री चूड़, माथे रा केश बीखरया–री माई।
ओढ़ण हुवो दूर, आंखे आंसू झरया॥

७— मोह तणे वश आज, सुरती चलती रही—री माई।
शीतल पवन घाल, माता बैठी थई॥

८— कुंवर सामो माय, रही छे जोवती—री माई।
मोह तणे वश वेण, बोले माता रोवती॥

ढाल १९ राग—सौदागर चलण न देसूं

१— प्यारे हमारे जाया, एसी न कीजे।
तुम बिन आछे लाल, कहो किम जीजे रे॥प्यारे०॥

२— छतियां मेरे लाल ! तीखी खाती।
कलेजो कांपे लाल, अति अकुलाती रे॥प्यारे०॥

३— छतियां मेरे लाल, आगज उठी।
तनु जाले रे लाल, न समजे झूठी रे॥प्यारे०॥

४— छतियां मेरे लाल ! दुःख न समावे।
दाड़िम ज्यूं रे लाल, फाटी आवे रे॥प्यारे०॥

५— बंटां की रे लाल ! आशा एती।
कही नहीं जावे लाल ! अंबर जेती रे॥प्यारे०॥

६— ऊंची लेई लाल, आभ अडाई।
नीची कियां लाल, जात बडाई रे॥प्यारे०॥

७— रोवत अत ही लाल देवकी राणी।
भर भर आवे लाल, नयणां में पाणी रे॥प्यारे०॥

८— कुंवर कहे रे लाल, माय न रोजे।
मरणो आवे लाल, किम सुख सोजे रे॥प्यारे०॥
प्यारी हमारी अमां अनुमति दीजे॥

९— जनम जरा रे लाल पूठे लागी।
किम छूटीजे लाल, तेहथी भागी रे ॥प्यारे०॥
१०— उत्कृष्टी रे लाल, कीजे करणी।
तो रे मिटे लाल, यम की डरणी रे ॥प्यारी०॥
११— अजर अमर लाल, हूं अब होस्यूं।
शुद्ध होई लाल ! त्रिभुवन जोस्यूं ॥प्यारी०॥

दोहा

१— मात कहे सुत सांभलो, संयम दुक्कर अपार।
तूं लीला रो लाडलो सुख विलसो ससार ॥

ढाल २० राग—जोधाणे जसराज

१— साधपणो नहीं सहेल, जाया जामण कहे—रे जाया।
तूं न्हानड़ियो बाल, परीसा किम सहे॥
२— त्रिविधे त्रिवधे च्यार, महाव्रत पालवा—रे जाया।
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालवा॥
३— दोष बेयालीस टाल, करणी वच्छ गोचरी—रे जाया।
भमवो भमरा जेम, चिंता मोने लोच री॥
४— कनक कचोला छांड, लेवी वच्छ काछली— रे जाया।
जाव जीव लगे वाट, नहीं जोवणी पाछली॥
५— रहणो गुरां रे पास, विनय सूं भाषणो— रे जाया।
राती पड्यां एक शीत, वासी नहीं राखणो॥
६— सरस नीरस आहार, करणो वछ पातरे—रे जाया।
ए सुख सेज्या छोड़ सूवणो साथरे॥
७— नहीं करणो सिनान, मुखे बंधे मुहपती—रे जाया।
मेला पेहरे वेश, तिके जैन रा यती॥
८— करणो उग्र विहार, सेहणो सी तावड़ो—रे जाया।
कह्यो हमारो मान, पुत्र तूं बावरो॥

९— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी थे कह्यो—री माई।
सूरा ने छे सेहल, कुमर उत्तर दियो॥

१०— जनम मरण रा दुख, माता जिणवर कह्या—री माई।
वसियो गर्भावास, जामण मैं दुख सह्या॥

११— नहीं पलक री आस, जाण् काल जंपियो—री माई।
ओ जग मरतो देख, माताजी कंपियो॥

दोहा

१— वलती माता इम कहे, सांभल तूं सुजाण।
परिवार ताहरे छे घणो, म करो दीक्षा री बात॥

ढाल वही

१२— सहस बहोत्तर मात तात, वसुदेव है—रे जाया।
जीवन-प्राण आधार, केशव बलदेव है॥

१३— भोजायां सहस्र बत्तीस, तणो रामेकरो—रे जाया।
तुझ ने अनुमति देवा, कुण होसी खरो॥

१४— सहस्र बहोत्तर परिवार, माताजी आवी मिले—री माई।
पर भव जातां साथ, कोई ना चले॥

१५— पलटे रंग पतंग, तिको जिण रो जिसो—री माई।
तिण ऊपर विश्वास, जामण करणो किसो॥

१६— शूर वीर बावीस, परीसा धारसी—री माई।
जाणो शिवपुर वास, तिके नर पावसी॥

१७— सुन्दर बाला दोय, परणीजो पद्मणी—रे जाया।
सुख-लीनी जोवन-वेश, रूप चतुराई घणी॥

१८— मृग-नयणी, शशि-वदन इन्द्राणी-सम अछे—रे जाया।
विलसी सुख संसार, लीजो चारित्र पछे॥

१९— लिया घणा ने घेर, विषय महापापणी—री माई।
जग मांहे सहू नार, माता कर थापणी॥

२०— स्वार्थ-नी सगी नार, माता जिनवर कही—री माई।
अशुच दुर्गन्ध अपार, माता परणूं नहीं॥

२१— वाल्यो मन वैराग, विषय रस परिहरी—री माई।
मल मूत्र नो भंडार, माता नारी खरी॥

२२— किंपाक फल समान, विषय जिनवर कह्या—री माई।
दीजे अनुमति आज, कीजे मो पर मया॥

२३— नेम जिणेसर पास, महाव्रत आदरी—री माई।
जाव जीव लगे बात, न करूं प्रमाद री॥

२४— जाव जीव जप तप, करस्यूं खप आकरी—री माई।
मूल थकी जड़ काटस्यूं, कर्म-विपाक री॥

२५— म्हारे क्षमा गढ़-मांय, फोजां रहसी चढ़ी—री माई।
बारे भेदे तप तणी, चोकी खड़ी॥

२६— बारे भावना नाल, चढ़ाऊँ कांगरे—री माई।
तोडूं आठे कर्म, सकल कार्य सरे॥

२७— हाथ जोड़ी ने अर्ज, कुंवर माय सूं करे—री माई।
द्यो अनुमति आदेश, मनोरथ मुझ फले॥

दोहा

१— मोह छकी माता कहे, सांभल माहरी बात।
दुर्लभ अंबर फूल ज्यूं तुझ दर्शन साक्षात॥

२— पान फूल नूं जीव तूं, कोमल केलि समान।
ललूड़ो अति लाडलो, लालन लीला थान॥

ढाल २१ राग—राजवियां ने राज पियारो

१— देवकी बोले सांभल बेटा,
निसुणो माहरी वाणी।
जो माता करि जाणो मौने,
तो मत कर खांचा-ताणी॥

२— रे जाया चारित्र दोहिलो.
जोवो हिये विमासी।
वेलू-कंवल लोहना चणा,
मेण-दांते न चबासी ॥रे०॥

३— द्वारिका नगरी नो राज्य ले तूं,
मस्तक छत्र धराय।
सफल मनोरथ करि माता नो,
हाथी घोड़ा अधिपति थाय ॥रे०॥

४— कृष्ण नरेसर खोले लेवे,
निसुणो वचन सुखदाई।
पगे करी ने अगनी बुझावे,
ज्यूं दुकर संयम भाई ॥रे०॥

५— वावल बाथ में लेवी दोरी,
चालवो खांडा नी धार।
सायर तरवो भुज वल करी ने,
ज्यूं दुक्कर संयम-भार ॥रे०॥

६— केशव कहे लघु भाई ने,
जो तूं छोड़े संसार नो पास।
पिण द्वारिका नगरी नो,
राज तोने देसूं, पूरो माता नी आस ॥रे०॥

७— रह्यो अबोलो वचन सुणी ने,
तब दीधो माधव राज।
छत्र ने चामर दोनूं बीजे,
कीना राज ना साज ॥रे०॥

८— गज-सुकुमार कहे केहनो सारो,
अब वरते आण हमारी।
तो हुकुम माहरो मत उथपो,
थे करो दीक्षा री त्यारी ॥रे०॥

६— श्री भंडार मांहे सूं काढ़ो,
तीन लाख सोनैया लीध।
बे लाख ना ओघा पातरा,
एक लाख नाई ने दीध ।।रे०।।

दोहा

१— दीक्षा महोच्छव कृष्णजी, कीधो हर्ष अपार।
मझ बाजारे चालिया, आया जिहां करतार ।।

ढाल २२

राग—गवरांदे बाई आज वसो०

१— कुंवर कहे कर जोड़ ने,
सांभलो कृपानाथो रे।
एतो जनम मरण सूं डरपियो,
छोडसूं सगली आथो रे।
माहरो कुंवर वैरागी संयम आदरे ।।

२— इण गहणा तनसूं उतारिया,
माता खोला मांहे लीधा रे।
जिम सरप बिछु ने अलगा करे,
तिम कुमर परा नांखी दीधा रे ।।माहरो०।।

३— माता देखी कुमर भणी,
जाग्यो मोह अपारो रे।
इण रे ठलक ठलक आंसू पड़े,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हारो रे ।।माहरो०।।

४— मोने इष्ट ने कंत व्हालो हुतो,
हूँ देखी ने पामती साता रे।
पिण म्हारो राख्यो न रह्यो न्हानड़ो,
इण विध बोले छे माता रे ।।माहरो०।।

५— इण ने तपस्या थोड़ी करावजो,
घणीं कीजो सार संभालो रे।

हिवे कुंवर कने माता आयने,
एतो देवे सीख रसालो रे ।।माहरो०।।

६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणेंहीज पाले रे।
तूं क्रिया कीजे रे जाया निर्मली,
तूं दोनूं ही कुल उजवाले रे ।।माहरो०।।

७— झुरती बोले माता देवकी,
सांभल तूं सुजातो रे।
तें मुजने रोवाई इण परे,
जिम बीजी म रोवाणे मातो रे ।।माहरो०।।

दोहा

१— लोच कियो निज हाथ सूं, कोण ईशाने जाय।
वेश पेहरी साधु तणो वांदे प्रभुजी ना पाय ।।

२— जनम मरण रा जोड़ सूं, बिहनो किरपानाथ ! ।
भवोदधि मोने तार ने, दीजे शिवपुर आथ ।।

ढाल २३ राग—सोभागी–सुन्दर

१—नेम जिणेसर स्व-हथे जी, चारित्र दीधो तास।
हर्ष लहे चित में घणो जी, थई मन में आस ।।

२—सोभागी मुनिवर धन धन गजसुकुमार।
भव बंधन थी छूटवा जी, छोड्यो माया-जाल ।।सोभागी०।।

३—माधव-प्रमुख दुख धरे जी, मन में आणी नेह।
वांदी मुनि ने आपणं जी, पोहता लोग सुगेह ।।सोभागी०।।

४—मेहलां में कुंवर दीसे नहीं जी, साले आई-ठाण।
झुरे माता देवकी जी, प्रेम बडो बंधाण ।।सोभागी०।।

५—तिणहीज दिन जिनवर भणी जी, पूछे ते मुनिराय।
प्रतिमाए जाई रहूं जी, जो तुम आज्ञा थाय ।।सोभागी०।।

६—जिम सुख होवे तिम करो जी, म करो वहु प्रतिबंध।
चाल्यो मुनिवर जिन नमी जी, मेरूण भव नो द्वंद ।।सोभागी०।।

७—गजसुकुमार मसाण में जी, प्रतिमा रह्यो रे सधीर।
मेरु तणी परे नवी डिगे जी, वड-क्षत्री वड-वीर ।।सोभागी०।।

८—आतम ध्यान विचारतो जी, मूकी ममता देह।
जड चेतन भिन्न भिन्न करे जी, लागो शिव सूं नेह ।।सोभागी०।

९—आपण ने भजे आप सूं जी, पुद्गल रुचि ने निवार।
आतम-राम रमावतो जी, निज-स्वभाव विचार ।।सोभागी०।।

१०–क्षपक श्रेणि मुनि चढ्यो जी करण अपूरव मांय।
ध्यान शुक्ल मुनि ध्यावता जी, परीषह उपजे आय ।।सोभागी०।।

११–सोमल ब्राह्मण आवियोजी, दीठो मुनिवर तेह।
मन में बहु दुख ऊपनोजी, चिंते दुष्टी जेह ।।सोभागी०।।

१२–अति नान्ही मुज बालिकाजी, रूपे देवकुमार।
पापी इण परणी नहीं जी, मूकी ते निरधार ।।सोभागी०।।

१३–पाखण्ड दर्शन आदर्योजी, पर दुख जाणे नांय।
हिवे दुख दूं इण ने खरोजी, जिम जाणे मन मांय ।।सोभागी०।।

१४–चित मांहि इम चिंतवेजी, निर्दय विप्र चंडाल।
करे परीसो साधनेजी दे मुख सूं घणी गाल ।।सोभागी०।।

१५-बलता अंगारा ग्रहीजी, घड़ी मांहे ते घाल।
पापी माथे मेलियाजी, पहिलां बांधी पाल ।।सोभागी०।।

१६–आप कमाया पापियेजी, तूं भोगव फल आज।
मुज पुत्री दुखणी करीजी, तुजने नावी लाज ।।सोभागी०।।

दोहा

१— दुःसह परीषह मुनि सहे, मन में नाणे रीस।
धर्म केवल ध्याने चढ़े, मुनि ध्यावे जगदीश ।।

ढाल २४

राग—रहेनी रहेनी अलगी रहेनी

१— माता-हाथ तणो करि भोजन,
अन्य आहार नवि लीधो।

गज मुनि धीर कर्म ने हणवा,
मुक्ति-महल मन कीधो ॥
तुम पर वारी मैं, वारो-३ तुम पर वारी ॥

२— महाकाल मसाण व्याल बहु,
लाल अंबर द्रिग दीस ।
उजड़ झाल वले चेहे झील,
तरु-तल रह्या मुनीस ॥तुम पर०॥

३— नेत्र-दृष्टि मंडो अंगुष्ठ,
शिष्ठ सकल विध साजे ।
राचे आतम राम तणो रस,
सर्व पुराकृत भाजे ॥तुम पर०॥

४— मस्तक पाल बंधी माटी की,
मुनिवर समता रस भरिया ।
झग झगता खयर ना खीरा,
मुनिवर ने शिर धरिया ॥ तुम पर० ॥

५— खदबद खीच तणी परे सीजे,
तड़ तड़ नासां तूटे ।
मुनिवर समता-भाव करी ने,
लाभ अनन्तो लूटे ॥तुम पर०॥

६— अंत समे केवल "ऊपारजी,
त्याग उदारिक देह ।
अक्षय अटल अवगाहना कर ने,
अनन्त चतुष्टय लेह ॥ तुम पर०॥

७— अल्प प्रव्रज्या, अतुल परीषह,
अष्ट कर्म करी हाण ।
जनम मरण नो अंतज कीनो,
सासता सुख निर्वाण ॥तुम पर०॥

दोहा

१— मात तात वांदण भणी, आवे कृष्ण नरेश ।
दीठो ब्राह्मण डोकरो, सहतो बहु कलेस ॥

२— इंट वहे देवल भणी, कद होस्ये पूरी एह।
दया आणी मन तेहनी, एक उपाड़ी तेह ॥
३— एक एक ते सहू ग्रही, कृष्ण तणो परिवार।
मन में ते हर्षित कहे, कृष्ण कियो उपगार ॥
४— करि उपगार शुभ भावसूं, चित में धरि आणंद।
वांदण आव्या कृष्णजी, जिहां श्री नेम जिणंद ॥

ढाल २५ राग—पंथीड़ा तूं कंई भूलो रे

१— त्रण प्रदक्षिणा दे करीजी, वांद्या दीन-दयाल।
साध सकल वांदियाजी, नहीं दीसे गज-सुकुमाल ॥
२— जगत गुरु ! किहां गयो-गज-सुकुमाल ?
हूं प्रणमूं जई तेहनेजी, त्रि-करण-शुद्ध त्रि-काल ॥जगत०॥
३— पूछे कृष्ण नरेसरूजी, छांड्यो जिण संसार।
रमणीय सुहावणो हो, रूप मदन अवतार ॥जगत०॥
४— नेम कहे उत्तर इसोजी, पोहतो ते निर्बाण।
सबल सखाई तसु मिल्योजी, काम थयो सिघजाण ॥जगत०॥
५— अचेतन थई देवकी जी, कुरडे सा असराल।
हीन दीन विल विल करेजी, दोहली पेट री झाल ॥जगत०॥
६— मूरछागति धरणी पड्योजी, चेतन पामो जाम।
बोले कृष्ण दयामणोजी, नेम भणी सिर नाम ॥जगत०॥
७— किण उपसर्ग कियो इसोजी, मुजने कहो जिनराय !
आपूं सीख जाई करीजी, जिम मुज रीस बुझाय ॥जगत०॥
८— अमने वांदण आवतांजी, ब्राह्मण ने जिम आज।
ते उपगार कियो भलोजी, तेहनो सार्यो काज ॥जगत०॥
९— मिलियो ते उपगारियोजी, बहु काले जे कर्म।
न खपता ते थोड़े खप्याजी, मत कह भाई ! अधर्म ॥
कृष्णराय ! सांभलो मोरी बाण ॥
१०— मैं किम हिवे जाणी सकूंजी, मुज भाई मारण-हार।
नेम कहे हवे सांभलोजी, ते तुज कहूं विचार ॥कृष्ण० ॥

११— जे नर तुजने देखनेजी, तुरत तजे जे प्राण ।
तिण तुज भाई मारियोजी, ए सच्चो सहिनाण ।।कृष्ण०।।

१२— सांभल वाणी नेमनीजी, ते दुख हिये न समाय ।
कामकिसोकियो पापियोजी ते मुख कह्यो न जाय ।।जगत०।।

१३— नेम भणी हरि वांदनेजी, आवे नगरी मझार ।
खिण खिण भाई सांभरेजी, प्रीत सबल संसार ।।जगत०।।

दोहा,

१— दुख करता भाई तणो, कृष्ण घणं उदास ।
मझ चोहटो टाल ने, जावे निज आवास ।।

२— मुनि-घातक ब्राह्मण जिको, डरप्यो मन में अपार ।
सेरी कानी नीकल्यो, जावे नगरी बार ।।

ढाल २६ राग—ऋषभ प्रभुजी ये ए

१— कृष्ण-वदन देखी करिए,
मार्यो हुंतो जिण साध ।
ते तो मुवो पापियो ए,
आप किया फल लाध ।।

२— नरेसर इम कहे ए,
साची प्रभुजी री वाण ।
अन्यथा नहीं होवे ए,
ए मुनि-घातक जाण ।।नरेसर०।।

३— तुरत बंधावी रांढुयें ए,
जेहना हाथ ने पाय ।
नगरी मांहे बाहिरे ए,
फेरी जे तसु काय ।।नरेसर०।।

४— कराई उद्घोषणा ए,
सारे शहर मझार ।
साध ने दुख दियां तणा ए,
ए फल ताजा सार ।।नरेसर०।।

५— फल दीठो ऋषि-घातनो ए,
इम नहीं करे चंडाल।
ते इण कियो पापिये ए,
खिण खिण होय उदाल ॥नरेसर०॥

६— वात सुणी मुनि तणी ए,
बहु यादव - परिवार।
लेवे संयम भलो ए,
जाणी अथिर संसार ॥नरेसर०॥

७— जे चारित्र लेवा मते ए,
ते लेज्यो इण वार।
माधव कहे मुख सूं इसो ए,
म करो ढील लिगार ॥नरेसर०॥

८— पाछल सहू परिवार नी ए,
हूं करिसुं संभाल।
दुखियां रा दुख मेटसूं ए,
सुणजो बाल गोपाल ॥नरेसर०॥

९— वचन सुणी श्री कृष्ण नो ए,
हुवा साध अनेक।
महा महोच्छव हरि करे ए,
आणी हृदय विवेक ॥नरेसर०॥

१०— केई तो श्रावक हुवा ए,
केई समकित – धार।
नेम जिणेसर तिहां थकी ए,
जनपद कियो विहार ॥नरेसर०॥

११— साता दीजो साधां भणी ए,
तन मन चित्त उल्लास।
आज्ञा मती उथापजो ए,
ज्यूं पामो सासतो वास ॥नरेसर०॥

१२— सतगुरु संगति पायने ए,
मत कीजो परमाद।

पर निन्दा ईर्ष्या तजो ए,
कीजो धर्म - आल्हाद ॥नरेसर०॥

१३— इण आरे धरम पायने ए,
कीजो घणा जतन ।
थोड़ा में नफो घणो ए,
राखीजो ऊजल मन ॥नरेसर०॥

१४— इण अवसर में चेतजो ए,
धरम खरची लीजो लार ।
गुरु-सेवा कीजो हरस सूं ए,
जिम होसी निस्तार ॥नरेसर०॥

१५— एसा पुरुषां सांमो जोयने ए,
राखीजो धर्म सूं प्रेम ।
ज्यूं शिवरमणी वेगी वरो ए,
रिख 'जयमलजी' कहे एम ॥नरेसर०॥

दोहा

१— गौतम गणधर गुणनिलो, लब्धि तणो भंडार।
चवदे सो बावन सहू, नमतां जय जय कार॥
२— सूत्र ज्ञाता में चालिया, 'मेघ' ऋषि ना भाव।
संक्षेपे करी हूं कहूँ, सांभल जो धरि चाव॥

ढाल १

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रा तिलक समान री माई।
एक कोड़ ने छासठ लाख,
गांव तणो अनुमान री माई॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो॥

२— राज करे तिहां 'श्रेणिक' राजा,
मंत्री 'अभय' कुंवार री माई।
महाराजा रे 'धारिणी' राणी,
साधां ने हितकार री माई॥पुण्य०॥

३— धारणी-श्रेणिक रो अंग-जात,
नामे मेघ-कुमार री माई।
सुविनीत वहोतर कला भणियो,
वाणी अमृत सार री माई॥पुण्य०॥

४— तिण नगरी में नालंदो पाड़ो,
तिण रो इसो अनुमान री माई।
चवदे तो चौमासा किया,
भगवंत श्री वर्द्धमान री माई॥पुण्य०॥

५— पूरब भव गवालज केरो,
दान दियो तिण खीर री माई।
जिण पुन्याई इसडी बांधी,
घाली 'गोभद्र' सेठ घर सीर री माई ॥पुण्य०॥

६— 'जंबू' जैसा इण पाड़ा में हुवा,
बले कोड़ी-धज घर थाय री माई।
सहस पेंसठ ने लाख इग्यारे,
पणसे छत्तीस घर इण मांय री माई ॥पुण्य०॥

७— मंदिर मालिया जाली झरोखा,
सोहे पोल प्रकार री माई।
चौरासी वले चोहटा सोहे,
परतक देवलोक सार री माई ॥पुण्य०॥

दोहा

१— 'मेघ' कुंवर जोवन आया, परणी आठ नार।
महल मांहे सुख भोगवे, मादल नों धोंकार ॥

२— गाम नगरपुर विहरता, भगवन्त श्री महावीर।
शरणे आवे ते प्राणिया पावे भव जल तीर ॥

ढाल २ राग—रसिया के गीत की

१— वीर पधार्या हो मगध सुदेश में,
करता धर्म उद्योत—जिणेसर।
मेना जीव थया है मिथ्यात में,
ज्यां री उतारता छोत—जिणेसर ॥वीर०॥

२— चोतीस अतिशय हो करने दीपता,
वाणी रा गुण पेंतीस—जिणेसर।
एक सहस्र ने आठ लक्षण-धणी,
जीत्या राग ने रीस—जिणेसर ॥वीर०॥

३— 'राजगृही' नगरी हो अति रलियामणी,
'गुणशिल' नामे बाग—जिणेसर।
विचरता वीर जिणंद समोसर्या,
भव जीवां रे भाग—जिणेसर ॥वीर०॥

४— 'श्रेणिक सुणियो हो वीर पधारिया,
हिवड़े हर्षित थाय—जिणेसर।
करी सजाई ने नृप वांदण चाल्यो,
सेवा करे चित लाय—जिणेसर ॥वीर०॥

५— नर-नारी ने हो हरस हुवो घणो,
वीर वांदण रो कोड़—जिणेसर।
नगर विचाले हो होयने नीकल्या,
चाल्या होड़ा - होड़—जिणेसर ॥वीर०॥

६— च्यारे जातरा देवी ने देवता,
बले नर-नारी साथ—जिणेसर।
लुल लुल ने हो प्रभु ने लटका करे,
जोड़े दोनूं हाथ—जिणेसर ॥वीर०॥

दोहा

१— षड् ऋतु ना सुख भोगवे, मेहलां में मेघकुमार।
कामण सूं लीनो रहे, आगे सुणो अधिकार॥

ढाल ३

राग—म करो काया माया कारमी

१— मेघ कुंवर तिण अवसरे,
बैठो है महल मझार रे।
लोग वारे जातां देख ने,
सेवक बुलाया तिवार रे॥
कुंवर इसो मन चिंतवे॥
२— के कोई महोच्छव भूत नो,
के कोई यक्ष नो जाण रे।

वले अनेराई पूछिया,
के कोई खिणावे निवाण रे ॥कुंवर०॥

३— वचन सुणी श्री मेघ नो,
सेवग हर्षित थाय रे।
हाथ जोड़ ने इण पर कहे,
ते सुणजो चित लाय रे ॥कुंवर० ॥

४— चोवीसमां श्री वीरजी,
तारण तिरण जहाज रे।
तेहनी वाणी सुणवा भणी,
लोग वांदण जावे आज रे ॥कूंवर०॥

५— नाम ने गोत्र सुणियां थकां,
पातिक जावे परा दूर रे।
साजे ही मन आराधतां,
च्यारे ही गति देवे चूर रे ॥कुंवर०॥

६— वचन सेवग तणो सांभली,
चिंतवे मेघ कुमार रे।
हूं पण वीर ने वांदसूं,
वेग सजाई करो तयार रे ॥कुंवर०॥

७— वीर वांदण तणो मेघ ने,
ऊठयो है प्रेम अपार रे।
मोटे मंडाने करी नीकल्यो,
चाल्यो मज्झ बाजार रे ॥कुंवर०॥

८— दरसण दीठो श्री वीर नो,
पुण्यवंत हर्षित थाय रे।
त्रण प्रदक्षिणा देई करी,
सनमुख बैठो छे आय रे ॥कुंवर०॥

९— भगवंत देवे हो देशना,
ते सुणजो धरि प्रेम रे।
ए जीव लोह जिम जाणई,
पिण किण विध होवे छे हेम रे ॥कुंवर०॥

दोहा

१— आगार ने अणगार नो, धम ना दोय प्रकार।
चउ-विध धम आराधतां, चउ-गति पामें पार ॥

ढाल ४ राग—नवकार मंत्र नो ध्यान धरो

१— जीवड़ला री आद नहीं कांई,
पुन रे जोग नर-भव पाई।
भमियो जीव आठ करम बाधो,
इम जांणी दया धरम आराधो ॥

२— पाम्यो जीव आरज खेतो,
उत्तम घर जनम लह्यो हेतो।
तोही सेवे पांच परमादो ॥इम०॥

३— आऊखा नो सुणियो मानो,
जिम पाको पीपल-पानो।
पड़तां वार नहीं जादो ॥इम०॥

४— इसड़ो छे ओछो आयू,
ज्यूं ओस खिरे वागे वायू।
तिण में रोग सोग बहु असमाधो ॥इम०॥

५— पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय गयो,
संख्यात असंख्यात काल रयो।
हिवे निगोद रो सुणो संवादो ॥इम०॥

६— जीव हुवो मूलो ने आदो,
घणाजणा सवाद करी खादो।
वनस्पति रा भव वहु लाधो ॥इम०॥

७— पंचेन्द्रिय काय मांय रे फसियो,
उत्कृष्टो सात आठ भव वसियो।
पिंड अशुच उदारिक लोही राधो ॥इम०॥

८— देवता ने नारकी रे हुवो,
सुखियो दुखियो जीव बहु मुवो।
भाख गया देव-देवाधो ॥इम०॥

९— इम रुलियो चउ-गति मांयो,
अब नीठ नीठ नर-भव पायो।
समो एक म करो परमादो ॥इम०॥

१०— कदा च मनुष्य रो भव पामो,
तो कठे आरज क्षेत्र ठामो।
नीचे कुल में जनम लाधो ॥इम०॥

११— आर्य क्षेत्र कुल सुध आयो,
तो पूरी इन्द्रिय जीव नहीं पायो।
हीण-इन्द्रिय दुखां नो दाधो ॥इम०॥

१२— कदाच जो पूरी इन्द्रिय पाई,
तो धर्म सुणवो किहां सुख दाई।
मिथ्या मत्यां नो जोर जादो ॥इम०॥

१३— उत्तम धर्म सुणवो जे रे लह्यो,
पिण सरधा विना जीव यूंही गयो।
काम ने भोग कलण कादो ॥इम०॥

१४— भुगती इण जीव चउरासी,
शुद्ध धर्म करणी सूं मुगति जासी।
नहीं तर सुपनो एक योही लाधो ॥इम०॥

दोहा

१— वाणी सुण ने परिषदा, आई जिण दिश जाय।
'श्रेणिक' नामे नरपति, वांदी वीर ना पाय॥

२— 'मेघ' कुमर तिण अवसरे, जोड़ी दोनूं हाथ।
सर्घ्या रुच्या प्रतीतिया, दीक्षा लेसूं जग-नाथ॥

३— वलता वीर इसी कहे, सुणजो 'मेघ' कुमार।
जो थारो मन वैराग सूं, तो म करो जेज लिगार॥

४— प्रभु प्रणामी घर आयने, वदे मात ना पाय।
हाथ जोड़ ने इम कहे, ते सुणजो चित लाय॥

ढाल ५ राग— सोजत रो सिरदार दामां रो लोभी

१— वाणी श्री जिनराज तणी, काने पड़ी रे माई।
आज अंदर री आंख जामण! म्हारी ऊघड़ी॥

२— बलती बोले मांय, हूं वारी जाऊं तुम तणी!
रे जाया! सुणी जिणंद नी वाण, पुन्याई थारी घणी॥

३— पुत्र कहे माय! बाण, साची मैं सरदही, री माई।
लागी मीठी जेम, दूध शाकर सही॥

४— दीजे अनुमत मोय, दीक्षा लेसूं सही-री माई।
हिवे आज्ञा री जेज, करवी जुगती नहीं॥

५— वचन अपूरव एह, पुत्र ना सांभली-रो माई।
मूर्छागत झट थाय, माता धरणी ढली॥

६— मोह तणे वश आज, सूरती चलती रही रे जाया।
शीतल पवन घाल माता बैठी थई॥

७— पुत्र ने सामी, रही छे जोवती, रे जाया!
मोहतणे वश वेण, बोले माता रोवती॥

८— साधपणो नहीं सहल, जाया! जामण कहे, रे जाया!
तूं नानड़ियो बाल परीषह किम सहे॥

९— त्रिविधे त्रिविधे करी, पंच महाव्रत पालना, रे जाया!
नान्हा मोटा दोष, अहोनिश टालना॥

१०— दोष बेयालिस टाल, करणी रे जाया! गोचरी रे।
भमणो भंवरा जेम, चिंता मोने लोच री॥

११— कनक कचोला छोड, लेणी रे वच्छ काछली, रे जाया!
जावजीव लगे वाट, नहीं जोवणी पाछली॥

१२— न्हावे धोवे नांहि, मुखे राखे मुखपति, जाया!
मेला पेहरे वेश, जिके जैन रा जती॥

१३— ए कायर ने दुर्लभ, माताजी थे कह्यो, री माई।
सूरा ने छे सहल, कुंवर उत्तर दियो॥

१४— जनम मरण री बात, सहु जिणवर कही, री माई।
दो अनुमत आदेश, दीक्षा लेसूं सही॥

१५— पलटे रंग पतंग, जामण! जाणो इसो, री माई।
तिण ऊपर विश्वास, जामण! करणो किसो॥

दोहा

१— माता मुख सूं इम कहे, वात सुणो मुज पूत।
कोड घणे परणावियो, कांई भांजे घर-सूत॥

२— रमण्यां सामो जोइये, ए माता ना वेण।
मोह शब्द बोले घणा, झुरे भर भर नेण॥

३— धन जोवन रांण्या तणो, लाहो लीजे एह।
दिन पाछा पड़ियां पछे, कीजो मन-चिंतेह॥

४— वचन सुणी माता तणा, बोले मेघ-कुमार।
अथिर सुख संसार ना, विणसंता नहीं बार॥

ढाल ६

राग—धन धन सती चंदनबाला

१— वले माता ने कहे एमो,
मोने धर्म तणो आगे प्रेमो।
अब तो जेज नहीं कीजे,
मोने आज आज्ञा जननी दीजे॥

२— संयम दुख रो स्यूं कहेणो,
छेदन भेदन वंदन सहेणो।
नरक तिर्यञ्च दुख सह्या खोजे॥मोने०॥

३— हूं तो जामण! मरण थकी डरियो,
वीरवचन छे रस थी भरियो।
तन धन जोवन आऊ छीजे॥मोने०॥

४— संसार ना सुख सहू काचा,
इणलोक-अर्थी जाणे साचा।
भोग विषय में रह्या कलीजे॥मोने०॥

५— मैं तो जाणी ए काची माया,
विललावे जिम बादल छाया।
ऐसी जाणी कहो कुण रींझे॥मोने०॥

६— सरब संजोग मिलियो आई,
स्वारथ नी जाणो सगाई।
इसो जाणी ने संजम लीजे॥मोने०॥

७— बार बार कहूं हे जननी!
अनुमत री ढील नहीं करणी।
जिम पेट में पडियां पतीजे॥मोने०॥

दोहा

१— वचन सुणी सुत ना इसा, बोले वाणी एम।
मोह छकी माता कहे, ते सुणजो घरि प्रेम॥

२— मरतां ने, जातां थकां, राखी न सके कोय।
पिण जो भाषण काढियो, तो मन डोमो होय॥

ढाल ७ राग—पिताजी बोलो नी एकण बार

१— धीरज जीब धरे नहींजी,
उलट्यो विरह अथाह।
छाती लागी फाटवाजी,
नयणों नीर प्रवाह-रे जाया।
तो विन घड़ी रे छ मास॥

२— कुण कहिस्ये मुज मायड़ीजी,
घड़ी घड़ी ने छेह।
कहसूं केहने नानड़ोजी,
सबल विमासण एह-रे जाया॥तो विन०॥

३— हरखी न दीधो हालरोजी,
वहू नहीं पाड़ी रे पाय।
एक ही पुत्र न जनमियोजी,
हूँस रही मन मांय-रे जाया ।।तो विन०।

४— आंत्र-लुहण तूं माहरेजी,
कालेजा नी कोर।
तुं वच्छ आंधा-लाकड़ीजी,
किम हुवे कठिन कठोर ।।रे जा० तो०।।

५— चढ़ती तुझ मुख जोइवाजी,
दीहाड़ा में दश वार।
ते पिण भूंय भारी हूंसथीजी,
कुण चढसी चउ वार ।।रे जा० तो०।।

६— जो बालापणो संभारस्येजी,
सीयाला नी रे रात।
तो जामण ने छांडवाजी,
सहीय न काढे बात ।।रे जा० तो०।।

७— बूढापे सुखणी हुंस्यूंजी,
होती मोटी रे आस।
घर सूनो करि जाय छे रे,
माता मूकी नीरास ।।रे जा० तो०।।

८— दीसे आज दयामणोजी,
ए ताहरो परिवार।
सेवक ने सामी पखेजी,
अवर कवण आधार ।।रे जा० तो०।।

९— महल कवण रखवालस्येजी,
कवण करसी सार।
एकण जाया वाहिरोजी,
सूनो सहू संसार ।।रे जा० तो०।।

१०— वच्छ ! तूं भोजन ने समे रे,
हिवड़े वेसे सी आंय।

जो माता करि लेखवो रे,
तो तूं छोडि म जाय ॥रे जा० तो०॥

११— शाल तणी पर शालस्ये रे,
ए मुज आही-ठाण।
प्राण हुस्ये हिवे पाहुणाजी,
भावें जाण म जाण ॥रे जा० तो०॥

१२— संयम छे वच्छ ! दोहिलो रे,
जैसी खांडा नी रे धार।
पाय उबराणे चालनो रे,
लेवो शुद्ध आहार ॥रे जा० तो०॥

१३— सुवचन कुवचन लोक ना रे,
खमणा पड़सी रे कमार !।
तूं राजकुंवर सुकुमार छे रे,
देह री न करणी सार ॥ रे जा० तो०॥

१४— उत्तर परोत्तर किया घणा रे,
बाप बेटा ने माथ।
सूत्र में विस्तार छे रे,
लीजो चतुर लगाय ॥रे जा० तो०॥

१५— हितसूं दीधी आगन्याजी,
मात-पिता चित लाय।
राण्यां बोले किण विधेजी,
ते सुणजो चित लाय ॥रे जा० तो०॥

दोहा

१— सासूजी थाका सही, हिव आपण नी बार।
हाथ जोड़ राण्यां सहू, बोले वचन विचार॥

२— कहिवो उबरस्ये जिकुं, जाणां छां निरधार।
तिण इण अवसर नारी ने, कहिवा नो व्यवहार॥

ढाल ८ राग—राजेसर रावण हो बोलोनी

१— सुंदर आठे मुलकंती, ऊभी महलां रे मांह।
इण उणिहारे लोयणां, निरखो नवला नाह।।
रहो रहो बालहा विछड़ो क्यूं इण बार।।

२— दूजा तो सगला रह्या, मुख बोलो मीठा बोल।
कांई ठेलो पगसूं परी, बात कहो मन खोल।।रहो०।।

३— सुंदर मंदिर मालिया, मुलकंती नेह-विलुद्ध।
पूरे हाथे पूजियो, परमेश्वर मन-शुद्ध।।रहो०।।

४— आगोत्तर सुख कारणे,छत्ती रिध छोडो आवास।
हाथ छोडी कुण करे, पेट मांहिली आस।।रहो०।।

५— पदमणी-परिमल पाम ने, भोगी भ्रमर नाह!
सुख विलसो मोसुं वालहा! लीजे जोवन-लाह।।रहो०।।

६— कुंवर कहे श्री वीर नी, बाणी सुणी कान।
तन धन चंचल आउखो, जैसो पीपल-पान।।
रहो रहो कामणी अमें लेस्यां संयम-भार।।

७— अलप सुख ससार ना कुण वांछे काम-भोग।
कड़वा फल किंपाक सा, बहुला रोग ने सोग।।रहो०।।

८— पोखे प्रेम स्वारथ लगे, अथिर अबला नो संग।
च्यार दिहाड़ा उहड़ है, जम कसूंभा नो रंग।।रहो०।।

दोहा

१— ए जुग जाणी कारमो, लेस्यां संयम भार।
वचन सुणी प्रीतम तणा, बले बोले आठे नार।।

ढाल ९ राग—भाग्य प्रबल नृप चंदनो रे

१— सुंदर आठ वीनवे रे,
कोई अवगुण मो में दीठ रे।
कहीने देखावो कंता! मो भणी रे,
वोलो बाणी मीठ रे।।

२— कामण कंत ने बीनवे रे,
सांभलो नणदी रा वीर रे।
पलक घड़ी देखां नहीं रे,
तो व्यापे बहुली पीड़ रे ।।कामण०।।

३— ए मंदिर मालिया रे,
ए सुकमाली सेज रे।
कुंकुम वरणी मां सुंदरी रे,
मति मूको अवलासूं हेज रे ।।कामण०।।

४— कह्यो कदे न थांरो लोपियो रे,
जोड़ खड़ी रहती हाथ रे।
थां करड़ी नजर कदे न जोवता रे,
इसड़ी कदे न काढ़ी बात रे ।।कामण०।।

५— थे तो दीक्षा ना वाल्हा उठिया रे,
छोडी म्हासूं प्यार रे।
प्राण-वल्लभ ! प्रीतम ! तो विना रे,
मो अवला ने कोण आधार रे ।।कामण०।।

६— जो हेज थांरो, मो सूं घणो रे,
आंसूं नाखो केम रे।
थेई दीक्षा जो आदरो रे,
तो जाणूं साचो थांरो प्रेम रे ।।कामण०।।

७— ए वचन सुण बोली नहीं रे,
तव जाण्यो मेघ कुमार रे।
आप स्वारथ री कामणी रे,
विण स्वारथ कुण होवे लार ।।कामण०।।

दोहा

१— कुंवर कहे सुन्दर सुणो, अमे लेवां छां दीख।
पाछे रूड़ा चालिजो, एह हमारी सीख ।।

२— सासुजी रा हुकम में, रहिजो कुल-आचार।
पीहर सासरे तुम सही, लीजो शोभा सार ।।

३— दीक्षा महोच्छव हर्ष सूं, करे श्रेणिक महाराय।
आठ राण्यां रो लाडलो, धन धन मेघकुमार ॥
४— दीक्षा ले त्यारी हुवो, मन में हर्ष अपार।
हियो कायर रो थरहरे, ते सुणजो चित लाय ॥

ढाल १० राग—बे बे तो मुनिवर वहरण पांगुरिया रे

१— मोटी वणाई इक शीविका रे,
माहे बेठो छे मेघ-कुमार रे।
माता रो हिवड़ो फाटे अति घणो रे,
विल विल कर रही आठे नार रे ॥
जोयजो कायर रो हीयो थर हरे रे ॥
२— संयम लेवा घर सूं नीसर्यो रे,
जिम रण मांहे निकसे सूर वीर रे।
वाजित्र बाजे शब्द सुहावणा रे,
कायर इण वेला होवे दलगीर रे ॥जो०॥
३— कोईक कामण मुख सूं इम कहे रे,
दीसे नान्हड़ियो सुकमाल रे।
कुटुंब कबीलो किण विध छोडियो रे,
किण विध तोडयो माया जाल रे ॥जो०॥
४— एक कहे बारी जाऊं एहनी रे,
इण वैरागे छोडयो घर-सूत रे।
जोबन वय में सुन्दर परहरी रे,
राजा 'श्रेणिक-धारिणी' के रो पूत रे
जोइजो समकितनो रस परगम्यो रे ॥
५— पडदायत नारी मंदिर मालिये रे,
जोवे जाल्यां में मूंडो घाल रे।
सुंदर कमलां री केल री कांब ज्यूं,
देखो पापी मूके छे आठे बाल रे ॥जो०॥
६— धरम रा वेखी घेटा इम कहे रे,
बोले मूंडे सूं खोटी वाण रे।

रिध संपदा रमणी पामी अति घणी रे,
पिण परमेसर नहीं देवे खाण रे ।।जो०।।

७— बाई कोई परणी जावे सासरे रे,
मझनो गावे संसार नो माग रे।
ज्यूं काचे हिये रा मानव झूरे घणा रे,
नहीं धर्म उपर तेहनो राग रे ।।जो०।।

८— एक एक बोले इण परे रे,
धन धन इण कुंवर तणो अवतार रे।
मूकी इण काया माया कारमी रे,
आप तिरसी ने ओरां ने तार रे ।।जो०।।

९— इण राणी इंद्राणी सम छोड दी रे,
वले भाई सजन मायने बाप रे,
नरक दुखां सूं इण बीहते रे.
जिम कांचली छोडे सांप रे ।।जो०।।

१०— कोइक भुरखी नाखी इम कहे रे,
बोले ज्यूं मनरी आवे दाय रे।
ज्ञानी तो जाणे गेला सारखा रे,
ए खूत माखी ज्यूं खेल मांय रे ।।जो०।।

११— चारण भाट बोले विरुदावली रे,
जय जय बोले शब्द कर घोष रे।
कर्म आठे ही वेरी जीतने रे,
वेगी थे लीजो अविचल मोख रे ।।जो०।।

दोहा

१— नगर बीच हो नीकल्या, गया वीर जिणंद रे पास।
वंदणा करी कर जोड़ ने, कहे तारो भवजल तास ।।

२— मूंडे सोली चढ़ रही, जाणे वरत्या मंगल-माल।
गहणा उतारे डील थी, हुवो वेराग में लाल ।।

ढाल ११ राग—सहेल्यां ए आंबो मोरियो

१— कुंवरजी गहणा उतारिया,
माता खोला मांहे लीधा रे।
सर्प बिच्छू अलगा करे,
जिम कुंवर परा नाख दीधा रे।
वैरागी हो संयम आदरे ॥

२— माता देखे बेटा भणी,
जिम जागे मोह अपारो रे।
ठलक ठलक आंसू पड़े,
जाणे तूट्यो मोत्यां रो हारो रे ॥वैरागी०॥

३— प्रभुजी सूं करे वीनती,
जोड़ी दोनूं हाथो जी।
माहरो कुंवर वीहनो संसार थी,
थांने सूंपूं कृपानाथो जी ॥वैरागी०॥

४— मोने इष्ट ने कांत बालो हुंतो,
हूं देखी ने पामती साता रे।
पिण माहरो राख्यो नां रहे,
इण विध बोले माता रे ॥वैरागी०॥

५— एहनी सार संभार कीजो घणी,
मायड़ी इण पर दाखे रे।
कुंवर आगे हिवे आयने,
देखो किण विध माता भाखे रे ॥वैरागी०॥

६— बेटा सूरपणे व्रत आदरे,
तो सूरपणेहीज पाले रे।
सयम चोखो पालने,
दोनूं कुल उजवाले रे ॥वैरागी०॥

७— मोने तो सेवाणी तमे,
अब तो क्रिया करायो रे।
लीजो पदवी शिवपुर तणी,
कांई दूजी म रोवाये मायो रे ॥वैरागी०॥

८— आठ नारी ने मायड़ी,
बाप बांधव ने परिवारो रे।
सहू आंख्या नीझरणा नांखता,
पाछा आया घर मझारो रे॥वैरागी०॥

दोहा

१— धारिणी घर में आय ने, झुरे आठे ही नार।
मेहलां में कुंवर दीसे नहीं, रोवे बारम्बार॥

ढाल १२

राग—संयम थी सुख

१— मेघ-कुंवर संयम लियो, छोड्यो माया जाल-मुनीसर।
साधां री रीत हुती जिका, साचवे कालो-काल-मुनीसर॥
जोयजो गति कर्मां तणी॥

२— संथारो कियो सांझरो, 'मेघ' रिखि तिणवार-मुनीसर।
साध घणा प्रभुजी कने, तिण सूं आयो छेहलो संथार॥मु०जो०॥

३— विनय मार्ग जिनधर्म छे, राव रंक रो कारण नहीं कोई-मुनी०।
आप सूं पहलां नीकल्या, ते मुनिवर बडा होई॥मुनी० जो०॥

४— वैरागे राज छोड ने, हुवो नव-दीक्षित अणगार-मुनीसर।
उण दिनरो थो नीकल्यो, तिण सूं चित्त चले संयम वार॥मु०जो०॥

दोहा

१— सिख हुवो श्री वीर नो, आणी वैराग भाव।
कर्मां रे वश साधुजी, हुवे करे पिछताव॥

ढाल १३

राग—मान न कीजे रे मानवी

१— कोई परठन जावेजी मातरो,
रात तणे समय मांयजी।
किण री ठोकर लागवं,
कोई ऊपर पड़ी जायजी॥
मेघ रिखी मन चिंतवे॥

२— कोई लेवा जावेजी वांचणी,
पग तले आंगुली आयजी।
पगनी रज पड़े साथ रे,
अरति आई मन मांयजी ॥मेंघ०॥

३— कठे प्रीत साधां तणी,
कठे राण्या रो हेजजी।
अठे धरती सोवणो,
कठे सुंवाली सेजजी ॥मेघ०॥

४— अठे काठ पातरा,
कठे सोना रा थालजी।
अठे मांग ने खावणो,
कठे घर रा चावल दालजी ॥मेघ०॥

५— जदि हूं घर में हुंतो,
म्हारे माथे हुंती पागजी।
एहिज साधु बुलावता,
धरता मोसूं रागजी ॥मेघ०॥

६— आगे साधुजी और था,
अवे हो गया और जी।
मैं तो माथो मुंडायने,
वडो पसायो जोरजी ॥मेघ०॥

७— हूं राजा श्रेणिक रो दीकरो,
म्हारे कुमी नहीं थी कांयजी।
पिण यांतो माथो मूंड ने,
घाल्यो खोगी री भरती मांयजी ॥मेघ०॥

८— रात हुई षट मासनी,
चिंतवे मनरे मांय जी।
दुख रा दाधा मांणसा,
यम-वारो किम जायजी ॥मेघ०॥

९— आवण जावण ऊठणो,
साधां मांडी ठेलम ठेलजी।

आखो राती मैं नहीं सक्यो,
आंख्या दोनूं मेल जी ।।मेघ०।।

ढाल १४

राग—काची कलियां

१— कोई चांपे सांथरो रे हां, कोई संघटे अणगार ।
मेघ मुनीसरू ।।
कोइक छांटे रेणुका रे हां, चिंतवे मेघ कुमार—मेघ० ।।

२— कोइक ढाले मातरो रे हां, कोइक अंग ठपंग—मेघ० ।
खेद पामे तिण अवसरे हां, चारित्र सूं मन भंग—मेघ० ।।

३— राज ने रिध रमणी तजी रे हां, स्वरूप बहुला दाम—मेघ० ।
परवश पड़ियो आयने रे हां, किम सुधरसी काम—मेघ० ।।

४— कुटुम्ब न्यातिला माहरा रे हां, धरता मोसूं प्रीत—मेघ० ।
खमा खमा करता सदा रे हां, ते पाछे रही रीत—मेघ० ।।

५— किहां प्रमदानी प्रीतड़ी रे हां, किहां साधु नी रीत—मेघ० ।
किहां मंदिर ने मालिया रे हां, किहां सुन्दर ना गीत—मेघ० ।।

६— किहां फूल किहां कांकरा रे हां, किहां चंदन किहाँ लोच—मेघ० ।
पूरब भोग संभार तो रे हां, मेघ करे मन सोच—मेघ० ।।

७— मेघ मुनि कोपे चढ्योरे हां, चिंतवे मन में एम—मेघ० ।
लट पट करी दीक्षा दीवी रे हां, अबे करे छे केम—मेघ० ।।

८— परीसा चीतारे घणा रे हां, आया कायर भाव—मेघ० ।
जोग भागो संयम थकी रे हां, सीदावे मन मांय—मेघ० ।।

९— अजे कांई विगड्यो नहीं रे हां, पहली रात विचार—मेघ० ।
मन मान्यो करूं माहरो रे हां, एतो छे व्यवहार—मेघ० ।।

१०— मैं कांई न लीधो वीर नो रे हां, मैं नवि खाधो आहार—मेघ० ।
झोली पातरा सूंपने रे हां, जास्यूं राज मझार—मेघ० ।।

दोहा

१— चारित्र थी चित्त चल गयो, मन में थयो संताप ।
घरे जावण रो मन हुवो, इसो उगटियो पाप ।।

२— चंदन अगर ने गंधवती, लेप लगाऊं अंग।
क्रीड़ा करूं संसार में, नाटक नव नव रंग॥
३— लोक-व्यवहार राखण भणी, वीर समीपे जाय।
पूछण री विरिया हुई, तरे लाज आई मन मांय॥

ढाल १५ राग—कोयल पर्वत धूंधलो रे

१— प्रभात समे उतावलो रे,
मेघ आयो वीर जिणंदजी रे पास हो—मुनीसर।
पडि-कमणो पिण नवि कियो रे,
मेघ ऊभो चित्त उदास हो—मुनीसर।
वीर जिणंद बुलावियो रे मेघ!
२— श्रेणिक नो तूं दीकरो रे, मेघ!
धारिणी माता थाय हो—मुनीसर।
संयम थी मन ऊतर्यो रे, मेघ!
थारे कास्यूं आई दिल मांय हो—मुनीसर॥वीर०॥
३— संयम-दुखां सूं बीहतो रे, मेघ!
ते आण्यो कायर-भाव हो—मुनीसर।
मन में सिदायो अति घणो रे, मेघ!
ते लाधो नहीं तिणरो साव हो—मुनीसर॥वीर०॥
४— छोडी थे माया काया कारमी रे, मेघ!
वले पाछो मती निहाल हो—मुनीसर।
ओ तो दुःख तू स्यूं गणे रे मेघ!
पूरव भव संभाल हो—मुनीसर! ॥वीर०॥
५— तिहां थी मरने ऊपनो रे मेघ!
श्रेणिक-घर अवतार हो—मुनीसर!
पहिले भव हाथी हुतो रे मेघ!
हथणियां रो भरतार हो—मुनीसर॥वीर०॥
६— नरक तिर्यंच में तूं भम्यो रे मेघ।
सह्या दुःख अघोर हो—मुनीसर।
सगली जायगा ऊपनो रे मेघ!
खाली न रही कोई ठोर हो—मुनीसर॥वीर०॥

७— भव अनंतां भमता थकां रे मेघ !
लाधो नर अवतार हो – मुनीसर ।
नर-भव चिंतामणि सारिखो रे मेघ !
एले जनम मति हार हो—मुनीसर ॥वीर०॥

८— एतो दुख जाणो मती रे मेघ !
रहे तूं मन सूं सधीर हो–मुनीसर ।
संसार समुद्र तीरे पामियो रे मेघ !
जेज म करि बैठो तीर हो–मुनीसर ॥वीर०॥

६— [सातमो सुख चक्रवर्ती तणो रे मेघ !
आठमो देव–विमाण हो–मुनीसर ।
नवमो सुख साधां तणो रे मेघ !
दशमो सुख निर्वाण हो–मुनीसर ॥वीर०॥

१०— पूर्व भव दुख सांभल्यो रे मेघ !
हाथी रो भव जाण हो–मुनीसर ।
पूरब–भव संभारतो रे मेघ !
उपनो जाति–स्मरण ज्ञान हो—मुनी० । वीर०॥

११— याद आयो भव पाछलो रे मेघ !
चमक्यो चित्त मझार हो–मुनीसर ।
जनम मरण सूं थर हर्यो रे मेघ !
पाछो हुवो सुरति संभार हो–मुनीसर ॥वीर०॥

दोहा

१— भागो थो पिण बावड्यो, वीर लियो समझाय ।
ज्यूं खुरड़ री खाधी बाजरी, मेह हुवां बूंटो बंधाय ॥

२— पाके खेत रा मानवी, करे घणा जतन ।
ज्यूं 'मेघ' मुनि संयम तणा, करे कोड़ जतन ॥

३— संयम अमोलक ते कह्यो, भांजे भव भव रा दुःख ।
शिव-रमणी वेगी वरे, जावे सगला दुःख ॥

४— कारमा खेत संसार ना, किण विध जावे भूक ।
मेह तणो कसर रहे, तो ऊभा जावे सूक ॥

५— पड़तो थो जिम टापरो, दीधी थूंणी लगाय ।
तिम 'मेघ' संयम थी डिग्यो, पिण वीर दिधो सहाय ॥

ढाल १६

राग—पत्तनी

१— 'मेघ' ने वीर समझायो,
तरे धरम अमोलक पायो।
वले शंका न राखी कायो,
ए परमार्थ साचो पायो ॥

२— इण रे मन में इसड़ी आई,
पिण वीर हुवा रे सहाई।
इण रा परिणाम हुवा था खोटा,
पिण वाहरू मिलिया मोटा ॥

३— परिणामों में पड़ियो फेर,
पिण वीरजी लीधो घेर।
वले दीक्षा लीधी तिण वार,
मन में हर्ष हुवो अपार ॥

४— मन ठिकाणे दियो आण,
भगवन्त बोले बाण।
दोय नेणां री करसी सार,
और डील साधां ने त्यार ॥

५— घणा काल संयम पाली,
तिण आतम ने उजवाली।
मन वैराग तिहां वाली,
तप कर देही गाली ॥

६— चढयो पर्वत ऊपर सार,
कियो पादोपगमन संथार।
तिहां थी कीनो मुनि काल,
पहोतो विजय विमाण रसाल ॥

७— देव नीं थित पूरी करसी,
महाविदेह में अवतरसी।
तिहां भरिया घणा भंडार,
माय बाप कुटुम्ब परिवार॥

८— जठे धरम ज्ञानी रो पासी,
वठे आठे ही करम खपासी।
जठे केवल ज्ञान उपासी,
एतो मुगति नगर में जासी॥

९— जनम मरण रो करसी अंत,
लेसी सासता सुख अनन्त।
सूत्र ज्ञाता तणे अनुसार,
रिख 'जयमलजी' कह्यो विस्तार॥

स्कंदक ऋषि

दोहा

१— मोह-तणां वश मानवी, हासो कितोल कराय ।
कर्म कठण बांधे जीवड़ो, तीनूं वय रे मांय ॥

२— वैर पुराणो नहि हुवे, जोवो हिये विचार ।
काचर ने 'खंदक' तणो, भविक सुणो विस्तार ॥

३— क्षमा कियां सुख ऊपजे, क्रोध कियां दुख होय ।
क्षमा करी खंदक ऋषि, सुगति गयो शुद्ध होय ॥

ढाल १ राग—मुनीसर जै जै गुण भंडार

१— नमूं वीर शासन धणीजी, गणधर गोतम साम ।
कथा अनुसारे गावसूं जी, 'खंदक' ना गुण-ग्राम ॥

२— क्षमावंत जोय भगवंत नो जी ज्ञान ।
अंत क्षमा अधिकी कही जी, रह्या धर्म ने ध्यान ॥क्षमा०॥

३— त्वचा उतारी देहनी जी, राख्या समताजी भाव ।
जिन-धर्म कीधो दीपतो जी, मोटा अटलक राव ॥क्षमा०॥

४— 'सावत्थी' नगरी शोभती जी, 'कनक--केतु' जिहां भूप ।
राणी 'मलयासुन्दरी' जी, 'खंदक' कुंवर अनूप ॥क्षमा०॥

५— सगला अंगज सुंदरू जी, इन्द्रिय नहीं कोई हीण ।
प्रथम वय चढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण ॥क्षमा०॥

६— 'विजयसेन' गुरू पांगुर्या जी, साधां रे परिवार ।
ज्ञान गुणे कर आगला जी, तपसी पार न पार ॥क्षमा०॥

७— नर नारी ने हुवो घणो जी, साध--वांदण री जी कोड ।
कोई पाला केई पालखी जी, चाल्या होडाहोड ॥क्षमा०॥

८— खंदक कुंवर पिण आवियो जी, बैठो परिषदा मांय ।
मुनिवर दीधी देशना जी, सगलां ने चित्त लाय ॥क्षमा०॥

९— आगार ने अणगारनो जी, धर्म तणा दोय भेद ।
समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति—उम्मेद ॥क्षमा०॥

१०—डाभ-अणी-जल-विन्दवो जी, पाको पीपल-पान ।
अथिर तन धन आउखो जी, तजो कपट ने मान ॥क्षमा०॥

११—पेहड़े सुत ने बंधवा जी, पेहड़े स्वजन परिवार ।
धन ने कुटुम्ब पेहड़े सहू जी, न पेहड़े धर्म सार ॥क्षमा०।

१२—आयो छे जीव एकलो जी, जासी एकाजी एक ।
भोले को मती भूलजो जी, कुटुम्ब कबीलो देख ।क्षमा०॥

१३—पुन जोगे नर-भव लह्यो जी, सदगुरू नो संजोग ।
पाछ हिवे राखो मती जी, तजो जहर जिम भोग ॥क्षमा०॥

१४—ओछा जीवित कारणे जी, स्यूं दो ऊंडी थे रांग ।
भव भव मांहे काढिया जी, नटवे--वाला सांग ॥क्षमा०॥

१५—च्यार गति संसार मां जी, लग रही खांचा जी ताण ।
अथिर वस्तु सगली कही जी, निश्चल छे निर्वाण ॥क्षमा०॥

१६—अथिर सुख संसार ना जी, कांय अलूजो जी जाल ।
वचन सुणो सत गुरू तणा जी, चेतो सुरती संभाल ॥क्षमा०॥

दोहा

१— मुनिवर परिषदा आगले, दाखे धर्म सुजाण ।
राजा कुंवरजी आद दे, निसुणे सतगुरु-वाण ॥

२— आदि अनादि जीवड़ो, रुलियो चऊ गति मांय ।
धर्म बिना ए जीव की, गरज सरी नहीं काय ॥

३— धर्म करो भवि--प्राणिया ! दे सतगुरु उपदेश ।
साधु--श्रावक--व्रत आदरो, राखो दया नी रेस ॥

ढाल २ राग—जी हो मिथिला पुरी नो राजियो

१— जीहो काया माया कारमी,
जीहो जेसो सुपनो रेण।
जीहो-विणसंतां देर लागे नहीं,
जीहो मानो सतगुरु—वेण॥

२— चतुर नर चेतो,
अवसर एह।
जीहो दान शील तप भावना,
जीहो राचो रूड़े नेह ॥चतुर०॥

३— जीहो धन धान घर हाटनी,
जीहो म करो ममता कोय।
जीहो काचा सुखां रे कारणे,
जीहो हीरा-जनम मति खोय ।·चतुर०॥

४— जीहो पांच महाव्रत आदरो,
जीहो श्रावक ना व्रत बार।
जीहो कष्ट पड्यां सेंठा रहो,
जीहो ज्यूं हुवे खेवो पार ॥चतुर०॥

५— जीहो सगपण सहू संसार ना,
जीहो स्वारथ ना छे एह।
जीहो जो स्वारथ पूगे नहीं,
जीहो तड़के तोड़े नेह ॥चतुर०।

६— जीहो सगपण इण संसार ना,
जीहो थया अनंती वार।
जीहो मिल मिल ने वले वीछड़े,
जीहो कर्म लगावे लार ॥चतुर०॥

७— जीहो नरक निगोद मां ऊपनो,
जीहो छेदन भेदन मार।
जीहो तो पिण धेठा जीव ने,
जीहो नहीं आवे लाज लिगार ॥चतुर०॥

८— जीहो वेदना नरक में सासती,
जीहो जरा तापसी खेद।
जीहो वेदना दश प्रकार नी,
जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद ।।चतुर०।।

९— जीहो मारां पल सागर तणी,
जीहो सुणतां थरहरे काय।
जीहो तो पिण घेठा जीव ने,
जीहो धर्म न आवे दाय ।।चतुर०।।

१०— जीहो ठग बाजी मांडे घणी,
जीहो चाडी चुगली खाय।
जीहो कर्म उदय आयां थकां,
जीहो पछे पछतावे मन माय ।।चतुर०।।

११— जीहो ऐसा दुखां सुं डरपने,
जीहो चेतो चतुर सुजाण।
जीहो ज्ञानादिक आराध ने,
जीहो लेवो पद निर्वाण ।।चतुर०।।

१२— जीहो दिल में दया विचार ने,
जीहो छोड़ो खांचा—ताण।
जीहो ज्ञान सहित तप आदरो,
जीहो ए जीतां रा डाण ।।चतुर०।।

१३— जीहो उपशम मन मां आण ने,
जीहो चेतो बहती बार।
जीहो रिख 'जयमलजी' इम कहे,
जीहो उतर्या चाहो पार ।।चतुर०।।

दोहा

१— परिषदा सुण राजी थई, समकित देश-व्रती थाय।
निज सगती के सम करी, आया जिण दिश जाय ।।

२— वाणी सुण सतगुरू तणी, कुमर जोड़या दोनूं हाथ।
वचन तुम्हारा सरदह्या, रूड़ा कह्या! कृपानाथ! ।।

३— मात पिता ने पूछ ने, लेसूं संजम—भार।
वलि ते मुनिवर इम कहे, म करो ढील लिगार।।

४— चरण कमल प्रणमी करी, खंदक नामे कुमार।
संजम लेवा ऊमह्यो, बीहनो भव-भ्रमण संसार।।

ढाल ३ राग—मरणो दोरो संसार मां

१— कुंवर कहे माता सुणो, दीजे मुज आदेश।
संजम ले होसूं सुखी, काटण करम—कलेश।।

२— अनुमति दीजे मोरी मातजी, ए संसार असार।
जनम मरण दुख मेटवा, चारित्र लेऊं इण वार।।अनु०।।

३— वचन सुनी सुत ना इसा, धरणी ढली छे माय।
सावचेत थई इम कहे, एसी मती काढो वाय।।अनु०।।

४— झुलक झुलक माता रोवतो, कुंवर सामो रही जोय।
ए सुरती जाया ! ताहरी, ऊंबर फूल ज्यूं होय।।अनु०।।

५— संजम छे वछ ! दोहिलो, जैसी खांडा नी धार।
पाय उवहाणो चालणो, लेवो शुद्धज आहार।।अनु०।।

वछ ! दूकर व्रत पालना।

६— हिंसा न करणी जीवरी, तजवो मृषा-वाद।
अणदीधी वस्तु लेवी नहीं, तजणा सरस सवाद।।वछ०।।

७— घोर ब्रह्मचर्य पालवो, तजवो नारी नो संग।
मन वचन काया करी, व्रत पालणा इक रंग।।वछ०।।

८— परिग्रहो नहीं राखवो, त्रि-विधे त्रि-करण त्याग।
रयणी-भोजन परिहरे, ते सांचो वैराग।।वछ०।।

९— मैला लूगड़ा राखवा, करवो नहीं सिनान।
बावीस परीसा जीतणा, रहणो रूड़े ध्यान।।वछ०।।

१०— सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-भार।
राज कुंवर सुकुमाल छे, करवी न देह री सार।।वछ०।।

११— केई कहे पूज पधारिया, देवे आदर मान।
केई कहे मोडा ! क्यूं आवियो, बोले कड़वी वाण।।वछ०।।

१२— ए परीसा सहणा दोहिला, कहू छूं बारंबार।
सुख भोगव संसार ना, पछे लीजो संजम–भार ॥वछ०॥

दोहा

१— कुंवर कहे माता सुणो, तुम्हे कह्यो ते सत्त।
सुख चाहे इह लोग ना, तेह ने दोरो चरित्त ॥

२— अथिर संसार नी साहिबी, जातां न लागे बार।
आज्ञा दे राजी थई, होसूं शुद्ध अणगार ॥

३— उत्तर प्रत्युत्तर किया घणा, बाप बेटा ने मांय।
सूत्र मांहे विस्तार छे, दीजो चतुर लगाय ॥

४— माता मन मां जाणियो, राख्यो न रहे कुमार।
दीक्षा ए लेसी सही, इण मां फेर न फार ॥

ढाल ४

राग—सहेल्यां ए आंबो मोरियो

१— अनुमति देवे माय रोवती, तुज ने थावो कल्याणो रे।
सफल थावो तुम आसड़ी, संजम चढ़ज्यो परिणामो रे ॥

२— महोच्छव जमाली नी परे, करि मोटे मंडाणो रे।
शीविका मां बेसाण ने, दाखे जे जे वाणो रे ॥अनु०॥

३— हिवे कुंवर तणा वांछित फल्या, हरख्यो चित्त मझारो रे।
आव्या जिहां मुनिवर अछे, साथे बहु परिवारो रे ॥अनु०॥

४— इष्ट ने कांत बाल्हो हुंतो, सामी ! माहरो पूत्तो जी।
डरियो जनम मरण सूं, करसी करणी करतूतो जी ॥अनु०॥

५— 'मलयासुन्दरी' कहे मुनि भणी, अरज करूं कर जोड़ो जी।
जालवजो रूड़ी परे, सूंपी कलेजा नी कोरो जी ॥अनु०॥

६— तप करतां ने वार जो, भूखा नी करजो सारो जी।
दुख जमवारे जाण्यो नहीं, सतगुरू ने अवतारो जी ॥अनु०॥

७— माहरे आथी पोथी हुंती, दीधी तमारे हाथो जी।
जिम जाणो तिम राख जो, व्हाली माहरी आथो जी ॥अनु०॥

८— तब कुंवर कहे प्रणमी करी, तारो मोने कृपालो जी।
तब गुरु व्रत उचराविया, थया छकाया ना दयालो जी ॥अनु०॥

९— सूरत देख कुंवर तणी, ऊठी मोह नी झालो जी।
प्रेम तणे वश मायड़ी, विलवे सा असरालो जी ॥अनु०॥

१०— ठलक ठलक आंसू पड़े, जाणे तूट्यो'मोत्यां रो हारो जी।
कुंवर कने माता आय ने, भाखे वचन उदारो जी ॥अनु०॥

११— सिंह नी परे व्रत आदरी, पालो सिंहज जेमो रे।
करणी कीजे रे जाया निर्मली, लीजे शिवपुर खेमो रे ॥अनु०॥

दोहा

१— इम सिखावण देई करी, आया जिण दिश जाय।
कुंवर खंदक दीक्षा ग्रही, मन मां हर्षित थाय ॥

ढाल ५

राग—मुनीसर जै जै गुणभंडार

१— खंदक संयम आदर्यो जी, छोडी ऋध परिवार।
निज आतम ने तारवा जी, पाले निरतिचार ॥

२— मुनीसर धन धन तुम अणगार।
नाम लियां पातिक टले जी, सफल हुवे अवतार ॥मुनी०॥

३— पांचे इन्द्रिय वश करी जी, टाले च्यार कषाय।
पांच समिति तीन गुप्तिने जी, राखे रूड़ी ऋषि-राय ॥मुनी०॥

४— संयम पाले निरमलो जी, सूत्र अर्थ लीधा धार।
जिनकल्पी पणे आदर्यो जी, एकल-पण अणगार ॥मुनी०॥

५— मलिया-सुंदरी कहे रायने जी, ए नानड़ियो जी बाल।
सिंहादिक नो भय करी जी, राखो तुमे रखवाल ॥मुनी०॥

६— पांच से जोध बुलायने जी, दिया कुंवर ने जी लार।
साधु ने खबर कांई नहीं जी, माथे वहे सिरदार ॥मुनी०॥

७— सावत्थी नगरी सूं चालिया जी, कुंती नगरी जी जाय।
नगरी वहनोई तणी जी, शंक न राखी काय ॥मुनी०॥

८— पांचमी ढाल मां एतलो जी, ऋषि 'जयमलजी' कहे एम।
आगे निरणो सांभलो जी, सहे परीसो केम ।।मनी०।।

दोहा

१— पांचसे ही इण अवसरे, लाग्या खावा पीवा काज।
वलो वलि चलता रह्या, एकला रह्या ऋषि-राज।

२— हिवे किम ऊठे गोचरी, उपसर्ग उपजे केम।
एक-मना थई सांभलो, अडिग रह्या ऋषि जेम।।

ढाल ६

राग—आषाढ़भूत अणगार

१— तिण अवसर मुनिराय,
कुंती नगरी के मांय, सुकोमल साध।
बिरहण विरिया पांगुर्या ए।।

२— बाजे लूहा - जाल,
दाझे पग सुकुमाल, सुकोमल साध।
तीजा पोहर नी गोचरी ए।।

३— झोली पातरा हाथ,
पसीने भीनो गात, सुकोमल साध।।
दो पहरां रे तावड़े ए।।

४— निरमोही निरमाय,
ईर्या जोवता जाय, सुकोमल साध।
गऊ तणी परे गोचरी ए।।

५— सुसता उतावल नांहि,
धीरज धरे मन मांहि, सुकोमल साध।
गयवर नी परे मालतो ए।।

६— राय राणी तिण वार,

७— पड़िया राणी री फेंट,
खंदक महलाँ हेट, सुकोमल साध।
एसो हुंतो मुज बंधवो ए॥

८— चीता आय गयो पीर,
नेणां में छूटो नीर, सुकोमल साध।
विरह व्याप्यो ने चिंता थई ए॥

९— राजा साह्मो जोय,
आ राणी इम किम रोय, सुकोमल साध।
सुख माँहि दुख किम हुवो ए॥

१०— साधु ने जाता देख,
राजा ने जाग्यो धेख, सुकोमल साध।
एह कर्म मोडे किया ए॥

११— राणी हुँती सुख मांय,
रोवाणी इण आय, सुकोमल साध।
खबर हमें मोडा तणी ए॥

१२— राजा नफर बुलाय,
जावो थे बेगा धाय, सुकोमल साध।
इण मोडाने पकड़ो जायने ए॥

१३— राजा विचारी गेर,
जाग्यो पूर्वलो वैर, सुकोमल साध।
पाछलो भव काचर तणो ए।

१४— माठी विचारी मन मांय,
इण ने मसाण भोम ले जाय, सुकोमल साध।
त्वचा उतारो देहनी ए॥

१५— मति करजो कांई काण,
इण ने ले जावो मसाण, सुकोमल साध।
सगली खाल उतारजो ए॥

१६— नफर सुणी इम वाण,
कर लीधी प्रमाण, सुकोमल साध।
अजाण थका जायने ए॥

१७— पकड्या मुनि ना हाथ,
थाने मसाण भोम ले जात, सुकोमल साध।
नफर कहे कर जोड़नें ए।

१८— कहे मोने तो खबर न काय,
फुरमायो महाराय, सुकोमल साध।
खाल उतारो देहनी ए॥

१९— तिणसूं माहरो नहीं दोष,
मुनि! मति करजो रोष, सुकोमल साध।
डरप्या, रखे बाल भस्मी करे ए॥

२०— कठण आण बण्यो काम,
तोही न कह्यो आपणो नाम, सुकोमल साध।
सगपण कोई दाख्यो नहीं ए॥

२१— मसाण भोमका ने मांय,
काया दीवी बोसिराय, सुकोमल साध।
आहार च्यारूं त्यागन किया ए॥

२२— राख्या समता—भाव,
संयम ऊपर चाव, सुकोमल साध।
मन-कर ने चलिया नहीं ए॥

२३— तीखी पाछणा नी धार,
मस्तक ऊपर फार, सुकोमल साध।
त्वचा उतारी देहनी ए॥

२४— पगां सुधी खाल,
तोही रह्या संयम मां लाल, सुकोमल साध।
नाकेई सल घाल्यो नहीं ए॥

२५— रह्या रूड़े ध्यान,
पाम्या केवल ज्ञान, सुकोमल साध।
कर्म खपाय मुगते गया ए॥

२६— केवल महिमा होय,
धन धन करे सउ कोय, सुकोमल साध।
जिनमारग कियो दीपतो ए॥

२७— सह्यो परीसो थोड़ी वार,
कर्मा रो कियो अपहार, सुकोमल साध।
अविचल सुख मां झिल रह्या ए॥

२८— ऋषि 'जयमलजी' कहे इम वाय,
प्रणमूं ते ऋषि ना पाय, सुकोमल साध।
सासता सुख पाया मुगति गया ए॥

दोहा

१— कुंती नगरी ने विसे, हुवो हाहाकार।
देखो राय मरावियो, विना गुने अणगार॥

२— लोग हुवा वहु आकुला, पिण जोर न चाले कोय।
मुनि ने मुगति सिधावणो, वैर पुराणो न होय॥

३— किम बूझे पांच से सुभट, वले राणी ने राय।
वैराग पामे किण विधे, ते सुणजो चित लाय॥

ढाल ७

राग— पुण्य सदा फले

१— अजेय साध आयो नहीं रे,
जोवे पांच से वाट।
भोलावण दीधी रायजी रे,
खिण खिण करे उचाटो रे॥

२— धन मोटा मुनिराय,
नित कीजे गुण ग्रामो रे।
मन - वंछित फले,
सीझे सगला कामो रे॥धन०॥

३— नगर गली फिर फिर जोवियो रे,
कठेई न दीठो रे साध।
सुण्यो साध मार्यो गयो रे,
तव परमारथ लाधो रे॥धन०॥

दोहा

१— राजा मन में चिंतवे, एहवो खून न कोय।
साध-मरण मन ऊपनो, ए सांसो छे मोय ।।

२— एम विचारी वांदण गयो, साध भणी कहे एम।
विना गुन्हे मोटो मुनि, म्हें मार्यो कह्यो केम ।।

ढाल ८ राग—वीर सुणो मोरी वीनती

१— साध कहे राय सांभलो,
तूं तो हुंतो रे काचर तणो जीव।
ए खंदक हुतो मानवी,
चतुराई रे हुती अतीव ।।

२— कर्म न छोडे केह ने,
विण भुगत्यां रे छूटको नहीं होय।
इम जाणी उत्तम नरां,
तमे बांधो रे कर्म मति कोय ।।कर्म०।।

३— कुण साह ने कुण चोरटो,
भिख्यारी हो कुण राणो ने राव।
कुण धर्मी पापी तिके रे,
भला भूंडा रे भू-पे सहू भाव ।।कर्म०।।

४— कितेरेक भव इण खंदके,
उतारी हो काचर तणी खोल।
विचलो गिर काढी लियो,
सरायो हो घणी करी किलोल ।।कर्म०।।

५— पछे ही पिछताओ नहीं,
बंध पड़ियो हो तिण रे तिण ठाय।
तिण कर्मे करि साध री,
ते खाल हो उतारी राय ।।कर्म०।।

६— वचन सुणी राजा डरपियो,
करमां री हो घणी विखमी बात।

राय राणी दोनूं कहे
घर मांहे हो घड़ी अफली जान ॥कर्म०॥

७— पुरुषसिंह राजा तिहां,
सुनंदा हो राणी सुविनीत।
राज छोडी चरित्र लियो,
आराधी हो दोनूं रूड़ी रीत ॥कर्म०॥

८— कर्म खपाई मुगते गया,
बधारी हो जुग धर्म री सोयं।
अजर अमर सुख सासता,
ऐसी करणी हो की जो सहू कोय ॥कर्म०॥

९— अठारे सो इग्यारोतड़े,
चैत मासे हो सुद सातम जोय।
'लाडणूं' रिख 'जयमलजी' कहे,
विपरीत रो मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥

दोहा
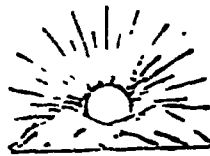
१— दरसण कीधां साधरो, मिटे अग्यान अंधार।
ज्ञान ज्योति प्रकटे भली, पामे भवजल पार॥
२— दरसण साधू रो कियाँ, उधर्या दोनु कुमार।
उत्तराध्ययन सूतर विसे, चवदमें अध्ययन अधिकार॥

ढाल १ राग—तिण अवसर मुनिय

१— मुनिवर मोटा अणगार,
करता उग्र विहार।
सुणो ऋषभजी,
साधु मारग भूलने ए,
पड़िया उजाड़ में ए॥

२— पड़ रही तावड़े री भोट,
तिरसा सूं सूखा होट।
सुणो ऋषभजी,
कठिन परिसो साधनो ए॥

३— तालवे कोइ नहीं थूक,
जीभ गई ज्यांरी सूख।
सुणो ऋषभजी,
होठां रे आई खरपटी ए॥

४— तिरसा तो लागी आय,
जाणे जीव निकलियो जाय।
सुणो ऋषभजी,
कठण मारग साध नो ए॥

५— रोही तो डंडाकार।
धणी भंगी ने भार।
सुणो ऋषभजी,
मिनख रो मुख दीसे नहीं ए।

६— दोनुं ही मुनिराय,
बेठा तरुवर छाय।
सुणो ऋषभजी,
चिन्ता कर रह्या साधुजी ए,

दोहा

१— इतरे आया गवालिया, मुनिवर बेठा देख।
आई ने ऊभा रह्या, पूछे बात विशेष॥

२— वलता मुनिवर इम कहे, काचो न लेवां नीर।
विध बताई आपणी, मोटा साहस धीर॥

ढाल २

राग—साथ सदा इसड़ा

१— वलता बोले गवालिया,
सामी सुणो अरदास हो।
मुनिवर,
खारो पांणी म्हारे गांवरो।
मांहे भेली छास हो,
धन करणी मुनिराज री।

२— मुनिवर मांड्यो पातरो,
पांणी ले पीधो तिण वार हो।
मुनिवर,
साधुजी साता पामिया
तिरखा दीधि निवार हो॥धन०॥

३— ऋषभजी दीधी धर्म देसना,
भिन्न भिन्न बहु विस्तार हो।
मुनिवर,

सुणावे छट्ठं गोवालिया,
लीधो संजम भार हो ॥धन०॥

४— चोखो चारित्र पालने,
पहुंता देव विमाण हो।
मुनिवर,
तिहां सूं चवने उपजे,
ज्यांरो सणो वखाण हो ॥धन०॥

दोहा

१— 'इषुकार' नगर ने विषे, 'इषुकार' हुवो राय।
दूजी देवी कमलावती, चालि सुतर के मांय ॥

२— 'भृगु' पुरोहित तेहने, 'जसा' पुरोहितानी जाण।
च्यार जीव तो ए थया, दोय रह्या देव विमाण ॥

३— अवधिज्ञान प्रयूंजियो, देण मुगतरा सूत।
आपे चव किहा ऊपजां, थासां 'भृगु' रा पूत ॥

४— दोय देवता देवलोक में, जाण्यो चवण विचार।
पहिलां आया प्रतिबोधवा 'भृगु' पुरोहित परिवार ॥

ढाल ३

राग—नारी नो नेह निवारजो

१— ए तो साधू नो रूप बणावियो,
दोनूं देवता तिण वार रे लाला।
भृगु रे घरे आविया,
करवा शुद्ध करार रे लाला ॥
धन करणी मुनिराज री ॥

२— मुखड़े विराजे मुखपति,
मुनिवर वाले वेस रे लाला।
ओघो विराजे काख में,
माथे लोच्या केस रे लाला ॥

३— झोली पातरा हाथ में,
चाले इर्या मार्ग सोध रे लाला।
अमा पिया षट् कायना,
घणां जीवां ने प्रतिबोध रे लाला॥

४— मूलकंता दोनु जणा,
भृगु आवता दीठ रे लाला॥
ऊठी ने वांद्यो दंपती,
तन मन में लागा मीठ रे लाला॥

५— अमी समांणि वांणी वागरि,
शुद्ध दियो उपदेश रे लाला।
ए संसार असार छै,
राखो दयाधर्म रेस रे लाला॥

६— वाणी सुण मुनिराज री,
भृगु आदरिया व्रत बारे रे लाला।
पुत्र तणी तृष्णा घणी,
पूछे दंपति तिण वार रे लाला॥

७— ऋषिजी कहे पुत्र दो ए हुसी,
पिण ये मानो एक वात रे लाला।
व्रत लेसी वाला पणे,
जो नवि करो व्याघात रे लाला॥

८— आदरसी तो आदरे,
पिण कोई न कहसि अऊत रे लाला।
काम सर्यां दुःख वीसरे,
ते सुणज्यो विरतंत रे लाला॥

दोहा

१— सुरलोक थी चवकरि, 'जसा' उदर लियो अवतार।
सवा नव मास पूरा हुआ, जनम्या दोनु कुमार॥
२— पुन्यवन्त पूरा रूप में, नंदन नीका वाल।
भृगु मन में चितवे, वांधू पाणी पेली पाल॥

३— बालक घर मांसू निकले, भृगु लावे घेर।
नगरी में महिमा घणीं, साधां रो पग फेर॥
४— साधां री सगत हुवां, पछे कारि न लागे काय।
दीक्षा थी डरतो थको, भृगु करे उपाय॥

ढाल ४ राग—मारू

१— परिहर्यो नगर वीहतेरे
वास कियो कुल गाम।
सुणजो बेटा आपणो रे,
कुलवट राखण नाम—के,
जाया संग म जायज्यो रे।
२— आदु वेर छै ब्राह्मण व्रतियां रे,
मूस मंजारी जेम।
बले सगपण सांकड़ो रे,
दूध रुद्र मेल तेम—के ॥जाया०॥
३— ओलखजो तमे आवता रे,
सीख सुणो हम पास।
वेगा घर आवजो दोड़ने रे,
रखे करी, बेसास—के ॥जाया०॥
४— उत्तम छै ओ प्राणियो रे,
घणा जिवांरो सेण।
मोह रो घाल्यो भृग कहे रे,
बोले खोटा वेण—के ॥जाया०॥
५— रंग रंगीला पातरा रे,
हाथ में चितरंग लोट।
मूंडे राखे मुहपती रे,
मन में घणी छै खोट—के ॥जाया०॥
६— उतावला चाले नहीं रे,
हवले मेले पाय।
जतन करे पटकाय ना रे,
दया घणी दिल गांय—के ॥जाया०॥

७— धरती सांमो जोयने रे,
चाले चित लगाय ।
ओघो राखे खाख में रे,
जिण तिण सूं लजाय के ॥जाया०॥

८— मेला पहरे कापड़ा रे,
रेवे पर घर बाट ।
जो देखो थे आवता रे,
तो छोड़ दीजो ऊभा वाट के ॥जाया०॥

९— दीसता दीसे एहवा रे,
मुनिवर केरे वेस ।
बालक पराया भोलवी रे,
ले जावे परदेश के ॥जाया०॥

१०— धर्म कथा धुन सूं कहे रे,
विध सूं करे वखाण ।
चतुर तणा मन मोहले रे,
लोहे चमके पाखाण के ॥जाया०॥

११— प्रीत लगावे एहवी रे,
दोड़या केड़े जाय ।
ए करे सूं गयां थकां रे,
मोह गेहलड़ा थाय के ॥जाया०॥

१२— राखे छुरी ने पासणा रे,
पातरां केरे मांय ।
नाना बालक भोलवी रे,
कालजो काढी ने खाय के ॥जाया०॥

१३— विहार करता आविया रे,
साधू तिण हिज गांम ।
भूला चूका पुन जोग सूं रे,
जोग मिलियो छे ताम के ॥जाया०॥

१४— एक समय रमतां थकां रे,
बारे चाल्या बाल ।

मुनिवर देख्या आवता रे,
ऊठ्या सुरत संभाल के ।।जाया०।।

१५— दूर थकी मुनिवर देखने रे,
डर्या दोनूं बाल ।
तात कह्या जिके आविया रे,
अब नेड़ो आयो छे काल के,
बंधविया ए कुण आयारे ।

१६— दोड़ चढ्या तरू ऊपरे रे,
हिवड़े न मावे सांस ।
केड़े आपां के आविया रे,
हमे किसी जीवण की आस के ।।बंधविया०।।

१७— घड़ घड़ लागा धूजवा रे,
कंपण लागी देह ।
सांकड़े आंपे आविया रे,
किणविध जासां गेह के ।।बंधविया०।।

१८— वृक्ष तले मुनिवर आविया रे,
जीवां रा जतन करंत ।
दयावंत दीसे खरा रे,
मन में एम धरंत के ।।बंधविया०।।

१९— कीड़ी ने दूहवे नहीं रे,
बालक मारे केम ।
मुनिवर देखी मोहिया रे,
लागो धर्म सूं प्रेम के ।।बंधविया०।।

२०— जाति-समरण पामिया रे,
बोले भाई दोनं बान ।
उतरता इम चिंतवे रे,
रखे पड़ नीलो पान के ।।बंधविया०।।

२१— बंधव ए भल आविया रे,
सरिया वांछित काम ।

५— लाला ! लिछमी-सुख भोगवो रे,
पूरव पुण्य पसाय ।
जोबन वय पाछी पड्यां रे,
थे उत्तम चारित्रिवा थाय रे ॥जाया०॥

६— सगत हुवे न्हासण तणी रे,
जेहने मित्र हुवे काल ।
जे जांणे मरसूं नहीं जी,
ते बांधे आगली पाल ॥जाया०॥

७— पुरोहित प्रतिवोध पामियो रे,
दीक्षा आईजी दाय ।
विघ्न करे ते ब्राह्मणी रे,
ते सुणज्यो चित्त लाय ॥जाया०॥

८— बालक ए व्रत आदरे रे,
आंपे रे वां किस आस ।
उत्तम चारित्र आदरांजी,
करां मुगत में वास ॥
गोरीजी मैं लेस्यां संजम भार ॥

९— वेटा जावे तो जाण दो जी,
आंपां भोगवां लिछमी भंडार ।
जूने हंस जिम दोहिलो जी,
तिरणो भव जल पार ॥पतिजी मत०॥

१०— धोरी जिम धर्म धुरंधराजी,
जु ंतिया आगेवाण ।
ज्यांरे केड़े जावसां जी,
मत करो खेंचाताण ॥ गोरी० ॥

११— प्रीतम पुत्र तिन रिध तजी जी,
मुझने किसो घरवास ।
दीक्षा से व्रत आदरुं जी,
हूं जासूं साधवियां के पास ॥
पतिजी भल ल्यो संजम भार ॥

दोहा

१— च्यारे संजम आदर्यो, भृगु पुरोहित जसा नार।
भृगु पुत्र भद्र महाभद्र, ए करसी सेवो पार॥
२— ऊभा घर तज नीसर्या, च्यारे चतुर सुजाण।
सांभल नृप हुकम दियो, धन लावो सहु ताण॥
३— पेला दान दियो सहु हाथ सूं, वलि देवो धनसूं हेज।
ताकीदी सूं मंगावियो, नहि करि कांई जेज॥
४— खवर हुई राणी भणी, जरे कियो मन करूर।
भूपत ने हूं पालसूं, चढ़ियो पोरस सूर॥

ढाल ६

राग—रंग महल में हो चोपड़ खेले

१— मेहलां में बैठी हो राणी कमलावती,
झीणी तो ऊडे मारग सेह।
जो वे तमासो हो 'इपुकार' नगर नो
कोतुक उपनो मनमें एह।
सांभल हे दासी आज नगर में
हलचल किम घणी? ॥
२— के तो परधान हे दासी डंड लीयो
के राजाजी लूंट्यो गाम।
के किणी रो हे गाड्यो धन नीसर्यो,
गाडां रि हेडज ठामो ठाम ॥सां०॥
३— नां तो परधान हो राणीजी डंड लीयो
न कांई राजाजी लूट्यो गाम।
भृगु पुरोहित रिध तज नीसर्यो
भूपत रे धन लावण रो काम ॥सां॥
४— सांभल हो राणी, हुकम करो तो,
गाड़ो लाऊं घेरने।
इहां तो कुमी नहीं काय,
इतरी सांभल ने हो राणी,
माथो धूणीयो।
राजा ने धन री लागी फाय ॥सां०॥

५— सांभल हे दासी राजा ने,
एहवी वातां जुगती नहीं।
मेहलां सूं उतरी हो,
राणी कमलावती ॥
आई छै ठेट हजूर,
वचन कहे छे हो, राजाजी आकारा।
जांणे पोरस चढियो सूर ॥सां०॥

६— सांभल महाराजा ब्राह्मण छांडी हो,
रिध मती आदरो।
राजा का मोटा भाग,
वमिया आहार की हो,
वांछा कुण करे ?
करे छे, कूतरो ने काग ॥सां०॥

७— काग ने कुत्ता सरीखा,
किम हुवो, नहीं प्रसंसव वा जोग।
भगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
थे जाणो आसी म्हारे भोग ॥सां०॥

८— संकल्प कियो पाछो किम लीजिये,
सांभलजो महाराज ।
दान दियो थे पेला हाथ सूं,
पाछो लेतां नहीं आवे लाज ॥सां०॥

९— जग सगला रो हो भेलो करी,
घाले थांरा राज रे मांय।
तो पण तृष्णा हो राजाजी पापणी,
कदे तृप्ति नहीं थाय ॥सां०॥

१०— एक दिन मरणो हो राजाजी यदातदा,
छोड़ो नी काम विशेप।
बीजो तो तारण जग में को नहीं,
तारे जिणजी रो धर्म एक ॥सां०॥

११— इम सांभलने हो इखुकार बोलियो,
तूं भाखे नी वचन संभाल।
के तो राणी हे तो ने भोलो वाजियो,
के थे कोधी मतवाल ॥ सां० ॥

१२— सांभल ? हे राणी राजा ने करड़ा न बोलिये,
निःसङ्क हुई जे नांय।
इसी वेरागण अजे तूं दीसे नहीं,
तूं बैठी छे राज के मांय ॥ सां ॥

१३— ना तो महाराजा भोलो वाजियो,
ना कोई कोनी मतवाल।
भृगु पुरोहित ऋध तज नीसर्यो,
हूं वरजण आई भूपाल ॥ सां ॥

१४— ऊतरने वाली तो दीसे नहीं,
इसड़ी आइ छे मतवाल।
हूं पण घर छोडी ने नीसरूं,
तमे चेतो हो भूपाल ॥ सां० ॥

१५— रत्न जड़ित हो राजाजी पिंजरो,
सुवो तो जाणे छे फंद।
इसड़ी पण हूं थारां राज में,
रति न पाऊं आणंद ॥ सां०॥

१६— स्नेह रूपिया तांतां तोड़ने,
ओर बंधन सूं रहसूं दूर।
विरक्त थईने संजम में ग्रहूं,
थे भी पण होय जाओ सूर ॥ सां० ॥

१७— दव तो लागो छे राजाजी वन मधे,
हिरण ससादिक बले मांय।
ऊला माला रो हो पंखी देखने,
मन मांहे हर्षित थाय ॥ सां० ॥

१८— इण दृष्टान्ते थे मूरख थका,
मुरझ रह्या भोग मझार

पहिलां दुःख देखे पण चेते नहीं,
राज त्यागी लो संजम भार ॥ सां० ॥

१६— भोगव्या काम भोग छोड़ने,
बेहूँ भव हलका थाय।
वेउं सरीखा पंखीया नी परे,
विचरसां इच्छा आपणी दाय ॥ सां० ॥

२०— मेहल पिलंगादिक अथिर छे,
सो तो आया आपणे हाथ।
आंपे भोग मांहे राची रह्या,
आप समझो पृथ्वीनाथ ॥ सां० ॥

२१— मांस री बोटी हो पंखीया नी परे,
मोह बस पंखी पड़े आय।
ज्यूं आंपे कामभोग छोड़ ने,
चारित्र लेसां चित लाय ॥ सां० ॥

२२— गृद्ध पंखी जिम इण जीव ने,
काम वधारे संसार।
सांप जिम मोर थकी डरतो रहे,
जिम पाप सूं संको इणवार ॥ सां० ॥

२३— हस्ती जिम वंधन तोड़ने,
आपणे वन में सुखे जाय।
ज्यूं कर्म वंधन तोड़ी संजम ग्रहां,
होस्यां ज्यूं सुखी मुगत मांय ॥ सां० ॥

२४— इम सांभल ने इखुकार राजा चेतियो,
छोड्यो छे मोटो राज।
कायर ने ए रिध तजणी दोहिली,
विषय छांडी सारूं निज काज ॥ सां० ॥

२५— सनेह सहित परिग्रहो छोड़ने,
साचो एक धर्मज जाण।
तपस्या मोटी सगलां आदरी,
घोरी जिम पराक्रम आण ॥ सां० ॥

२६— छकंडी अनुक्रमे प्रतिबोधिया,
नाना धर्म में तप जप तंत ।
जनम-मरण रा भय थकी उगरिया,
दुःखां रो कियो छे अंत ॥ सां० ॥

२७— मोह निवारी जिन शासन मधे,
पूरब शुभ कर्म भाय ।
छउं ही जणा थोड़ा काल में,
मुगत गया दुःख मुकाय ॥ सां० ॥

२८— सांभल ने प्राणी संजम लियो,
गुण लेसी सासता सार ।
राजा सहित राणी कमलावती,
भृगु पुरोहित ज सार ॥ सां० ॥

२९— ब्राह्मण रा दोनु ही बालका,
सगला पाम्या भव जल पार ।
धन धन प्राणी छती रिध छिटकाय ने,
शिवपुर का सुख लिया सार ॥ सां० ॥

३०— संक्षेप माफक भाव ए कह्या,
सूत्र अनुसारे जोय ।
अधिको ओछो रिख 'जयमलजी' कहे,
मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ सां० ॥

३१— इम जाणी ने हो उत्तम मानवी,
छोडो काम ने भोग ।
तप, जप, क्रिया निर्मल आदरो,
ज्यूं मिटे भव भव रोग ॥ सां० ॥
धन धन प्राणी हो गुरू सेवा करे ॥

६ | महावीर स्वामी का चौढालिया

ढाल १

१— सिद्धारथ कुलमां जी उपन्या, त्रिशला दे थांरी मातजी ।
वर्षीदान ज देई करी, संयम लीनो जगनाथ जी ।।थें०।।
थें मन मोह्यो महावीर जी ।।टेर।।

२— थें मन मोह्यो महावीर जी, थांरी कंचन वर्णीकाय जी ।
नयन न धापे जी निरखतां, दीठा आवो छो दाय जी ।।थें०।।

३— आप अकेला संयम आदर्यो, उपन्यो चौथो ज्ञान जी ।
उत्कृष्टयो तप थे आदर्यो, धरतां निर्मल ध्यान जी ।।थें०।।

४— उग्र विहार थें आदर्यो, कई वासा रह्या वनवास जी ।
कई वासा वस्ती में रह्या, रह्या एकण ठामे चोमासजी ।।थें०।।

५— प्रभु पहलो चौमासो थें कियो, अस्थि गाँव मझार जी ।
दूजो वाणीज गाँव में, पंच चंपा सुखकार जी ।।थें०।।

६— पांच पृष्ठ चम्पा किया, विशाला नगरो में तीन जी ।
राजगृही में चवदे किया, नालन्दे पाड़े लवलीन जी ।।थें०।।

७— छ चौमासा मिथिला किया, भद्रिका नगरी मां दोय जी ।
एक कर्यो रे आलम्भिया, सावत्थि नगरी एक होय जी ।।थें०।।

८— एक अनारज देश मे, अपापा नगरी एक जाण जी ।
एक कर्यो पावापुरी, जठे प्रभु पहोंच्या निर्वाण जी ।।थें०।।

९— हस्तीपाल राजा इम विनवें, हुँ तुम चरणांरो दास जी ।
एक शाला म्हारे सूझती, आप करो चौमास जी ।।थें०।।

१०— चालीस चौमासा शहर में, दाख्या देश नगरी ना नाम जी ।
एक अनारज देश मे, एक चौमासो वलीगाम जी ।।थें०।।

५— वली हस्तिपाल राजा विनवे भूपाल,
थें छो प्रभुजी म्हारे दीन दयाल।
सूझती म्हारे छे मोटी जी शाल,
लाग रह्यो प्रभु वर्षा जी काल ॥थें०॥

६— मानी विनती प्रभु रह्याजी चौमास,
पावापुरी मां हूवो हर्ष उल्लास॥
गौतम गणधर गुरांजीने पास,
निशदिन ज्ञान नो करे जी अभ्यास ॥थें०॥

७— साधु अनेक रह्या कर जोड़,
सेवा करे सदा होड़ा जी होड़।
चवदे हजार चेला रत्ना री माल,
दीक्षा लीधी छोड़ी माया जंजाल ॥थें०॥

८— बड़ी चेली चंदन बाला जी जाण,
हुई कुंवारी महासती चतुर सुजाण।
मोत्यां नी माला छत्तीस हजार,
सगली में बड़ी साध्वी सरदार ॥थें०॥

९— चारों ही संघ नित्य सेवा करे,
प्रभु जी ने देखी देखी आंख्या ठरे।
नव मल्ली ने नव लच्छी जी राय,
ज्यांरे दर्शनरी छे चित्त में चाय ॥थें०॥

१०— लाख बत्तीस विमान को राय,
आया पावापुरी में प्रभु कने चलाय।
दो सहस्र वर्षा रो पड़सी भस्मी जी काल,
एक पल आउखो आघो दीजो जी टाल ॥थें०॥

११— वलता भाखे श्री वीर जिनन्द,
इण वानां रो नहीं मिले जी संबंध।
हुई [illegible] वे नहीं होसी नहीं बात,
[illegible] एक समय तिल मात ॥थें०॥

१२— संघ मचल्या [illegible]
पू[illegible]

"ऋषि रायचंद" विनवे जोड़ी हाथ,
थें करुणा सागर वाजो कृपाजी नाथ ।।थें०।।

१३— नागौर शहर में कियो जी चौमास,
दिज्यो प्रभुजी मांने मुक्ति नो वास,
हूँ सेवक तुम साहिब स्वाम ।
अवर देवासु म्हारें नहीं कोई काम ।।थें।।

ढाल ३

१— शासन नायक श्री महावीर,
तीरथ नाथ त्रिभुवन धणी ।
पावापुरी में कियो चरम चौमास,
हुई मोक्षदायक री महिमा घणी ।।गौ०।।
गौतम ने मेल दियो महावीर, देवशर्मा प्रतिबोधवा ।।टेर।।

२— उत्तराध्ययन रा अध्ययन छत्तीस,
कार्तिक बदी अमावस्ये कह्यां ।
एक सौ ने वली दश अध्ययन,
सूत्र विपाक तणा लह्यां ।।गौ०।।

३— पोसा कीधा श्री वीर जी रे पास,
देश अठारानां राजीया ।
नव मल्ली ने नवलच्छी जी राय,
वीर ना भगता जी वाजीया ।।गौ०।।

४— प्रभु शासन ना सिरदार,
सर्व संघ ने संतोष में ।
सोले प्रहर लग देशना दीध,
पछे वीर विराज्या मोक्ष में ।।गौ०।।

५— तीन वर्ष ने साढ़ा आठ मास,
चौथा आरा नां बाकी रह्या ।
दिन दोय तणो संथार,
मौन रही मुगते गया ।।गौ०।।

६— इन्द्र आव्या जो चित्त उदास,
देव देवी ना साथ में ।
जाणें झगमग लग रही ज्योत,
अमावश्या नी रात में ।।गौ०।।

७— मुगति पहोंत्या एकाएक,
सात से हुआ ज्यांरे केवली ।
चवदह सो साध्वियाँ हुई सिद्ध,
हूं सहूं ने वंदू मन रली ।।गौ०।।

८— रह्या तीस वर्ष घर मांय,
वर्ष बैयालीस संयम पालियो !
प्रभु जगतारण जगदीश,
दया मार्ग उजवालियो ।।गौ०।।

९— होजी देव देवी ने वली इन्द्र,
निर्वाण तणो महोत्सव कियो ।
अरिहंत नो पडियो वियोग,
सुरनर नो भरियो हियो ।।गौ०।।

१०— साधु साध्वी करता शोक,
श्रावक श्राविका पण घणा ।
भरत क्षेत्र मां पडियो वियोग,
आज पछी अरिहंत तणो ।।गौ०।।

११— पछी बैठा सुधर्मा स्वामी पाट,
चारों ही संघ चरण सेवता ।
ज्यांरी पालता अखण्डित आण,
सेवा करे देवी ने देवता ।।गौ०।।

१२— मुगते पहोंच्या श्री महावीर,
प्रभु सुख पाम्या छे शाश्वता ।
"ऋषि रायचंद" कहे एम,
म्हांरे अरिहंत वचन नी आसता ।।गौ०।।

ढाल ४ राग—चढो चढो लाड़ा वार म लावो

गुरांजी थें मने गोड़े न राख्यो, मुगति जावण रो नाम न दाख्यो ।।टेर

१— श्री महावीर पहोंच्या निर्वाणी ।
गौतम स्वामी ए बात ज जाणी ।।गु०।।

२— हूं सगला पहेलां हुवो थारो चेलो ।
इण अवसर आघो किम मेल्यो ।।गु०।।

३— प्रभु तुम चरणें म्हांरो चित्त लागो ।
आप पहुंतां निर्वाण मने मेल दियो आगो ।।गु०।।

४— मने आपरा दर्शन लागतो प्यारो ।
आप पहोंत्या निर्वाण मने मेल दियो न्यारो ।।गु०।।

५— आप तो मुझ सुं अन्तर राख्यो ।
पिण मैं म्हारा मन रो दर्द न दाख्यो ।।गु०।।

६— हूं आड़ो मांडी नहीं झालतो पल्लो ।
पण शाबास काम कियो तुम भल्लो ।।गु०।।

७— हूं तुमने अन्तराय न देतो ।
मुगती में जागा ब्हेंची नहीं लेतो ।।गु०।।

८— हूं संकड़ाई न करतो कांई ।
आप साथे हूँ मोक्ष में आई ।।गु०।।

९— अब हूँ पूछा करसुं किण आगे ।
प्रभु म्हारो मन एक थांसुं ही लागे ।।गु०।।

१०— म्हारो सांसो कहो कुण टाले ।
आप विना पाखण्डी ना मद कुण गाले ।।गु०।।

११— हुंता चौदे पूरव ने चौनाणी ।
पिण मोहनीय कर्म लपेट्यो आणी ।।गु०।।

१२— ऐसो गौतम स्वामी कियो विलापात ।
ए मोहनी कर्म नी अचरज वात ।।गु०।।

१३— हवे मोहनीय कर्म दूरे टाली ।
गौतम स्वामी ए सूरती संभाली ।।गु०।।

वीतराग राग द्वेष ने जीत्या ।।टेर।।

१४— वीतराग राग द्वेष ने जीत्या ।
म्हारां चित्त मां आई गई चिंता ।।वी०।।

१५— तिण वेला निर्मल ध्यान ज ध्यायो ।
केवल ज्ञान गौतम स्वामी पायो ।।वी०।।

१६— बारा वर्ष रह्या केवल ज्ञानी ।
बात ज्यांसु काई नहीं रही छानी ।।वी०।।

१७— गौतम पण कियो मुक्ति में वासो ।
संसार नो सर्व देखे तमासो ।।वी०।।

१८— जणी राते मुक्ति गया वर्द्धमान ।
इन्द्रभूति ने उपन्यो केवल ज्ञान ।।वी०।।

१९— तिण दिन थी ए बाजी दिवाली ।
म्होटो दिन ए मंगलमाली ।।वी०।।

२०— रात दिवाली नो शियल थें पालो ।
वली रात्रि भोजन नो कर वो टालो ।।वी०।।

२१— "ऋषि रायचंद" कहे सुणो हो सुज्ञानी ।
दया रूप दिवाली थें लेज्यो मानी ।।वी०।।

कलश

१— श्री शासन नायक, मुक्ति दायक,
दया मार्ग अजुवालियो ।
श्री गौतम स्वामी, मुक्ति गामी,
कियो चित्त वल्लभ चौढालियो ।।

२— संवत् अठारे, गुणचालीसे,
नागौर चौमासो निर्मल मने ।
पूज्य जेमल जी प्रसादे,
पूर्ण कियो दिवाली रे दिने ।।

७ रहनेमि—अणगार

दोहा

१— अरिहंत सिद्ध ने आयरिया, 'उवज्झाया अणगार।
पांच पदां ने हूं नमूं अष्टोत्तर सो वार॥

२— मोक्ष गामी दोनों हुआ राजमती रहनेम।
चरित्र कहूं रलियामणो, सांभल जो घर प्रेम॥

ढाल १ राग—खट खण्ड भोगवे राज०

१— सुख कारी सोरठ देश, राजा श्री कृष्ण नरेश ॥मन मोह्यालाल॥
दीपती नगरी द्वारिकाए॥

२— समुद्र विजय तिहा भूप, शिवा देवी राणी रूडे रूप ॥मन०॥
महाराणी मानीजती ए॥

३— जनम्या है अरिहंत देव, इन्द्र चौसठ सारे जारी सेव ॥मन०॥
बाल ब्रह्मचारी बावीसमा ए॥

४— अन्त समे राजुल नार, तजी तेल चढ़ी निरधार ॥मन०॥
सतियां में सिर सेहरो ए॥

५— ते समय राजुल नार, लीनो संजम भार॥ ॥मन०॥
सहस्राम्रवन उद्यान में ए॥

६— समुद्रविजय जीरा नंद, रहनेमीरो सुण जो संबंध ॥मन०॥
लघु भाई श्री नेमिनाथ॥

७— रहनेमी विराजे रूड़े रूप भर जोबन घर चूंप ॥मन०॥
मन वांछित लीला करे ए॥

भींज्या कपड़ा अलगा मेल्या, साध्वी चतुर सुजाणो जी ॥

७—आर्याजी उघाड़ी ऊभी, कंचनवर्णी काया जी।
उजवाला में उभो दीठो, पुरुष रूप री माया जी ॥

८—कंपण लागी सघली काया, शील सोच में बैठी जी।
अंगज मारो कोई नहीं देखे, साध्वो हेठो बैठी जी ॥

९—रूप देख रहनेमी डिगिया, संजम जोग गया भागी जी।
कामी अंधा कछु नहीं देखे, विषय सेवन लो लागी जी ॥

१०—डरती देख सती ने बोले, रहनेमी कहे एमो जी।
हूँ समुद्र विजय राजा जी रो बेटो, तूं सोच करे छे केमो जी ॥

११—छोड़ जोग ने आदर भोग, सांभल सोहन वरणी जी।
सुख विलसी ने संजम लेसां, पछे करसां करणी जी ॥

१२—राजमति तो हिये विमासे, जातिवंत छे एहो जी।
म्हारो शील कदीयन भंजे, हूँ समझाऊँ धरी नेहो जी ॥

१३—दूजी ढाल तो हो गई पूरी, राजमति कहे आगे जी।
"ऋषि रायचद" कहे मोक्ष गामी ने, सीख सोयली लागे जी ॥

दोहा

१— आला पहर्या लूगड़ा ढांकियो सगलो शरीर।
बोले सेणी साध्वी, सांभल मोरा वीर ॥

ढाल ३ राग—ज्ञानी गुरु रे बोध सूत्र सांभलो

मुनिवर डिगजे नहीं, थें माठी विचारी मन माय ॥मुनि०॥
थारे शील रूपीयो धन ॥मुनि०॥
कांई तरसे थारो तन ॥मुनि०॥
थारे मोक्ष जावण रो मन ॥मुनि०॥टेर॥

१— आर्या ने थे एहवा, वचन कहो छो केम।
इण भव म्हारे आखड़ी, कांई जावजीव लग नेम ॥मुनि०॥

२— तूं गांव नगर पुर विचरती, जहां जहां देखसी नार।
हड़नामा जश नी परे, थे वणो उठायो भार ॥मुनि०॥

३— हड़वृक्ष हेठो पड़े, वायु तणे प्रकार।
अस्थिर होती थांरी आतमा, तूं रूल सी घणो संसार ।।मुनि०।।

४— वमिया की वंछा करे, धिग्-धिग् थारो जमार।
मरणो श्रेय छे तो भणी, थें लीना महाव्रत चार ।।मुनि०।।

५— गंधनकुल ज्युं किम होवे, वंशव सामो जोय।
चारित्र रत्न चिन्तामणी तु, कादा में मत खोय ।।मुनि०।।

६— वमियो विष वंछे नहीं, अगंधन कुल नो सर्प।
भस्म होवे जिम अग्नि में, पण राखे कुलनो शर्म ।।मुनि०।।

७— तुं अंधकविष्णु जीरो पोतरो. समुद्र विजय जीरो पूत।
कुल सामों देखे नहीं तुं मत दे काचा सूत ।।मुनि०।।

८— हूं भोजकविष्णु जी री पोतरी, उग्रसेन म्हारा तात ।।
दोनों रा कुल दीपतां, या किम विगड़ेला बात ।।मुनि०।।

९— चन्द्र अगन वरसे नहीं, समुद्र न लोपे कार।
पश्चिम सूरज ऊगे नहीं, ज्युं कुलवंत नो आचार ।।मुनि०।।

१०— जो तुं होवे वैश्रमण देवता, नल कुबेर उणिहार।
जो तुं होवे इन्द्र सारिखो, मैं बंछू नहीं लिगार ।।मुनि०।।

११— गांयां रो धणी गवालियो, तुं मत जाणे कोय।
संयम रो धणी तूं नहीं, कांई हृदय विमासी जोय ।।मुनि०।।

१२— बाले चन्दन बावनो, किधी चावे राख।
चौथासुं चूक्या पछे, थारे कुल ने लागे चाक ।।मुनि।।

१३— रतन जतन कर राख जो, खण्डिया लागे खोड़।
जौबन में जोखो घणो, कांई कीजे जतन करोड़ ।।मुनि०।।

१४— काचा सुखां रे कारणें, कांई बगाड़े बात।
पछे घणों पछतावसी. थांरे काइयन आसी हाथ ।।मुनि०।।

१५— मधुबिन्दु रे कारणे, मुंडो दीधो भाण्ड।
अल्प सुखा रे कारणे, तूं होसी जग में भाण्ड ।।

१६— वचन सतीरा सांभली, आयो ठिकाणें रहनेम।
शील संयम दोनों तणा, कांई रह्या कुशल ने खेम ।।मुनि०।।

१७— हाथी ज्युं रहनेमि जी, महावत राजुल नार।
वचन रूपी अंकुश करी, कांई आण्यो ठिकाणे तिणवार ।मुनि०॥

१८— तीजी ढाल पूरी थई, "ऋषि रायचंद" कहे एम।
राजमति सती तणां, कह्या जावे केम ।मुनि०॥

ढाल ४

राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

१— भलां वचन थें भाखिया रे लाल,
इम बोले रहनेम ॥सुनो साध्वी ए॥
महासती तूं मूलगी रे लाल,
तूं तिरण तारण की जहाज ॥सु०॥
हुँ डगियो थें स्थिर कियो रे लाल ॥टेर॥

२— हुँ डगियो थें स्थिर कियो रे लाल,
थे राखी म्हारी लाज ॥सु०।
तें उपकार मोटो कियो रे लाल,
जाणे रंक ने दीधो राज ॥सु०॥

३— संसार समुद्र में बूड़तो रे लाल,
थें लीधो माने झेल ॥सु०॥
हूं रूप कूप देखी पड्यो रे लाल,
थे शील झीपा में दियो मेल ॥सु०॥

४— विपय रा वचन म्हारा निसर्या रे लाल,
कुमति कु बोल्यो बोल ॥सु०॥
मोहनी कर्म लपेटियो रे लाल,
थें राख्यो म्हारो तोल ॥सु०॥

५— मतिहीणो हुं मानवी रे लाल,
कुशीलियो कंगाल ॥सु०॥
हुं पापी पान्तर गयो रे लाल,
तिण थें राख्यो म्हारो माल ॥सु०॥

६— तुं परमेश्वर सारखी रे लाल,
तुं भगवंत वीतराग ॥सु०॥

तु' सतियां रो शिर सेहरो रे लाल,
थारों शील बड़ोरे वैराग ।।सु०।।

७— भुण्डो मुण्डो माहरो रे लाल,
भुण्डा निकल्या म्हारा वैण ।।सु०।।
काया में कन्दर्प व्यापीयो रे लाल,
निरखंता डिगीया म्हारा नैण ।।सु०।।

८— में नारी परिषह नहीं सह्यो रे लाल,
म्हारा मनमांहे प्रगट्यो पाप ।।सु०।।
मोटी सती ने में दियो रे लाल,
मेरु जे तो संताप ।।सु०।।

६— पुरुषों में उत्तम हुआ रे लाल,
रहनेमी अणगार ।।सु०।।
चलिया चित्त ने दृढ़ कियो रे लाल,
ते विरला संसार ।।सु०।।

१०— चौथी ढाल पूरी थई रे लाल,
व्रतों ने नहीं लागी खोड़ ।।सु०।।
रहनेमी जीती आतमां रे लाल,
'ऋषि रायचंद' करी जोड ।।सु०।।

दोहा

विनय भर्या वचनां सुणी, रेहनेमि ना आम।
राजीमती हर्षित थई, प्रशंसा करे ताम ।।

ढाल ५

१—तांरां मोह पडल अलगा टल्या, तारेघट में प्रगट्यो ज्ञान हो ।।र०।।
विषय जाण्यो विष सारखो, म्हारां वचन लियो थें मान हो ।।र०।।
थें स्थिर कर राखी थांरी आतमा ।।टेर।।
२— थें स्थिर कर राखी थांरी आतमा,
थांरों चित्त आई गयो ठाम हो ।।र०।।

शील री नींव सेंठीं रही,
पापथी पाम्या विराम ॥हो र०॥

३— थें तो मुगति रे सामा मण्डिया,
शीलांगरथ पर बैठ रे ॥ र० ॥
पंथ लियो थे पाधरो,
तूं तो शिव नगरी में जासी ठेठ हो ।र०॥

४— जो मन मेले मोकलो,
ते तो होवे फजीत हो ॥ र० ॥
मन जीते जे मानवी,
ते तो जावे जमारो जीत हो ॥र०॥

५— थांरो मन जाई लागो मुगत सुं,
थांरें गुरु ज्ञानी से प्रीत हो ॥र०॥
यश फेल्यो थांरो जगत में,
थें तो राखी है रूड़ी रीत हो ॥र०॥

६— थें तो क्षमा वैराग्य वधारियो,
तोने मित्र मिलीयो संतोष हो ॥र०॥
शील देसी सुख शासता,
थारे टलसो सगला दोष हो ॥र०॥

७— थारे तेज घणो तपस्या तणो,
थें तो पीधो समता रस पूर हो ॥र०॥
क्षमा खड्ग थें कर गह्यो,
थांरा अशुभ कर्म जासी दूर हो ॥र०॥

८— थें जीत्यो स्वाद जिह्वा तणो,
स्थिर मन राख्यो क्षोभ हो ॥र०॥
क्रोध मान माया नहीं,
थारे नहीं लालच लोभ हो ॥र०॥

९— काम दहन कीरीया भली,
जिनसे मिटे मिथ्यात्वरी जाल हो ॥र०॥
राग द्वेष अंकुरा ऊगे नहीं,
कर्म वीज दिया बाल हो ॥र०॥

१०— थें तो दयामार्ग उजवालियो,
कर्मां सुं माण्ड्यो जंग हो ॥र०॥
थें चलिया चित्त ने घेरीयो,
अविचल छोड्यो रंग ॥र०॥

११— राजमति रहनेमी जी,
दोनों ही केवल पाम हो ॥र०॥
मुक्ति गया दोनों जणा,
पाम्या है अविचल ठाम हो ॥र०॥

१२— पांचमी ढाल सुहावणी,
उत्तराध्ययन अनुसारे हो ॥र०॥
वली दशवैकालिक में लिख्यो,
विशेष कियो विस्तार हो ॥र०॥

१३— शील ऊपर पंच ढालियो,
कियो दोय सूत्र में निचोड़ हो ॥र०॥
तिण अनुसारे ए कीनी,
"ऋषि रायचंद" जोड़ हो ॥र०॥

१४— संवत् अठारे पंचानवे,
जयवंत नगर जोधाण हो ॥र०॥
ये चरित्र रच्यो चौमास में,
मास आसोज शुभ जाण हो ॥र०॥

१५— ओछो अधिको जे कह्यो,
ते मिच्छामि दुक्कडं मोय हो ॥र०॥
श्रोताजन जे सांभले,
तस घर मङ्गल होय हो ॥र०॥

दोहा
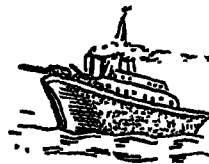
१— थावरचा भोगी अमर, बठो महल मझार।
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, भोगे सुख श्रीकार॥

२— पाड़ोसी तिण रे हतो, पुत्र रहित धनवंत।
पुत्र भयो तिण अवसरे, गोरियां गीत गावंत॥

ढाल १ — राग—जतन की

१—महलां में बैठो सुणे रागी, थावरच्या पुत्र वैरागी।
महलां सुं उतर्यो हुवो राजी, कर जोड़ कहे सुणो माजी॥

२—ए तो इसड़ा गीत गावे, म्हारे कानां में घणा सुहावे।
वलती इम बोले माया, सांभलरे म्हारा जाया॥

३—पाड़ोसन वेटो जायो, तिण रो हर्ष वधावो आयो।
थाल भरो गुड़ व्हेंचे, जाणे पुत्र हुवो मारे जीसे॥

४—वाजा वाजे थाल कसाला, गोरियां गावे गीत रसाला।
गोरी हिलमिल गीत ज गावे, वालक री मां ने घणा सुहावे॥

५—गुड़ दे ने गीत गवावे, गोरियां राजी हो जावे।
सब कुटुम्ब तणे मन भावे, कानां में शब्द सुहावे॥

६—गीत गायने गोरियां ऊठी, देवे सोनैयां भर भर मुठी।
माता इतनी वात सुणाई, थावरचा रे मन भाई॥

७—माता ने वेटो बहु प्यारो, नित भाणे परोसे आहारो।
माता थने वैठ जिमावे, भाग्या गी माखी उडावे॥

८—इतरा में कूको पड़ियो, थावरचा काने सुणियो।
सांभल ए मात माहरी, ये किम रोवे नर नारी॥

९—इण पर तो बोली माता, सांभल रे म्हारा जाया।
बेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो॥
१०—इम या बात सुणाई माजी, थावरचा हुवो वैरागी।
मां बाप अरड़ाटे रोवे, बालक ना मुख सामो जोवे॥
११—मां थे क्रूर शब्द अरड़ावे, मां सुं सुन्यो नहीं जावे।
जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुझ ने हुवो॥

दोहा

१— उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय।
जन्मे सो मरसी सही, चिंता इणमें क्यूं थाय॥
२— इण संसार में आ बड़ो, जन्म मरण री जोड़।
जन्ममरण ज्यांछे नहीं, इसड़ी नहीं कोई ठोड़॥
३— हाथ रो कवो हाथ में, और मुंह रो है मुंह मांय।
माताजी हूं मरूं नहीं, इसडी ठौर बताय॥
४— सुख भोगो संसार नो, और करो आनन्द।
जन्म मरण ने मेटसी, यादव नेम जिनंद॥

ढाल २ राग—जतन री

१ माता ओ संसार असारो, मैं तो लेसूं संजम भारो।
संसार नी माया झूठी, ओ तो एक दिन जासी उठी॥
२—संसार में मोटी खोड़, जन्म मरण री अठे जोड़।
जिण रा मायने किसारा बापो, जीव बांधे छे बहुला पापो॥
३—थावरचा लीधो धार, कीधो नेम जी त्यां थी विहार।
स्वामी सुखे द्वारिका आया, सगलारे मन सुहाया॥

ढाल ३ राग—शांति जिनेश्वर सोलमां रे लाल

१—नेम जिनंद समोसर्या रे लाल, द्वारिका नगर मझार रे।
जां पुजता ने वांदतां रे लाल, भव भव नो निस्तार रे॥भविकजन॥
२—प्रभू जी तिहां पधारिया रे लाल, सहसाम्र नामे बाग रे।
तरण तारण जग प्रगटिया रे लाल, भव्य जीवां रे भाग रे॥भ०॥

३—सहस्र अठारे साधुजी रे लाल, आर्या चालीस हजार रे।
ज्यां में आण मनावता रे लाल, शासन ना सिरदार रे॥भ०॥

४—कोई ने दिन पन्द्रह हुआ रे लाल, कोई ने महिनो एक रे।
कोई ने वर्ष दिवस हुआ रे लाल, कोई ने वर्ष अनेक रे॥भ०॥

५—कोई लेवे मुनिवर वांचणी रे, कोईयक चर्चा बोल रे।
समझावे भवि जीवने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे॥भ०॥

६—गाज शब्द हुवा थका रे लाल, मोरिया किम गह काय रे।
नेमजिनन्द आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे॥भ०॥

७—उठो रे लोकां सतावसूं रे लाल, रखे अवेलां थाय रे।
तेमना दरसन कीधा बिना रे लाल, क्षण लाखीणो जाय रे॥भ०॥

८—कोई कहे प्रश्न पूछसां रे लाल, कोई कहे सुनसां वखाण रे।
कोई कहे सेवा करसां रे लाल, करसां जन्म प्रमाण रे।भ०॥

९—एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल, वनपालक कर जोड़ रे।
दीधी कृष्ण ने वधावनी रे लाल, सोनैया साढ़ी बारा क्रोड रे॥भ०॥

१०—केई बैठा हयवरा रे लाल, केई चढ़िया गजराज रे।
केई सुख पावे पालखी रे लाल, केई चकडोले साज रे॥भ०॥

११—चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे।
बोलन्ता विरुदावली रे लाल, भोजक चारण भाट रे॥भ०॥

१२—छत्र चंवर देखी करी रे लाल, सब कोई पाला थाय रे।
नृप तिहां पर आविया रे लाल, वांदिया श्री जिनराज रे॥भ०॥

दोहा

१— तिण काले ने तिण समये, द्वारिका नगर रे बहार।
नेम जिनंद समोसर्या, सहस्र वन मझार॥

२— थावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मझार।
लोक घणा ने देखने, मन में करे विचार॥

ढाल ४

राग—बुढ़ाने बाल पणांरी

१—लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास पुछावे।
कहे सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया॥

२—बात नेम आगमन री ताजी, सुण थावरचा हुवो राजी।
पुण्य जोगे प्रभु अठे आया, वंदी सफल करूं म्हारी काया॥

३—म्हारा मनरा मनोरथ फलिया, म्हारा भव २ रा दुःख टलिया।
इम हरखे घरि शीर पागे, और पेरिया नव रंग आगे॥

४—उत्तरासन भीणे सुतर्रा, मेल्या कलंगी तुर्रा।
कड़ा हाथ कानो में मोती, जाणे लागी जगामग ज्योति॥

५—दसो अंगुलियां मुंदड़ी गले डोरो, मन में नेम वंदन रो कोड़ो।
देख चंवर छत्र घर प्रेम, आण ने वांदिया छे श्री नेम॥

६—भवि जीवां रो, काटन क्लेश, दीधो स्वामी इसो उपदेश।
दुखः जन्म मरण रा भारी, बांधे कर्म तो आगे त्यारी॥

७—हँस-हँस ने वाँधि भूठे, तिकां रोणा सुं नहीं छूटे।
आवे काल भपेटा ले तो, वले बंब नगारा देतो॥

८—सुणी इक चित्त प्रभु नी वाणी, होती मन में विछुड़ी जाणी।
कर जोड़ ने कहे सुणो स्वामी, दीक्षा लेसुं अन्तर्जामी॥

दोहा

१— जिम सुख थावे तिम करो, इम बोले श्री नेम।
ढ़ील लगार करो मती, जो चाहो कुशल ने क्षेम॥

२— प्रभु ने वंदन कर चालिया, कीधो महल प्रवेश।
माता पासे जायने, मांगे इम आदेश॥

ढाल ५

राग—तू मुझ प्यारो रे····

१—आज्ञा दो मुझ माता जी अम्मा, ओ संसार असार।
काल आण घेरियां थकां हो अम्मा, कोई न राखण हार॥
म्हारी अम्मा, आज्ञा दीजे वेग॥टेर॥

२—वाणी अपूर्व सांभली हो अम्मा, पड़ी मुर्छागत खाय।
सावधान वैठी करी हो अम्मा, घाली शीतल वाय॥म्हारी०॥

३—तूं एकाकी म्हायरे रे जाया, तूं कालजारी कोर।
तूं मुझ आंधा लाकड़ी रे बेटा, तुझ सम म्हारे कुण ओर॥
मोरा जाया यूं मत बोले वैन॥टेर॥

४—तूं मुझ जीवन की जड़ी रे जाया, तूं मुझ प्राण आधार।
जीवूं थने हीज देखने रे जाया, मान थावरचा कुमार।।

५—रमणी बत्तीसे थांयरी रे जाया, अप्सर ने अनुहार।
विलविलती छांड ने रे जाया, मति ले संजम भार।।

६—रमणी झुरे रंग महल में रे जाया, मात झुरे मन माय।
वैरागी झुरे मोक्ष ने रे माता, मनड़ो रह्यो उमाय।।

७—साधु पणो अति दोहिलो रे जाया, त्रिविध महाव्रत चार।
दोप बंयालीस टाल ने र जाया, लेणो निर्दोषण आहार।।

८—कनक कचोला छांड ने रे जाया, जीमणो काष्ठ के पात्र।
ए सुख सेज्या छोड़ने रे जाया, मेलो राखणो गात्र।।

९—कायर ने ए दोहिलो ए माता, आप कही जे बात।
सूरां सव सोहिलो माता, दुर्लभ नहीं तिल मात।।

दोहा

१— वचन सुणी वेटा तणा, माता थई निरास।
वेटो आज घरे नहीं, भद्रा थई उदास।।

२— रतन अमोलक भेंटना, ले दास्यां ने लार।
मध्य वाजारे निकली, गई, कृष्ण तणे दरबार।।

ढाल ६ राग—भविजन कर्म समो नहीं कोय····

१—माता तो ऊठ कृष्ण घर चाली, कहे सांभल जो नर नाथो।
एका एकी म्हारो कुंवर थावरचा, काढी दीक्षा री बातो।।
जायो म्हारो, लेसी संजम भारो।।
भांत-भांत घणो समजायो, पिण माने नहीं लिगार।।टेर।

२—अन्न धन्न तुम प्रसाद घणो ही, तिणरी नहीं मारे चावो।
पुत्र वैरागी तिणरे महोत्सव काजे, छत्र चवर दिरावो।।

३—वलतां कृष्ण जी इण पर वोले. थारो वेटो होसी धर्म देवो।
हूंस हमारी पूरण काजे, मोछव करसां स्वयमेवो।।

४—चतुरंगी सेना सज कीधी, आप हुआ असवारो।
नाटक ना झणकार होवंता, आया, थावरचा घर वारो।।

ढाल ७ राग—चन्द्रगुप्त राजा सुणो

१—थावरचा ने कहे कृष्ण जी, तूं दीक्षा मत ले भाया रे।
सुख भोगवो संसार नो, म्हारी छे छत्रछाया रे॥
थावरचा ने कहे कृष्ण जी॥टेर॥

२—वलतो कुंवर इसड़ी कहे, म्हारो जीवतो जद सुख पावेरे।
आप कहो तिमि ही करूं, जो जन्ममरण मिट जावे रे॥

३—वलता कृष्ण जी इम कहे, बात कहीं थें भारी रे।
जन्ममरण मेटण तणी, आ तो पोंच नहीं छे म्हारी रे॥

४—हाथी पर बेसाय ने, गलियां गलियां मझारो रे।
कृष्ण करावे उद्घोषणा, द्वारिका नगर मझारो रे॥

५—जगत में कोई केहनो नहीं स्वार्थियो संसारो रे।
माधव मुख सों इम कहे, मति करो ढील लगारो रे॥

६—दीक्षा लो निश्चित पणें, पाणी पेली पालो र।
पाछला सब परिवार नी, हूं कर लेसूं साल संभालो रे॥

७—खाणो खरची पूर सूं, बोले कृष्ण मुरारो रे।
थावरचा साथ वैरागिया, उठीया पुरुष हजारो रे॥

८ सेविका सेंस त्यार हुई, आवे अति आनन्दे रे।
छत्र चंवर देखी करी, पाला हुई ने प्रभु वदे रे॥

६—पंच मुष्टि लोच हाथे कियो, संजम लियो प्रभु पासे रे।
कुंवर थावरचा ज्यों करे, तिण ने छे स्याबासो रे॥

६ | आषाढ भूति—अणगार

दोहा

१— दर्शन परिषह बावीसमो, काठो तिण रो काम।
पांच दोष ने परिहरो, रखो पाका परिणाम॥

२— उत्तराध्ययन कथा माहे, चाल्यो आषाढाभूत।
पेहला परिणाम पोचा पड्या, पाछे मैंठा दीना सूत॥

ढाल १ राग—आल्हेलाल

१—आषाढ भूति अणगार, बहुशिष्यों रे परिवार।
मनमोहन स्वामी ! आचारज चढती कलाए॥

२—जाणे आगम अर्थ अपार, हेतु दृष्टान्त बहुसार।
मनमोहन स्वामी ! चेला भणाया घणा चूंप सुंए॥

३—एक शिष्य कियो रे संथार, गुरु बोल्या तिण वार।
सुण चेला म्हारा ! जो थूं थावे देवता ए॥

४—जो तू कहिजे आय, जेजम करजे काय।
सुण चेला म्हारा ! गुरु सम जग में को नहीं ए॥

५—दो तीन चेला कियो काल, पण किनी किणी न संभाल।
सुण चेला म्हारा, पाछो आय कह्यो नहीं ए॥

६—थूं तो चेलो चोथो होय, तो यम वान्धा नहीं कोय।
सुण चेला म्हारा ! मैं थने माज दियो घणो ए॥

७—थूं शिष्य म्हारो सुविनीत, थारे म्हारे पूरी प्रीत।
सुण चेला म्हारा, अन्तर भक्त छै थूं म्हायरो ए॥

८—थूं मत जाजे भूल, कीजो म्हारो कार कबूल।
सुण चेला म्हारा, थूं तो वेगो आवजे ए॥

९—चेला ने छोड्या प्राण, उपन्यो देव विमान।
मन मोहन स्वामी, रिद्ध सिद्ध पाई घणी ए॥

१०—जगमग महलों री ज्योत, जाणें सूर्य उद्योत।
आच्छे लाल, जाली झरोखा झील रह्या ए॥

११—थांबा पे पुतलियां सार, महलों मांहि अपार।
आच्छे लाल, रतन जडित छे आंगणाए॥

१२—पिलिंग रतनमय होय, ईस सोना रा जोय।
आच्छे लाल, रतनां रो वाण पंच रंग नो ए॥

१३ लुंबा कसिया सेज, दीठा ही उपजे हेज।
आच्छे लाल, सुहालो मांखण सारखो ए॥

१४—चोवा चन्दन चम्पेल, महके सुगन्धो तेल।
आच्छे लाल, चम्पा चमेली गुलाब रा ए॥

१५—महलों रे दोलो बाग, वलि छत्तीस ही राग।
आच्छे लाल, नाटक बत्तीस प्रकार रा ए॥

१६—कपडा महीन गलतान, गहणो रो नहीं कोई ज्ञान।
आच्छे लाल, देखंता लोचन ठरे ए॥

१७—दीपे देवांगना री देह, लागो नवलो नेह।
आच्छे लाल, देवियां सु मोह्यो देवता ए॥

१८ एक नाटक रे झणकार, वर्ष जाये दोय हजार।
आच्छे लाल, गुरु कह्यो याद आवे कठे ए॥

१९—सुखां रो लाग रह्यो ठाठ, गुरु जोवे चेला री वाट।
आच्छे लाल, देवता बणियो आयो नहीं ए॥

२०—चेलो झील रह्यो जेह, गुरु ने पडियो सन्देह।
आच्छे लाल, समकित में शंका पडी ए॥

२१—ये थई पेहली ढाल, 'रायचन्द' भाखी रसाल।
आच्छे लाल, आगलो निर्णय सांभलो ए॥

दोहा

१— आषाढ भूति इम चिन्तवे, नहीं स्वर्ग नहीं मोक्ख।
निश्चय नहीं छे नारकी, सगली वातां फोक॥

२— चित्त वल्लभ चेलो हुंतो, म्हारो पूरो प्रेम।
सूत्र वचन साचा हुवे तो, पाछो न आवे केम॥

ढाल २

राग—सहेलिया ए आम्बो मोरियो०

१—आषाढ भूति इम चिन्तवे, पाछो जाऊँ हो म्हारे घर वास के।
सुन्दर सुं सुख भोगवूं, हूँ विलसुं हो वली लीला बिलास के॥
चारित्र सुं चित्त चल गयो ॥टेर॥

२— चारित्र सुं चित्त चल गयो,
घरे चाल्या हो हुवा श्रद्धा भ्रष्ट के।
अरिहन्त वचन उथापिया,
हुवा खाली हो गमाई समदृष्ट के॥

३— तिण समय सिंहासन कम्पियो,
देव दीधो हो तब अवधिज्ञान के।
गुरु ने दीठा घर जावता,
मार्ग में मांड्यो हो नाटक प्रधान के॥

४— छः महीना नाटक निरखियो,
आचारज हो हुआ हुल्लास के।
पूरो हुवो नाटक पांगरचा,
विहार करता हो आया वनवास के॥

५— दया री परीक्षा कर वा भणी,
देव बणाया हो छः नाना बाल के।
गेहणा वहु पेराविया,
रिमझिम करता हो चाल्या सुखमाल के॥

६— छहुं बालक बोल्या तिण समे,
पाये लागा हो जोडी दोउ हाथ के।
साता छे पूज्य आप रे,
समार्त हो छह काया रा नाथ के॥

७— पृथ्वी अप् तेउ वायरो,
वनस्पति हो छट्ठी त्रस स्वाम के।
छहूं म्हां नान्हां छोकरा,
म्हारां दीधा हो मावित्ता नाम के॥

८— दया पाली घणी छः काय री,
दीठी नहीं हो दया में भली वार के।
पुण्य पाप रो फल पायो नहीं,
हुं तो लेसुं हो छउं ना गेणा उतार के॥

९— बालकां ने कने बुलाय ने,
गहणा गांठा हो उरालिया खोल के।
छउं ना गला मसोसिया,
बालुडा हो मुण्डे नहीं सक्या बोल के॥

१०— गृहस्थो रे धन विना नहीं सरे,
पाने पडियो हो म्हारे मोकलो माल के।
मन मांहे हर्ष मावे नहीं,
मलकन्ता हो चाल्या मन खुशाल के॥

११— दया पण दिल सुं गई,
देव दीठो हो गुरां किया अकाज के।
अजु तो मारग आण सुं,
जो एनेहो होसी आंख्या लाज के॥

१२— दूजी ढाल पूरी हुई,
ऋख "रायचन्द" हो कहे छे एम के।
चतुराई देखो देवता तणी,
गुरां ने हो ज्ञान में घाले छे केम के॥

दोहा

१— देव रूप फेरी करी, कियो साध्वी रो रूप।
गेणा गांठा भारी पेरिया, कपडा झीणा बहु चूंप॥

२— बांयां बाजुबन्ध बेरखा, गले नवसरियो हार।
ललाट टीको झल रह्यो, पग नेवर झणकार॥

३— सोवन चुडलो हाथ में, कांकरण रतन जडाव।
आंगुली वींटी झलहले, झीणी चाले पांव॥

४— मारग जाता साधु ने, मिली साध्वी एम।
लज्जा हीण थे पापणी, भेख लजायो केम॥

अथाग्रे प्रक्षिप्त दोहे—मुनिकथन

५— सांग कियो साधु तणो, पेट भरी गुण हीन।
भेख लजावे लोक में, धिक तुझ ने मति हीन॥

६— महाव्रतणी वाजे जगत्, लाजे नहीं लगार।
धर्म लजावा कारणे, थे छोड्यो संसार॥

ढाल प्रक्षिप्त

राग—चौकरी

सुण महासती, या लखणां सु जैन धर्म अति लाजे।
गुण नहीं रती, लोकां माहे निर्गन्थणी यूं वाजे॥टेर॥

१—थूं चाले छे चाला करती, शुद्ध ईर्या समिति नहीं धरती।
लोक लाज सुं नहीं डरती, थूं लावे गोचरी झर झरती॥

२—एक लडो थूं फरती दीसे, दोय ने वरजी जगदीसे।
शुद्ध सीख दीयां दांत ज पीसे, थें नहीं छोडी तिल भर रीसे॥

३—तुं मेले खेले देखण जावे, व्याव ओसर सुं वेहरी लावे।
रवि उगा विन पाणी जावे, थूं क्यु मारग ने लजावे॥

४—थारे घेर दार पेरण साडी, रंगी चंगी छे देह थारी।
तप करणी सुं थूं हारी, थूं टूट पड़ी खावण लारी॥

५—थूं झीणो पट ओढण राखे, अंग अंग सारो झांके।
लोक लज्जा पण नहीं राखे, थे भेख लियो छो हक नाके॥

६—परालब्धी बाल खिलावे छे, मांहो मांहे जंग मचावे छे।
गृहस्थी आय छुडावे छे, जिन मारग पूरो लजावे छे॥

७—जग मांहे वाजे तूं गुरणी, विगड़ गई थारी करणी।
लंपट नर ना चित्त हरणी, तूं लाजे नहीं उदर भरणी॥

८—केई कपट करी जग डहकावे, मलिन श्याम धोवण लावे।
शुद्ध दशा ते नहीं पावे, ते पिण शिवपुर नहीं जावे॥

६—कंचन चूडो खलके है, लिलवर बिंदली झलके है।
मंजन सु देही झलके है. वीजली ज्यूं तुज तन पलके है ॥

१०—एक भागां सब ही भागे, थारी वन्दना .दाय नहीं लागे ।
हूं आषाढाचार्य मुनि सागे, मतो उभी रहे तूं मुख आगे ॥

११—रामचन्द्र कहे सुण लोजो, सुण ने सतियां मत खोंजो ।
जो खीजो तो तप कीजो, शुद्ध संजम री थे ख प कीजो ॥

दोहा

१— आरजिया कहे सुण साधु तुं, एहवा बोल न बोल ।
पात्र मांहेला सब मूक दो, लज्जा सगली खोल ॥

२— अल्प दोष छो मांहरो, कांई प्रकाशो साध ।
दोष तुम्हारो देखलो, थे की बालक नी घात ॥

साध्वी का उत्तर

राग—चौक की

सुणो मुनिवरजी, मत देखो पर दोष, विचारी बोलो ।
गुणो जिनवरजी, तन उज्ज्वल मन कपट हिया खोलो ॥टेर॥

१—परोपदेशी घणा जग में, पर ओगुण देखे पग पग में ।
अरु आप तो भूल रह्या अघ में ॥सुणो०॥

२—पूंज पूंज पग देवो छे, इण रीते विहार में बेवो छे ।
किम लम्बा तडाका देवो छे ॥सुणो०॥

३—मलिन धोवण चौडे धर दो, निर्मल जल गुपचुप कर दो ।
निन्दा करी गृही कान भर दो ॥सुणो०॥

४—पडिले हण विधि नहीं जाणो छो, शुद्ध श्रद्धा न पिछांणो छो ।
उत्सूत्र प्ररूपी रूढ तांणो छो ॥सुणो०॥

५—कपट क्रिया से नहीं तरिया, बाज आचारी पेट भरिया ।
इसा सांग तो बहु करिया ॥सुणो०॥

६—उजड़ वस्ति में सम रैणो, कैणो जिण रीते वै णो ।
घर ओगुण देख पर गुण लेणो ॥सुणो०॥

७—महिमा कारण करि माया, भोला नर ने भरमाया ।
स्यूं कपट धरम प्रभु फरमाया ॥सुणो०॥

८—आप सासरे नहीं जावं, पर ने सीख शुद्ध फरमावे ।
ज्यांरी प्रतीत किम आवे ॥सुणो०॥

९—हाथ थकी फेरे माला, भरया पेट में कुद्दाला ।
ऐसे मुनि का मुख करो काला ॥सुणो०॥

१०—आप पोते निर्ग्रन्थ वाजो, थोथा चिणा ज्यूं मत गाजो ।
घर जाता मन में नहीं लाजो ॥सुणो०॥

११—मनुष्य मार ने धन लावो, अबे पेला ने समझावो ।
झोली पातरा दिखलावो ॥सुणो०॥

१२—वात सुणी अचरज पाया, या किम जाणे म्हारी माया ।
राम तत्क्षण दौड आगे आया ॥सुणो०॥

दोहा

१— इम सुण साधु आगे चाल्या, आ किम जाणे दोख ।
रूप मेली श्रावक हुआ, आडम्बर बहु थोक ॥

ढाल ३

राग - धर्म आराधिये

१—सथवाडो कियो घणो वैक्रिय ए, किया नर नारिया का ठाट के ।
सभ्क वाला ने घोडा घणा ए, चाल्या घणी गहघाट के ॥
पूज्य पधारिया ए ॥टेर॥

२—जुना श्रावक जाणे समझणा ए, मुण्डे मुंहपत्ति वान्ध के ।
गुरु ने प्रदक्षिणा देय ने ए, भली तरे पग वान्द के ॥

३—म्हें आप ने वान्दण आवता ए, म्हारे पूरो धर्म सुं राग के ।
आप हां सामां मिल गया ए, भला जाग्या म्हारा भाग के ॥

४—म्हां दर्शन दीठो राज नो ए, म्हारे दूधा वुठा मेह के ।
मन वांछित फल मिल गया ए, आज पावन हुई म्हारी देह के ॥

५—इण दर्शन रे कारणे ए, म्हां चाली चार हजार के ।
म्हां पर कृपा कीजिए, लीजिए सूझतो आहार के ॥

६—गुरु कहे श्रावक सांभलो ए, थांरे भलो धर्म सुं राग के।
पिण आहार लेवा तणो ए, हिवडा नहीं म्हारे लाग के ॥

७—म्हारे वेरण रा भाव को नहीं ए, म करो खींचा ताण के।
हठ जरा नहीं कीजिये ए, थे छो अवसर तणा जाण के ॥

८—तब वलता श्रावक इम कहे ए, जोडी दोनों हाथ के।
हठीला स्वामी थे घणाए, किम खींचो एसी बात के ॥

९—दोय पोहर तो ढल गया ए, थारे हुवो भिक्षा रो काल के।
खीचडी ने वडियाँ भली ए, ऊना रोटा घृत दाल के ॥

१०—ओ दाखां रो धोवण देखलो ए, आपुरी भरी परात के।
मन होवे तो मिठाई लीजिए, पीओ ओला मिश्री नवात के ॥

११—गुरु ने वहराया विना ए, म्हांने जीमण रो छे नेम के।
वेगा काढो पातरा ए, थे झोली नहीं खोलो केम के ॥

१२—थे झोली ने क्यो झाली रह्या ए,म्हारे निश्चय नहीं परिणाम के।
थे किम कर वहरावो सो ए, कोई नहीं जोरावरी रो काम के ॥

१३—थे तो श्रावक मिलिया सामठा ए, थे लीधो म्हांने घेर के।
आगे किम जावण दो नहीं ए, हूं तो होगयो मण को सेर के ॥

१४—म्हें श्रावक घणा ही देखिया ए, पिण ओ हठ ने या झोड के।
कठे ही पण नहीं देखिया ए, ओ दीठो इया ही ज ठोड के ॥

१५—पूज्य सुणो थे पादरा ए, माण्डो पात्रा म करो जेझ के।
म्हैं छां ओ समगति आपरा ए, हुलस्यो म्हारो हेज के।

१६—इतरा चरित्र चेला ने किया ए, तीजी ढाल मझार के,
ऋषि रायचन्दजी कहे ए, आगे सुणो अधिकार के ॥

ढाल ४ राग—नणदल ए०

१—आमी सामो खींचता, झोली खुली नीठा नीठ, गुरांजीओ।
पातरा मांहे सुं गहणा पडया, चवड लोका लिया दीठ। गु०
थे गेहणा कठा सुं लाविया ।टेर॥

२—गेहणा कठा सुं लाविया, कहो थांरा चित्त री वात, गुरां जी।
थे भेख लजायो लोक में, कह्यो कठा लग जात, गुरां जी॥

३—इतरे बारू आविया, वले आया बाप ने माय, गुरां जी।
गेहणा तो गया आगला, म्हांरा बेटा देवो बताय, गुरां जी॥

४—तात मात कहे रोवता, सुत बिन गेहणा रो शाल, गुरां जी।
कुरले म्हारो कालजो, ज्यां लग निरखां नहीं बाल, गुरां जी॥

५—वेगा म्हांने बताय दो, जेझ करो मत काय, गुरां जी।
थे टाबर कठे छिपाविया, म्हारो जीव निकलियो जाय, गुरां जी॥

६—जीवता होवे तो म्हैं जोयला, मुआ होवे तो देवाँ त्याग, गुरां जी।
गुरु आंख्या मींच अबोला रह्या, आवी लाज अथाग, गुरां जी॥

७—जो धरती फाटे परी, हूं पेस जाउ पाताल, गुरां जी।
मोटो अकारज मैं कियो, मैं मारया नाना बाल, गुरां जी॥

८—अरिहन्त सिद्ध साधु धर्म रो, चित्त धरया शरणाचार, गुरां जी।
अवकि इण विरिया विषै, म्हनें शरणा रो आधार, गुरां जी॥

९—ये देवता चरित्र देखाविया, पिण एक रही गुरां में लाज, गुरां जी।
लाज रही तो मारग अ वसी, लाज सूं सुधरे काज, गुरां जी॥

१०—गुरु समझावण कारणे, चौथी में चरित्र अनेक, गुरां जी।
रिख रायचन्द कहे सांभलो, आगे चेला रो विवेक, गुरां जी॥

दोहा

१— बारू लागा बाघ ज्यूं, गुरु हुवा घणा भय भ्रन्त।
देवता ज्ञान मे देखिया, आण मिल्यो अब तन्त॥

२— माया सर्व समेटने, साधु रूप बणाय।
मत्थेण वन्दना मुख सुं, कहे उभो आगे आय॥

३— आप आवन्ता कठे अटकिया, कांई दीठो मार्ग माय।
गुरु पन्नक नाटक निरखियो, तब चेलो बोल्यो वाय॥

४— पन्नक कह्यो किण कारणे, नाटक निरख्यो छः मास।
देख्यो सूरज माण्डलो, जोवां हिये विमास॥

ढाल ५ राग—चार प्रहरो दिन हुवे रे लाल

१— रूप कियो देवता तणो रे लाल,
रिद्धि तणो कर विस्तार, गुरां जी ओ।

चित्त वल्लभ चेलो पूज्य रो रे लाल,
उपनो स्वर्ग मझार, गुरां जी ओ ॥
राखो अरिहन्त वचनां री आसता रे लाल ॥टेर॥

२— राखो अरिहन्त वचनों री आसता रे लाल,
टालो समकित ना दोख ॥गुरां०॥
स्वर्ग नरक निश्चय जाण जो रे लाल,
कम खपाया मिले मोख ॥गुरां०॥

३— हूँ संजम पाली हुवो देवता रे लाल,
रतन जडत रो विमान ॥गु०॥
दो हजार वर्ष पूरा हुवा रे लाल,
एक नाटक से प्रमाण ॥गुरां०॥

४— ज्यूं थे नाटक में मोहिया रे लाल,
त्युं म्हें मोही रह्यो एम, ॥गुरां०॥
थांने मैं विसरी गयो रे लाल,
लागो नवलो प्रेम, ॥गुरां०॥

५— समकित मांहे सेंठा किया रे लाल,
काट दियो मिथ्यात ॥गुरां०॥
वन्दना किधी गुरां भणी रे लाल,
जोड़ी दोनों हाथ ॥गुरां०॥

६— देवता प्रतिबोधी गयो रे लाल,
गुरु लियो संजम भार ॥गुरां०॥
पछे चारित्र पाल्यो निर्मलो रे लाल,
वलि ओरां रो कियो उपगार ॥गुरां०॥

७— आषाढभूति भलो तरे रे लाल,
जिन मारग दीपाय ॥गुरां०॥
अन्त समय अनशन करी रे लाल,
मोक्ष गया कर्म खपाय ॥गुरां०॥

८— जिम आषाढभूति दृढ हुआ रे लाल,
जिम रहिजो चतुर सुजाण ॥गुरां०॥

दर्शन परिषह जीत जो रे लाल,
ज्यूं पहुँचो निर्वाण ।.गु०॥

९— उत्तराध्येन अध्येन दूसरे रे लाल,
कथा मांहे अधिकार ॥गुरां०॥
तिण अनुसारे मैं कियो रे लाल,
रिख रायचन्द पर उपगार ॥गुरां०॥

१०— समकित दृढ़ पंच ढालियो रे लाल,
कह्यो कथा मांहे जोय ॥गुरां०॥
जो कोई विपरीत मैं कह्यो रे लाल,
ते मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥गुरां०॥

११— पूज्य जयमल जी रे प्रसाद सुं रे लाल,
नागोर शहर चौमास ॥गुरां०॥
पंच ढालियो जोड्यो जुगत सुं रे लाल,
समकित ज्योत प्रकाश ॥गुरां०॥

१२— संवत् अठारे छत्तीस में रे लाल,
आसोज विद दशमी दिन ॥गुरां०॥
राखो समकित निर्मलो रे लाल,
वाजो जग मांहे धन ॥गुरां०॥

दोहा

१— गुरु प्रेरे अहो यव मुनि, थोड़ो घणो सिद्धान्त।
आलम्बन ए धर्म नो, परभव सुख अनन्त ॥

२— विद्या नर नो रूप है, विद्या धन प्रच्छन्न।
विद्या धन यश सुखकरी, विद्या बन्धव जन ॥

३— विद्या ए गुरु निगुरु, विद्या ए पूजे राज।
विद्यावंत नर देवता, सिद्ध करे सब काज ॥

४— विद्या अगुरु लघु गुण, भार न देश प्रदेश।
उदक अग्नि ने चोर नो, भय पिण नहीं लव लेश ॥

५— विद्यावंत प्रसिद्ध जग विद्यानत प्रवीण।
सिंग पूंछ बिना मनुष्य ते ढोर न विद्याहीण ॥

ढाल ३

राग—किण से कड़वा मत बोलना जी

१— प्रथम ज्ञान ने क्रिया पछे छे, प्रभु आगम में भाखी।
ज्ञान बिना नहीं सुगति मुगति बेहुं, बहु आगम तासु साखी ॥
यवमुनी भणीये, हो भणीये, भणीये भणीये, यव ॥टेर॥
भव भव संचित पाप निकाचित हणीये यवः।

२— वावनो चंदन लद्यो गधेड़ो, भारवाहक बिण ने।
ग्राम नगर में संघ चतुर विध, ज्ञानी बिना कुण माने ॥

३— वार वार इम कहे आचारज, पण जव मुनि नहीं माने।
गुरु कहे है जव भणो नहीं, पिण मुश्किल पड़सी थाने ॥

४— नृप थयो साधु जाण ने परीपदा, ग्राम नगर बहु आसी।
पुछ्या जबाब कह्यो नहीं जासी, पछे घणो पछतासी ॥

५— जव मुनि कर जोड़ी कहे गुरु ने स्वामी हूं गरड़ो डोसो।
पाके हांडे चढ़े न कानो शूं कीजे अफसोसो ॥

६— श्री जी साहिब थां खांदे नचीतो, धर्म ध्यान हूं ध्याऊं।
आर चिन्ता सगर्ना छाण्डी श्री पुज चिरंजीवाऊं ॥

२— लोग वांदवा आवसी, कहसी दो उपदेश ।
शूं कहशूं तब लोक नें, ए विखवाद विशेष ॥

३— हा ! हूँ बडो अभागीयो, पापी हूँ पुण्यहीण ।
हूँ मूरख मति बावलो एम थायो मुख दीन ॥

ढाल ५ राग—श्रावक धर्म करो सुखदाई

१—इम पछतावतो कितरेक काले निजपुर सीम में आयो हो ।
जव नो खेत तिहा एक हरीयो, शोभनीक डह डायो रे ॥

२—देखो आचारज अकल उठाई, गरु उपकारी सदाही रे ।
गुरु री सीख अबे याद आई, आण पड्या अब काईं रे ॥
देखो आचारज अकल उठाई । टेर॥

३—एक गधो तिहाँ चरवा पेठो, हरीया जव ते खावे रे ।
खेत धणी थी डरतो खिण खिण, ऊँचो नीचो जोवतो जावे रे ॥

४—खेत धणी तिहा अलगो उभो, देख गधो गाथा बोली रे ।
जव मुनिवर सुण मन में हरख्यो, बात हिये इम तोली रे ॥

गाहा

१— आधावसि पधावसि ममवावि निरिक्खसि ।
लक्खिओ ते अभिप्पाओ, जवं पत्थेसि गद्दहा ॥

दोहा

१ - इत उत देखे गर्दभा, जाण्यां मन का भाव ।
जव को चाहे विणासवो, थांरी हिम्मत हो तो आव ॥

ढाल पूर्व की

५— ए गाथा रूडी हूँ सीखुं आड़ी आसी मारे आजे हो ।
संसारी मुझ वंदन आसी, तिण ने सुणावा काजे हो ॥

६— खेत धणी वार-वार [illegible] धारी रे ।
[illegible] करतो [illegible] रे ॥

सो ही करू ँ हो मुथा जी थारां केण थी,
विघ्न म्हारा टल जाय ॥

६—दुष्टी मुथो हो कहे सोपो पड्या,
पीछे खड्ग ले जाय।
मुनि ने मारो हो, जो विघ्न दूरा टले जी,
जन अपवाद न थाय ॥

दोहा

१— इम सुण खड्ग ले निसर्यो, रात पड्या नृप आप।
केलवणी मूथे करी, पिण प्रगट सी पाप ॥

२— इण अवसर मुनिराज ने शीत लागतो जाण।
दे कुम्भार दया करी, आड़ी टाटी आण ॥

३— सज्झाय करे दो गाहनी, माय बैठा मुनिराज।
तीजी गाथा किम लहे, ते सुण जो तज काज ॥

ढाल ९

राग—मोटी हो जग में मोहणी

१—कुंभारे जव चाक थी, उतार्या हो तिण काचा भाण्ड।
रात्रे भागण भयथकी, ते सुतो हो ऊपर माचो माण्ड ॥
जोई जो जी हिवे सूं होवे ॥

२—तिहा तणे एक ज उन्दरी, ते करती हो चक्कर मुख शोर।
जाति स्वभाव ने कारणे, ते जावे हो नित भाण्डा कोर ॥

३—तव कुम्भार गाथा भणी,
ते सुण ने हो धारी जव ऋषिराय।
अण दिवसनी खरची थई,
. चोथे दिन जाई हो भेंट सु ंगुरु पाय ॥

गाहा

सुकुमालग ! भद्दलया ! रत्तिंहिंडणसीलया।
भयं ने णत्थि मं मूला दीहपिट्ठाओ ते भयं।"

ढाल १०

राग—ख्याल की

१—सुधो अर्थ विचारी समज्यो, मुहजे तो तुझने मार।
राज लेसी तिण वहिन छिपाई, इण में फेर न सार॥
है पर उपकारी जाऊं बलिहारी श्री गुरुदेव को॥

२—डर पाम्यो झट पट तव उठी, टाटी परो उतार।
यवमुनि ने चरणें जाई पडियो, दे आतम ने धिक्कार॥

३—खमो अपराध हमारो स्वामी, तुमने किया उपकार।
खमवा योग्य थे क्षमा का सागर, तुम गुण अनन्त अपार॥

४—तुम वह्मज्ञानी सकल द्रव्य ज्ञाता, हूं मूरख सरदार।
हराम खोर गुरु देव को घाती, मैं मूल न कियो विचार॥

५— तुम प्रसाद बात सहु जाणी, नहीं नर कर तो संहार॥
धर्म रुप जन्म दियो दूजो, मरतालियो उबार जी।

६— छोरु कुछोरु आज थयो थो, पिण तुम लियो सुधार॥
बात मुथारी मानी मैं मूरख, कह्यो सकल विचार जी।

दोहा

१— नृप अपराध खमायने, आयो निज दरबार।
चकितभूत मुनिवर भये, ये शूं थयो अवार।

२— खड्ग ग्रही आयो हतो, मारण की मन धार।
उपदेशादि साज विन, सुधर्यो केम विचार।

३— धन्य शिक्षा मुझ गुरु तणी, धन्य ज्ञान दातार।
धन्य आज्ञा गुरुराज नी वड़ो कियो उपकार।

ढाल ११

राग—वीर जी वखाणी हो मुनिश्वर करणी आपरी।

१— हिवे दिन उगा हो राजा निज सामंत तेड़ने,
मुहता नो घर लियो घेर।
जीवनो झाल्यो हो सकल परिवार सुं जी,
फिर गया सुभट चौफेर।
धन्य गुरु ज्ञानी जी, दाना जीवन तणा जी॥टेर।

२— घर लूट लीधो हो, काढी मूश्ररां मांय थी जी,
पूछ्यो सब वीरतंत ॥
देई दिलासा हो बाई ने राखी रोवती जी,
बात मिली सहू तंत ॥टेर॥

३— धन्य उपकारी हो, गुरु जी आपरा ज्ञान से जी,
सिद्ध हुआ सहू काज ।
देश से निकाल्यो हो, मुथा परिवार ने जी,
राज संभाल्यो जी राज ।टेर॥

४— नृप प्रभाते हो, आडम्बर अति करी जी,
वांद्या श्री जव मुनि राज ।
नरक पडन्तो हो, राख्यो गुरु मुझ भणी जी,
प्राण बचाया म्हारा आज ॥टेर॥

५— लोक नगर नां हो, आया सहु वंदवा जी,
राय मुख सुणे गुण ग्राम ।
मुनि मुख वाणी हो जाणी सूत्र सारसी जी,
सुणं राखी चित्त ठाम ॥टेर॥

६— बात फैलाणी हो, पाणी ज्यूं आखा शहर में जी,
धन्य धन्य करे नर नार ।
धर्म तणी श्रद्धा हुआ हो, घणी सूंस ने आखड़ी जी,
अतुल हुआ उपकार ।

७— तीन दिन राख्या हो मुनि ने आग्रह करी जी,
वली हठ किया कहे एम ।
मुझ ने गुरुनी हो, आज्ञा छे श्रावका एटली जी,
ते कहो लोपाये केम । टेर॥

८— इम समजावी हो यव मुनि आया गुरु कने जी,
वांद्या श्री गुरु जी नां पाय ।
हाथ जोड़ी ने हो गुरासुं अर्जी ऐसी करे जी,
मुझ ने भणावां महाराय ॥टेर॥

९— स्वामी तव बोल्या हो, तुम तो इम कहता हता,
मांने भणावो आवे जी नाय ।

हिवे थें कहो छो, भरणावो स्वामी मुझ भरणी,
कांसुं आई दिल माय ।।टेर।।

१०— जब मुनि भाख्यो हो, वृतान्त सहू मांडनें,
पछे भण्या ग्यारह अंग।
कर्म खपाई हो, केवल ले मुगति गया,
तिम दूजा ही करजो उमङ्ग।

११— उत्तराध्ययन दूजे हो, परिषह इकवीसमो,
कथा मांहे अधिकार।
तिरण अनुसारे हो, कवि जन इम कहे,
इरण परे कीजो निस्तार ।।टेर।।
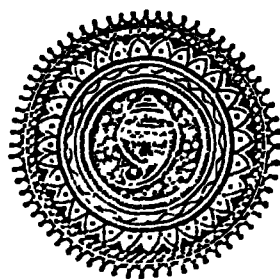
दोहा

१— शासनधणी सानीध करो, वचन सुधारस जाण।
कर्म तोड़ केवल लही, तेहनां करूं वखाण॥

२— भक्तपूत चारित सुद्ध, भाव सहित प्रमाण।
ते श्री वीर जिनेश्वरू, प्रणम्या हो कल्याण॥

ढाल १ राग—नर माया काय कु जोड़ी

१—दक्षिण भरत मगध मांह सोहे, राजग्रही सुखकारी रे।
श्रेणिक राजा ने चेलणा राणी, दोई दृढ़ समकित धारी रे॥
सेवो भविक शुद्ध अणगारी रे॥टेर॥

२—जिण साधु वंदण चाव सदाई, धर्मघोष आया तिणवारी रे।
दर्शन कुं लोग उमंग भर्या है, मिल-मिल जात हजारी रे॥से०॥

३—वाणी सुणवां कुं जुड़ी परिखदा, साधु केवल वैण उचारी रे।
भविक जीव सुण मगन होत है, वाणी सुधासम प्यारी रे॥से०॥

४—सूंस व्रत पच्चवखाण बहु विध, शक्ति मुजब लिया धारी रे।
वाणी सुण लोक आया ठिकाणे, आगे सुणो अधिकारी रे॥से०॥

दोहा

१— छठ खमण ने पारणे, मुनि अषाढो तेह।
सज्झाय ध्यान कर गुरु कने आज्ञा मांगी धर नेह॥

ढाल २ राग—जुहारमल जाट का गढ जैपुर बंकारे।

१—तीजा पोहर नो गोचरी रे, नगरी में कियो प्रवेश।
लब्धि धारी भणीया घणां रे, जोवन तरुणी वेश॥
मन मोहन साधुरी छवि लागे प्यारी रे॥टेर॥

२—ऊँच नीच मध्यम कुले रे, फिरता आया नटवा गेह।
हम घर आया साधु जी रे, मोदक बहरावे धर नेह ॥म०॥

३—मोदक ले पाछो वल्यो रे, चितवे चित्त मझार।
ए लेसी गुरु माहरां रे, पावे न पडसी लगार ॥म०॥

४—रूप फेर अन्दर गयो रे, आय वहर्यो दुजी बार।
इण में मुझ ने ना मिलेरे, लेसी विद्या भणावणाहार ॥म०॥

५—तीजो रूप डोसा तणो रे, हाथ में डांगड़ी झाल।
डिगमिग तो पगला भरे रे, सल पडिया नाक ने गाल ॥म०॥

६—आयो नटवा आंगणे रे, नटवी करुणा कीध।
क्षीण शरीरज देखने, एक मोदक मुनि ने दीध ॥म०॥

७—ओ मोदक लघु शिष्य लेवसी रे, चौथो रूप धर्यो कर चूंप।
हाल चाल रलियामणी रे वले दीसे बालक रूप ॥म०॥

८—इसड़ो रूप धारी करी रे, फेर मोदक लीया ऋषि राज।
ए ज्येष्ठ गुरु भाई लेवसो रे, नटवो देखे सर्व साज ॥म०॥

९—पांचमो रूप खोड़ा तणो रे, जीमणी वठी आंख।
मोदक जाचण आवीयो रे, कुवडो कड़ीया में वांक ॥म०॥

१०—रूप नवा-नवा देखने रे, नाटकियो अचरज चाय।
महिला सुं हेठो उतर्यो रे, हर्ष सुं वांद्या ऋषि राय ॥म०॥

११—हाव भाव करे अति घणां रे, लागी घर में राखण री चूप।
कन्या दोय नटवा तणी रे, ज्यानें सारोही कह्यो स्वरूप ॥म०॥

१२—चिंतामणी सुर तरु समो रे, मुनि मांहे विद्या अथाग।
हेत जुगत करी ने रीझायजो रे, तुम घर कर वहलो राग ॥

दोहा

१— "जय सुन्दरी" भवन सुन्दरी, सज सोला शृङ्गार।
मुनि आगल हाजर खड़ी, अप्सर ने अनुहार ॥

२— चन्द्र वदन मृग लोचनी, हंस सरीसी चाल।
लुल-लुल ने लटका करे, बोले वचन रसाल ॥

राग—महावीर जी री पालखड़ी

ढाल ३

१—हां रे मुनिवर ! आप पधारो रंग महल में ॥हां०॥ सूरत नी बलि०॥
ए सुख सेज्या ने सायवी ॥हां॥ सुख विलसो संसार॥

महाराज, मोरी विनतड़ी अवधार ज्यो ॥टेर॥

२—हां; आज्ञापालक आपरी, हां, जोड़ खड़ी रेंसा हाथ ॥
हां; म्हें छां थांरी कामण्या, हां थे छो म्हारा नाथ ॥म०॥

३—हां; घर-घर फिरणो गोचरी हां; अरस-विरस लेणो नाज ।
हां; ए लायक तुम छो नहीं, हां; अर्ज मानो महाराज ॥म०॥

४—हाँ; माथे लोच करावणो, हाँ; पालो करणो विहार ।
हाँ; मेला कपड़ा पहरणा, हाँ; दोरो संजम भार ॥म०॥

५—हाँ; शीत ताप दुःख कां सहो, हाँ; तुमछो राजकुमार ।
हाँ; जोवन वय में काया कां दमो, हां; एकरणी दुष्कर कार ॥म०॥

६—हाँ; फूलों में वास रमी रही, हाँ; जिम थांसु लागो प्रेम ।
हाँ; भोग कर्म उदे हुआ, हाँ; ते छुटी जे केम ॥म०॥

७—हाँ; नाटकणी थी मोही रह्यो, हाँ; भूला तप जप जोग ।
हाँ; कामण चित्त में बस रही, हाँ; कर वा सुं मन भोग ॥म०॥

८—हाँ, नेह नजर निरखे रह्यो, हाँ; सुन्दर-इम बोले ऋषिराय ।
हाँ; सुन्दरः आसा तुम घर आंगणे, हाँ गुरु ने पुछ सुं जाय । म०॥

दोहा

१— वाट जोवे चेला तणी, सत गुरु नैण निहाल ।
हिवे अषाढ़ मुनिसरु, तिहां आवै तत्काल ॥

२— शिष्य मोड़ा किम आविया,, किहां रह्या विलमाय ।
तड़क भड़क चेलो कहे, ए मासुं न खमाय ॥

३ - शिर तपे पग तले, वले, फिरवो घर-घर मांय ।
ए लो ओघा पातरा, करमूं जे मुझ दाय ॥

ढाल ४

राग—गरभ्यो राजवी

१—वचन सुणी निज शिष्य तणां रे चेला जी कांई गुरु बोल्या तदवाण।
सीख शुद्ध मांनों रे सतगुरु की ॥टेर॥
२—चूक वचन किम बोलिए रे ।चे०॥ तू तो चतुर सुजाण ।सी०॥
३– कीसो ठिकाणो विचारीयो रे चेला जी, थांरे किण सुं लागो प्रेम।
४—नाटकणी मुझ मन वसी हो॥ सत्गुरुजी॥ मोह्यो राधा माधव जेम।
५—नीठ-नीठ नर भव लह्यो रे ॥चे०॥ मिलीयो सत्गुरु साथ ॥सी०॥
६– तप करी ज्ञान भणावीयो रे ॥चे०॥ थारे लागो चिंतामणी हाथ।
७—सेठ सेनापति राजवी र ।चे०॥ वल इन्द्र सुरांरा नाथ ॥सी०॥
८—तु जगरो पुजणीकछे रे ॥चे०॥ थारे कने जोड़ सहु हाथ ॥सी०॥
९—ए सुख पदवी छोड़ने रे ॥चे०। तुं रह्यो सन्दर सुं रीज ॥सी०॥
१०—विविध वचन कह्या घणा रे ।चे०॥ तव चेलो बोले घर खीज॥सी०॥
११—था री राख्यो नही रहुं हो ॥सत्गुरुजो॥ जो होवे लाख प्रकार।
साख नहीं मानु हो गुरुवर जी ॥टेर।
१२—वचन दियो सुन्दर भणी हो। स०॥ जाय सुख विलसुं संसार ॥सी०।

दोहा

१— गुरां रो राख्यो नहीं रह्यो, तो ही गुरां रो जीव।
मद्य मांस लीजे मती, रोठी राखजे समकित नींव॥
२— मद्य मांस लेउं नहीं थांरों वचन कबूल।
इम कही उठी चालीयो, रह्यो काम भोग रस भूल॥

ढाल ५

राग—मुनि मन नाया में वस रह्यो॥

१— कामण में मोही रह्यो, सुख विलसे चित्त लाय रे।
थारे वरस बीना पछे, ते राजा पे जाय रे॥
कामण में मोही रह्यो ॥टेर॥

प्रक्षिप्त दोहा

१— राज भवन में रंगसुं, कलामार के साथ।
आयो कुंवर उछाह सुं, करे राय सु बात॥

प्रक्षिप्त ढाल राग--अस्सी रुपये लो कलदार

एतो अचरज बात अपार, साँभल जो सगला नर नार ॥टेर॥

१—कुँवर आयो नृप सुख पायो, मन में भयो कयो विचार।

२—कुँवर बोले कुण मुझ तोले, जीतुं एहने छिनक मझार।

३—बात करतां नभ जोवंतो दीठो दल सेन्या अणपार।

४—राय विमासे केम आकाशे, युद्ध माण्ड्यो छे कहो इणवार।

५—कुँवर भासे वचन प्रकाशे, चन्द्र सूर्य आपस थयो खार।

६—तुम आज्ञा पाउं अब मैं जाऊँ, तुरत मिटाऊँ न लाउं वार।

७—पिण मुझ संग दो नार रुपारी, सुंपुं कहने कहो विचार।

८—महेल रखावो तुमे सिधावो, राड मिटावो गगन मझार।

९—तुमछो राजा गरीब नवाजा, मेटो मर्जादा न दो मुझ नार।

प्रक्षिप्त ढाल राग—बनारसी

अचरज सुण जोए आगे! सुणतां सब वल्लभ लागे जी ॥टेर॥

१—नृप कहे कुँवर से वाणी, ए किम करी बात अयाणी जी।

२—पर नारी दोसन भारी, आ भव-भव करे खरारी जी।

३—पर नारी फन्द में पटके, बेरण अंधारी भटके जी।

४—सब लोकां केरी साखे, दो नारी ने नृप राखे जी।

५—मुझ हाथों हाथ सुंपी जो, दुजा ने एह मत दीजो जी।

६—पग अंगुष्टे काचे तारे, लंबाव्यो गगन मझारे जी।

७—छिन भर मे अंवर जावे, नहीं किणरे दृष्टज आवे जी।

प्रक्षिप्त ढाल राग—तमासारी

इण राज सभा में, अचरज आयो रे सगला साथ ने ॥टेर॥

१—क्षण अंतर वे पांव पड़ीया जद, राज सभा में आय।
थोड़ी देर से धड़ सर पाणी, पडिया, अचरज पाय ॥इ०॥

२- नृप विचारे किम अब कीजे, ए स्यूं थयो अकाज ।
कुंवर काम रण मांहे आयो, कुण जीते नट आज ।।६०।।

३—सुणी बात ए सुन्दर वेहुं, कहे राय सुं एम ।
छिण भर मैं रेवा नहीं राजा, म्हारे पति सुं प्रेम जी ।।६०।।

४—इण संग सांग म्हें सत लेंसा, ढील न करो लगार ।
बहु विध कर राजा समझावें, नहीं मानें तब नार जी ।।६०।।

५- तुरत जली पिव के संग जाई देखे दुनिया सारी ।
थोड़ी देर से वारि बरसी, जमी सुखाई जींयारी जी ।।६०।।

६—थोड़ी देर से कुंवर उतर्यो नृप पे कयो विचार ।
गढ़ मिटाई शीघ्रे आयो, अब सूंपों मुझ नार हो ।।६०।।

७—अंग उपांग अबर से पडिया, सुन्दर वे सत लीधा ।
सभा समक्ष तुमे पूछलो, समझास सभी तस कीधारे ।।६०।।

प्रक्षिप्त ढाल राग चिड़ी थनें घायलिया भाये

राजेश्वर बात सुणो म्हारी, राजेश्वर बात सुणो म्हारी ।
जिम थे बदलो नीत हरगिज मैं, छोड़ुं नहीं नारी ।।टेर।।

१—ए सब नोकर तुम का साहिब, साख मेरे सारी ।
मान नही मैं बात महाराजा कपट जहारी ।।राजेश्वर।।

२—मैं मागने मेरी पदमण, नहीं मुझ से छानी ।
नहीं तो लेऊं बुलाय सभा में, नहीं झूठी जानी ।।रा०।।

३—नृप कहे किम नार बुलावे, सो जिम लेणा देख ।
मुवा सो जीवित नहीं होवे जिनमत का ए लेख ।।कुंवर जी।।

४—आगे म्हारी [illegible], जरा न लावो जेज ।
[illegible] महल मांय ले [illegible], [illegible] भरती हेज ।।अब तो ज०।।

५—इम विध कर आया नृप पासे, राजा राखी टेक ।
[illegible], आई [illegible] ।।[illegible] जी०।।

६- [illegible] आई [illegible] पास ।
[illegible] ।।देख लो आ०।।

७—प्रदेशी नट विस्मय पायी, सघला नमीया आय।
रीझ्यो राजा अति घणो सरे. कीधो कुंवर पसाय ॥कुंव०॥

ढाल ५ राग—मूलकी

१— राज दुवारे जायने, जीतो नाटकीयो तिवार रे।
प्रमदा छाक पीधी तदा, मद मस्त थव विकार रे॥

२— घर आय देखी नार ने, लार मद्य मांस ना आहार रे।
अषाढभूति विरक्त थयो, जीतो वीषे विकार रे॥
धन धन रे अपाढ मुनिसरू ॥टेर॥

३— कामण चूकी निजवचन थी, अब घर रह वाना त्याग रे।
संयम मारग आदरुं, मन धरिये वैराग रे॥

दोहा

१— कामण ने इण पर कहे, हूं लेसुं संजम भार।
तद कामण वलती कहे, नैणे जल नी धार॥

ढाल ६ राग – कांइक लोजी

१— सूणी वचन निज कता केरा, हाथ जोड़ इम भाखे।
माफ करो तकसीर हमारी, खांविद रोष न राखे॥
उभारोजी, रोजी-३, अपाढ़ा ठाकुर उभारो जी। तेर॥
२— आज पछे सुण पियुड़ा म्हारां, न करां ए काजो।
दीन वचन कहे पलो झालने, आप गरीब निवाजो॥उ०॥

३— इम करतांइ प्रीतम म्होरा, जो तम्हें छेह दीखासो,
मुझ अवलानो जोर नहीं छे. पिण सुख कदेई न पासो।
४— हाव भाव करवा में सुन्दर मूल न राखी वाकी।
पिण गुरु वचन निभावण काजे, वात न मानी वाकी॥उ०॥
५— पलो झाल उभी रही, दोय सुन्दर तिण वारांरे।
तुम मुको ने जावसो जरे, हमने कोण आधारो रे॥
६— विविध वचन कह्या घणा, अपाढो चतुर सुजाणो रे।
कहे नाटक देखावनुं, न करो खांचा ताणो रे॥

कलश

१—संवेग मन धर, राय पे हरख कर भरत नाटिक मांडीयो।
हाथी घोड़ा रथ अन्तेवरी, कीधी परदा दोंडीयो॥

२—अंग आभूषण खूब छाजे, आप विराजे भूपए।
लब्धि तणा परताप सुंए, कीधा नवां-नवां रूप ए॥

३—आरिसा भवन आए सुख पाए ध्याए निर्मल ध्यान ए।
अनित्य भावना सुद्ध जोगे, पाम्या केवल ज्ञान ए॥

४—शासन देवा कीयो उछव, दुंदुभी रही गाज ए।
भक्त "विमल' कर जोड़ भाखे, घन अपाढो मुनिराज ए॥
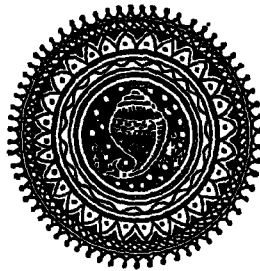
दोहा

१— खराखरी रो खेल है पालणो शील उदार।
पर वस पडिया जे सहैं, धन तेनो अवतार ॥

२— झांझरीया रिखराय जी, पड़ी संकट आय।
तो ही न डिगीया मुनि तदा, ते सुण जो चित्तलाय ॥

ढाल १ राग—श्री जिन अजीत नमुं जयकारी

१—सरस्वती चरणां शीश नमावी, प्रणमुं सद्गुरु पाया रे।
झांजरिया रिख ना गुण गातां, उलट अंग सवाया रे ॥
भविजन, वंदो मुनि झांजरिया ॥टेर॥

२–भविजन वंदो मुनि झांजरिया, संसार समुद्र तरिया रे।
सबल सह्या परिसह मन शुद्धे शीयल रयण कर भरिया रे ॥

३—पइठाणपुर मकरध्वज राजा, मदनसेना तसु घरणी रे।
तस सुत मदन ब्रह्म वालूड़ो, कीरती है तसु वरणी रे ॥

४—वत्तीस नारी सूकोमल परणी, भर जोवन रस लीनो रे।
इन्द्रमहोत्सव उद्याने पहूतो, मुनि देखी मन भीनो रे ॥

५—चरण कमल प्रणमी साधुनां, विनय करी ने वैठो रे।
देशना धर्म री देवे रे मुनिवर, वैराग्य मन पैठा रे ॥

६—पिता तणी अनुमत मांगी ने, संसारी सुख छांड़ी रे।
संयममार्ग सीधो लीधो, मिथ्यामत सब छांड़ी रे ॥

७—एकलड़ो वसुधा तल विचरे, तप तेज कर दीपे रे।
जोवन वय जोगीश्वर दमियो, कर्म कटक ने जीपे रे ॥

८—शील सन्नाह पहर्यो तसु सबलो, समिति गुप्ति चित्त धरता रे।
आप तिरे ने परने तारे, दोष ने दूरे हरतो रे॥
९—तांबावती नगरी मुनि पहुंतो, उग्र विहार करन्तो रे।
मध्य समये गोचरी सचरियो, नगरी में फिरतो रे॥

दोहा

१— घर-घर फिरता गोचरी, मदन ब्रह्म मुनिराय।
तावडोये थाक्यां थका, ऊभा देखी छांय।

ढाल २

राग—श्री जिन मोहनगारो छे के जीवन

विरहणीमदन चढ़ायो राज, जिण तिण जीत न जइये जी ॥टेरा॥

१—इण अवसर विरहिनी एक तरुणी, गोरड़ी गोखां बैठी।
निजपति चाल्यो छे परदेशां, विषय समुद्र में पैठी॥
२—सोले शृंगार सजी सा सुन्दर, भर जौवन मदमाती।
चपल नैण चौदिशी फेरे विषय रस रंगराती॥
३—चौवटे चौदिशी जोतां आवन्तो मुनि दीठो।
मलपन्तो ने मोहनगारो, लागो मन में मीठो॥
४—राजकुमार कोइक छे रुड़ो, रूप अनुपम दीसे।
जौवन वय मलपंतो जोगीसर, ते देखी चित्त विकसे॥
५—तब दासी खासी तेड़ाई, लावोये बुलाई।
ठुकरानी ना वचन सुनि ने दासी त्याथी धाई॥
६—हम घर आवोनी साधुजी, वेहरण काजे पेला।
भोले भावे मुनीवर आवे, शु जाने मन मेला॥
७—थाल भरी ने मोदक मेवा, मुनिवर ने कहे वेरो।
ये मेला कपड़ा परा उतारी, आछा वागा पेरो॥
८—ये मन्दिर ये मालिया मोटा, सुन्दर सेज बिछाई।
चतुर नार हाजर मुझ सरखी, सुख विलसो लिवलाई॥
९- विरह अगन से मैं दाझी हूँ, प्रेम सुधा से सींचो।
म्हारा वचन सुनी ने मुनिवर, बात आगी मत खींचो॥

१०—विषय वचन सुणी वनीता ना, मुनि समता रस बोले।
चन्दन थी पण शीतल वाणी, मुनि अन्तर से खोले॥
११—तूं अबला दीसे छे भोली, बोलन्ती नवी लाजें।
उत्तम कुलनां जेह उपना, तेने ये नवी छाजे॥
१२—ए आचार नहीं अम कुलमां, कुल दोषण केम दीजे।
निज कुल आचारे चाली जे, तां जग मां यश लीजे॥
१३—वात अछे जग में दो मोटी, चोरी ने फिर जारी।
इण भव दुःख बहुलो पांमे, पर भव नरक अघोरी॥
१४—शीलचिंतामणी सरीखो छोडी, विषया रस कुण रीजे।
वर्षाकाले मन्दिर पामी, कौन उघाड़े भीजे॥
१५—मन, वचन अरु, काया, करले, लियो व्रत नहीं खंडू।
ध्रुव तणी परं अविचल जाणों, मैं घर वास न मण्डूं॥

ढाल ३ राग—बींछियानी

रे लाला, मुनि पाय झांजर रण जणे ॥टेर॥

१—रे लाल, सीख साधु नी अवगुणी,
जाने बह गई परनालरे।
रे लाला, काम वशे थई आंधली,
देवे साधु तणे शिर आल रे॥
२—रे मुनि पाये झांजर रण जणे,
आय अपुठी मुनि ने पाय रे लाला।
वेल तणी परे सुन्दरी,
या तो वलगी साधु नी काय रे॥
३—रे लाला, जोर करी जोरावरी,
तीहाँ थी निकलिया मुनिराय रे।
तव पुकार पूठे करे, धावो,
ऐणे किधो अन्याय रे लाला॥
४—हारे लाला, मलपन्त मुनि चालियो,
पाय झांजर रो झणकार रे।

लोक सहूं निन्दा करे, जोवो,
एं तो माठो छे आचार रे।

५—रे लाला, बेठौ चोबारे राजवी,
नजरे, जोयो यह अवदात रे।।
दीनो देशवटो नार ने,
मुनि ने जस तणी थई बात रे।।

६—रे लाला, तीहाँ थी मुनिवर चालीयो,
आयो, कञ्चनपुर के माय रे लाला।
राजा ने राणी प्रेम सुं,
बैठा गोखां तणी छाय रे लाला।।

७—राणी मुनिवर ने देख ने,
छूटो आँसुडारी धार ने लाला।
राय देखी मन कोपियो,
यो दीसे छे एनो जार रे लाला।।

८—रे लाला राजेश्वर बिन सोचियो,
तेडायो रिख ने तांय रे।
खाड खणी ऊंडी घणी,
बेसाडियो रिख ने माय रे लाला।।

ढाल ४ राग—देवतणी ऋद्धि भोगवी आप्यो

१—अणसण खांमण, कर मुनि तिहाँ, समता सायर मां झीले।
चौरासी लख जीव खमावो, पार कर्म ने पीले रे।।
मुनिवर ते म्हारे मन वसिया ।।टेर।।
मुनिवर ये म्हारे मन वसिया, हृदय कमल हुलसिया ।।मु।।
२—उदय आमा निज कर्म आलोई, ध्यान जिनेश्वर नो ध्यावे।
खड़क हणन्ता केवल पामी अविचल स्थाने जावे रे ।।मु०।।
३—शरीर साधु नु असीए हण्याथी, हाहाकार त्यां पडियो।
ओघो नें वस्त्र लोई रंगाना अति अन्याय राय करियो रे ।।मु०।।

४—संवली ओघो ले उडन्ती, राणी आगल आय पडियो।
बंधव केरो ओघो देखी, ने हृदय कमल थर हरियो रे॥
५—अति अन्याय जाणी ने राणी, अणसन पोते लीधुं रे।
परमार्थ तव जाणी ने राजा, हा हा ये सुं कीधुं रे॥
६—रिख हत्या नो पातिक लाग्युं, ते किम छुट्युं जावे।
आँखें आँसुंडा नांखतों राजा, मुनि कलेवर ने खमावे॥
७—गद् गद् स्वरे रोवंतो राजा, मुनिवर आगल बैठो।
मान मेली ने खमावे रे भूपति, समता सायर माँ पैठो॥मु०॥
८—फिरी-फिरी उठी पाये लागे, आसुंडे पाय पर वाले।
भूपति उग्र भावना भावंता, कर्म पडल सवे टाले रे॥मु०॥
९—केवलज्ञान लियो राजेश्वर, भवोभवो वैर खमावे।
झांजरिया रिखी नां गुण गांता पाप कर्म ने खपावे रे॥मु०॥
१०—संवत् सत्तरा छपने केरा, अषाढ़ सुदी बीज मांहि।
सोमवार सज्झाय ए कीनो सांभलतां मन मांहि॥मु०।
११—श्री पुनमिया गच्छराज विराजे, महिमाप्रभसूरिन्दा।
'भावरतन' सुशिष्य एम भणे, सांभलता आनंदा॥मु०॥

१३ | रोहाकुमार

दोहा

१— श्री आदिनाथ प्रणमुं सदा, धर्म धुरा किरतार।
जुगल्या धर्म निवारणा, शासन रा सिरदार॥

२— चार कथा विकथा कही धर्म कथा तंत सार।
तिरीया ने तिरसी घणा, पामे भवनो पार॥

३— बुध वखाणीजे जेहनी, पड़वा न दे खोट।
काम पड्या कायम रहे, जिन मारग री ओट॥

४— नंदीसूत्र कथा मध्ये, रोहा नो विस्तार।
तुरत फुरत बुध उपजे, सांभल जो नर नार॥

ढाल १ — राग—भूलो मन भंवरा कांई भमे०

१— मालव देश सुहावणो कदई न पड़ दुकाल।
निवाण तो भरिया रहे, सुखी बाल गोपाल॥
मालव देश सुहावणो ॥टेर॥

२— नगर उज्जेनी दीपती, गढ़ मढ़ पोल पागार।
चोरासी वले चोहटा, वस्तां अमामी सार॥मा०॥

३— संपत घणी ऊँचा घणा, मेल मेलायत गोख।
भोगी जन सुख जानता, पूरे मन री जोख॥मा०॥

४— स्थानक चौंसठ जोगणी, देव छे बावन वीर।
सीप्परा नदी तिहा बहे, मीठो तिण रो नीर॥मा०॥

५— रिपुमर्दन राजा तिहा, धारणी राणी सुजान।
सुखे राज पाले सदा, धूजे वैरी ना प्राण॥मा०॥

६— तिणपुर पासे वसे भलो, नट नामे गाम।
लोकां में मेढी समो, भरत पटवारी नाम ॥मा०॥

७— पारासरी तिण रे भारजा, ते तो कर गई काल।
पडियो विछुवो नार नो, रह्यो नानो बाल ॥मा०॥

८— रोहो बालक जाणने, दूजी परण्यो नार।
पूरन कर्म जोग थी, कजीया खोर अपार ॥मा०॥

९— रात दिवस झगड़ा करे, खीण खीण बोले गाल।
दया दिल में को नहीं, उभी पटके बाल ॥मा०॥

१०— साल संभाल नहीं बालरी, कुण करावे स्नान।
खाणा में कसर न पड़े, जाणे पशु समान ॥मा०॥

११— बाल पणे माता मरे, वृद्ध पणा में नार।
वहुआं हाथे भोजन होवे, परहस्ते व्यापार ॥मा०॥

१२— पापण तो पर भव गई, रोहो जीवे केम।
मूई ने देवे गालीयाँ विणठी बोले एम ॥मा०॥

दोहा

१— इम करतां मोटो हुवो, रोहो चिते मन माय।
नितरी देवे गालीयाँ, रोजी ना कुण खाय ॥

२— माता नहीं ये माहरी, माँहे दीसे अंधेर।
आद अनादि जाण जो, सौका हुंदो वैर ॥

ढाल २ राग—गजरां की

१—रोहो बोल्यो दे कर ताली, मारां लीजे वचन संभारी।
तूं सायत सायत म्हांसु लडती, वले बोले घर का करती ॥

२—तूं देख लीजे मारी बात, तोने फल चखाउं साख्यात।
भूण्डी घणी तूं चाले मोसुं, पिण अबे न चूकूं तोसूं ॥

३—म्हांने अछता आल तूं भाखे, वली खावण में अन्तर राखे।
तूं वणी रही रावरी धींग, इण बातां में घाल दे हींग ॥

४— नेमतूं पराई जाई मारां बाप रे लारे तूं आई।
बैठी घर में हुई धणीयाणी मैं तो थने मोल्ज आणी ।।
५— रोहे सांचा जाब पकड़ाया, पिण इणरे मन नहीं भाया।
तूं कांई करसी रे छोरा, मारा ग्रे हीज ऐसी जोरा ।।
६— भलां इण वयणा में रहीजे, बोल्या बोल मांहे वहीजे।
करतां सूं तों कीज, आपरो दाव ज लीजे ।।
७— एक दिन बाप ने जगावें, आयाणां घर सूं ए कूण जावे।
बोले वचन ज मीठो, मैं उजल वयणां दीठो ।।
८— डावां डोल कर वा लागो, इणरो नारी सूं मन भागो।
नार ने नहीं वतलावे, जद तद घर में आवे ।।
९— एक रोहा सूं माण्डे वात, खोटी नारी री जात।
अब मन में ते विलखाणी, नैणातो नांखे पाणी ।।
१०— ए धणी मांसूं केम रूठो, जाणे तारो अकाले टूटो।
रोहा सुं करे नरमाई, सुण नानडिया चित्त लगाई ।।
११— गरज वड़ी जग मांई, कहे गधा ने मारा भाई।
रोहो बोले तिण वार, थांरा करतब ले तूं चितार ।।

दोहा

१— मांई पलो पात री, कहे नारी ओछी जात।
पुरुष सदा ही निर्मला, सो बातां एक वात ।।
२— वचन लीधो माई भणी, रोहो चतुर सुजाण।
उठो तात उत्तावला, ओ कुण जावे अजाण ।।
३— छायां बताई आपरी, ताते जाण्यो बाल।
नारी सूं मन मेलीयो, उतर गयो सब आल ।।
४— पिण नित्य भोजन रोहो करे, तात संघाते खास।
माई मात रो मूल थी, न करे कदी विश्वास ।।
५— सौदो लेवाकारण, हूं जाऊँ छूं उज्जीण।
हट कर रोहो साथे चल्यो, चतुर महा प्रवीण ।।

६— सौदो ले पाछा वल्या, एक वस्तु गया भूल।
तूं म्हीजे नदी तटे, पाछो आऊं कबूल॥

ढाल ३ राग—प्यारो मोहन गारो राज…

मण्डप खूब वण्यो छेजी क, मण्डप अवल रच्यो छे॥टर॥

१— रोहो नदी तटे बैठो, आप गयो शहर मझारी।
उजैणी री रचना देखी ते मण्डप माण्डे सारी॥

२— मेल मेलायत चौक चोवटा, चोंतरीया विव न्यारी।
सुन्दर मन्दिर कोट बणाया, दरवाजा छबी न्यारी॥

३— चोवारा ने विचे कोरणी, हाट हवेली बीच गलीयाँ।
खुणां तिखुणा ने चौखूणा, देखत पामे रलीयाँ॥

४— घोड़ा खेलावतां तिहा राजा, रिपुमर्दन गयो आई।
मत पेस जो इण शहर में, थांने राय तणी दुवाई॥

५— तत्खिण घोड़ो ऊभो राखी, राखी राजा मण्डप देखे।
चतुराई ने बुद्ध विनानी, कला घणी विशेखे॥

६— कुण ग्राम नो छे तूं वासी, कुण पितारो ठाम।
नट ग्राम ने भरत री बेटो, रोहो मारो नाम॥

७— रे बालूडा इण शहर में, वार केटली आयो।
एक वार हू आयो स्वामी, बोल्यो शीष नमायो॥

८— राजा सुण ने हरष भराणो, पहुंतो नगर मझारी।
बाप ने बेटो मिल घरे आया, आगे सुणो अधिकारी॥

दोहा

१— बालक बुधवंत जाणने, राजा करे विचार।
तुरन्त मेल्यो आदमी, नट ग्राम मझार॥

२— लोकां ने भेला किया, कहे हुकम दियो राय।
शीला मती हिलावजो, दीजो मंदिर कराय॥

३— चिंतातुर सगला थया, बैठा मजलस ठान।
मनसोबो विचारता, थाल न बैसे ज्ञान॥

४— इतरे रोहो आवियो, भोजन जीमां तात।
भूखड़ली लागी मुझे, ऊभो कूटे गात॥
५— लोग हांती कहे कुंवर जी उभा रहो इण ठाम।
घणा दिन खादी रोटीया, पिण आज वण्यो छे काम॥

ढाल ४ राग—लेर्यो भींजेंलो

१—सामो पुतर ने जोय ने कहे तोंने खबर न कांय हो॥
सिला मति हलावजो, दीजो मंदिर वणाय हो॥राजा हट लागो।
२—तिण कारण अम्हें करां, मनसोवो विचार हो।
रोहो कहे ए सोहिलो, मत करो सोच लिगार हो॥
३—जिम ने वेला आवजो, दंसुं विध बताय हो।
चिंता फिकर करो मति, राजी होसी महाराय हो।
४—भोजन करी सव आविया, रोहा केरे पास हो।
मोटी सिला गिड़दा जोसी, फिर जोई तास हो॥
५—चारों कानी थांबा रोप ने, बीच में कोरणी सार हो।
मन्दिर करायो चूंप सूं राय ने दिया समाचार हो॥
६—राय कहे वुध केहनी, एक वालक रोहो नाम हो।
नरपति सुणने चिंतवे चतुराई अभिराम हो॥
७— वीजे दिन मीण्डो मेली यो, तोली ने लीजो झेल हो।
घटवा बधवा दीजो मती, पख छेडे दीजो मेल हो॥
८—हिवे लोक कहे रोहा भणी, इण रो का सुं थाग हो।
ते कहे खवावो जुगत सुं, कने राखो वाघ हो॥
९ पख छेड़े रे आन्तरे, मेल कह्या समाचार हो।
आ अकल वालक तणो, राय लीनो विचार हो॥
१०—कुकर त्रिन बीजे लड़ावजो, राजा कही वाच हो।
रोहो कहे ए सोहिलो, कने राखो काच हो॥
११—विधसुणी महिपति, चिंतवे मन में आप हो।
तिलारां गाड़ा मोकल्या, ऊवै लीजो समेदीजो मांप हो॥

१२—रोहे मंगाई आरसी, ऊँधा लीदा समा दीधा सार हो।
राय देखीने हरखीयो, बुध पारमपार हो ॥

१३—वले कहायो गाम ने, विण अंगीरा खीर हो।
वेगी माने मोकलो, नहीं तो थासी तकसीर हो ॥

१४—चूनादिक भटी परे, रोहे करी ततकाल हो।
तानी ताती मोकली देख हरख्यो भूपाल हो ॥

दोहा

१— वेलूनी रमी करी, दीजो मतात्र सु मेल।
नाग जिम रूठो महिपति नहीं तर करसूं हेल ॥

२— लोक सहु भेला थया, पाम्या मन में भ्रन्त।
अवली गत है रायनी, लेवा माण्ड्यो अन्त ॥

३— रोहो कहे डरपो मती, मती छोड़ो थे गाम।
हूं समझाउं राय ने, ए थोड़ो सो काम ॥

ढाल—५

राग—रंगे रमतो राजीयो ए

१— रोहें कहायो राय ने ए, सांभल जो महीराण ॥नरेश्वर सां०॥
जमीयो राज संच्यो घणां ए जूना वलाओ सहीनाण ॥

२— तिण अनुसारे माप के जी, वण ता जेज न काय ॥
नरपति सुण आनन्दियो ऐ इण दिनी गलारे माय ॥

३ - राजा जीर्ण गज मेलीयो ऐ, सडत पडत है काय ॥
मूआ रो कहो जो मतिरे मूआ पछे जेज न काय ॥

४— आयो नें मरण पामीयो रे. लोक पूछे रोहा ने तेह ॥
प्राण रहित कुंजर थयो रे, उत्तर किण पर देह ॥

५— जाओ राजा जी रे आगले रे, कहो जो वचन निरास ॥
हाथी चाले हाले नहीं रे, मूल न लेवे सांस ॥

६ -- राय कहेसी मरगयोरे, तो जोड़ ज दोनों हाथ ॥
मं तो मूआ रो कहां नहीं रे, आप कहो पृथ्वीनाथ ॥

७— नीर हलवो मिष्ट देखने रे, एक कूप दीजो पहुंचाय ।।
गांव रा कूआ भड़कणा रे, सेर रा आधा देसां में लाय ।।

८— सुण नरपति चिन्तवे रे. इण री अकल अथाग ।।
गांव की जो पूरव दिशे रे, पश्चिम कर जो वाग ।।

६— लोकां रोहाने पूछियोरे, ए किम होसी काम ।।
ते कहे सारा फेरां झूपड़ा रे, पूरब होसी गाम ।।

१०— सर्वविध सांचवी रे, दिया राय ने समाचार ।।
राजा मन में जाणीयो रे, नहीं ठगावण हार ।।

श्लोक

१— विद्वत्वं च नृपत्वं च, नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।।

दोहा

१— पान पदारथ सुगुण नर, अणतोल्या ही विकाय ।।
ज्युं-ज्युं परदेश संचरे त्यूं त्यू मूंगा थाय ।।

ढाल ६ राग—कौतुक करतो नहीं रे

१— नरपति इण परेंचितवे भला दिया जवाव रे।
अठे हिवे वालावणो, वधारुं इणरो आव रो ।।
रोहा हिवे बुलावे महीपति ।टेर।।

२— हिवे वुलावे महिपति, जेजम करे काय रे।
तुरतज मोकल्या आदमी, नट गांव रे माय रे ।।

३— पिण इतरा वोलां में आवजें फरमायो महाराय रे।
आदमी आंणी कह्यो, लोक भेला थया घरणाय रे ।।

४— मौने भेट म लावजे, मत आव जे खाली हाथ रे।
दिवस में मत आवजं, मत आय जे रात रे ।।

५— मारगे मत तूं आवजे, मत वह जे उजाड़ रे।
ऊंचो पिण चढ़ जे मती, विण किया असवार रे ।।

६— वद सुद में मत आवजे बिना किया स्नान रे।
सिनान पिण करणी सही, इम भाख्यो राजान रे॥

७— विन तारा मत आवजे, तारा ऊंगा सोय रे।
इतरा थोक कर आवजे, वेगो मिल जे मोय रे॥

८— लोका मन में जाणीयो, एही ज टलीयो जंजाल रे।
भरत पटवारी हरसीयो, देख नीको बाल रे॥

दोहा

१— रोहो कहे डरजो मति, देखो पराक्रम पूर।
सुखे रहीजो थें सदा हूं जाऊं हजूर॥

ढाल ७

राग—देखो दवदन्ती रे महिमा शीलनी रे

१— रोहो बुद्धि आगलो रे, मींढ़े हुवो असवार रे।
माथे घर लीनी चालनी रे, लोक साथे अपार रे॥
रोहो चाल्यो दरबार में रे॥टेर॥

२— रोहो चाल्यो दरबार मे रे, पामी मन हुलास रे।
रूप मांहे रलीयावणो, देखे बहु तमास रे॥

३— स्नान पिण नां करी रे, हाथ पग धोया दोय रे॥
उजड़ मारग छोड़ ने रे, चौलो लीधो जोय रे॥

४— देशपति ने भेटणों रे, माटी पिण्ड लीधो हाथ रे।
संध्या समय में आवियोरे, नाको दिवस ने रात रे॥

५— महिपति दीठो आवतो रे, आदर मान दियो ठीक रे।
मुजरो कर उभोरह्यो रे, लोक ने दीनी सीख रे॥

६— नृपत कुशल पूछियो रे, रोहा ने धर प्रेम रे।
सभा सुहांवत भाखीयो रे, सहु को पाम्या खेम रे॥

७— रात समे राजा मेलमें रे, सूनो रोहो राज्यां पास रे।
निद आई के जाग तो रे, कहे जागूं कम्हूं विमास रे॥

८— कहे राजा उदर मींगणी रे, [illegible] गोल महाराय रे।
राय कहे [illegible] जागु नहीं रे, [illegible] वाय रे॥

९— बीजा पोहर में पूछीयो रे, जागु छु राजान रे।
समा बिषम किम छे रे, बतावो पीपल पान रे॥

१०— राय कहे जाणं नहीं रे, तुम हीज मुझ बताय रे।
विरंट पांन सारखो रे, समझ लो महाराय रे॥

११— तीजा पोर में पूछीयो रे, चितउं नर नाथ रे।
खसकली जीवतणी रे, पूंछ मोटी के गात रे॥

१२— राजा कहे समझ नांपड़ी रे, तूं हीज कर प्रकास रे।
धड़ पूंछ सारखी रे, रोहो कह्यो तास रे॥

१३— चौथे पोर न बोलीयो रे, ताजणो वायो ताम रे।
हड़ हड़ हंसीयो घणो रे, कहे हंसवा नो स्यूं काम रे॥

दोहा

१— रोहो कह्यो राय ने, हंसवा नो मत करो खांच।
विचार मोटो उपनो, तात तुमारे पांच॥

२— राय सुण ने हरसीयो, का सुं इणरो भेद।
रोहो कहे बतावसूं, मत पामजो खेद॥

ढाल ८ राग— जम्बूद्वीप मंझार

१— सांभल पृथ्वीनाथ, बात ज म्हायरी ए।
साची करी ने मांनिए॥
हाथी घोडा, नी जोड़ बेल रथ ने पालखीए।
पायदल घणुं जानिए॥

२—वैश्रम देव जेम, रिद्धि दीसे दीपती ए।
कमी नहीं किण बात री ए॥
दूजो बाप चण्डाल, तन में फूटरो।
पण क्रोध वहे जिम कातरी ए॥

३— थे रूठा भूपाल, किण इक उपरे।
तब नहीं परखो चाकरी ए॥

भलो भूण्डो न देखो कोय,
वात करो सारखी ए।
तारा जिम तोलो ताकरी ए॥

४— तीजो रजक धोय, कपडा पछाडतो ए।
महीन मोटो देखे नहीं ए॥
तिम तुम्ह रजक समान,
चावुक लगावियो ए।
छोटो मोटो गिणियो नहीं ए॥

५— चोथो विच्छु डंक वाप, ऊंच नीच नहीं गिणें ए।
वालक जवान डोकरो ए॥
जिम थे भूपाल, वायो मुझ ताजणो ए।
नहीं गिण्यो नानो छोकरो ए॥

६— पांचमो वड़ भूपाल ते वाप जांण जोए।
जग में नहीं इण सारखो ए॥
चार समान थें जांण, भूपत सांभलो ए।
पर तख ओही ज पारखो ए॥

७— माजो सती जाण, चूक च्यारुं सुं नहीं ए।
पिण मनसा वय गई ए॥
पूछो माता ने जाय,
जथारथ अरथ में लीयो ए।
जिम हुई तिम ही ज कही ए॥

८— रोहाने बुधवंत जांणं,
चार से नन्याणुं ऊपरे।
राज्य धुरन्धर थापीयो ए॥
दीयो वडो सीर पाव, राय रोहा भणोए।
प्रधान पद आपीयो ए॥

९— घणां वरस लग तेह, सुख भोगवी करी।
पछे आतम कारण सारिया ए॥
बुध वड़ी संसार, गुण चतुराई आगला ए,
बुधवंत धर्म जे करे ए।

दोहा

१— नेमीनाथ बावीसमां, प्रणमूं बारम्बार ।
यादव कुल नेम उपन्या, तीर्थ थाप्या चार ।।

२— श्रावक ने वली श्राविका, श्रमणी ने अणगार ।
आरम कार्य सारने, पाया भव नो पार ।।

३— उत्कृष्ट धर्म साधुनो, तिण सम अवर न कोय ।
अपर धर्म आगार नो, शिवपुरी मारग दोय ।।

४— वरदत्त गणधर आगले, भाख्यो नेम जिनन्द ।
एकाग्र चित्त कर सांभलो, जुठल नो सम्बन्ध ।।

ढाल १ राग—बांधो मति कर्म चिकणा

१—श्री जम्बुद्वीपे भरत जाणी ये,
भद्दिलपुर शुभठाम ।।हो जिनेश्वर।।
रैयत सुखी दुःख समझे नहीं,
जीतशत्र नृप नाम ।।हो जिने०।।
नेम पधार्या श्री वन बाग में ।।टेर।

२—श्री वन बाग नन्दन जेहवो,
सुर नर ने आवे भोग ।।हो जिने०।।
अम्ब कदम्ब तरु छाइयो,
छेवो देखवा योग ।।हो० जिने०।।

३—जुठल सेठ वसे तिहा,
अड़तालीस वसु कोड़ ।।हो जिने०।।

रोहिणी प्रमुख बत्तीस भारजा,
षोडश गोकुल जोड़ ॥हो जिने०॥

४—श्री जिन वन्दे नृप आडम्बरे,
जोड़ो बैठो हाथ ॥हो जिने०॥
जुठल सुनी इम वारता,
समोसर्या जगनाथ ॥हो जिने०॥

५—नाय धोय बलीकर्म करी,
जिम कोष्टक तिम जाय ॥हो जिने०॥
पंच अभिगम सांचवी,
वंदे शीष नमाय ॥हो जिने०॥

६—महिधर जुठल आदि सहुं,
बैठा सुर नर वृन्द ॥हो जिने०॥
अमृत वाणी प्राणी सांभले,
भाखे श्री नेमि जिनंद ॥हो जिने०॥

७—उपदेश सुणी जिन वन्दने,
आयो जिण दिशि जाय ॥हो जिने०॥
जुठल अपूर्व धर्म सांभली,
मन में हर्षित थाय ॥हो जिने०।

८—गयो मिथ्यात्व धर्म पामियो,
खुलिया अन्तर नैन ॥हो जिने०॥
श्रद्धा प्रतिति रुचि थई,
पिण समर्थ नहीं संजम लेण ॥हो जिने०॥

९—श्रावक व्रत धराय दो,
अहासुहं कहे नेम । हो जिने०॥
द्वादशव्रत कोष्ठक नोपरे,
नवरं कहे वलि एम ।हो जिने०॥

दोहा

१—बत्तीस भारजा मांहरें, मैथुन सर्व परित्याग ।
धन अड़तालीस क्रोड़ है, षोडश गोकुल भाग ॥

२—चउ दिशी चार-चार गाउ, ऊँचा नीचा भवन प्रमाण।
इम चतु पंच षट व्रत में, मोने जिम पच्चक्खाण॥

ढाल २ राग—श्री जिन मोहन गारो छेके जीवन प्राण हमारो छे

१—उलणीया विहि दंतणविहि, फल अब्भंगण जाणो।
उवटण विहि अरु मंजण विहि का, जावजीव पच्चक्खाणो॥
तारो पार उतारो राज, हुँ चाकर चरणांरो ।टेर॥

२—मोजा पहरण कल्पे मोने, बहुमोले वस्त्र एक।
आभरण विहि एक मुद्रिका, और त्याग अवशेष॥

३—धूप पेज भक्खण विहि नथी, ओदण विहि एक शाल।
सूप विहि एक दाल चणा की और त्याग सब दाल॥

४—विगय साग महुर विहि नथी, जिमण विहि तीन द्रव।
सचितपाणी ना त्याग जावजीव, शाल दाल धोवण सर्व॥

५—आज पछे छे सातम आठम, करणो मोने बेलो।
धारणे पारणे आमिल करणो, तेरस चवदस तेलो॥

६—पंचम पक्षे निवी कल्पे, इम लीधा व्रत बार।
श्रावक जन्म हुओ कहे जिनवर, आगे सुणो विस्तार॥

दोहा

१— नेम जिनन्द ने वंदने, आया निज आगार।
जीवादिक सहू ओलख्या, भगवंत कीधो विहार॥

२— विचरे आतम भावता, करता तप अतिधीर।
सुक्खे लुक्खे निमसे, देख्यां नांही शरीर॥

३— लोक सहुमिल एकठी आवे प्रीतम पास।
स्वाम थया किम दूबला, करे एम अरदास॥

४— पोंढे घन किण अरथ रो, किजे शरीर उपाय।
विना दोष विन कारणे, क्यों मोने दी छिटकाय॥

ढाल ३ राग—बाबा किसन की पुरी

तुम सांच कहो-कहो किण कारण दिलगीर रहो ।।टेर।।

१—शरीर तणो नहीं करो उपाय।
या कांई थांरे छे मन माय ।।
खावो पीवो करो भोग विलास।
मानो अर्ज करां अरदास ।।

२—जुठल श्रावक बोले एम।
रोग विना रोग कहो कहूं केम ।।
मैं तो सांच कही-कही मारा पिण्ड में रोग नहीं ।।टेर।।

३—जिण दिन रोग हुवो आयो नेम।
मैं पिण जाणा छां, कहो केम ।।

४—जाई पराई छिटकाया रो पाप।
मैं तो देसां मिलने शराप ।।तुम०।।

५—इम सुणी सेठ करी रह्यो मौन।
नारी जाती सु ं बोले कौन ।।मै तो०।।

६—हाव भाव विभ्रम किया विषेक।
नारी चरित्र दिखाया अनेक ।।तुम०।।

७—खोला मांहि बैठी जाय।
तो पिण रोम न सकी चलाय ।।तुम०।।

८—संता तता परितंता होय।
गई परी महलों में आपो खोय ।।तुम०।।

९—जुठल श्रावक करे विचार।
मैं तो देख लीवी है नार ।।मैं तो।।

१०—श्रावक पड़िमा कही जे ग्यार।
पेठो तिण में उण ही वार ।।तुम०।।

११—दस प्रतिमा प्रति पूरण होय।
ग्यारमी पडिमा वहेतो सोय ।।मैं०।।

१२—ओसर देखी कियो संथार।
जाव जीव पच्चक्या चारुं आहार ।।तुम०।।

दोहा

१— नारी नागण नारड़ी, नदी नृप निवेड़।
नग्न पुरुष ये सात नना, भलो मनुष्य मत छेड़॥

२— नेह पक्ष करुणा रहित, सह मिल दियो कपाट।
लात घमूका मारने, चहुं दिशी चरिणयो काठ॥

ढाल ५

राग—पहिलो तो पासो रायवर डालीयो

१—जुठल दीठो हो बैठो ध्यान में कोधी छे अगनी उत्पात।
नहीं ए विचार्यो खामिंद माहरो, देखो लुगाई री जात॥
सांभल भव्य प्राणी, नारी विश्वास भूल न कीजिये॥टेर॥

२—पाछी तो नाठी हो लाय लगाय ने, बल रही जुठल काय।
उत्कृष्टी वेदना उज्वल उपनी, ते तो जाणे जिनराय॥

३—साढा तीन कोटी रोम न कंपियो, दृढ़ राख्या मन वच काय।
ऐसी खम्या सुं केवल उपजे, जो कदी करे मुनिराय॥

४—तीस संवच्छर श्रावक व्रत रह्यो, दो मास तणो संथार।
शत पंच वर्ष ही आयु भोगवी, पाम्यो है भवोदधिपार॥

५—काल मासे हो काल करीथयो, ईशाने ने सुर महधिक।
द्वादश पल्योपम आउखे, जुठल देवत ते तीख॥

६—जम्बूद्वीपे हो क्षेत्र विदेह में, लेही मानव अवतार।
कर्म खपावी मुगत सिधावसी, सुणो वरदत्त अणगार॥

७—सेवं भते ! हो प्रभुजी सेवं भंते, थयो जे वीजो अध्येन।
श्रावक ऐसा हो आतम तारणा, वली तारक धर्म जैन॥

८—संवत उगणी से द्वादस वर्ष में, जोधपुर में चौमास।
गुरु प्रसादे हो "रामचन्द" कहे, करो करणी जो पूरे आस॥

९—सूत्र अनुसारे हो जोड़ी जुगत सुं, नहीं किधो है विस्तार।
हीनाधिक विपरीत जो होवे, मिच्छामिदुक्कडं वारम्वार॥

१५ | आनन्द श्रावक

दोहा

१— प्रणमूं परमात्म प्रभु शासन पति वर्धमान।
तास ज्येष्ठ श्रावक भला, आनन्द-आनन्द मान।।

२— नाम ठाम शुभ है अति, कीना व्रत अंगीकार।
सातवे अंग में वर्णव्या ते सुनजो विस्तार।।

ढाल १ राग—निहाल दे

१—तिण काले तिण अवसरे जी,
काइ वाणिया गांव मझार।।
राय जितशत्रु जाणिये जी,
हांजी कांइ प्रजा भणी हितकार।।
सुणो अधिकार सुहावणो जी।।टेर।।

२—सुणो अधिकार सुहावणो जी,
हांजी कांई सूत्र तणे अनुसार।।
समकित व्रत होवे निर्मलो जी,
होजी कांई होवे ज्युं भव निस्तार।।

३—तिण पुर आनन्द नाम थी जी,
हांजी कांई, गाथापति धन वान।।
बारे करोड़ सोनैया तणो जी,
हां जी कांई, कह्यो तस धन परिमाण।।

४—दस सहस्र गायां तणो जी,
हांजी कोई होवे एक गोकुल इम चार।।

धेनु वर्ग वखाणिये जी,
हां जी कांई, शिवा नन्दा तस नार ॥

५—पंच विषय सुख भोगवे जी,
हां जी कांई, माने बहु जन वाय ॥
इम करतां बहु दिन गया जी,
कांई, कोई (तिण) अवसर रे माय ॥

६—द्युतिपलास नामे भलो जी,
कांई चैत्य मनोहर जाण ॥
समोसर्या जग गुरु तिहा जी,
हां जी कांई जगनायक जग भाण ॥

७—भूप सुणी वंदन गया जी,
आनन्दश्रावक ताम ॥
पाद विहारे संचरिया जी,
हां जी कांई,'भेंट्या त्रिभुवन स्वाम ॥

८—प्रभु जी दी उपदेसना जी,
कांई, यो संसार असार ॥
तन धन जोवन कारमो जी,
हां जी कांई, कारमो सहु परिवार ॥

६—ए जीव आयो एकलो,
जी कांई, परभव एकलो जाय ॥
धर्मरत्न संग्रह करो जी,
हां जी कांई, जो शिवसुख की चाय ॥

१०—इत्यादिक उपदेशना
जी, "प्रथमा ढाल" मझार ॥
"तिलोकरिख" कहे आगले जी,
हां जी कांई सुण जो श्रेय अधिकार ॥

दोहा

१— आनन्द सुनी देशना, बोले वचन विचार ।
सत्य कथन प्रभु आपरो, ये संसार असार ॥

२— धन्य जे राजा राजेश्वरु, लेवे संजम भार।
मुझ शक्ति एहवी नहीं: पिण आदरसुं व्रत वार॥
३— जिम सुख होवे तिम करो, जेज न करो लिगार।
व्रत करण विध सांभलो, सूत्र तणे अनुसार॥

ढाल २ राग—म्हारी रस सेलड़ी

१—प्रथम व्रत में धारीयो जी कांई, त्रस प्राणी जग मांय।
जाणी प्रीच्छी निरअपराधी सो मुझ हणवा नांय हो॥
जगतारक पासें, श्रावक आनन्द जी व्रत आदरे॥टेर॥
२—दूजो व्रत स्थूल मृषावाद को, भू कन्या पशु काज।
झूठ न बोलूं रखुं न थापन, नहीं लोभे लूं व्याज हो॥
३—तीजे स्थूल अदत्त निवारुं, खातर खनी गांठ छोड़।
पड़ कुंची से न करूं चोरी, त्यागू विरुध जे खोड़ हो॥
४—चौथे स्थूल मेहुणव्रत में, शिवा नन्दा निज नार।
वरजी ने त्यागी सकल सरे, ममता दोनी मार हो॥
५—व्रत पंचम इच्छा परिमाणे, चार करोड़ भूं माय।
चार करोड़ घर बिखरी राखी, इतो हो याज के माय हो॥
६—गोकुल चार धेनु का राख्या, खेतू वत्थू इम जाण।
पांच सो हल की संख्या धरणी शकट सहस्र परमाण हो॥
७—चार मोटी चार छोटी जहाजां, राख्या वाहन आठ।
उपभोग परिभोग व्रत की विधी, कहू जिम सूत्र पाठ हो॥
८—स्नान किया पीछे अंग लूवण, रातो वस्त्र जाण।
दांतण कारण जेठी मद अरुं, अवर आमल फल ठाण हो॥
९—शतपाक हजार औषध का, तैल मर्दन के काज।
सुगन्ध सहित गेहूं की पीठी, ए उवटणां का साज हो॥
१०—आठ लोठी प्रमाण घड़ो एक, स्नान कारण ने नीर।
क्षेत्र युगल कपास को निपज्यो, राख्यो ओढ़ण चीर हो॥

११—अगर कंकुम बावना चंदन, विलेपन मर्याद।
घोलो कमल मालती कुसुम, सुंघणे हित स्वाद हो॥
१२—कुण्डल युगल और नाममुद्रिका, रख्या आभरण दोय।
अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय॥
१३—घृत तैल. तलिया तंदुल पउआ, दूध की रबड़ी जाण।
पेय विधि -रिमाण कह्या ए, उपरंत का पच्चक्खाण॥
१४—घृत पुरित घेवर मनगमता, खाण्ड खाजा आगार।
कमल साल तंदुल उपरांत सब, ओदन का परिहार हो॥
१५—मूंग उड़द मसुर ए तीनों, उपरांत त्यागी दाल।
शरत् ऋतु को निपज्यो घृत. प्रात समय को काल॥
१६—तिण वेला को घृत जिण राख्यो, उपरंत का किया त्याग।
अगतियो स्वस्तिक राय डोड़ी, और न खाणो साग॥
१७—आम रस युक्त पालख सालणो, अवर तणो सब त्याग।
मूंग दाल का बड़ा कचोरी, उपरंत नहीं अनुराग हो॥
१८—टंकी को मुझ नीर ज पीणो झेलीयो जेह आकाश।
कंकोल जाय फल लौंग एलायची, कपूर पंच मुखवास हो॥
१९—चारों अनर्थदण्ड का सोगन, इम अष्टम व्रत धार।
शक्ति मुजब शिक्षाव्रत चार, हरि हर देव परिहार हो॥
२०—ज्ञान का चौदह पांच समकित का पच्योत्तर व्रत बार।
पांच संलेहणा यह सव टालु, निन्याणुं अतिचार॥
२१—पार्श्वस्थ संतानिया गोशालक में, जिमते मिलीया जाय।
तिम अन्यतीर्थी ग्रहिया साधु, तिण ने हूं वंदु नाय॥
२२—वतलाउं नहीं पहेला उनको धर्म वुद्धि सुविचार।
चार आहार नहीं देउं तिणने, छछन्दा आगार हो॥
२३—श्रमण निग्रन्थ ने देउं मुझ तो, चौदह प्रकार नो दान।
इम व्रतधारी प्रभु ने वंदी, आया ते निज स्थान॥
२४—निज पत्नि से कहे प्रभु पासे, मैं धार्या व्रत बार।
तुम पिण जाई करो प्रभु वंदन, सफल करो अवतार॥

२५--कंत वचन सुणी रथ में बैठी, वंदया श्री जगदीश।
श्राविका व्रत ते पिण धार्या, पूरी मन जगीश हो॥
२६—छ छ पौषध करे मास में, नवतत्व का जाण।
तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो॥

दोहा

१— बारह व्रत पाले निर्मला, चवदह नियम विचार।
तीन मनोरथ चिंतवे, धारे शरणा चार॥
२— निश्चल समकित दृढ़ धर्मी, इक्कीस गुण का धार।
चौदह वर्ष इम वीतीया, करतां धर्म उदार॥
३— पन्द्रवें वर्ष में वर्तता, एक दिन आधीरात।
जागरणा करे धर्म की, ते सुण जो विख्यात॥
४— आनन्द संथारा को कथन, सुन विस्मित अपार।
गौतम सुण ने आविया, देखण ते संथार॥

ढाल ३ राग आज भलो दिन उगो जी

१— आनन्दजी विचारी हो, सुखकारी क्रिया धर्म नी,
काई भवजल तारण हार।
वाणिज्य गाँव के मांही हो, समरथाई नांही मांहरो॥
आनन्दजी विचारी हो सुखकारी क्रिया धर्म नी॥टेर॥
जब थावे दिन उगाई हो, निपजाई चारों आहार ने।
कांई बुलाई निज परिवार।
२— सयण सज्जन, जीमाई हो, संभलाई कामज घर तणा।
कांई धारणी पड़िमा ग्यार॥
थई दिनकर उगाई हो, कराई सहुविध चिंतवी।
कांई ज्येष्ठ पुत्र घर भार॥
३— सौंपी सीधा आया हो, कोलाग नाम सन्निवेश में।
कांई वाणिजपुर ने बार॥
कोलाग सन्निवेश के मांई हो, निज मित्र घणा कुल घर घणा।
कांई रहे पौषध शाला मझार।

४ — तिण साला ने प्रतिलेख्यो हो, कांई देखी परठण भूमिका ।
वली कीनो डाभ संथार ॥
केवली भाख्यो धर्मज हो, ते पाले परम आनन्द सुं ।
कांई टाले सहु अतिचार ॥

५— निर्ग्रन्थ गुरु ने टाली हो, नहीं वंदे कोई अन्य भणी ।
कांई छे छण्डी परिहार ॥
दूजी पड़िमा मांई हो, अधिकाई बारां व्रतनी ।
कांई पाले निरतिचार ॥

६— तीजी में शुद्ध सामायिक हो, चित्त लाई पाले शुद्ध पणे ।
कांई बत्तीस दोष निवार ॥
चौथी पड़िमा मांई हो, चवदस ने आठम पूर्णिमा ।
कांई अमावस्या तिथि धार ॥

७— मास-मास षट् पोसा हो, धारे ते शुद्ध निश्चल पणे ।
कांई वरजत दोष अठार ॥
पांचमी पड़िमा पाले हो, ते टाले स्नान शोभा वली ।
कांई दिवसे अब्रह्म निवार ॥

८— जे भाणे भोजन आवे हो, नहीं खावे आप मंगायने ।
करे काउसग्ग पोसा मझार ।
छठी पड़िमा लेवे हो, नहीं सेवे ते कुशील ने ।
कांई नारीकथा निवार ॥

९— सातमीं पड़िमा जाणो हो, प्रासुक ते खाणो मोकलो ।
कांई नही करे सचित्त आहार ॥
आठमी मे आरंभ छण्ड हो, ते माण्डे प्रीत छ काय सुं ।
कांई तेवीस के भांगे विचार ॥

१०— नवमी में इम भाखे हो, नहीं राखे दासी दास ने ।
कांई पोते काम विचार ॥
दसमी दुष्कर कारी हो, निज अरथे भोजन जे कर्यो ।
कांई ते वरजे निरधार ॥

११— शिर पर मुण्ड करावे हो, पर्यंपे भाषा दो वली ।
कांई सत्य अने व्यवहार ॥

ग्यारवीं पड़िमा लेवे हो, नहीं सेवे आश्रव द्वार ने।
काँई वरते जिम अणगार॥

१२— मस्तक लोच करावे हो, फरमावे हु साधु नहीं।
काँई भेप मुनि नो धार॥
पहले मास एकान्तर हो, कांई दुजी पड़िमा दो मास नो।
कांई छठ छठ तपस्या धार॥

१३— तीजी तीन मास लग तेला हो, चौथी ते चार ज मासनो।
कांई चौले चौले आहार॥
एक एक मास वधावे हो, बढ़ावे तप एम एम ही।
कांई इम पड़िमा ग्यार॥

१४— करतां सुक्खे भुक्खे हो, लुक्खो अंग पडियो तदा।
कांई तन थयो पिंजराकार॥
श्रावक सो विचारे हो, नहीं चाले म्हारी देहड़ी।
कांई शक्ति नहीं लगार॥

१५— आलोवी निंदी आतम हो, निःशल्य थया शूरापणे।
कांई प्रणमी जगसिरदार॥
पाप अठारा त्यागे हो, कांई वली जाग्या मोह निंद से।
कांई थावे संवर द्वार॥

१६— धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो, कांई त्यागे चारों आहार ने।
कांई जावज्जीव सु विचार॥
इम निःशल्य मन थापी हो, तिरा कापी ममता जाल ने।

१७— कांई धार्यो अनसन सार, "तिलोक रिख" कहे सांचा हो।
नहीं काचां जाचा भाव में, कांई सफल कियो अवतार।

दोहा

१— तिरा अवसर आनन्द जी, विशुद्ध लेश्या शुभ ध्यान।
ज्ञानावरणीय क्षयोपशमे, उपनो अवधिज्ञान।
२— पूर्व लवरा समुद्र में, पांच सो योजन जान।
एतो ही दक्षिरा पश्चिमे, उत्तर चूलहिमवान॥

३— जाने देखे ऊपरे, प्रथम स्वर्ग विचार।
नीचे जानी रत्नप्रभा, स्थिति चौरासी हजार ॥

ढाल ४

राग—कीधारे कर्म न छूटिये

१—न्याय मारग जिन राज नो, भव दुःख भंजन हार।
रिपु गंजण द्दग अजणो, शिवपद नां दातार ॥लाल रे॥
न्याय मारग जिन राज नो ॥टेर॥

२—तिण काले ने तिण समे, समोसर्या जगदीश।
गौतम छठ तप पारणे, प्रभु ने नमायो शीष ॥लाल रे॥

३—कहे मुझे छठम पारणो, जो तुम आज्ञा थाय।
वाणिज्य गामने विषे, गोचरी जाऊँ चलाय ॥लाल रे॥

४—अहा सुहं प्रभु जी कह्यो, गौतमजी तिण वार।
आज्ञा लेई ने संचर्या, जोवंता इर्या विहार ॥लाल रे॥

५—गोचरी करतां सांभल्यो, आनन्द अनशन लीध।
चितवे हूं देखूं जई, इम निश्चय मन कीध ॥लाल रे॥

६—पौषधशाल तिहां आविया, देखी आनन्द सोय।
रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय ॥लाल रे॥

७ शक्ति नहीं प्रभु माहरी, आवण री तुम पास।
उरा पधारो नाथ जी, मानो मुझ अरदास ॥लाल रे॥

८ चरण पै शीश नमाय ने, प्रणम्या तीन ज वार।
पूछयो उपजे के नहीं, अवधि गृहवास मझार ॥लाल रे॥

९- गौतम सुन हामी भरी, तब सो कहे सुविचार।
मुझ पिण अवधि उपन्यो, कह्यो छ दिशि विस्तार ॥लाल रे॥

१०—इम सुणी गौतम कहे, ओही उपजे गृहवास।
पिण इतो दीर्घ न उपजे, एनी छे वात विमास ॥लाल रे॥

११—ए स्थानक तुमें आलोवो, प्रायश्चित करो अंगोकार।
आनन्द वदता इम कहे, प्रभु सांभलो मुझ समाचार॥लाल रे॥

१२—सत्य छता यथाभाव ने, कहतां न दोष लीगार।
ए स्थानके तुम आलोवो, सुन शंका पड़ी तिण वार ॥लाल रे॥

१३—आप पूछे प्रभु शु ं तदा, आनन्द कह्यो ते विचार ।
वीर कहे सांची कही, थें लो प्रायश्चित्त तप सार ।।लाल रे।।

१४—जाय खमावो तिण प्रत्ये, इम सांभली गौतम वार ।
प्रायश्चित लीनो प्रभुकने, खमाया ने गया उमाय ।।लाल रे।।

१५—बीस वर्ष श्रावक पणो, धारी पड़िमा ग्यार ।
एक मास अनशन कह्यो, सौधर्म कल्प मझार ।।लाल रे।।

१६—सौधर्मावतंसक विमान थी, कौण ईशान माय ।
अरुण विमान में उपना, चार पल्योपम आय ।।लाल रे।।

१७—सुख भोगवी त्यांथो चवो, महाविदेह क्षेत्र मझार ।
संयम ले करणी करी, कर्म करी सहु छार ।।लाल रे।।

१८—केवलज्ञान लेई करी, जासी मोक्ष रे माय ।
अजर अमर सुख सासता, लेसी सुख सवाय ।।लाल रे ।।

१९—संवत् उगणी से चालीसे, पोष कृष्ण बुधवार ।
तीज तीथी दिन रूयडो, दक्षिण देश विचार ।लाल रे।।

२०- शहर सातारा प्रसिद्ध छे, पेठ भवानी वखाण ।
जोड़्यो चोढाल्यो चूंप सूं, सातमा अंग प्रमाण ।।लाल रे।।

२१—ओछो अधिको जे जोडियो, ते मिच्छामि दुक्कडं मोय ।
"तिलोक रिख" कहे सुणो धारसी,तस शिव संपत होय ।।लाल रे।।

१६ | आनन्दादि श्रावक

ढाल १

व्रत करावो श्रावक तणा ।।टेर।।

१—अन्न की जात अनेक छे, न्यारां न्यारां भेदो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, चांवल तणो परेवो जी ।।व्रत०।।

२—मूंग कलादिक दालिया, घोल वड़ा जेम जाणो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, उपरान्तरा पच्चक्खाणो जी ।।व्रत०।।

३—रायडांडी ने अकतीसो, और वतुवारी भाजी जी।
ये तो प्रभु जी मुझ ने मोकला, उपरांतरा त्याग करावोजी ।।व्रत०।।

४—खाण्डरा खाजा मोकला, ऊपर घेवर ताजा जी।
दोय सुंखड़ी मुझने मोकली, उपरांत रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।।

५—शरद ऋतु नो नीपज्यो, घृत पण मुझ ने खाणो जी।
परभटो आया पछे, उपरांत रा पच्चक्खाणो जी ।।व्रत०।।

६—फल री जात अनेक छे, न्यारां-न्यारां वखाणो जी ।।
एक प्रभु जी मुझने मोकलो, खरबूजो फल खाणो जी ।।व्रत०।।

७—रूंखफल जात अनेक छे, न्यारां न्यारां भेदोजी।
एक प्रभु जी मुझने मोकलो, क्षीर आम्ल फल खाणो जी ।।व्रत०।।

८—कुआ तलाव ने वावड़ी, ज्यांरो जल में ठेल्यो जी।
एक प्रभुजी मुझने मोकलो, अधर आकाश को झेल्यो जी ।।व्रत०।।

९—मूंग मटर उड़द तणी, दाल री तीनों जातो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकली, उपरांत रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।।

१०—दांतण जेठ मधुतणो, बीजा दांतण रो नेमो जी।
पीठी गवादिक धान री, उवटण वली जाणो जी ।।व्रत०।।

११—अगर चंदन रो धूपणो, विलेपन दोई भांतो जी।
तैल ज दोई जात रो, शतपाक सैंस पाक जाणो जी ।।व्रत०।।

१२—स्नान करवारी विधकरी, कलशा आठ भरावो जी।
ये तो प्रभु जी मुझने मोकला, उपरांत रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।

१३—अंग पूंछण री विध करी, अंगोछो वली साड़ी जी।
पूंछण कारण राखीयो, उपरांत रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।।

१४—कपड़ा री जात अनेक छे, न्यारां न्यारां भेदो जी।
एक प्रभुजी मुझ ने मोकलो, क्षेम युगल सफेदो जी ।।व्रत०।।

१५—गेणारी जात अनेक छे, न्यारां न्यारां भेदोजी।
नामकृतका मूंदड़ी. काना में कुण्डल दोई जी ।।व्रत०।।

१६—पद्म कमल ने मालती, फूल री तीनों जातो जी।
सुंघण कारण राखीयो, उपरांत रा त्याग करावो जी ।।व्रत०।।

१७—मुखवास मुझने मोकलो, पांच भांत तम्बोलो जी।
लोंग डोड़ा ने इलायची, जाईफल ने कंकेरोजी ।।व्रत०।।

१८—अगर चंदन रो कुंपलो, केशर कुंकुम घोसं जी।
तिलक कारण राखीयो, उपरांत रा पच्चक्खाणो जी ।।व्रत०।।

१६—चार करोड़ धन धरती में, चार करोड़ ब्याज वधे जी।
चार करोड़ घर बिखरी में, उपरांत रा त्याग करावो जी। व्रत०।।

२०—चार गोकुल गायां तणां, गायां चालीस हजारों जी।
शिवानन्द नारी मुझने मोकली, उपरांतरा पच्चक्खाणोजी ।।व्रत०।।

२१—चार जहाज मुझने मोकली, वली डूंड़ा चारों जी।
जो जाऊँ परदेश में, माल किराणा लेई आऊँ जी ।।व्रत०।

२२—पांच से हलवा मुझने मोकला, गाड़ा एक हजारो जी।
धुर बोरा खेती करूं, फसल काट घर लाऊँ जी ।।व्रत०।।

२३—पहली ढाल सम्पूर्ण थई, व्रत तणी मर्यादा जी।
आगे भवियण सांभलो, समकित को विस्तारो जी।।व्रत०।।

ढाल २

राग—कर पडिक्कमणो भाव सुं रे लाल

१—आज पछी अन्य तीर्थी रे लाल,
संन्यासीनी सेव ॥सुविचारी रे॥
ज्यांने तो मैं बन्दूं नहीं रे लाल,
नहीं नमाऊँ म्हारो शीश ॥सु०॥
आनन्द श्रावक व्रत उच्चरे रे लाल ॥टेर॥

२—भगवंत ना साधु साध्वी रे लाल,
आचार में ढीला थाय ॥सु०॥
ज्यांने तो मैं बन्दू नहीं रे लाल,
नहीं नमाऊँ म्हारी काय ॥सु०॥

३—भगवंत ना साधु साध्वी रे लाल,
निकल निंदक थाय ॥सु०॥
ज्यांने तो मैं वन्दू नहीं रे लाल,
नहीं सारुं ज्यांरी सेव ॥सु०॥

४—भगवंत ना साधु साध्वी रे लाल,
पड्या जमाली रे जाय ॥सु०॥
ज्यांने तो मैं वंदू नहीं रे लाल,
नहीं रे नमाऊँ पांचों अंग ॥सु०॥

५—पहले हूं बतलाऊँ नहीं रे लाल,
एकरण सुं दूजी बार ॥सु०॥
नहीं रे वहराउँ म्हारां हाथ सुं रे लाल,
अशनादिक चारों आहार ॥सु०॥

६—ज्यां लगे हूँ घर में रहूँ रे लाल,
छ छंडी रो आगार ॥सु०॥
राजा जी हुक्म फरमावियो रे लाल,
अथवा न्याति परिवार ॥सु०॥

७—जो कोई मेघ ज खंच करे रे लाल,
अटवी में पड़ जावे काल ॥सु०॥

ज्यांने तो देणो मुझने मोकलो रे लाल.
चांवल चून रसाल ॥सु०॥

८—जो कोई देव पितर होवे रे लाल,
अथवा कोई मोटका थाय ॥सु० ।
जो कोई दुर्जन आय भिड़े रे लाल,
अथवा कोई नागो अड़ जाय ॥सु०॥

९—भगवंत रा साधु साध्वी रे लाल,
चाले सूत्र के न्याय । सु०॥
ज्यांने तो मैं वंदू सही रे लाल,
पांचों ही अंग नमाय ॥सु०॥

१०—भगवंत नां साधु साध्वी रे लाल,
चाले सूत्र के न्याय ॥सु०॥
ज्यांने वहराऊं म्हारा हाथ सुं रे लाज;
अशनादिक चारों आहार ॥सु०॥

११—चार गोकुल गांयां तणा रे लाल,
गांयां चालीस हजार ॥सु०॥
शीवानंदा नारी मुझने मोकलो रे लाल,
दूजी नारी रा पच्चक्खाण ॥सु०॥

१२—चार जहाजां मुझने मोकली रे लाल,
वली डूंडा चार ॥सु०॥
पांच से हलवा मुझने मोकलां रे लाल,
गाड़ा एक हजार ॥सु०॥

१३—सूंसलिया में तो मोटका रे लाल,
गेर गेर ने गेर ॥सु०॥
पाप न राख्यो राई जीतो रे लाल,
पच्चक्खाण मेरुसमान ॥सु०॥

१४—भगवंत सरीखा गुरु मिल्या रे लाल,
म्हारे कमीय न काय ॥सु०॥

दुर्गति पड़ता ने झेलिया रे लाल,
म्हारे लागी मुगत सुं उमेद ॥सु०॥

१५—दुजी ढाल पूरी हुई रे लाल,
समकित को विस्तार ।।सु०॥
तीजी ढाल हिवे सांभलो रे लाल,
संथारा रो अधिकार ॥सु०॥

दोहा

१— आनन्द जी संथारो कियो, कोल्लाग पाड़ा माय।
गौतम उठ्या गोचरी, थें सुण जो चित्त लाय ॥

ढाल ३

स्वामी अर्ज :करूं थांसुं विनती ॥टेर॥

१—स्वामी हाथ जोड़ी आनन्द कहे,
विनय करी बारम्बारो जी ॥
हो स्वामी उठन की शक्ति नहीं,
नेड़ा चरण करावो हो ॥स्वा०॥

२—गौतम चरण नेड़ा किया,
वंद्या मन हुलास हो।
स्वामी धन्य रे दीहाड़ो धन्य घड़ी,
सफल हुई म्हारी आस हो ।।स्वा०।।

३—आनन्द कहे स्वामी सुणो,
गृहस्थी ने उपजे अवधिज्ञान हो।
गौतम कहे उपजे सही,
सुं थांनें उपज्यों सुजाण हो ॥स्वा०॥

४—तीन दिशी योजन पांच से,
चौथी चुल्लहेम जाणो हो।
उंचों देवलोक पहलो दीसे,
नीचे लोलुची नरक वास हो ॥स्वा०॥

५—आनन्द प्रश्न पूछियो,
गौतम दियो रे निषेध श्रो।
आनन्द प्रायश्चित लेवो इण वात रो,
राखो मुगत सुं उमेद हो ॥स्वा०॥

६—सांचा ने तो को नहीं,
झूठा ने लागे छे पाप हो।
स्वामी मैं तो देख्यो जिसो ही भाखियो,
प्रायश्चित किम लेऊं कृपानाथ हो ॥स्वा०॥

७—इतनो सुण शंका पड़ी,
आया श्री वीर जी के पास हो।
स्वामी मै आज्ञा लेई ने उठ्यो,
गोचरी, वात दीवी प्रकाश हो ॥स्वा०॥

८—वलता वीर इसड़ी कहे,
थें गया वचना में चूको हो।
गौतम आनन्द जाय खमावजो,
पाछा मेल्या तत्काल हो ॥स्वा०॥

९—पारणो तो पीछे कियो,
आया श्री आनन्द जी रे पास हो।
गौतम आनन्द आय खमाविया,
ज्यांरी सूत्र में साख हो ॥स्वा०॥

१०—यें श्रावक सैंणा घणा,
गुणां करी ने गम्भीर हो ॥स्वा०॥
आनन्द समकित में मैंठा घणा,
थांरां गुण किया महावीर हो ॥स्वा०॥

११—शिवानन्दा नारी भली,
पतिव्रता गुणवान हो।
वा पिण त्यागी श्राविका,
दिन भावसी जाण हो ॥स्वा०॥

१२—ऋषि रायचन्द इम कहे,
या थई तीसरी ढाल हो।
आगे भवियण सांभलो,
श्रावकां रो अधिकार हो ।।स्वा०।।

ढाल ४ राग—चार प्रहर रो दिन होवे रे लाल

१—आनन्द जी रे शिवानंदा रे लाल,
दोनों रो दीपती जोड़ हो ।।भविक जन।।
चार गोकुल गांयां तणा रे लाल,
सोनैया वारा करोड़ हो ।।भ०।।
श्रावक श्री महावीर का रे लाल ।।टेर।।

२—श्रावक श्री वर्धमान का रे लाल,
पूरा एकज लाख हो ।।भ०।।
उण सठ हजार ऊपर कह्या रे लाल,
सुनियो चित्त ठिकाणे राख हो ।।भ०।।

३—कामदेवजी रे भद्रा भार्या रे लाल,
सेणी घणी सुकुमाल हो ।।भ०।।
गोकुल छ गायां तणां रे लाल,
सोनैया क्रोड़ अठार हो ।।भ०।।

४—चूलणी पियारे सोमा भार्या रे लाल,
करे कदी नहीं रीस हो ।।भ०।।
आठ गोकुल गांयां तणा रे लाल,
सोनैया क्रोड़ चौवीस हो ।।भ०।।

५—सुरादेवजी रे धन्ना शोभती रे लाल,
शोभे जुगती जोड़ हो ।।भ०।।
छः गोकुल गायां तणां रे लाल,
सोनैया वारह करोड़ हो ।।भ०।।

६—चूलणी शतकरे वहुला भार्या रे लाल,
दीठा ही आवे दाय हो ।।भ०।।
कंचन अठारां ना धणी रे लाल,
गायां साठ हजार हो ।।भ०।।

७—सेणा श्रावक कुण्डकोलिया रे लाल,
ज्यां के पूसा नार हो ।।भ०।।
कंचन अठारा ना धणी रे लाल,
गांयां साठ हजार हो ।।भ०।।
८—सकड़ालजी के अग्निमित्रा रे लाल,
धर्म रुच्यो मन माय हो ।।भ०।।
एक गोकुल गायां तणा रे लाल,
सोनैया तीन करोड़ हो ।।भ०।।
९—महाशतक जी श्रावक हुवा मोटका रे लाल,
ज्यां के तेरा नार हो ।।भ०।।
क्रोड़ चौबीस रो परिग्रहो रे लाल,
गायां अस्सी हजार हो ।।भ०।।
१०—नंदनि पिताजी रे अश्विनी रे लाल,
धर्म रुच्यो मन माय हो ।।भ०।।
चार गौकुल गायां तणां रे लाल,
कंचन बारह क्रोड़ हो ।।भ०।।
११—सालिहि पिताजी रे फाल्गुणी रे लाल,
धर्म दीपावन जोग हो ।।भ०।।
चार गोकुल गायां तणां रे लाल,
सोनैया बारा क्रोड़ हो ।।भ०।।
१२—दौलतवंता दस हुआ रे लाल,
समकित ऊपर दृढ़ हो ।।भ०।।
स्फटिक रत्न हियो ऊजलो रे लाल,
ज्ञान दियो घट में घाल हो ।।भ०।।
१३—पहलां ने वली आठमां रे लाल,
दोनों ने अवधिज्ञान हो ।।भ०।।
साता ने उपसर्ग उपनो रे लाल,
श्रद्धा है सर्व प्रधान हो ।।भ०।।
१४—दिन-दिन चढ़ता वैराग्य में रे लाल,
सुरा ने सुविनीत हो ।।भ०।।

वल्लभ लागे साधने रे लाल,
पड़िमा सर्व ग्यारा हो ॥भ०॥

१५—महाविदेह क्षेत्र में सिझसी रे लाल,
कह्यो सातमें अंग हो ॥भ०॥
फाटे पण पलटे नहीं रे लाल,
चोल मंजीठ रो रंग हो ॥भ०॥

१६—संवत् अठारे चौंसठ साल में रे लाल,
नागोर शहर चौमास हो ॥भ०॥
पूज्य जयमल जी रा प्रसाद से रे लाल,
"ऋषि रायचन्द" भणे रे हुल्लास हो ॥भ०॥

१७ | कामदेव श्रावक

दोहा

१— अरिहंत सिद्ध आचार्य जी, उपाध्याय मुनिराज।
प्रणमुं सद्गुरु देव को, पूरो वञ्छित काज॥

२— सातवें अंगे जाणीये, द्वितीय अध्ययन मझार।
कामदेव श्रावक तणां, दाख्यो बहु विस्तार॥

३— सूत्रानुसारे वर्णवुं, किंचित् तास समास।
सुनो श्रोता शुद्ध भावसुं, समकित रत्न उजास॥

ढाल १ राग—घोड़ा देश कम्बोज का....

१—तिण काले तिण अवसरे, चम्पा नगर मझारो जी।
जितशत्रु तिहां राजवी, प्रजा भणी सुखकारो जी॥

धन्य श्रावक जे शुभ मति ।।टेर।।

२—धन्य श्रावक जे शुभमति, कामदेव गाथापति जाणो जी।
छ कोड़ी द्रव्य धरणी वीचे, छ कोड़ी व्याज बखाणो जी॥

३—छ कोड़ी घर विखरी, छ गोकुल वर्ग छे तासो जी।
भद्रा घरणी जाणीये, भोगवे भोग उलासो जी॥

४—अपर रिद्धि आनन्द परे, दाखी छे सूत्र के मांई जी।
तिण काले तिण अवसरे, जगगुरु जगसुख दाई जी॥

५—ग्राम नगर पुर विचरतां, चम्पा नगरी मझारो जी।
वीर जिनन्द समोसर्या, करवा परउपकारो जी॥

६—राजादिक गया वंदवा, कामदेव पाद विहारो जी।
वंदी बैठा प्रभु आगलें, मन में हर्ष अपारो जी॥

७—प्रभु जी दी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी।
जो अराधे भाव सुं, उत्तरे भवजल पारो जी॥

८—कामदेव सुनी हर्षिया, कहे सत्य वेरा छे थारो जी।
संयम की शक्ति नहीं, धरावो व्रत मुझे बारो जी॥

९—आनन्द नी परे जाणीयें, धन उपरांत पच्चखाणो जी।
त्याग कर्या शुद्ध भाव सुं, वारा व्रत परिमाणो जी॥

१०—शिवानन्दा तिम ही लिया, भद्रा व्रत रसालो जी।
'तिलोक रिख' कहे सुणो आगले, ये थई प्रथमा ढालो जी॥

दोहा

१— कामदेव श्रावक भला, टाले व्रत अतिचार।
चौदह वर्ष इम बीतिया, पनरवें का अधिकार॥

२— जागरणा आनन्द जिम, ज्येष्ठ पुत्र घर भार।
देई ने धारी तदा, पड़िमा शुद्ध इग्यार॥

३— एक दिन पौषधशाल में, पौषध लीनो भाव।
धर्म ध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव॥

४— शकेन्द्र सौधर्मपति, बैठा सभा मझार।
अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार॥

५— मुख जयणा करी वोलीया, भरत क्षेत्र के मांय।
धर्मी पुरुष निश्चल मति, कामदेव अधिकाय॥

ढाल २

राग—गुरां जी थे मने गोडे नहीं राख्यो

१— निश्चय श्रद्धा समकित व्रत मांई।
इण अवसर कामदेव अधिकाई॥

२— देव दानव असुर सुर जाई।
तिण ने कोई न सके चलाई॥
निश्चय श्रद्धा समकित व्रत मांई। टेर॥

३— समदृष्टि सुर दियो धन्यकारो।
धन्य तिण नर नो सफल जमारो॥

४— महामिथ्यादृष्टि सुर तिण वारे।
सुन कर सो मन माहें विचारे॥

५— अन्न को कीड़ो जीवे अन्न खाई।
तिण ने एक छिन में देऊं चलाई॥

६— ऐसो विचार कियो मन मांई।
शीघ्र पणे तिहां आयो चलाई॥

७— महापिशाच को रूप बणायो।
महाविद्रुप भयंकर कायो॥

८— टोपला सरिखो शीण बणायो।
सूकर सरीखा केश जमायो॥

६— कढाला सरीखो कियो कपालो।
टाली की पूंछ ज्युं भूंआ विकरालो॥

१०— बाहिर छुटक्या नेत्र का डोला।
सुपड़ा सरीखा कान कुंडोला॥

११— गाडर जिम चिपटी तस नासा।
फालीया सरीखा दंत सत्रासा॥

१२— लटके ऊंट सा होट कुरंगी।
जिह्वा कतरणी जेम विभंगी॥

१३— खंद कर्या मृदंग आकारो।
पुरपोल किवाड़ ज्यों हियो भयंकारो॥

१४— भूजा विभत्स शिल्लासी हथेली।
खलबतासी अंगुली कुमेली॥

१५— सीपपुटसा तस नख विस्तारो।
नाई पेटी सम थण सय भारो॥

१६— ढीलो छे संधी बंद सरीरो।
देखतां कायर होत अधीरो॥

१७— कुकड़ा उन्दरा की तनमाला।
कुण्डल नोल का अति विकराला।

१८— उत्तरासण भुंजग को अंग धरतो।
अट्टहास गर्जारव करंतो॥

१६— अतितिक्षण खाण्डो कर सायो।
पौषधशाला तिहां चल आयो॥

२०— बोले वचन जिम कोपियो कालो।
"तिलोकरिख" कहे दूसरी ढालो॥

दोहा

१— हं भो कामदेव ! श्रावक तुं मृत्यु नो वंछण हार।
खोटा लक्षण ताहरा, ह्री श्री वरजण हार॥

२— धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्ष नो, तूं छे वंछण हार।
कल्पे नहीं तुझ खण्डवा, शीलादिक व्रत बार॥

३— पिण हूँ आज भंजावसुं, पौषधादिक व्रत जेह।
नहीं तो इण ही खड्ग सुं, खण्ड खण्ड करसुं देह॥

४— आर्त्त रौद्र ध्यानवश, मरसी आज जरूर।
एक दो तीन बार तो, बोल्यो वचन करूर॥

५— वचन सुनी इम तेहना, डरिया नाहीं लिगार।
धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार॥

ढाल ३

राग— सूरिजन, सांभल जो सबकोय …

भविक जन, धन धन साहस धीर ॥टेर॥

१— क्रोधातुर मिस मिस थको कांइ, त्रिशुल लिलाडे चढ़ाय।
तीक्षण पाछणा धार सो कांई, खड्गसुं खण्डे काय॥

२— उज्वल वेदना उपनी कांई, कहतां न आवे पार।
के तो जाणे आतमां कांई, के जाणें किरतार॥

३— त्रास नहीं एक रोम में कांई, राख्या सम परिणाम।
कामदेव सोचं तदा कांई, मिथ्यात्वी सुर-काम॥

४— ए खण्डे मुझ काय ने कांई, मुझे समकित व्रत बार।
खण्डवा समर्थ छे नहीं कांई, जो आवे देव हजार॥

५— थाक्यो देव तिण अवसरे कांई, जोर न चाल्यो लिगार ।
पौषधशाला थी निकली कांई, पिशाच को रूप निवार ॥

६— सप्त अंग लागे धरणी सुं कांई, धर्यो तिणे गजरूप ।
अंजनगिरी नी उपमा कांई, दीसे महा विद्‌रूप ॥

७— पौषधशाला में आय ने कांई, तीन वार वली जेह ।
बोल्यो वचन पहली परे कांई, रंच डर्यो नहीं तेह ॥

८— क्रोधातुर ग्रह्या सुण्ड में कांई, पौषधशाला के वहार ।
उछाल्या आकाश में कांई, तीक्षण दंत मझार ॥

९— झाली ने डाल्यो पग तले कांई, लोलव्या तीन ज बार ।
महावेदना तिणे अनुभवी कांई, चलिया नहीं लगार ॥

१०— हस्ती रूप छोड़ी करी कांई, सर्प वर्ण्यो भयंकार ।
लाल नेत्र मसीपुंज सो कांई, करतो फूं फूं कार ॥

११— पूर्व नी परे वचन कह्यां कांई, अण बोल्या रह्या सोय ।
निश्चल पणु जाणी करी कांई, क्रोधातुर अति होय ॥

१२— तीन बींटा दिया कंठ में कांई, विष सहित हिया मांय ।
डंख दियो अति जोर सुं कांई, तो पिण चलीयो नांय ॥

१३— थाको ते वेदनी देवतां कांई, जाण्यो दृढ परिणाम ।
"तिलोक रिख" कहे तीजी ढाल में कांई, सुर किधा काम निकाम ।

दोहा

१— सर्प रूप छोड़ी करी, निज रूप दिव्य ने धार ।
काने कुण्डल जगमगे, सोवे गला में हार ॥

२— दस दिश प्रभा करतो थको, कटि घूघर घमकार ।
हाथ जोड़ी ने विनवे, लुल लुल बारम्बार ॥

३— धन्य पुण्य कृत लक्षण, सफल तुझ अवतार ।
इन्द्र करी तव प्रशंसा, सौधर्म सभा मजार ॥

४— मैं मिथ्यात्व तणे वशे, सत्य न मानी वाय ।
धर्म थी डिगावण कारणे, दिया परिषह आय ॥

५— खमजो मुझ अपराध ते, नहीं करूं दूजी बार ।
इम लघुता करी देव ते, संचर्यो स्वर्ग मझार ॥

ढाल ४ राग—मोने वालो लागे विछीयो

१— हां रे लाला, तिण काले तिण अवसरे,
समोसर्या वीर जिनंद रे लाला ॥
कामदेव सुन धारियो,
पारणो करसूं प्रभु पेली वंद रे लाला ॥
कामदेव श्रावक सिरे ॥टेर॥

२— कामदेव श्रावक सिरे,
जिणे पहेरीया सहु शिणगार, रे लाला॥
प्रभु प्रणम्या शुद्ध भावसुं,
हिवड़े हर्ष अपार रे लाला ॥

३— प्रभु दीनी देशना,
द्वादश परिषदा मझार ॥रे लाला॥
कहे कामदेव थकी तदा,
आजे आधी रात मझार ॥रे लाला॥

४— तीन उपसर्ग देवे दिया,
ते खम्या सम परिणाम ॥रे लाला॥
ए अर्थ समर्थ छे के नहीं,
सो दाखे हता छ स्वाम ॥रे लाला॥

५— गौतमादिक साधु साध्वी,
आमन्त्री ने कहे जिनराय ॥रे लाला॥
गृहस्थाश्रमे परिसह सह्या,
तुमे तो थया मुनिराय ॥रे लाला ॥

६— द्वादश अंग भणिया तुमे,
परिषह सहवा जोग ॥रे लाला॥
तहत वचन करीया सहु,
श्रमणादिक राखी उपयोग ॥लाला॥

ढाल २

राग—तिण अवसर मुनिराय

१—सांभल श्रीमुख बांण, सींहे कर्यो प्रमाण ।।जिनेश्वर लाल।।
रोम रोम मन हुलस्यो रे ।।

२—जिम तृष्या ने नीर, भूखां ने जिम भोजन खोर ।।जिने०।।
जिम रोगी ने औषध मिल्यो रे ।

३—कामण ने जिम कन्त, निर्धन थयो धनवंत ।।जिने०।।
आंधा ने कीयो जिम सुझतो रे ।

४—झोली में पातरा डाल, चाले गन्धहस्ति नी चाल ।।जिने०।।
वहरण ने मुनि पांगर्या र ।

५—मेढी गांव रे माय, ईर्या जोवतां जाय ।।जिने०।।
रेवती घर आवीया रे ।

६—देख सींहो अणगार, हर्षित थई अपार ।।जिने०।।
सात आठ पग सांहमी गई रे ।

७—धन्य दिहाड़ो आज, भेंट्या सींह मुनिराज ।।जिने०।।
मन मांग्यां पासा ढ़ल्या रे ।

८—भलां पधार्या गेह, दूधां बूठा मेह ।।जिने०।।
मन रा मनोरथ,सहु फल्या ए ।

९—आंणी अधिको कोड़, पूछे बेकर जोड़ ।।जिने०।।
किसड़े काम पधारीया ए ।

१०—कहे सींहो अणगार, हूँ आयो लेवण आहार ।।जिने०।।
दूजो प्रयोजन को नहीं रे ।

"ऋषि चौथमल" कहे एम, बहरावे वहु प्रेम ।जिने०।।
गाथापत्नि रेवती रे ।

ढाल ३

राग—वीर बखाणी राणी चेलणा

१—रसोईशाला माहे जायने जी, काढ़ीयो वीजोरा पाक जी ।
रेवती कहे स्वामी लीजीये जी, मीठो है जाणे गटाक जी ।।
सींह मुनि भलां ही पधारीया जी ।।टेर।।

दोहा

१— श्री सिद्धार्थनदन नमु', उत्तमगुण गम्भीर।
मेढी गाँव समोसर्या, विचरता महावीर ॥

२— गोशाले उपसर्ग दियो, हुश्रो लोही ठाण।
छमास लग पीड़ा रही, न सक्या करी बखाण ॥

ढाल १ राग—आदर जीव क्षमा गुण आदर

मोह कर्म जग मांहे मोटो ॥टेर॥

६—तिण अवसर ने सिंहो मुनिवर, भक्ता जिनवर शीश जी।
ध्यान धरी बंठो तिण वन में, देख रह्या जगदीश जी ॥

२—मोह कर्म जग मांहे मोटो, जालिम मोटो जोधजी।
कायर थी जीतो नहीं जावे, ज्ञानी नाख्यो जड़ खोद जी ॥

३—कोई कहे गोशालो मरसी, कोई कहे महावीर जी।
सींह मुनि सुणीयो ध्यान में हुश्रा घणां दिलगीरजी ॥

४—साधुसंघाते तेड़ाव्या आया, सनमुख वीरहजूर जी।
उपन्यो ते प्रभु बात सुणावे, तहत्त करे करजोड़ जी ॥

५—वीर कहे गोशालो झूठो, मरसी सात दिन माय जी।
साढ़ी पन्द्रह वर्ष लग सुख में, विचरसु' शंक न काय जी ॥

६ पिण तु' जा रेवती ने मंदिर, पाक कोला ले लाव जी।
विजोरा पाक छे आधाकर्मी, भेल्यो मांहरो भाव जी।

७ एम सुणी सींहो अति हर्ष्यो, धन्य-धन्य दीनदयाल जी।
"ऋषि चौथमल" कहे सोच मिटायो पहली तो ये थई ढाल जी ॥

२—तब बलता मुनिवर कहे जी, तूं वहरावे अधिक उछाह जी।
पिण लेवो कल्पे नहीं जी, भेल्या भगवंतरा भाव जी।।

३—ए तो हम लेवाको नहीं जी, पिण दूजो कोला पाक नाय जी।
ते शुद्ध साधने दीजीये जी, ते कियो घर तणे काम जी।।

४—हाथ जोड़ी कहे रेवती जी, आश्चर्य पामी अथाग जी।
मैं किण ने न प्रकाशियो जी, देख जो मांहरा भाग जी।।

५—कुण ज्ञानी तपसी इसो जी, जिन रहस्य छानी कही वात जी।
मुनि कहे सकल देखी रह्या जी, प्रभूरे नहीं छानी तिलमातजी।।

६—सींहो कहे सुण श्राविका ए, उपन्यो है केवल ज्ञान जी।
धर्म आचारज प्रसिद्ध छे ए, भगवंत श्री वर्धमान जी।।

७—ज्यां सुं छानी नहीं वारताए, तीनों ही लोकरे माय जी।
प्रतिबोध देवे घणा जीवने जी, अपूर्व धर्म सुणाय जी।।

८—वीतराग अरिहंतना ए, केटलाक गुण कह्या जाय जी।
"रिख चौथमल" कहे रेवती जी, गुण सुण रही फुलाय जी।।

ढाल ४ राग— नवकार मंत्रनो ध्यान धरो

१—बहरावे रेवती भावे चढ़ी, तोड़ी जिन कर्मारी कोड़ लड़ी।
मनुष्य जन्म ने सफल कियो, रेवती शुद्ध मनसुं दान दियो।।

२— चित्त वित्त पातर मिलीया,
खीर खाण्ड मांहे जिम घृत ढुलीया।
धन्य धन्य रेवती रो जन्म जीयो।।

३— दान दियो हुई रंग रली,
मन चिंतित आशा सर्व फली।
तीर्थंकर गौत्र बांध लीयो।।

४— चार जाति रा देवता तूठा,
पांच द्रव्य जिण रे घर बूठा।
सुर नर सगलां रो हर्ष्यो जीयो।।

५— पाक वहरायो रेवती सती,
आण दियो इण सींह जती।
प्रभु जी आप आरोग लीयो।।

६— सुर नर सकल हुआ राजी,
कीर्तिदान री वाधी जाभी।
वारे पर्षदा रो हर्ष्यो हीयो॥

७— षट् मास नो लोहीठाण गयो,
चारों ही संघ में हर्ष थयो।
धन्य धन्य रैवती भलो लाभ लीयो॥

८— रोग टल्यां हुई गई साता,
देवे किया वखाण गगने जाता।
सुणतां सुणतां ज्यांरों ठरे हीयो॥

६— तीर्थंकर नो पद ते पासी,
एक भव करने मुगत जासी।
सूत्र भगवती रो साख कीयो॥

१०— सुण नर नार घणा हर्षे
संवत् अठारे बावन वर्षे।
"ऋषि चौथमल" चौढ़ाल कीयो॥

१६ | महारानी रोहिणी

ढाल १ राग – हांरे म्हारा नेम धर्मना साढा पच्चवीस देश जो।

१—हां रे म्हारे, वासुपूज्य नो नंदन मघवा नाम जो।
रोहिणी तेहनो कमला पकजलोयणी रे लो॥
हां रे म्हारे, आठ पुत्र ने ऊपर पुत्री एक जो।
मात पिता ने व्हाली नामे रोहिणी रे लो॥

२—हां रे म्हारे, देखी जोवन वेशे निज पुत्री ने भूप ज्यों।
स्वयंवरमण्डप मांही नृप तेडाविया रे लो॥
हां रे म्हारे, अग बंगने मरुधर केरा राय जो।
चतुरंगी फौजां थी चम्पा आविया रे लो॥

३—हां रे म्हारे, पूर्व भव ना रागे रोहिणी ताम जो।
भूप अशोक ने कंठे वरमाला धरे रे लो॥
हां र म्हारे, गज रथ घोड़ा दान अने बहुमान जो।
देई मोकलावी बेटी बहु आडम्बरे रे लो॥

४—हां रे म्हारे, रोहिणी राणी भोगवंता सुखभोग जो।
आठ पुत्र ने पुत्री चार सुहामणी रे लो॥
हां रे म्हारे, आठ मा पुत्र नु नाम छे लोकपाल जो।
ते खोले लेई ने बैठी गोखे भामणी रे लो॥

५—हां रे म्हारे, एवे कोईक नगरवणिक नो पुत्र जो।
आउखे थी वालक मरण दशा लहे रे लो॥
हां रे म्हारे, मात पितादिक सहु तेनो परिवार जो।
रड़तो पड़तो गोख तले थई ने वहे रे लो॥

६—हां रे म्हारे, ते देखी अति हर्षि रोहिणी ताम जो।
पीऊ ने भाखे ए नाटक कुण भांति नो रे लो।
हां रे म्हांरे "दीप" कहे पूर्व पुण्य संकेत जो॥
जन्म थकी नवि दीठू दुःख कोई जात नो रे लो।

ढाल २ राग—आगा आम पधारो पुज्य

बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजे हांसो ॥टेर॥

१—पिऊ कहे जौवन मदमाती, सबने सरखी आशा।
ए बालक ना दुःख थी रोवे, तुझने होवे तमाशा ॥बोलो॥

२—तब राजा जी रोस करी ने, खोले थी पुत्र ने खोसी लीधो।
रोहिणी राणीं नजरे जोवंता, गोख थकी नाखी दीधो॥

३—ते देखी सब अन्तेउर में, सभी फिकर ते कीधो।
रोहिणी एम जाणे जे बालक, कोईक रमवा लीधो॥

४—नगर तणे रख वाले देवे, अधर गृह्यो तिहां आवी।
सोना ने सिंहासने थाप्यो, आभूषण पहरावी॥

५-नगर लोग सब भाग बखाणे, राजा विस्मय थावे।
"दीप" कहे जस पुण्य सखाई, तिहां सहु नवनिधि थावे॥

ढाल ३ राग—रूढ़ो माल वसंत,

रोहिणी तप फल जग जयवंत ॥टेर॥

१—एक दिन वासु पूज्य जिनवर ना, अन्तेवासी मुनिराज।
रूप कुंभ ने सुवर्ण कुंभ जी, सहु ज्ञानी भव जहाज ॥वाला रोहिणी०।

२—पधार्या प्रभु जी नगर समीपे, हर्ष्यो रोहिणी नो कंत।
सहु परिवार सुं पद जुग वंदे, निसुणियो धर्म एकंत ॥वाला०॥

३—कर जोड़ी नृप पूछे गुरू ने, रोहिणी पुण्य प्रबंध।
शूं कीधूं प्रभु सुकृत एने, भाखो ते सयला संबंध ॥वाला०॥

४—गुरू कहे पूर्वभव में कीधुं, रोहिणी तप गुण खान।
ते थी जन्म थकी नहीं दीठुं, सुख दुःख जान अजान ॥वाला०॥

५—भाखे गुरू हिये पूर्वभवनो रोहिणी नो अधिकार।
"दीप" कहे सुण जो एक चित्ते, कर्म प्रपंच विचार ॥वाला०॥

७— धन्य वासुपूज्य ना तीर्थं ने, धन्य रोहिणी नार ।
ए तप जे भावे करे ए, पामै ते जय जय कार ।।नमो०।।

८— संवत् अठारे उगनसाठनो ए, उज्वल भादव मास ।
"दीप विजय" तस गाइयो ए, रही खंभात चौमास ।।नमो०।।

कलश

१— वासुपूज्य जगनाथ साहब, तास तीरथ ए थया ।
चार पुत्री ने आठ पुत्र थी, दंपती मुगते गया ।।

२— तपगच्छ विजयानन्द पट्टधर, विजय देवेन्द्र सूरिस्वरू ।
तास राज स्तवन कीधो, सकल संघ सोहंकरू ।।

३— सकल पण्डित प्रवर भूषण, प्रेम रतन गुरु ध्याईया ।
कवि "दीपविजय" पुण्य हेते, रोहिणी ना गुण गाईया ।।
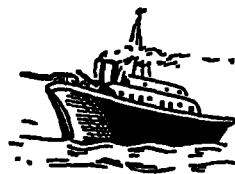
४—मुकी परदेसे गयो, जुवो जुवो कर्म स्वभाव रे।
एक दिन कन्या नो पिता, ज्ञानी ने पूछे भाव रे ॥के० जुवो०॥

५—ज्ञानी पूर्व भव कह्यो, भाख्यो सब अवदात रे।
फरी पूछे गुरुरायने, केम होय सुख सात रे ॥के० जुवो०॥

६—गुरु कहे रोहिणी तप करो, सात वरस सात मास रे।
रोहिणी नक्षत्र ने दिने, चौविहार करो उपवास रे ॥के० जुवो०॥

७—वासुपूज्य भगवंत नो, जाप करो शुभ भाव रे।
एम ए तप आरावतां, प्रगटे शुद्ध स्वभाव रे ॥के० जुवो०॥

८—करजो तप पूरण थयां, उजमण भलिभांत रे।
तेहती एक भव आंतरे, लेसो ज्योति महंत रे ॥के० जुवो०॥

९—इम मुनिमुख थी सांभली, आराधी ते सार रे।
ए थांरी राणी थई, रोहिणी नामे नार रे ॥के० जुवो ॥

१०—एम निमुणी हरष्या सहु, रोहिणी ने वले राय रे।
"दीप" कहे मुनि कुंभने, प्रणमी स्थानक जाय रे ॥के० जुवो॥

ढाल ६ राग—पूज्य पधारियाए ॥

१— एक दिवस वासुपूज्य जी ए।
समोसर्या जिनराज ॥नमो जिनराज ने ए ॥

२— राय ने राणी हरखिया रे,
सीधा सगला काज ॥
नमो जिनराज ने ए ॥टेर॥

३— बहु परिवार सुं आविया रे, वंदे प्रभु ना पाय।
श्री मुख ही वाणी सुनी ए, आनन्द अंग न माय ॥नमो०॥

४— राय ने राणी बेहुं जणाए, लीधो संयम खास।
धन्य धन्य संजम धर मुनि ए, सुर नर जेहना दास ॥नमो०॥

५— तपतपी केवल लहि ए, तारिया बहु नर नार।
शिवपद अविचल पद लह्यो ए, पाम्या भवनो पार ॥नमो०॥

६— एम जो रोहिणी तप करे रे, रोहिणी नी परे तेह।
मंगलमाल ते लहे ए, वली अजरामर गेह ॥नमो०॥

७— धन्य वासुपूज्य ना तीर्थ ने, धन्य रोहिणी नार ।
ए तप जे भावे करे ए, पामै ते जय जय कार ।।नमो०।।

८— संवत् अठारे उगनसाठनो ए, उज्वल भादव मास ।
"दीप विजय" तस गाइयो ए, रही खंभात चौमास ।।नमो०।।

कलश

१— वासुपूज्य जगनाथ साहब, तास तीरथ ए थया ।
चार पुत्री ने आठ पुत्र थी, दंपती मुगते गया ।।

२— तपगच्छ विजयानन्द पट्टधर, विजय देवेन्द्र सूरिस्वरू ।
तास राज स्तवन कीधो, सकल संघ सोहंकरू ।।

३— सकल पण्डित प्रवर भूषण, प्रेम रतन गुरु ध्याईया ।
कवि "दीप विजय" पुण्य हेते, रोहिणी ना गुण गाईया ।।

दोहा

१— आदिनाथ आदिश्वरुं, सकल विदारण कर्म।
उपकारी भवि तारवा, कह्यो चार प्रकारे धर्म ।।

२— दान शील तप भावना, इण बिना मोक्ष न होय।
तो पिण सब व्रत देख तां, शील समो नहीं कोय ।।

३— शील भांग्या भांगे सहू, इम कह्यो श्री जिनचन्द।
शीलवंत जे पुरुष ने, सेवे सुर नर वृन्द ।।

४— जश कीर्ति फैले इला, जे ब्रह्मव्रत में लीन।
जो सुख चाहो जीवनो, पालो शुद्ध मन शील ।।

५— विजय कुँवर विजयावती, शील पाल्यो खड्ग धार।
तेह तणा गुण वर्णवूं, लिखित कथा अनुसार।

६— सुणी करो सारी सभा, पर नारी पच्चक्खाण।
पंच पर्व दिन आखड़ी, करो यथा शक्ति प्रमाण ।।

७— जोवन वय छती जोग में, नारी रहे जिण पास।
बाल ब्रह्मचारी तिहुं योग में, दुष्कर दुष्कर प्रकाश ।।

ढाल १

राग— शील सुरतरु सेविये

शील तणी महिमा सुणो ।।टेर।।

१—जम्बुद्वीपना भरत में, दक्षिण कच्छदेशो जी।
नगर कौशम्बी तेह में, अमरापुरी सम कहे सो जी ।।शील।।

२—धनावो सेठ तिहां बसे, तिणरे विजय कुमारो जी।
रूप कला गुण आगला, जोवन वय हुशियारो जी ।।शील।।

३—तिण अवसर मुनि पांगुरिया, समिति गुप्ति प्रतिपन्नो जी।
आप तीरे परने तारता, लोग कहे धन्य धन्नो जी ।।शील।।

४—लोक आया मुनि वंदवा, तिमही विजय कुमारो जी।
धर्मकथा मुनिवर कहे, यो संसार असारो जी ।।शील।।

५—जन्म जरा दुःख मरण रो, कहता न आवे पारो जी।
नर भव पामणो दोहिलो, चेतो सहु नर नारो जी ।।शील।।

६—उत्कृष्ट्यो बन्ध कर्म नो, विषयविष विकारो जी।
नव लाख सन्नी मनुष्य नो, श्री जिन कह्यो संहारो जी ।।शील।।

७—दुःख अनेक अणी जोग सुं, पर रमणी दुःख की खानो जी।
फल किंपाकनी ओपमा, इम भाख्यो भगवानो जी ।।शील।।

८—इम सुणी सहु थरहर्या, विजय कुंवर जोड्या हाथो जी।
अहो मुनि संयम लेवा ने, समर्थ नहीं कृपानाथो जी ।।शील।।

९—जावज्जीव परनार रा, मांने मुनि पच्चक्खाणो जी।
स्वदारा पिण जावज्जीव नी, कृष्ण पक्ष ना जाणो जी ।।शील।।

१०—दुष्कर काम कुंवर कियो, मुनिवर कीनो विहारो जी।
"रामचन्द्र" कहे शील ने, धन्य पाले नर नारो जी ।।शील।।

दोहा

१— तिण नगरी मांहें वसे, अपर सेठ धन्नसार।
विजया कुमरी तेहने, अद्भुत रूप उदार ।।

२— एकदा विजया सुन्दरी, गई महासतीयां के पास।
शुक्ल पक्ष व्रत आदर्यो, मन में धरी उल्लास ।।

३— सयानी चतुरां वहु लज्जा, चौंसठ कला भण्डार।
भर यौवन में आई तदा, शादी विजय कुमार ।।

४— आरण कारण सहु किया, विवाह कियो तिणवार।
जेहवो विजया सुन्दरी, तेहवो विजय कुमार ।।

ढाल २ राग—मोटी जग में मोहिनी

मुणजो जी शील सुहामणो ।।टेर।।

१—मोले शृंगार सझी भोला, कांई आई हो रंग महल मझार।
नेण वैण प्रिय मोहनी, आई उभी हो जिहा विजय कुमार ।।सु०।।

२—कंथ कहे भल आविया, दिन तीन ज हो नहीं आवण काज।
शुं कारण कहे सुन्दरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ॥सु०॥
३—कृष्ण पक्ष व्रत मैं लिया, इम सुण ने हो सा थई उदास।
शुक्लपक्ष व्रत में लिया, दुजी परणी हो माण्डो घरवास ॥सु०॥
४—विजय कुंवर कहे हैं प्यारी, सहजे टलियो हो अनर्थ को मूल।
जावज्जीव व्रत पालसां, नर मूरख हो रह्या छे भूल ॥सु०॥
५—काम भोग बहु भोगिया, कांई भोग्या हो अनन्ती बार।
तृप्त नहीं हुओ जीवड़ो, इम बोले हो तिहां विजय कुमार ॥सु०॥
६—कहे प्यारी प्रीतम सुनो, किम रेसी हो या छानी वात।
प्रकट हुआ संयम लेसां, कांई लड़सां हो कर्मा रे साथ ॥सु०॥
७—करे सामायिक पोषा भेला, कांई सोवे हो एक सेज मझार।
जोवे भगनी भ्रात ज्युं, शील पाले हो खांडारी धार ॥सु०॥
८—मन वचन काया करी, नहीं व्यापे हो कभी काम विकार।
सार धर्म जाणे जिन तणो, कांई दूजो हो सहु जाणे असार ॥सु०॥
९—नहीं रूची पुद्गल ऊपरे, धन्य लेखे हो जेहनो अवतार।
"राम" कहे ढाल दूसरी, व्रत पाले हो धन्य जे नर नार ॥सु०॥

दोहा

१— धर्म ध्यान करतां थकां, द्वादश वर्ष जो थाय।
किण विध ज्ञान प्रकट हुवे, ते सुण जो चित्त लाय ॥
२— लक्ष्मी भाग्य नें रागता, दाता सूर सुवास।
एता छांना किम रहे, विद्वत् कवि प्रकाश ॥

ढाल ३ राग—जल्हानी

१— तिण अवसरे तिण काले दक्षिण देशे हो,
सुखकारी मुनिराज, उपकारी जिनराज ॥टेर॥
१—विमल केवली नामे मुनि शुभ वेसे हो जिनन्द।
२—चम्पा परी का बाग में आई उतर्या हो ॥सु० उ०॥
बहु नर नारी मुनिवंदन परआग्या हो जिनन्द।
३—यह संसार असार मुनि दिखलावे हो ॥सु० उ०॥

तन धन जोवन जाता वार न लावे हो जिनन्द।
४—मात पिता सुत भामिनी संग न आवे हो ।।सु० उ०।।
सहुं संघ छोड़ी ने चेतन परभव जावे हो जिनन्द।
५—विषय विकार प्रमादे नरभव हारे हो ।।सु० उ०।।
मूरख चेतन रत्न अमोलक डारे हो जिनन्द।
६—इत्यादिक मुनि धर्मदेशना दीधी हो ।।सु० उ० ।।
सुण कर श्रावक अमृत रस कर पीधी हो जिनन्द।
७—जिनदास श्रावक विनवे शीष नमायो हो ।।सु० उ०।।
अहो प्रभुजी मुझे रयणो स्वप्नो आयो हो जिनन्द।
८—सहस्र चौरासी मासखमण मुनिराज हो ।।सु० उ०।।
मैं प्रतिलाभ्या निर्दोषण प्रभु आज हो जिनन्द।
९—तेनो शू फल दाखो कृपा करनें हो ।।सु० उ०।।
भाखे मुनिवर सेठ सुणों चित्त धरनें हो जिनन्द।
१०—नगर कौशम्बी विजय कुंवर गुणधारी हो ।।सु० उ०।।
त्रिकरण योगे दम्पति बालब्रह्मचारी हो जिनन्द।
११—"मुनिराम" कहे शुद्ध शील पाले नर नारी हो ।।सु० उ०।।
धन्य-धन्य जे नर तेनी हूं बलिहारी हो जिनन्द।

दोहा

१— एक सेज्या सोवे बेहु, शुद्ध पाले ब्रह्मचार।
द्वादश वर्ष ज निसर्या, धन्य तेनो अवतार ।।

२— चरम शरीरी महा उत्तम-किया ज्ञानी गुण ग्राम।
सुणने सहु विस्मय थया, सहु कोई कियो प्रणाम ।।

३— जिनदास मन में चितवे, जाय करूं दर्शन्न।
तुझ मिलीया संयम लेवसी, मुनिवर कियो प्रसन्न ।।

ढाल ४ राग—अनोखा भंवरजी हो साहिबा, झालो देउं घर आव

१—जिनदास मुनिवर वदीने हो, भवियण नगर कौशम्बी जाय।
बहु परिवारे परवरीया हो, भवियण दर्शन की मन माय ।।
धन धन तेहने हो भवियण जे पाले ब्रह्मचार ।।टेर।।

२—नगर कौशम्बी का बाग में हो भवियरा, सेठ जी डेरो करेह ।
विजय कुँवर ना तात से हो, भवियरा मिलिया हर्ष घरेह ॥ध०॥

३—शुं कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो मुझने आज ।
धर्म सगपरा आविया हो, सेठजी, तुम सुत दर्शन काज ॥ध०॥

४—विमल केवली गुरा कियो हो, सेठजी, बाल ब्रह्मचारी तेह ।
मुझ दर्शन की मन में लगी हो, सेठजी,ज्यों चातक को मेह ॥ध०॥

५—सेठ सुनी अचरज थया हो, भ० लिया कुँवर बुलाय ।
किरा भांत सोगन किया हो, भ०कुँवरजी, सुं थांरां मनमाय ॥ध०॥

६— कर जोड़ी कुँवर कहे, हो तातजी, लियो अभिग्रह धार ।
आज्ञा दीजे मुझ भरणी हो तातजी, ले सूं संजम भार ॥ध०॥

७—तात कहे नन्दन सुनो हो कुँवर जी, कठिन मुनि आचार ।
कर अग्रे कहो किम रेवे हो कुँवरजी, मेरूं जितनो भार । ध०॥

८—लाख प्रकारे नहीं रेसुं हो तात जी, ले सुं संजम भार ।
वैरागी कहो किम रेवे हो कुँवरजी, लीनो सजम भार ॥ध०॥

९—विजया कुँवरी परा लियो हो, भवियरा पाले शुद्ध आचार ।
तपजप बहु कररगी करी हो,भवियरा पाम्या दोई केवलज्ञान॥ध०॥

१०—कर्म खपाई मुक्ति गया, हो, भवियरा प्रथम तीर्थंकर बार ।
बालब्रह्मचारी विरला ऐसा हो, भ० सुराजो सहु नर-नार ॥ध०॥

११—संवत् उगरगीसे दशे मासमें हो, भवियरा नागोर सेखे काल ।
फागरा सुद पुनम दिने हो, भवियरा जुगत सुं जोड़ी ढ़ाल ॥ध०॥

१२— स्वामी वृद्धिचंदजी के प्रसाद सुं हो भ० रामचन्द्र करी जोय ।
ओछो अधिको जे कह्यो हो, भ० मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ध०॥

"कलश"

१—शीलवंत प्रभुनी शादी, श्रीमुख जिनवर भाखियो ।
शील व्रतसम अवर जग में, नहीं पदारथ दाखियो ॥

२—चौंसठ सैंस वर्ष सुर आयु पामे, लोक लज्जा व्रत राखियो ।
दुर्धर व्रत जे सधर राखे, धन धन जे रस चाखियो ॥

३—विजय सेठ सेठानी विजया, जैसा विरला जगत् में ।
धन्य धन्य मनुष्य जन्म पायो, जाय विराज्या मुगत में ।।
४—तेह तणां गुण मुख—गाता, जन्म सफलो होय है ।
गुणवंत ना गुण सुणत काने, भव भव पातक खोय है ।।
५—सुणवा नो गुण एहिज कहीये, कछुक हिरदे धारीये ।
लीधा व्रत पे कायम रहीये, नरभव अफल न हारीये ।।
६—ज्ञानवंत ना चरण पकड़ो, अगाध भवोदधि तारीये ।
"रामचन्द्र" आनन्द घर ने, ज्ञानादिक विचारीये ।।

२१ | सुमति कुमति का चौढालिया

दोहा

१— देव नमूं अरिहंत ने, सिद्ध सकल भगवन्त ।
आचारज उवज्झाय ने, प्रणमूं सन्त महन्त ॥

२— सुमत कुमत दोय स्त्री, प्रीतम चेतन राय ।
मांहो मांहने झगड़ती, समकित साख भराय ॥

ढाल १ — राग—कोयल बोली जी हजारी ढोला बाग में

१— सुमति घट में आवे, या भांत भांत परचावे ।
पिण मूल दाय नहीं आवे जीवने ॥
समझावो जी म्हारा चेतन राजा जीवने ।
घर लावो जी मनमोहन स्वामो जीवने ॥टेर॥

२— सुमत सीख नहीं लागे, यो उठ उठ ने भागे ।
या कुमति प्यारी लागे जीवने ॥सम०॥

३— आठ पहर रंग भीनो, ना जाणुं कांई कीनो ।
या भव भव में दुःख दीनो जीवने ॥सम०॥

४— छाने छाने आवे या, चेतन ने भरमावे ।
आ नरक निगोद ले जावे जीवने ॥सम०॥

५— पुण्य खजानो खाती, या पुद्गल करने राती ।
या उल्टी चाल चलाती जीवने ॥सम०॥

६— या छे कामनगारी, केई ठगिया नर संसारी ।
सिखावण दे दे हारी जीवने ॥सम०॥

७— धोको दे विलमावे, मोह मद का प्याला पावे ।
आ बन्दर जेम नचावे जीवने ।।सम०।।

८— कुमत लपेटा लेती, मुक्ति सुं घाले छेती ।
मैं देऊं सिखावण केती जीवने ।।सम०।।

९— कुमत कपटरी कुण्डी, या पटके दुरगत ऊंडी ।
या अकल सिखावे भुण्डी जीवने ।।सम०।।

१०— जड़ाव जयपुर में गावे, निज चेतन ने समझावे ।
जित आतम राम रमावे जीवने ।।सम०।।

दोहा

१— तडक भड़क कुमति कहे, करने आंख्या लाल ।
आ कुण आई पापणी, तूं बैठो घर में घाल ।।

२— छाछ मांगती आयने, बण बैठी पटनार ।
निकल मारा घर थकी, नहीं तर कर सुं खुवार ।।

३— परण पियुड़ो लावियो, पाँच पंचांरी साख ।
जाणूं कर्त्तव्य थायरा, किम बोले ऊँचे नाक ।।

४— मुख मीठी हृदय कठण, नहीं थारी प्रतीत ।
वाप भाई छोड़ नहीं, फीट फीट हुई फजीत ।।

५— चेतन कहे सुमति सुणो, कांई सिखाऊं तोय ।
मत छेड़ो पत जावसी, खमेसुं शोभा होय ।।

ढाल—२ राग—घोड़ी तो आई थांरा देश में मारू जी

कुमति रो संग छोड़ दो चेतन जी ।।टेर।।

१— आई छूं अरज करवा भणी, चेतन जी ।
आप हो चतुर सुजान हो, गुणवन्ता ।।
ऐसा काम न कीजिए, महाराजा ।
लोक हांसी घर हाण हो, बुधवंता ।।कुमति०।।

२— परणी घरणी छोड़ने, चेतन जी ।
कुमति सुं कर रह्या केल हो, गुणवन्ता ।।

चित्त चोरी मन खेंचियो, महाराजा।
इण सुं मन रया मेल हो गुणवंता ॥कुमति०॥

३— या सुं घी गुल पुरसियो, महाराजा।
मैं स्यूं पुरसियो तेल हो, बुघवंता॥

दोष न दीजे और ने, प्रीतम जी।
परालबदरो खेल हो, महाराजा ॥कुमति०॥

४— कुमति रा भरमावीया, चेतन जी।
क्यूं छिटकाई मांय हो, महाराजा॥

बिन अवगुण पीया परहरो, चेतन जी।
भला नहीं कैसी लोक हो, बुघवंता ॥कुमति०॥

५— जोड़े जन्मी आपरे, चेतन जी।
वातो बहिन कहवाय हो, गुणवंता॥

परी परणावो एहने, चेतन जी।
आगी सासरे जाय हो, बुधवंता ॥कुमति०॥

६— फिर परणाऊं दूसरी, चेतन जी।
समकित छोटी बहन हो, महाराजा॥

हिल मिल रहस्यां दोय जणी, चेतन जी।
आप उडावो चैन हो, बुधवंता ॥कुमति०॥

७— कुमति रो संग छोड़ दो, प्रीतम जी।
आवो हमारे महल हो, गुणवन्ता॥

स्वर्ग में शंका नहीं, चेतन जी।
करो मुगत री सहल हो, गुणवंता ॥कुमति०॥

८— जो थांरा घर में पदमणी, प्रीतम जी।
तो किम परणीया मोय हो, गुणवंता॥

विना विचार्यो जो करो, चेतन जी।
लोक हांसी घर हाण हो, बुधवंता ॥कुमति०॥

९— जड़ाव कहे जग जे बड़ा, चेतन जी।
माने गुरु को सीख हो, गुणवंता॥

तिरिया ने तिरसी घणा प्रीतम जी।
करसी मुक्ति नजीक हो, बुधवंता ॥कुमति०॥

दोहा

१— मोह राजा री डीकरी, कुमति एहनो नाम।
आप थकी लारे पड़ी, छेड़्या होवे कुनाम।।

२— बाप भाई ने भांणजा, काका बाबा पूठ।
जाई जाय पुकारसी, तो लेसी खजानो लूट।।

३— मती सतावो नाथ जी, तुम घर रहो निःशंक।
धर्म राजा कोपसी, तो काडे इणारो वंक।।

ढाल ३

राग—सीख शुद्ध मानो रे सत्गुरु की

१— विलख वदन कुमति कहे हो चेतन जी।
म्हारा भव भव रा भरतार; सार अब कीजे हो प्रीतमजी।।

२— पहली लाड़ लडाविया हो चेतन जी।
अब क्यूं तोड़ो तार, समझ सुख दीजे हो प्रीतमजी।।

३— कहे हमारे चालता हो चेतन जी।
थें कदीय न लोपी कार, लार ले चालो हो प्रीतमजी।।

४— प्यारी लगती आपने हो चेतन जी।
कांई ए सुमति रा काम, नाम नहीं लेवो हो प्रीतमजी।।

५— मीठा भोजन जीमता हो चेतन जी।
थें करता सतरे सांग, मांग मत खावो हो प्रीतमजी।।

६—लूंग सुपारी एलची हो चेतन जी।
थांरे दर्पण रखती हाथ, साथ नहीं छोड़ूं हो चेतनजी।।

७— रंग महल में पोढता हो चेतन जी।
थें करता मन री जोख, शोक क्यूं लाया हो प्रीतमजी।।

८— चोपड़ पाशा खेलता हो चेतन जी,
मैं जाती तुमसूं जीत, प्रीत नहीं छोड़ूं हो प्रीतमजी।।

९— झरोखे झांकता हो चेतन जी।
मैं रहती सदा हजूर, दूर नहीं जावूं हो प्रीतमजी।।

१०— ग्राहक था सो ऊठ गया हो कुमती जी।
खाली पड़ी दुकान, वथा मत कुको हो कुमतीजी ॥

११— इतना दिन नहीं जाणीयो हो कुमती जी।
तूं बैनड़ में वीर, सीर थारो चुको हो प्रीतमजी ॥

१२— गुरुमुख जाण जड़ाव जी हो चेतन जी।
आ करसी रंग विरग, सग मत कीजे हो चेतन जी ॥

१३— सुमति सुपात्र स्त्री हो चेतन जी।
राखो जिणसुं रंग, ज्ञान रस पीजे हो चेतन जी ॥

ढाल ४ राग—गोपीचंद लड़का

१— कर हुँसीयारी चेतन भारी, कीयो शील शृंगारी।
कर केशरिया उरदिया जव, कुमति जाय पुकारी जी ॥
सुण बाप हमारा, सुमति भरमायो प्रीतम माहरो।
नहीं केवणवारा, डर नहीं राख्यो है कोई थांयरो, सुण० ॥टेर।

२— मोह मछराल दुष्ट इम बोले, करके आंख्यां राती।
देख हवाल करूं चेतन का, धुजावे किम छाती जी ॥
सुण सुता हमारी, मान मोड़ूं रे चेतन राय को।
सुण पुत्री हमारी, गर्व गालूं रे चेतन राय को सुण० ॥टेर॥

३— सात कर्म सुं सल्ला विचारी, राखी जो हुँसीयारी।
देखो अव तुम हाथ हमारा, कैसी करां खूवारी जी ॥
सुण भाई हमारा, मान मोड़ूं रे चेतन राय को।
सुण भ्रात हमारा, मान मोडूं रे चेतन राय को सुण० ॥टेर॥

४— क्रोध मान का दिया मोरचा, तृष्णा तोप धराई।
पाप अठारा दारुगोला, तोपां दीवी भराई जी ॥सुण०॥

५— रागद्वेष सेना का नायक, लोभ मुसाय पलारी।
कपट वकील तुरत भिजवायो, करो बात सब जहारी रे। सुण०

६— पुत्री हमारी केम विसारी, दूजी परणीया नारी।
सन्मुख आवो चूक वतावो, देवो साबूती सारी रे ॥
सण चेतन राजा, पुत्री प्यारी रे म्हारा जोवसं ॥टेर॥

२२ बियालीस दोष

दोहा

१—दोष बंयालीस जिनवर कह्या, चतुर लीजो विचार।
सांभल हिरदे धार जो, दोषण दीजो टार॥

२—साधु नाम धरावे घणा, पिण गरज न सरे लिगार।
सूत्र साख हिरदे धरे, तो सुधरे जमवार॥

ढाल १ — राग—मांजी ने जरा बुलावोरे

१—आधाकर्मी रो दोषण मोटा रे, सेव्या सुं पड़सी टोटो रे।
उद्देसिक पिण भारी रे, सांभल ने कीजो विचारी रे॥

२—पूई कर्म दोषण तीजो रे, इण रो संग कोई मत कीजो रे।
मिश्र कर्म साधा ने भेलीजेरे, पापिलो केन सेवो जे रे॥

३—पामणा करे आगा पाछारे, ऊजवालो कर देवे खासा रे।
मोलरी वस्तु वहरावे रे, जो सुं साधु ने दोषण थावे रे॥

४—ऊधारो लाई ने देवे रे, जिण में झगड़ा घणेरा होवे रे।
सलटा पलटा करावे रे, जिण में अजयणा घणी थावे रे॥

५—सामो आणी ने देवे रे, जामें जीव जयणा कुण जोवे रे।
सांदो उघाड़ो ने देवे रे, तिण नें फिर आरम्भ होवे रे॥

६—मालोहृत कर्न लेवे रे, हाले तो दूषण केवे रे।
खोलो देवे चवद में बोले रे, ऐसा दोषण हिरदा में तोले रे॥

७—दोय पांती दार एवा रे, देवे तो काडे केवा रे।
साधु आया अधिको ओरे रे, दोष सोलासे रहिजो कोरे रे॥

८--ए दोष लगावे रागीरे, जांरी भाग दशा नहीं जागी रे।
ऐसो देवा में लाभ ज जाणे रे, पण हिरदा में ज्ञान न आणे रे ॥

दोहा

१— साधु ढीला जो होवे, तो सेवे दोष अपार।
पण लज्जा आवे नहीं, ते किण विध उतरे पार ॥

२— ऐसा साधु सेवसी, करसी वन्दना भाव।
जांरी समकित किम रहे, हिरदे करो विचार ॥

ढाल २

राग—दस दिसारो दिवलो कह्यो ए

१—धाय नो कर्म ज आदरे, कहे आमा सामा समाचार के।
भव जीवां सांभलो रे ॥
निमित्त भाखे घणी भांत सु ए, जात जणावे आप के।
भव जीवां सांभलो रे ॥

२ मांगे रांक तणी परे रे, करे वेदगारी रो काम के।
क्रोध मान माया करे ए, लोभ करे घणी वार के ॥भ०॥

३—गुण करे दातार नां ए, पेला पछे तिणवार के।
आयो जाणे डूमड़ो ए, लजावे साधु रो सांग के ॥भ०॥

४—विद्या मंत्र करे घणां ए, चूरण जोग मिलाय के।
ए सोला दोषण कह्या ए, ते सेवे ढीला साध के ॥भ०॥

दोहा

१— दस दोष एषणा तणा, टाले उत्तम साध।
सेवे जाने ढ़ीला कह्या, उत्तराध्ययन के माय ॥

२— श्रावक तो डाह्या होवे, साधु होवे गुणवान।
ते दोष लगावे नही, जांरा जिनवर किया वखाण ॥

हाथांरी रेखा आली होवे रे लाल,
तिण कने गु नहीं लेवे जाण हो ॥भ०।

२— सचित्त ऊपर अचित्त ढांकीए रे लाल,
ये छे चौथो दोष हो ॥भ०॥
भाजन अनेरा में घाल ने रे लाल,
इन्द्रियहीण दातार हो ॥भ०॥

३— शास्त्र पूरो परगम्यो नहीं रे लाल,
ते किम लेवे विचार हो ॥भ०॥
मिश्र होला उंबी पुकड़ा रे लाल,
मवकाथी दोषण थाय हो ॥भ०॥

४— तुरत रा लिप्या आंगणा रे लाल,
अजयणा घणी थाय रे ॥भ०॥
वहरता आंगण टपका पड़े रे लाल,
तो फिरजावे मुनिराज हो ॥भ०॥

५— दोष वंयालीस मोटका रे लाल,
साभल दीजो टाल हो ॥भ०॥
सेव्यामें ओगुण घणा रे लाल,
हिरदा में लीजो विचार हो ॥भ०॥

दोहा

१— आहार लावे कोई सूझतो, जिणरी मोटी वात।
लाया थी दोषण ऊपजे, तेनो सुणो अधिकार ॥

२— घर छोड़ी ने नीकल्या, ताणे मन वैराग।
खावा पर चित्त लाय ने, गयो जमारो हार ॥

ढाल ४ राग—भरतेश्वर तेरा तेला करे एम

१—आहार लावे कोई सूझतो रे, जिण में लगावे दोष।
रस इन्द्रिय वश जो होवे रे, जांरी वातां फोक रे प्राणी ॥
दोषण दीजो टाल ॥टेर॥

२—आहार करता वखाणतां रे, आरभी केवे सोय।
निरस आहार भावे नहीं रे, जदी वखोड़ा होय रे प्राणी ।।

३—संयोग मिलावे घणी भांत सुं रे; करे स्वाद रो काम।
प्रमाण सुं अधिको जीमतां रे, होवे सजम री हाण रे प्राणी ।।

४—क्षुधा वेदनी लागा थकां रे, वैयावच्च करणी होय।
ईर्या सोधी ने चालवां रे, संजम निभावण होय रे प्राणी ।।

५—कारण थी जीमे सहीरे, विन कारण नहीं चाय।
कारण दोय प्रकारनां रे, लेवे छण्डे मुनिराय रे प्राणी ।।

६—भूखा थी दया पले नहीं रे, जिण सुं लेवे आहार।
धर्म कथा करणी पड़े रे, भूखा थीं नहीं केवाय रे प्राणी ।।

७—अब आहार ने छाण्डणो रे, तेनो सुणो अधिकार।
रोग आवे शरीर में रे, औषध छांडे आहार रे प्राणी ।।

८—उपसर्ग आवे कोई मोटको रे, देही करे उन्माद।
तिण कारण जीमे नहीं रे, सहज ही शांति होय रे प्राणी ।।

९—तप किया निर्जरा घणी रे, जिणरां बारह भेद।
जीव दया रे कारणे रे, छाण्डे आणी विवेक रे प्राणी ।।

१०—शरीर तो होवे दुर्बलो रे, जिण में नहीं कोई तंत।
जदी आहार त्यागन करे रे, देवे संथारो ठायरे प्राणी ।।

११—ऐसो आचार साधु तणो रे, सांभल लीजो धार।
दोषण सगलाई परहरो रे, जिन आज्ञा विचार रे प्राणी ।।

२३ भरत चक्रवर्ती

दोहा

१— आरीसा रा भवन में, बैठा भरत महाराय।
वैराग किण विध पामीयां, ते सुण जो चित्त लाय ॥

२— उगी उगी ने उगीया, ठाणायंग की साख।
आऊखो मोटो हुवो, पूरब चौरासी लाख ॥

ढाल १ — राग—भरतेश्वर तेरे तेला किया एम

भरतेश्वर, पुन्यतणां फल जोय ॥टेर॥

१— तीण काले ने तीण समे जी, नगर वनीता नाम।
लोक सहु सुखीया वसे जी, मोटा राजा नो ठाम ॥

२— राज करे तिहां भरत जी रे, षट् खण्ड भुगता जोय।
पुण्य पाप बेहुं खे कीया जी, मुगत तणां फल होय ॥

३— भाई नन्याणु जणा जी, जाण्यो है अथिर संसार।
श्री आदेश्वर जी रे आगले जी, लीधो संजम भार ॥

४— मोरादे जी मुगते गया जी, भाई भावना सार।
केवलज्ञानी वखाणीये जी, शाल रो रूंख परिवार ॥

५— सीत्तर लाख पूरब लगे जी, कुंवर पदे रह्या तेह।
हजार वर्ष मण्डलीकपणे जी, छ लाख चक्रवरती जेह ॥

६— साठ सेंस वरसां लगे जी, साधी सगली भोम।
वस किया सहु भोमीया जी, न रह्यो किरण रो जोम ॥

७— चवदे रतन नवनिध घरे जी, हय गय रथ परिवार ।
छ लाख पूरव लगे जी, घणी वरताई [illegible] ॥

८— चौंसठ सैंस अन्तेउरी जी, दो दो [illegible] [illegible] ।
गिनती में आई एतली जी, एकलाख ने बाणु हजार ॥

९— एतलारूप वेक्रे करे जी, तिणनुं भोगवे भोग ।
पुण्य तणो संचो कीधो जी, तीणनुं निर्मादो [illegible] ॥

१०— चौंसठ सैंस राजे सरु जी, सेवा करे कर जोड़ ।
तप वरतायो एहवो जी, किणरो न चाल्यो जोर ॥

११— सुर नर आण माने सहुं जी, सेवा करे दिन रात ।
सात रतन छे एकेन्द्रि जी, वली पंचेन्द्रिय सात ॥

१२— अड़तालीस सहस्र पाटण अछे जी, ग्राम छन्नु करोड़ ।
बहोत्तर सैंस नगर कह्या जी, दलपाथक रो जोड़ ॥

१३— महल बयालीस भोमिया जी, चोबारा चतर साल ।
बतीस विधं नाटक पड़े जी, इम गमावे काल ॥

ढाल २

राग- चौपाई की····

१—सीतंतर लाख पुरब लग गया, अब भरतेश्वर राजा थया ।
हजार वर्ष ऊणा छ लाख, पाल्यो राज नहीं लागी चाख ॥
२—आण बरताई भरत मझार, वरस लागा छे साठ हजार ।
बल ज्यांरो इसड़ो शरीर, बहोत्तर जोजन लग जावे तीर ॥
३—चौरासी लाख हाथी ने घोड़, पैदल ज्यांरे छन्यु करोड़ ।
चौंसठ सहस अंतेवर थइ, दोय दोय वरांगणा साथे कही ॥
४—केस अड़तालीस में लश्कर पड़े, भरीया समुद्र खाली करे ।
इसड़ो पड़े लश्कर को जोर, तला तलांवरा नाखे तोड़ ॥
५—पुरवभव इसड़ो दीधो दान, चवदे, रतन घरे नव निधान ।
सोना चांदीरी बीस हजार, सोला सैंस रत्नांरी खान ॥
६—पहले पोरे चे बावे धान, दूजो पहर करे निदाण ।
तीजे पोरे आवे पाक, चोथे ढगला करे अथाग ॥

४—अठाणु मिल एकठा ने चाल्या आदेश्वर पास ।
भरतेसर करड़ो घणो, मांरो झगड़ो दीजो मेट हो बाबा ।।
मैं तो हाथ जोड़ ने अरजी करां ।।

५—वलता ऋषभ जी इम कहे, थें तो सुणो हो बालूड़ा बात ।
कजीया ने झगड़ा छोड़दो, थें तो करो मुगत रो साथ बालूड़ा ।।
तुमे बुझो बुझो रे बालूड़ा, तुमे चेतो चेतो रे बालूड़ा ।।

६—राज घणो ही ज भोगव्यो, घणी वरताई आण ।।
दीक्षा लोनी दीपती थांरा, सरसी काज परमाण ।।हो बालूड़ा ।।
तुमे बुझो बुझो ।।

७—आयो छे जीव एकलो, ओ तो जासी एकाएक ।
किसै भरोसै भूलिया तुमे आणो मन विवेको वालूडा ।।
तुमे बुझो बुझो ।।

८—जग को कीणरो नहीं, यो तो स्वार्थीयो संसार ।
साधपणो शुद्ध आदरो, थांरो होसी खेवो पार ।। बालूडा ।।
तुमे बुझो बुझो ।।

दोहा

१— अठाणु संजम लीयो, बाहुबल सेती राड़ ।
पाँच प्रकारे युद्ध किया, चक्र रत्न की आड़ ।।

२— मूठ उठाई मारवा, शकेन्द्र पकड़ीयो हाथ ।
वाहूबली सोचो तुमे, लोच कियो घर खांत ।।

ढाल ५

राग—महासतीयां जी, धन थारो अवतार

१— बाहुबल संजम लीयो रे, सांचे मन वैराग ।
भरतेसर इम विनवे हो बंधव, बार बार पगे लाग ।हर्षधर।।
बंधव, बोल जो हो ।।

२— बंधव बोल जो हो, थांने बाबा जी री आण ।
थे तो पण्डित चतुर सुजाण, मोसुं मत करो खेंचाताण ।।
रे चतुर नर, वन्धव ।।

३— थे जीत्या हूं हारीयोरे, देवता भरसी साख ।
थांरां सरीखो मारे को नहीं हो,बंधव, मारा सरीखा थारै लाख।।
हरष घर बंधव बोल....

ढाल ६

१—आभरण अलंकार सवही उतार्या, मस्तक सेती पागी।
आपो आप थईने बैठा तो, देही दीसे नागी॥
भरत जी—भूपत भया रे वैरागी ॥टेर॥

२—अनित्य भावना इसड़ी जो भाई, चार करम गया भागी।
देवता दीधो ओघो ने मुहपत्ति, जिनशासन रा रागी॥

३—सांग देख भरतेसर केरो, राण्यां हुसवां लागी।
इण हुंसवांरी खबर पड़ेली, थें रहीजो मांसु आगी॥

४—चौरासीलाख हय वर गयवर, छिन्यु कोड़ छे पागी।
लाख चौरासी रथ संगरामीक तत्खीण होय गया त्यागी॥

५—तीन करोड़ गोकुल घर दूजे, एक करोड़ हल त्यागी।
चौंसठ सेंस अन्तेवर जांके, पिण सूरत, मुगतसूं लागी॥

६—चार करोड़ मण अन्न नित्य सीझे, दस लाख मण लूण लागी।
चौंसठ सेंस राजा मुख आगे, तत्खीण दीधा त्यागी॥

७—अड़तालीस कोस में पड़े लसकर, दुश्मन जावे भागी।
चवदे रतनज आज्ञा मांने, तत्खीण हुआ त्यागी॥

८—सभामें बोल्या भरतेसर, उठ खड़ा होवो जागी।
ए लोक ऊपर निजर मां आणो, निजर करो तुमे आगी॥

९—वचन सुणी भरतेसर केरा, दस सेंस उठ्या जागी।
कुटुम्ब त्रिया ने हाट हवेली, रुची संसारसूं त्यागी॥

१०—सगलाई रह्या छे झूरता, संसार दियो छे त्यागी।
दस सेंस मुकट बंद राजा, लीयो मुगतरो मागी॥

११—लाख पूरव भरतेसर केरो, केवल ज्ञान अथागी।
चौरासी लाख पूरब आयु भोगी, मुगत गया सौभागी॥

१—जोबन थांको नीको छे, रूप मांगे [illegible] छे ॥
ओ अवसर आगो [illegible] छे ॥अहो मु०॥

२—ओघा पातरा परहरिये, सुख [illegible] पैया करिये।
आप सेझा [illegible] पग धरिये ॥अहो मु०॥

३—मुण्डो परो खोली के, [illegible] पर्ण [illegible] दे।
अब रंग रंगीला [illegible] [illegible] दे ॥अहो मु०॥

४—वचन सुणी मुनिवर डगीया, आहार ने पाछा नहीं वलीया।
इन सुन्दर मेंनी जाई भरमीया ॥अहो मु०॥

दोहा

१—केल करे अरणक निहा, माता जोवे वाट।
अजु अरणक आयो नहीं, कां मूं वणीयो वाट ॥

२—के मुनिवर कामण कल्यो, के कोई उपजो भेद।
तिण कारण आयो नहीं, कांईक बात में भेद ॥

३—बेटो जोवा कारणे निकली शहर मझार।
गली गली फिर जोवती, जोवे शहर वजार ॥

ढाल ३

राग—तेहीज

अहो अरणक रे, अरणक अरणक करती ओ माता फिरे।
अहो मुनिवर रे, मुनिवर मुनिवर करती ओ माता फिरे। टेर॥

१—अरणक अरणक करती थी, अरणक रो ध्यान धरती थी।
घर घर लोकां रे फिरती थी ॥अहो अ०।

२—छोरा छोरी चगावे छे, अरणक तोने बुलावे छे।
आरज्या जिण तिण साथे जावे छे ॥अहो अ०॥

३—अरणक माता दीठी छे, हिवड़ा लागी मीठी छे।
मैं काम कियो अनीति छे ॥अहो अ०॥

४—सुंदर का सुख परहरीया, माता के तो पाय पड़ीया।
अहो अरणक आ ते सूं करीया ॥अहो अ०।

१—जोवन थांको नीको छे, रूप मारो पिण तीखो छे ।।
ओ अवसर आणी ठीको छे ।।अहो मु०।।

२—ओघा पातरा परहरिये, मुझ ऊपर मैया करीये ।
आप सेजा ऊपर पग धरीये ।।अहो मु०।।

३—मुण्डो परो खोली जे, लज्जा परी मुकी जे ।
अब रंग रंगीला खेल खेली जे ।।अहो मु०।।

४—बचन सुणी मुनिवर डगीया, आहार ले पाछा नहीं वलीया ।
इत सुन्दर सेती जाई मलीया ।।अहो मु०।।

दोहा

१—केल करे अरणक तिहा, माता जोवे वाट ।
अजु अरणक आयो नहीं, कां सूं वणीयो घाट ।।

२—के मुनिवर कामण छल्यो, के कोई उपजी खेद ।
तिण कारण आयो नहीं, कांइंक वात में भेद ।।

३—बेटो जोवा कारणे निकली शहर मझार ।
गली गली फिर जोवती, जोवे शहर बजार ।।

ढाल ३

राग—तेहीज

अहो अरणक रे, अरणक अरणक करती ओ माता फिरे ।
अहो मुनिवर रे, मुनिवर मुनिवर करती ओ माता फिरे । टेर।।

१—अरणक अरणक करती थी, अरणक रो ध्यान धरती थी ।
घर घर लोकां रे फिरती थी ।।अहो अ० ।

२—छोरा छोरी चगावे छे, अरणक तोने बुलावे छे ।
आरज्या जिण तिण साथे जावे छे ।।अहो अ०।।

३—अरणक माता दीठी छे, हिवड़ा लागी मीठी छे ।
मैं काम कियो अनीति छे ।।अहो अ०।।

४—सुंदर का सुख परहरीया, माता के तो पाय पड़ीया ।
अहो अरणक आ ते सूं करीया ।।अहो अ० ।

२५ | सनत्कुमार चक्रवर्ती

दोहा

१— तिण काले तिण अवसरे, सुधर्म स्वर्ग मझार।
शकेन्द्र छे मोटका, उमराव चौरासी हजार॥

२— तिहा बैठा वखाणियो, चक्री तणो स्वरूप।
देव सहुं अचरज हुआ, मानी वात अनूप॥

३— एकण रे मन संशय हुओ, करू परीक्षा कोड़।
अन्नतणो छे कीडलो, कांईक होसी खोड़॥

ढाल १ राग—मान न कीजे रे मानवी

१—रूप कियो ब्राह्मण तणो, हाथ में डांगली झाली रे।
डिगमिग वो पगल्या भरे, हथिणापुर में आयो चाली रे॥
देव करे रे ऐसी पारख्या ॥टेर॥

२—नसां जाला दीसे रे जूई जुई, लिलरीया पड़गई काया रे।
वरसों में वण गयो डोकरो, चाल्यो जावे थोड़ो रे ॥देव०॥

३—मुंडा में से लाला पड़े, ज्योत झांकी दीसे थोड़ो रे।
कड़चा धूजत डोकरो, थर थर धूजे छाती रे ॥देव०॥

४—इम करतो ते डोकरो, आयो पोल श्री राजा रे।
कहे पोलिया ने डोकरो, मने रूप वतावो महाराजा रे ॥देव०॥

५—नीठ नीठ हुं तो आवियो, खूं खूं कर तो खांसो जी।
ढील न कीजे भाई पोलिया, निकले म्हारो सांसो जी ॥देव०॥

६—माथे पोट जूत्यां तणी, पेट पेस गयो ऊण्डो जी।
वारा वरसा हुं तो चालियो, आवतो होय गयो बूढ़ो जी ॥देव०॥

२— क्षिण में रोग ज ऊपनो, पूर्व भवना पाप।
धृग् धृग् ए संसार ने, मन में चिंते आप॥

३— अब छिटकाऊं राज ने, लेसुं संयम भार।
ऋद्धि त्यागी छ खण्ड तणी, ते सुणजो विस्तार॥

ढाल ३ राग— मंगल कमला कंवए

१—चक्री चौथा नरेशर जाण ए, सूत्र ठाणाअंग में आण ए।
घणां हुंता संपत्ति साज ए, भोगवता छ खण्ड नो राज ए॥

२—हय गय रथ छे जु जुवा ए, लाख चौरासी गिनती में हुवा ए।
पैदल छन्यु करोड़ ए, ज्यांने वंदे बेकर जोड़ ए॥

२—पाटण अड़तालीस सहस्र ए, ज्यां रे उणायत नहीं लेस ए।
नगर बहोत्तर हजार ए, ज्यां रे चौरासी वाजार ए॥

४—सोना रूपारा उछाव ए, ज्यां रे आगर बीस हजार ए।
चवदा रतन छे मोटका ए, ज्यां रे कदीयन आवे टोटका ए॥

५—पेली पोहर बावे धान ए, दूजी पोहर करे निदान ए।
तीजी पोहर पाको धान ए, चौथी पोहर ढिगला किया आण ए॥

६—रसोड़ारो अनुमान ए, सीझे चार क्रोड़ मण धान ए।
सेर आटो पैसा भर लूण ए, लागे दस लाख नहीं ऊण ए॥

७—भाणे बैठणरी जोड़ ए, परिवार पूरो सात करोड़ ए।
पखाल्या छत्तीस हजार ए, तीन सो साठ रसोई दार ए॥

८—मोटी पदवी चक्री तणी ए, सुख संपदा ऋद्ध पामी घणी ए।
तपसा कीधी घोर ए, जिनसे किणरो नहीं चाले जोर ए॥

९—रूप जोवन रो जोम ए, ज्यांरें महल वयालीस भोम ए।
चारूं दिशा शोभे जालियां ए, चोबाराने चत्तर सालियां ए॥

१०—लग रह्या सुखांरा ठाट ए, ज्यांरे लारे घणो गहघाट ए।
जग मांहे सुरतरु वेलड़ी ए, ज्यांरे चौसठ सहस्त्र अंतेउरीए॥

११—दो दो एकण लार ए, एक लाख ने वाणुं हजार ए।
नाटक वृन्द वत्तीस ए, मोटा राय नमावे शीष ए॥

२— क्षिण में रोग ज ऊपनो, पूर्व भवना पाप।
धृग् धृग् ए संसार ने, मन में चिंते आप॥

३— अब छिटकाऊँ राज ने, लेसुं संयम भार।
ऋद्धि त्यागी छ खण्ड तणी, ते सुणजो विस्तार॥

ढाल ३ राग— मंगल कमला कंदए

१—चक्री चौथा नरेशर जाण ए, सूत्र ठाणाअंग में आण ए।
घणां हुंता संपत्ति साज ए, भोगवता छ खण्ड नो राज ए॥

२—हय गय रथ छे जु जुवा ए, लाख चौरासी गिनती में हुवा ए।
पैदल छन्थु करोड़ ए, ज्यांने वंदे वेकर जोड़ ए॥

३—पाटण अड़तालीस सहस्र ए, ज्यां रे उणायत नहीं लेस ए।
नगर वहोत्तर हजार ए, ज्यां रे चौरासी बाजार ए॥

४—सोना रूपारा उछाव ए, ज्यां रे आगर वीस हजार ए।
चवदा रतन छे मोटका ए, ज्यां रे कदीयन आवे टोटका ए॥

५—पेली पोहर बावे धान ए, दूजी पोहर करे निदान ए।
तीजी पोहर पाको धान ए, चौथी पोहर ढिगला किया आण ए॥

६—रसोड़ारो अनुमान ए, सीझे चार क्रोड़ मण धान ए।
सेर आटो पैसा भर लूण ए, लागे दस लाख नहीं ऊण ए॥

७—भाणे बैठणरी जोड़ ए, परिवार पूरो सात करोड़ ए।
पखाल्या छत्तीस हजार ए, तीन सो साठ रसोई दार ए॥

८—मोटी पदवी चक्री तणी ए, सुख संपदा ऋद्ध पामी घणी ए।
तपसा कीवी घोर ए, जिनसे किणरो नहीं चाले जोर ए॥

९—रूप जोवन रो जोम ए, ज्यांरें महल बयालीस भोम ए।
चारूं दिशा शोभे जालियां ए, चोबाराने चत्तर सालियां ए॥

१०—लग रह्या सुखांरा ठाट ए, ज्यांरे लारे घणो गहघाट ए।
जग मांहे सुरतरु वेलड़ी ए, ज्यांरे चौसठ सहस्त्र अंतेउरीए॥

११—दो दो एकण लार ए, एक लाख ने बाणुं हजार ए।
नाटक वृन्द बत्तीस ए, मोटा राय नमावे शीष ए॥

५— किटकी नहीं कीजे, किड़ी ऊपर भारी।
कोई दोष बतावो, मत मारो एकलारी॥

६— पिया पिहर सासरा, थें सब ने सुखकारी।
गिरवा गुणवंता, सूरतरी बलिहारी॥

७— यह महल झरोखा, नाटकना झणकारो।
संयम छे दोहिलो, सेहिलो छे घरबारो॥

८— सुर सहस्र पच्चीसो, छत्र चंवर शिर धारो।
तीन क्रोड़ गोकुल घर, एक करोड़ हल सारो।

९— बिल-बिलती राण्यां, फिरे मुनिरी लारो।
इन्द्र तब आई प्रतिबोधे तिणवारो॥

१०— यह मोटा मुनिश्वर, छः काया रा प्रतिपालो।
थांरे काम न आवे, यूं कही गया देव पालो॥

११— वैद्य रूप करी ने देव आयो तिण वारो।
इण विधी ते बोले, करण परीक्षा सारो॥

१२— ऋषि रोग गमाऊँ, कंचन करुं देह सारी।
कर्म काट्या ही कटसी, किसी पोंछ सुर थांरो॥

१३— सातसो वर्ष चारित्र, पाल्यो निरतिचारी।
कर्म आठ काटने, पायो केवल भारी॥

१४— जिन धर्म दीपाई, पहुँचा मोक्ष मझारी।
पीपाड़ चौमासो, कहे "चौथमल" अणगारी॥

दोहा

१— विहरमान बीसे नमुं, जयवन्ता जगदीश ।
अतिशयवन्त अनन्त गुण, तारक विश्वावीस ॥

२— दान शील तप भावना, इण जुग में श्रीकार ।
तिरीयाने तिरसी घणा, पामे भवोदधि पार ॥

३— व्रत सहुई मोटका, शील समो नहिं कोय ।
जे नर नारी पालसी, मोक्ष तणा फल होय ॥

४— सांची तिलोकसुन्दरी, राची शील सुरंग ।
तेह तणा गुण वर्णवुं, आणी अधिक उमंग ॥

ढाल १ राग—हमीरीया री

१—जम्बूद्वीपरा भरतमें, सुदर्शण पुर अभिराम ॥सनेही०॥
न्याय गुणे करि निर्मलो, अरिमर्दन नृप नाम ॥स०॥

२—शील तणी महिमा सुणो, एक मना नरनार ॥स०॥
इण भव परभव सुख लहे, वरते जय-जयकार ॥स०॥

३—पुष्पदन्त सेठ तिहांवसे, सत्यश्री नामे नार ॥स०॥
तेहने सुत दोय दीपता, सागरदत्त चित्रसार ॥स०॥

४—जोबन वय आया थका, सागरदत्त ने तिण पुरमांय ॥स०॥
धनवंत सेठ तणी सुता, "रूप सुन्दरी" दी परणाय ॥स०॥

५—वसन्त पुरी जिनदत्त वसे, 'धन्नश्री" नार उदार ॥स०॥
बेटी तिलोक सुन्दरी, सा परणाई चित्रसार ॥स०॥

६—सुख विलसे संसारना, भांया रे घणो प्यार ।।स०।।
मात पिता परभव गया, सुत करे घरनी सार ।।स०।।
७—व्योपार करे परदेश में, बारे वर्ष नो करार ।।स०।।
एक भाई घरे रहे, एक परदेश मुझार ।।स०।।
८—छोटो भाई परदेश में, ज्येष्ठ बन्धु घर वसन्त ।।स०।।
लघु भाईनी भार्या, देखी स्नान करन्त ।।स०।।
९—रूपे अप्सरा सारखी, देखी ने व्याप्यो काम ।।स०।।
ए नारी बिन भोगव्यां, जावे जन्म निकाम ।।स०।।
१०—वस्त्र गेणा मोकल्या, दासी साथे तेह ।।स०।।
जेठ पिता सम जाणने, लीधो हर्ष धरेह ।।स०।।
११—अत्तर फुलेल सुखडी, करे काम उदीप ।।स०।।
दासी साथे दे करी, मोकल्या सती समीप ।।स०।।
१२—सती देख मन चिंतवे, जेठ कामी अपार ।।स०।।
सर्व वस्त्र फंकाय ने दासी ने दियो धुत्कार ।।स०।।
१३—दासी कह्यो जाय सेठ ने, वा नहीं माने वयण ।स०।।
करी खुवारी मारी घणी, अरुण करीने नयण ।।स०।।

दोहा

१— खबर आई कहे, चित्त लाई धर नेह ।
मनचाही लीला करो, जीवन लाहो लेह ।।
२— गेणादिक मांगे जिके, हाजर करुं तैयार ।
हुं छुं किंकर ताहरो, तुं मुझ प्राणाधार ।।
३— जेठ वचन सुणी सुन्दरी, कीधो कोप करूर ।
परणी वञ्छे पारकी, फिट पागडी में धूर ।।
४— सती निर्भ्रंछ्यो जेठ ने, रति न मानी कुजात ।
कही जाय आरक्ष ने, भ्रात बधूनी वात ।।
५— रूप प्रशंसा सांभली, कोटवाल तिणवार ।
सती बोलावी ने कहे, करमो सुं इकवार ।।

६ — सती निकार्यो तेहुने, फिटकार्यो सौबार।
डाकरण आल दोहुं दई, काढ़ी पुर रे बार॥

ढाल २

राग—हिवे राणी पद्मावती

१— तिमिर व्याप्यो रवि आथम्यो, डरावणी रात।
कने सहाई को नहीं, सिमरे जगनाथ॥

२— मुझ शरणो एक शीलरो, धरती मन रे माय।
क्षुद्र जीव नो भय ना हुवो, शील तणे सुपसाय॥

३— आगेई सतीयां भणी, पडिया कष्ट अनेक।
अंजना, चन्दना, द्रौपदी, सीता दमयन्ती देख॥

४— इण उपसर्ग सुं उबरुं, तो लेणो मुझ आहार।
नहीं तर म्हारे आज थी, जावज्जीव परिहार॥

५— वले जेठ आई कहे, सुख विलसो मुझ साथ।
तो हुं ले जाऊं घर भणी, सती नहीं मानी बात॥

६— वासी चम्पानगर नो, सेठ तो गुणपाल।
मारग वेतो आवियो, दीठी अघमरी बाल॥

७— अचरज पाय जन मोकल्यो, सती पामी त्रास।
बाई नाम बोलावतां, हुवो चित्त हुलास॥

८— वितक विवरो साम्भली, लायो आपरे गेह।
धर्मण बाई थाप ने, राखे अधिक सनेह॥

६— कोतवाल ने जेठ ते, गलतकोढ़ी थाय।
घरसुं न्यारा कर दिया, पाप उदे हुवा आय॥

१०— सुखे समाधे सती तिहा, धरती धर्म नो ध्यान।
तिण पग छेडुं सेठ रे, हुवो पुत्र प्रधान॥

११— सेठ विशेष राजी हुवो, गोद खिलावे ले बाल।
सती शील सरोवर झुलता, वितो कितोयक काल॥

दोहा

१— एक दिन मुख्य गुमास्ते, देखी इण रो रूप।
काम फन्द माहें पड्यो, चित्त में लागो चूंप॥

२— हांस किलोल करे घणी, सती निभ्रंछ्यो तेह।
हूं कहि सुं बावा भणी, तो तुम देसी छेह॥

३— तिलोकसुन्दरीना वचन सुणी, चमक्यो चित्त मझार।
इण ने आल देई करी, काढुं घर रे बार॥

४— निर्भय सुती देखने, रुद्र हाडका लाय।
सती आगल विखेरने, सेठ ने बोल्यो आय॥

ढाल ३   राग—मोतीडारो गजरो मुलीए।

१—तुम सुणो सेठजी सेणा, मुझ मानो कहुं तुझ वेणा।
ए डाकण छे धुत्तारी, में तो परखी रयण मझारी॥

२—ये नीठ हुवो छे पूत, एह राख्या होसी अपूत।
हुं तुमरो भलो चाहुं तिणथी ए वात चेताऊं॥

३—इण में शंका जाणो कांई, तो चालो देऊं वताई।
सेठ चिंते मन मांय, किम लागी पाणी में लाय॥

४—सेठ ने सती कने लावे, रुद्र हाड मांस देखावे।
सेठ चमक्यो चित्त माई, नारी जात री खवर न कांई॥

५—सेठ कर रह्यो थागा थोगी, ए नार नहीं घर जोगी।
रखे वाल भखे आ म्हारो, तो वेगी कांढू घर वारो॥

६—एतले सती ऊठ जागे, रुद्र हाड मांस पड्या मुख आगे।
सती देखी ने विमासे, भावी लेख लिख्यो जिम थासे॥

७—हिवे सेठ कहे बुलाई, इण घर सुं जावो बाई।
सुण वात हुई दिलगीर, इणरे नैणां ढलक्या नीर॥

८—तुम सुं जोर नहीं हो तात, थांरी खुशी पणारी वात।
सेठ री छानी भराई, गाम्यारी रीत रहे नहीं कांई॥

९—सेठ सहस्र मोहरा पकड़ाई, सती चाल वाजार में आई।
"पूज्य सवल दास" कहे सुणो प्यारा, भाई पाप सुं हुई जो न्यारा।

दोहा

१— अशोक चम्पक सेठ रे, घरणो दीनो आय।
मांग मोहरां पांच से, नहीं इण रे घर मांय॥

२— लोका मिल समझावियो, पिरण नहीं माने तेह ।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन घर नेह ॥

३— बाई कर राखो घरे तो, झगड़ों देसु मेट ।
दीनी मोहरां पांच से, ले आयो घर ठेट ॥

४— सुखे रहे बाई ईहां, जपे जिनेश्वर जाप ।
गुमास्तो कोढ़ी हुवो, पूर्व पाप प्रताप ॥

ढाल ४ राग—लहरीयाली

१—लखी वणजारो एकदा, आयो इणपुर मांही हो ।
कामी मतवालो,
क्रियाणो विविध प्रकारनो, बेंचे खरीदे उच्छाही हो ॥
कामी मतवालो ॥टेर॥

२—लखी विणजारारे हुवे, रसोई चम्पक गेह हो ।
तिलोक सुन्दर नो रूप देखने, जाग्यो मनमथ तेह हो ॥का०॥

३—विणजारो पुछे सेठ ने, आतुम घर कुण छे नार हो ।
धर्म बेटी मांहरे, कह्यो पूर्व विस्तार हो ॥का०॥

४—आ नारी आपो मुझ भणी, बोल्यो वणजारो एम हो ।
ए उपकारण मांहरी, तुमने आंपु केम हो ॥का०॥

५—छेवट रहे नहीं ताहरे, क्यों खोवे दाम निकाम हो ।
द्रव्य दस सहस्र आपशुं, सुण लोभ व्याप्यां चित्त ताम हो ॥का०॥

६—चम्पक देवण तैयार हुवो, तरे सती पूछे कर जोड़ ।
थे मोल लेवो किण कारणें, तद नायक बोले घर कोड़ हो ॥का०॥

७—बीजो वांछा नहीं माहरे, देखी चतुराई तुझ हाथ हो ।
रसोई कारण मोलवुं, ए मुझ मनरी वात हो ॥का०॥

८—दाम देई ते ले चाल्यो, विणजारो घर नेह हो ।
कृतघनरा पाप सुं, चम्पक कोढ़ी हुवो तेह हो ॥का०॥

९—आयो दरियाव जहाज बेंठने, चाल्यो कितनीक दूर हो ।
विषय रसरो मोह्यो, आयो सतीरे हजूर हो ॥का०॥

१०—मन मेल तुं मुझ थकी, करो लील विलास हो।
जौवन गमावे क्यूं बावली, हुं थारो दासानुदासहो ।।का०।।

११—रूप लावण्य लक्षणें करी, तुं अप्सर रे उणिहार हो।
इन्द्र इन्द्राणी नी परे, भोगवां सुख श्रेयकार हो ।।का०।।

१२—मान कह्यो तूं माहरो, मत कर जेज लिगार हो।
छेह न दाखुं सर्वथा, करमो सुं इकतार हो ।।का०।।

दोहा

१— सुणी वचन सती वदे, धिग् थारो अवतार।
मन करने वंछु नहीं, जो होवे सुर अवतार।।

२— तो पिण केड़ मूके नहीं, सती गिणी नवकार।
खाय उछालो ने पड़ी, वारिधि वीच तिवार।।

३— मगर पीठ ऊपर पडी, ते जलधी तट जाय।
कुशले बाहिर नीसरी, नायक कुष्ठी थाय।।

ढाल ५ राग—आवो सुहागण पुरो साथीयो रे

१—रात पड़ी ने रवि आथम्योरे, बैठी वृक्ष तल आय रे।
ध्यान धरें नवकारनोरे, दृढ़कर मन वच काय रे।।
भाव धरी ने भवि साम्भलो रे।।टेर।।

२—वृक्ष चढ़तो पन्नग देखने रे, पक्षी शब्द कराय रे।
सती छिद्र कार्‌यो दया आण नेरे, नाग गयो विल मांय रे ।।भा०।।

३—समुद्र किनारे पक्षी जाय नेरे, जड़िया लाया तीण वार रे।
रूप परावर्तन एक करे रे, दूजी मेटे नेत्र विकार रे ।।भा०।।

४—कोढ़ादि तीजी उपसमेरे, ले खग पड़्या आण पायरे।
थे उपकार कियो घणो रे, कह्यो कठा लग जायरे ।।भा०।।

५—तुझ भक्ती वण आवे नहीं रे, मुझ तिर्यञ्चनी जातरे।
कृपा करीने ए लीजिये रे, झूठ म जाणो तिलमात रे ।।भा०।।

६—ए विध किम जाणो तुमे रे, थे तिर्यञ्च अज्ञान रे।
साधु दरसण थी साम्भर्यो रे, जातिस्मरण ज्ञान रे ।।भा०।।

२— लोका मिल समझावियो, पिण नहीं माने तेह।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन धर नेह ॥

३— वाई कर राखो घरे तो, झगड़ों देसुं मेट।
दीनी मोहरां पांच से, ले आयो घर ठेट ॥

४— सुखे रहे वाई ईहां, जपे जिनेश्वर जाप।
गुमास्तो कोढ़ी हुवो, पूर्व पाप प्रताप ॥

ढाल ४ राग—लहरीयानी

१—लखी वणजारो एकदा, आयो इणपुर मांही हो।
कामी मतवालो,
क्रियाणो विविध प्रकारनो, वेंचे खरीदे उच्छाही हो ॥
कामी मतवालो ॥टेर॥

२—लखी विणजारारे हुवे, रसोई चम्पक गेह हो।
तिलोक सुन्दर नो रूप देखने, जाग्यो मनमथ तेह हो ॥का०॥

३—विणजारो पुछे सेठ ने, आतुम घर कुण छे नार हो।
धर्म बेटी मांहरे, कह्यो पूर्व विस्तार हो ॥का०॥

४—आ नारी आपो मुझ भणी, बोल्यो वणजारो एम हो।
ए उपकारण मांहरी, तुमने आंपु केम हो ॥का०॥

५—छेवट रहे नहीं ताहरे, क्यों खोवे दाम निकाम हो।
द्रव्य दस सहस्र आपशुं, सुण लोभ व्याप्यो चित्त ताम हो ॥का०॥

६—चम्पक देवण तैयार हुवो, तरे सती पूछे कर जोड़।
थे मोल लेवो किण कारणं, तद नायक बोले धर कोड़ हो ॥का०॥

७—बीजी वांछा नहीं माहरे, देखी चतुराई तुझ हाथ हो।
रसोई कारण मोलवूं, ए मुझ मनरी वात हो ॥का०॥

८—दाम देई ते ले चाल्यो, विणजारो धर नेह हो।
कृतघनरा पाप सुं, चम्पक कोढ़ी हुवो तेह हो ॥का०॥

९—आयो दरियाव जहाज बैठने, चाल्यो कितनीक दूर हो।
विषय रसरो मोह्यो, आयो सतीरे हजूर हो ॥का०॥

१०—मन मेल तुं मुझ थकी, करो लील विलास हो।
जोवन गमावे क्यूं बावली, हुं थारो दासानुदासहो ।।का०।।

११—रूप लावण्य लक्षणे करी, तुं अप्सरा रे उणिहार हो।
इन्द्र इन्द्राणी नी परे, भोगवां सुख श्रेयकार हो ।।का०।।

१२—मान कह्यो तूं माहरो, मत कर जेज लिगार हो।
छेह न दाखुं सर्वथा, करमो सुं इकतार हो ।।का०।।

दोहा

१— सुणी वचन सती वदे, धिग् थारो अवतार।
मन करने वंछु नहीं, जो होवे सुर अवतार ।।

२— तो पिण केड़ मूके नहीं, सती गिणी नवकार।
खाय उछालो ने पड़ी, वारिधि वीच तिवार ।।

३— मगर पीठ ऊपर पडी, ते जलधी तट जाय।
कुशले वाहिर नीसरी, नायक कुष्ठी थाय ।।

ढाल ५ राग—आवो सुहागण पुरो साथीयो रे

१—रात पड़ी ने रवि आथम्योरे, बैठी वृक्ष तल आय रे।
ध्यान धरें नवकारनोरे, दृढ़कर मन वच काय रे ।।
भाव धरी ने भवि साम्भलो रे ।।टेर।।

२—वृक्ष चढ़तो पन्नग देखने रे, पक्षी शब्द कराय रे।
सती छिछ कार्‌यो दया आण नेरे, नाग गयो बिल मांय रे ।।भा०।।

३—समुद्र किनारे पक्षी जाय नेरे, जड़िया लाया तोण वार रे।
रूप परावर्तन एक करे रे, दूजी मेटे नेत्र विकार रे ।।भा०।।

४—कोढ़ादि तीजी उपसमेरे, ले खग पड्या आण पायरे।
थे उपकार कियो घणो रे, कह्यो कठा लग जायरे ।।भा०।।

५—तुझ भक्ती वण आवे नहीं रे, मुझ तिर्यञ्चनी जातरे।
कृपा करीने ए लीजिये रे, झूठ म जाणो तिलमात रे ।।भा०।।

६—ए विध किम जाणो तुमे रे, थे तिर्यञ्च अज्ञान रे।
साधु दरसण थी साम्भर्यो रे, जातिस्मरण ज्ञान रे ।।भा०।।

२— लोका मिल समझावियो, पिण नहीं माने तेह।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन धर नेह ॥

३— बाई कर राखो घरे तो, झगड़ों देसु मेट।
दीनी मोहरां पांच से, ले आयो घर ठेट ॥

४— सुखे रहे बाई ईहां, जपे जिनेश्वर जाप।
गुमास्तो कोढ़ी हुवो, पूर्व पाप प्रताप ॥

राग—लहरीयानी

ढाल ४

१—लखी वणजारो एकदा, आयो इणपुर मांही हो।
कामी मतवालो,
क्रियाणो विविध प्रकारनो, बेंचे खरीदे उच्छाही हो ॥
कामी मतवालो ॥टेर॥

२—लखी विणजारारे हुवे, रसोई चम्पक गेह हो।
तिलोक सुन्दर नो रूप देखने, जाग्यो मनमथ तेह हो ॥का०॥

३—विणजारो पुछे सेठ ने, आतुम घर कुण छे नार हो।
धर्म बेटी मांहरे, कह्यो पूर्व विस्तार हो ॥का०॥

४—आ नारी आपो मुझ भणी, बोल्यो वणजारो एम हो।
ए उपकारण मांहरी, तुमने आंपु केम हो ॥का०॥

५—छेवट रहे नहीं ताहरे, क्यों खोवे दाम निकाम हो।
द्रव्य दस सहस्र आपशु, सुण लोभ व्याप्यो चित्त ताम हो ॥का०॥

६—चम्पक देवण तैयार हुवो, तरे सती पूछे कर जोड़।
थे मोल लेवो किण कारणे, तद नायक बोले धर कोड़ हो ॥का०॥

७—बीजी वांछा नहीं माहरे, देखी चतुराई तुझ हाथ हो।
रसोई कारण मोलवुं, ए मुझ मनरी बात हो ॥का०॥

८—दाम देई ते ले चाल्यो, विणजारो धर नेह हो।
कृतघनरा पाप सुं, चम्पक कोढ़ी हुवो तेह हो ॥का०॥

९—आयो दरियाव जहाज बैठने, चाल्यो कितनीक दूर हो।
विषय रसरो मोह्यो, आयो सतीरे हजूर हो ॥का०॥

१०—मन मेल तुं मुझ थकी, करो लील विलास हो।
जीवन गमावे क्यूं बावली, हुं थारो दासानुदासहो ॥का०॥
११—रूप लावण्य लक्षणे करी, तुं अप्सर रे उणिहार हो।
इन्द्र इन्द्राणी नी परे, भोगवां सुख श्रेयकार हो ॥का०॥
१२—मान कह्यो तूं माहरो, मत कर जेज लिगार हो।
छेह न दाखुं सर्वथा, करमो सुं इकतार हो ॥का०॥

दोहा

१— सुणी वचन सती वदे, धिग् थारो अवतार।
मन करने वंछु नहीं, जो होवे सुर अवतार ॥
२— तो पिण केड़ मूके नहीं, सती गिणी नवकार।
खाय उछालो ने पड़ी, वारिधि बीच तिवार ॥
३— मगर पीठ ऊपर पडी, ते जलधी तट जाय।
कुशले वाहिर नीसरी, नायक कुष्ठी थाय ॥

ढाल ५ राग—आवो सुहागण पुरो साथीयो रे

१—रात पड़ी ने रवि आथम्योरे, बैठी वृक्ष तल आय रे।
ध्यान धरें नवकारनोरे, दृढ़कर मन वच काय रे॥
भाव धरी ने भवि साम्भलो रे ॥टेर॥
२—वृक्ष चढ़तो पन्नग देखने रे, पक्षी शब्द कराय रे।
सती छिछ कार्यो दया आण नेरे, नाग गयो बिल मांय रे ॥भा०॥
३—समुद्र किनारे पक्षी जाय नेरे, जड़िया लाया तीण वार रे।
रूप परावर्तन एक करे रे, दूजो मेटे नेत्र विकार रे ॥भा०॥
४—कोढ़ादि तीजी उपसमेरे, ले खग पड्या आण पायरे।
थे उपकार कियो घणो रे, कह्यो कठा लग जायरे ॥भा०॥
५—तुझ भक्ती वण आवे नहीं रे, मुझ तिर्यञ्चनी जातरे।
कृपा करीने ए लीजिये रे, झूठ म जाणो तिलमात रे ॥भा०॥
६—ए विध किम जाणो तुमे रे, थे तिर्यञ्च अज्ञान रे।
साधु दरसण थी साम्भर्यो रे, जातिस्मरण ज्ञान रे ॥भा०॥

२— लोका मिल समझावियो, पिण नहीं माने तेह ।
अवसर देख सती तदा, वदे वचन धर नेह ।।

३— बाई कर राखो घरे तो, झगड़ों देसु मेट ।
दीनी मोहरां पांच से, ले आयो घर ठेट ।।

४— सुखे रहे बाई ईहां, जपे जिनेश्वर जाप ।
गुमास्तो कोढ़ी हुवो, पूर्व पाप प्रताप ।।

राग—लहरीयानी

ढाल ४

१—लखी वणजारो एकदा, आयो इणपुर मांही हो ।
कामी मतवालो,
क्रियाणो विविध प्रकारनो, बेंचे खरीदे उच्छाही हो ।।
कामी मतवालो ।।टेर।।

२—लखी विणजारारे हुवे, रसोई चम्पक गेह हो ।
तिलोक सुन्दर नो रूप देखने, जाग्यो मनमथ तेह हो ।।का०।।

३—विणजारो पुछे सेठ ने, आतुम घर कुण छे नार हो ।
धर्म बेटी मांहरे, कह्यो पूर्व विस्तार हो ।।का०।।

४—आ नारी आपो मुझ भणी, बोल्यो वणजारो एम हो ।
ए उपकारण मांहरी, तुमने आंपु केम हो ।।का०।।

५—छेवट रहे नहीं ताहरे, क्यों खोवे दाम निकाम हो ।
द्रव्य दस सहस्र आपशुं, सुण लोभ व्याप्यो चित्त ताम हो ।।का०।।

६—चम्पक देवण तैयार हुवो, तरे सती पूछे कर जोड़ ।
थे मोल लेवो किण कारणे, तद नायक बोले धर कोड़ हो ।।का०।।

७—बीजी वांछा नहीं माहरे, देखी चतुराई तुझ हाथ हो ।
रसोई कारण मोलवुं, ए मुझ मनरी वात हो ।।का०।।

८—दाम देई ते ले चाल्यो, विणजारो धर नेह हो ।
कृतघनरा पाप सुं, चम्पक कोढ़ी हुओ तेह हो ।।का०।।

९—आयो दरियाव जहाज बैठने, चाल्यो कितनीक दूर हो ।
विषय रसरो मोह्यो, आयो सतीरे हजूर हो ।।का०।।

७—श्रावक धर्म विराधीयोरे, तिण सुं हुवा तिर्यञ्चरे।
ज्ञान प्रभावे गुण एहना रे, झूठ म भाणो रंच रे ॥भा०॥

८—वैनातट सुर पुर समोरं, इहां थी योजन पंचवीशरे।
उहां पधारो राणी अंध छेरे, प्रजापालक कोढ़ी अवनीस रे ॥भा०॥

९—चित्रसार पति तांहरो रे, तुमने मिल से तत्र रं।
मान वचन चाली सतीरे, करी चित्त ने एकत्र रे ॥भा०॥

१०—जड़ी प्रभावे रूप पुरुषनो रे, कर आई पुर मांय रे।
वृद्ध मालण घर उतरचो रे वैद्यनो रूप बणाय रे ॥भा०॥

दोहा

१— अनेक जन ताजा किया, सण महिमा राजान्।
वैद्य भणी वोलायवा, नृप मेले प्रधान ॥

२— वैद्य आय नृप ने नम्यो, नृप कहे कर मुझ काज।
परणा सुं गुण सुन्दरी, दुं वली आधो राज ॥

३— वैद्य मान नृप नो वचन, कर उपचार विशेप।
नृपराणी ताजा किया, हर्ष्या लोक अशेष।

ढाल ६　　राग—लसकरीयानी

१—वैद्य गुणे नृप रीझीया हो, राजन् जी, दीयो रहिण ने महेल।
हुवे नाटिक मुख आगले हो, रा०, करे मनमानी सहेल ॥भ०॥
भला ही पधार्या हो उपगारी जी ॥टेर॥

२—करो सगाई वाई तणी हो, राज० चोखो लगन जोवाय।
धवल मंगल गावे गोरड़ी हो, आणी उमंग मनमाय ॥भ०॥

३—केमरीयो वनडो वण्यो, रा० तुर्रा किलंगी रसाल।
गयजादा जानी घणा हो राजन जी, मानी वड़ा मछराल ॥भ०॥

४—हाथी घोड़ा ग ठाट सुं हो रा० तोरण वांद्यो आय।
विध सहुई साचवी हो, रा० वनो वनी दिया परणाय ॥भ०॥

५—जान्‍नो जम नीयो व्याह नो हो, रा० अर्धराज नृप देह।
रंग महल मुख सेजमे हो रा० आयो वनो घर नेह ॥भ०॥

६—हंस तणी गत हालती हो, सु० गुणसुन्दर सज सिणगार।
मदन बाण बरसावती हो० सु०, आई हेज धर नार ॥भ०॥
हरख धर आई हो सुन्दर जी ॥टेर॥

७—घुंघट पट अलगो करी हो, सु० निरखे भर भर नैण।
प्रेम हृदय उपजावती हो, सु० थे हंस कर बोलो सैण ॥भ०॥
नजर भर जो वो हो पियु प्यारा जी ॥टेर॥

८—भलाई पधार्‌या महेल में हो सु० करण केल उछरंग।
हंसण रमण सम्भोग नो हो, सु० म्हारे हिवड़ा नहीं छे ढंग ॥भ०॥
भलाही पधार्‌या हो सुन्दर जी ॥टेर॥

९—देव मनासां निज देशनां हो सु पीछे तुम सुं वात।
वचन सुणी निज कन्तना हो, सु० पीहर गई परभात ॥भ०॥

१०—खेले जमाई राय नो हो, सु० ले हय गय रथ परिवार।
पिण नजरा नहीं देखीया हो, सु० प्रीतम प्राण आधार ॥भ०॥

११—इम करता रहता थकां हो, सु० बीतो कितीयक काल।
हिवे दम्पती किण विध मिले हो सु० ते सुण जो वात रसाल ॥भ०॥

दोहा

१— लघु बंधव लिख भेजीयो, जेष्ठ बन्धु ने पत्र।
मरजादा पूरण भई, आवो वेगा अत्र ॥

२— सामाचार पाछा दिया, नहिं आवण रो ढंग।
रोग उपनो सोलमों, तिण सुं देह विरंग ॥

३— दोरा सोरा ही तुमे, आवो धरी उमंग।
राय जमाई वैद्य है, ताजो करसी अंग ॥

४— कोटवाल भाई बेहुं, चाल्या है तिणवार।
बीच में मिलीयो गुमासतो, चौथो चम्पक सार ॥

५— लखी विणजारो पांचमो, वो पिण मिलीयो आय।
वैनातट भाई जिहा, डेरो कीनो जाय ॥

सोरठा

१— चित्रसार सुण वैण, दुःख व्याप्यो मन में घणो।
वा नारी मुझ सैण, समुद्र पड़ी सो कब मिले॥

२— धसक उछालो खाय, पड़ियो धरणी ऊपरे।
शीतल पवन ढोलाय, कीयो सचेतन सेठने॥

ढाल १० राग—डूंगर आम्बा आम्बली रे॥

१—वैद्य कहे चित्रसार ने रे, इतनो मोह करो केम।
नारी नेह रे कारणे रे, पुरुष झूरे नहीं एम॥
चतुर नर नारी सोच निवार॥टेर॥

२—वो गई तो जाण दोरे, फेर परणो वर नार।
दाम होसी घर तांहरे रे, तो मिलसी नार हजार॥

३—वैद्य वयण सुणी करी रे, सेठ वदे इम वाण।
रूप लावण्य गुण आगली, उसी फेर मिले कद आण॥

४—वैद्य कहे सुणो सेठ जी रे, सोच न करो काय।
भाग्य लीखी जो तांहरे रे, तो मिलसी वोहीज आय॥

५—थे कहो जिम हुं करुं रे, इण तणां रे जतन।
सेठ कहे जावो आगडा रे, इम बोल्यो खांची मन॥

६—सिद्ध वैद्य करुणा आणने रे, जड़ीया खोली जी नीर।
उपचार कियो पाचुं तणो रे, हुवो कंचन वर्ण शरीर॥

७—राय जमाई कहे सेठने रे, तुमचो देखावो गेह।
"सबलदास" जी कहे सांभलो रे, आणी अधिक सनेह॥

दोहा

१— महल देखवा कारणे, राय जमाई तेह।
आयो मन उमंग धरी, सेठने सारे लेह॥

२— सदर कमाड़ जड़ी करी, रूप पूतल नो मेट।
नारी निज लागे तणी, उन महल में पेठ॥

ढाल ११ राग—मोती दोनी हमारो, राजिन्द मोती दोनी ॥

१—तत्क्षीण दीनो पट उघाड़ी, देखी तो अमरी सम नारी हो ।
ए स्युं सपनो मुझने आवे, के कोई इन्द्र जाल देखावे हो ॥
पिउडा बलीहारी ॥टेर॥

२—पेठो मरद ने निसरी नारी, वदन देखतां सहि मुझ प्यारी ।
स्युं विमासो कहे इम बाला, थें मुझ प्रीतम प्राण रसाला ॥

३—खानांजाद हु दासी तुम्हारी, विरह पीड़ मीटावो हमारी हो ।
धणी घणियानी दोनो मीलिया, जाणे पयमें पतासा मिलीया ॥

४—हिवड़ा भीतर हरख न मावे, ज्युं शशी सायर लहर चढावे हो ।
पुरुष अवस्था किण विध पाई, धुरा पेठ सुं सरव बताई ॥

५—वार घणी हुई राज पधारो, इम कहे हाकम ने हुजदारो ।
सा कहे सेठ तणी हुं जारी, रायपे जाय कहो समाचारी ॥

६—अचरज पाय आया रायपासे, बातनो विवरो सर्व प्रकाशे ।
राय कहे जावो उण पासे, म्हारी बेटीनो सी गति थासे ॥

७—बात सुणी बोली इम नारी, म्हां दोना रा एक भरतारो ।
रायपे जाय बात जणावी, सेठ बोलायकर थापो जमाई ॥

८—घणो कुर्व दीधो वधारी, शील री बात हुई प्रसिद्ध ।
तिलोकसुन्दरी शीलवती बाई, कहे देव आकाश रे माई ॥

९—राय सूता सज सिणगारो, आई पीउ तणे दरबारो ।
बड़ी कहे आगे मालक हुँ ही, अबे आधी मालक तुंही ॥

१०—सुख विलसे प्रीतम बेहुं साथे, रंगरली में वासर जावे हो ।
ईर्ष्या खेदो करे नहीं कोई, सम्पत दोनांरे माहों माही ॥

दोहा

१— केई वर्ष ईहां रह्या, अब मांगे छे सीख ।
देश अमारे जावसां इहां न लागे ठीक ॥

ढाल १२ राग—इम धनो धण ने परचावे।

१—राजन्द वयण सुणी मनचिते, आखिर परदेसी जासेरे लो ॥
बाई ने सीख देवे भली परे, जावत सासरे वासेरे लो ॥
धन धन जे निज कारज सारे ॥टेर॥

२—पतिभक्ता गुण ग्राहक होजे, सीलवंती कुल उजवाले रे लो।
विनयवंत सवसु नमी ने चाले, कुकर्म पाप ने टाले रे लो ॥

३—दान पुण्ये कर रहीजे सूरी, बुरी करे मत किणरी रे लो।
सासरे पीहर भलो दिखावे, लोकसोभा करे जिणरी रे लो ॥

४—मातपिता सिखामण दीनी पिण, चालतां हीयो भरीजे रे लो।
सिर पाव गहेणा वेष बहु विध, बाई जमाई ने दरीजे रे लो ॥

५—मुहुर्तलग्न शुभ देखी ने, तुरत प्रयाणो कीधो रे लो।
राजादिक पोंचाय ने घिरिया, जावतो लारे घणो दीघोरे लो ॥

६—कुसले खेमे निज घर आया, गुणपालरा गुण घणां जाण्यारे लो।
कुटुम्ब कबिलो सेण सगाने, वस्त्रादिके सन्मान्यारे लो ॥

७—सुख भोगवतां प्रितम साथे, दोनों ही बेटा जाया रे लो।
चित्तवल्लभ ने गुणसुन्दर, कंचन वरणी काया रे लो ॥

८—भणी गुणी ने पण्डित हुआ, जौवन वैसे आया रे लो।
परणायावाने मोटे ठिकाने, माणे मनमानी माया रे लो ॥

९—धर्मघोष स्थविर पधार्या, परखदा वंदण आवे रे लो।
चित्रसार सुन्दर बेहुं आगे, मुनिवर धर्म सुणावे रे लो ॥

१०—संसार असार सुपना जिम, विणसतां वार न लागे रे लो।
आयु अस्थिर जल ओस बिन्दु सम, नदी जलदाई जौवन जावे रे लो ॥

११—दस दृष्टान्ते नरभव दुर्लभ, पामी ने मत हारो रे लो।
विषय कषाय तृष्णा लोभ, विकथा पाप निवारो रे लो ॥

१२—सुण उपदेश वैराग मन आणी, चित्रसार ने दोनु नारी रे लो।
घररो भार सूंपी निज सुतने, संजम लिधो सुखकारी रे लो ।

१३—पंच आचार महाव्रत पाले, दोषण सगलाई टाले रे लो।
तप जप संयम शुद्ध आराधे, आतम गुण उजवाले रे लो ॥

१४—कर अणसण उपना देवलोके, महर्धिक पदवी पाई रे लो ।
लेहि नरभव ने कर्म खपावी, मुगती जासी मुनीराई रे लो ॥

१५—शील उपदेश थी ए विस्तारो, 'पूज सबलदास' चित लायो रे लो ।
ओछो अधिको आयो हुवे तो, मिच्छामी दुक्कडं थायो रे लो ॥

१६—अष्टादस सो बाणवें वरसे, कियो फलोधी चौमासो रे लो ।
शील री महिमा सुणे सुणावे, जिण घर लोल विलासो रे लो ॥

२७ मरुदेवी

दोहा

१— पूर मनोरथ सरस्वती, वली प्रणमुं अरिहंत देव ।
सानीध करजो मात जी, सेव करूं नित्यमेव ।।

२— गुण गाउं गिरवा तणा, सांभल जो धर प्रेम ।
शीलवंत की जगत में, महिमा फैले केम ।।

३— शील पाल्यो शुद्ध मने, चवदे पूर्वधर कोड़ ।
नाथ नम्यो है आयने, सुणजो आलस छोड़ ।।

ढाल १ राग—हमीरीया नी

१—पूरब महाविदेह में, चंपानगरी सुजाण हो ।।चतुर नर।।
अरिमर्दन तिहा राजवी, धूजे वैरी ना प्राण हो ।।चतुर नर।।
सुणजो जी चरित्र सुहावणो ।।टेर।।

२—जिण नगरी मांहे बसे, श्रीपति नामे सेठ हो ।।च०।।
दान मान करी दीपतो, भरे घणा ना पेट हो ।।

३—पुत्र नी चिंता अति घणी, पूर्व पूण्य विशेष हो । चतुर नर ।
देवी देव मनावता, बेटो जनम्यो एक हो ।।चतुर।।

४—व्हालो घणो मात तातने, बीजो ही वहु परिवार हो, च० नर ।
रूपे अतिरलियामणो, जाणे देवकुमार हो ।।चतुर०।।

५—गुरु पासे भणवा भणी, बेसाड्यो पोसाल हो, चतुर नर ।
रायकुंवर पिण पढ़े तिहा, बीजा ही वहु वाल हो ।।

६—प्रीत बंधी माहो मांहे घणी, राय कुंवर सु अधिक हो ।।चतुर०।।
भणी गुणी ने आया घरे, कलावंत प्रसिद्ध हो ।।चतुर०।।

दोहा

१— पांच से घोड़ा सारीखा, राजा दीना सूंप ।
कुवंर खेलावे खांत सुं चित्त धरी ने चूंप ।।

२— सेठ पुत्र पिण देखने, कहे पिता ने आय ।
हूं पिण घोड़ा खेलावसुं, माने दो तुरी मंगाय ।।

ढाल २

राग—कंथ तमाखू परहरो

१—सेठ कहे सुत सांभलो, आया वेवारी लोक ।।म्हारा लाल ।।
विणज करो बाजार मे, वे छे तुरियां जोग ।।म्हां।।
सेठ कहे सुत सांभलो ।।टेर।।

२—बीजी वस्तु मांगो जको, हाजर तुरत तैयार ।।म्हांरा ।।
तो पिण हठ पड़ियो घणो, मरजासुं इण बार ।।

३—हठ बैटा नो देखने, सेठ गयो राजा पास ।।म्हा०।।
आगल मेली भेटणो, अेम करे अरदास ।।

४—आदर दे राजा पूछियो आवणो हुवो केम ।।म्हा०।।
बीतक सहुं बतावीयो, राय बोल्यो धर प्रेम ।।

५—तुम पुत्र मुझ कंवर सु, अन्तर की सो होय ।।म्हारा०।।
घोड़ा ले जावो रावला, बेराजी मत करो कोय ।

६—वचन सुणी राजा तणो, सेठ बोल्यो इम वाय ।।म्हा०।।
मंगाऊं आप हुकम सुं, आज्ञा दीवी राय ।।

७—तुरत मेल्या आदमी, कंबोज देश के माय ।।म्हा०।।
पांच सो तुरंग मंगाविया, चाली वर्ण सुहाय ।

दोहा

१— सोना नी सागत सजी, सोना राही पलाण ।
सेठ निज सुत ने सूंपिया, कलावंत के काण ।।

२— राय कुवँर रमतो जठे, आयो सेठ कुंवार।
खेलावे बहु खांत सुं, दोउं मिल एक हजार ।।

३— वली प्रोहित सुत मंत्री कियो, ए पिण कँवर नी साथ।
इतरा में अचरज हुओ, सुणो आगली बात ।।

४— धाड़ायत जाय दौड़िया, वारू पुकार्या आण।
कन्या घोड़ा देखने, रोवा लागी जाण ।।

ढाल ३ राग— पंथीड़ा रे बात कहो धूर छेहथी

कोइक रे कमाने वेग छोड़ाव जोरे ।।टेर।।

१—कन्या रे, कन्या रूदन करे घणी रे।
धाड़ायत लिया जाय रे, साहसीक रे साहसीक कोई वीर हो रे,
माने दोनी छुड़ाय रे ।।

२—कन्या रे, कन्या रुदन ते सांभली रे, सेठ कुँवर तिणवार रे।
राय सुत रे, राय० ने ते इम कहे रे, चालो छुड़ावां जाय रे ।।

३—राय कुँवर रे, राय० चित्तचमकीयो रे, बोल्यो मस्तक धुण रे।
हुंतो रे, हु० जाव सुं शहर मेरे, आड़ा कजिया ले वे कुण रे ।।

४—सेठ सुतरे, से० साहसीक पण रे, सवार पांचसो ले लार रे।
कन्या रे, क० ने छोड़ावा चालीयो रे, लायो रायतणे दरबार रे ।।

५—मालज रे, मा० लायो लूटने रे, ते पिण दियो भूप ने सूंप रे।
राजा रे, रा० रीज्यो सेठ सुत उपरे रे, रीज भोज दीनि अनूप रे ।।

६—खबर रे, ख० देय बुलावियो रे, इण कन्या नो तात रे।
मालज रे, मा० ने कन्या सूंप दी रे कृपा करी नरनाथ रे ।।

७—कन्या रे, क० कहे निज तात ने रे, परणुं एहीज कुंवार रे।
अवर रे, अ० परणवा री आखड़ी रे, इण भव ए भरतार रे ।।

८—राजा रे, रा० सेठ भणी वोलायने रे, थाप्यो ब्याह मण्डाण रे।
उत्सव रे, उ० कर परणावीयो रे, ब्याह तणी विध जाण रे ।।

दोहा

१— वेटी भणी परणाय ने, सेठ गयो निज ठाम।
राजा जस वीच में लियो, पुण्य बड़ा अभिराम ।।

२— पुत्र बहुं ने देखने, श्रीपति सेठ सुजाण।
एक दिन निज कंवरसु, बोल्या इण परमाण॥

ढाल ४ राग—नित्य करू साधु जी ने वन्दना

१—सेठ कहे पुत्र सांभलो, म्हारो, वचन मांनो नेट रे।
प्रोहित मत राखो घर वारण, घोड़ा कर दो राय ने भेंट रे॥
सेठ कहे पुत्र सांभलो ॥टेर॥

२—आपा वेवारी वाणिया, विणज करा बाजार में जाई रे।
आखिर में तो एक दिन जावसां, सीख मानो तो गुण थाई रे॥

३—तात वचन शिरधार ने, तुरंग किया राय नी भेटो रे।
विणज करे हीरां तणो, पिण प्रोहित सु प्रीत नेटो रे॥

४—केईक दिना के आंतरे, मात पिता किनो कालो रे।
घर नो धुरन्धर ते थयो, ससार नी काची जालो रे॥

दोहा

१— सुख विलसे संसार ना, भामिनी ने भरतार।
न जाणे उग्यो आथम्यो, पुण्य जोगे संसार॥

२— एक दिवस प्रदेश थी, आया है समाचार।
लेखा ने सुलझावणो, वेगा आवो इणवार॥

३— प्रोहित भणी घर सूंपने, सेठ गयो परदेश।
प्रोहित पापी आतमा, नहीं धर्म नी रेश॥

ढाल ५ राग—चन्द्रा प्रभु मुझ मन भावे रे

१—मुझ मित्र की नार केहवी रे, आयो घर मझार।
रूप माहे रलीयावणी रे, देखी जाग्यो विकार॥
जो वो कर्मगत भारी रे, न्याय डुबोवे व्यभिचारी रे ॥टेर॥

२—पद्मोतार ने मणीरथ राजा, रावण लंका रो नाथ।
पर नारी ना नेह सूं रे, गमाई घर की आत॥

३ नया कपड़ा पहर ने रे, मुख आगल उभो मेल।
मुझ मित्र कह्यो तुझ भणी रे, म्हारो वचन न दीजो ठेल॥

४—प्रीत करो मुझ थी तुम्हेरे, भोगवो सुख संसार।
जीवन लावो लीजिये रे, बार बार नहीं अवतार॥
५—वचन सुणी ए विप्रना रे, बोली वचन करूर।
पर नारी वंछे पापीयो रे, फिट थारी पगड़ी में धूल॥
६—सती घणो निभ्रंच्छीयो रे, मूल थी पाड़ी माम।
निकल पापी यहां थकी रे, मत आइजे इण ठाम॥
७—मुँह लेई आयो घरे रे, गयो सेठ ने पास।
तुझ नारी व्यभिचारणी रे, सेठ सुणी हुओ उदास॥

दोहा

१— सेठ इण पर चिंतवे, आ बात मानी किम जाय।
वो नारी सीता सारखी, किम लागी पाणी में लाय॥
२— आट दोट मन में थयो, दुकान उभी छोड़।
नारी की परीक्षा भणी, आयो निज घर दौड़॥
३— रात पड़ी रवि आथम्यो, सूतो महल मझार।
नारी आय उभी तींहा, सज सोले शृंगार॥
४— मूल नहीं बतलावणो, नहीं आदर सम्मान।
नारी तुरत पाछी वली, आयी आपणे स्थान॥
५— मन शंका में निकल्या, पूरब चवदे क्रोड़।
महासती ए मोटको, सणजो आलस छोड़॥

प्रक्षेप ढाल राग—ख्याल की

सती मन आलोचे आतम सुधारे जिनवर ज्ञान से॥टेर॥

१—पक्खी पर्व आराधती सरे, आलोचन विधी मांय।
आंरती आया सोचती सरे, कैसा कलंक शिर आयरे॥सती०॥
२—और कारण दिखे नहीं सरे, ब्राह्मण चुगली खाय।
पति वियोग पड़ावियो, सरे केसो कियो अन्याय रे। सती०॥
३—प्रभु तुम्हारी साख से सरे, दोष नहीं मुझ मांय।
कलंक सहित संजम लेणो, के मरण भलो नहीं थाय रे॥सती०॥

२— पुत्र बहुं ने देखने, श्रीपति सेठ सुजाण।
एक दिन निज कंवरसु, बोल्या इण परवाण।।

ढाल ४ राग—नित्य करूं साधु जी ने वन्दना

१—सेठ कहे पुत्र सांभलो, म्हारो, वचन मांनो नेट रे।
प्रोहित मत राखो घर बारणे, घोड़ा कर दो राय ने भेंट रे।।
सेठ कहे पुत्र सांभलो ।।टेर।।

२—आपा वेवारी वाणिया, विणज करा बाजार में जाई रे।
आखिर में तो एक दिन जावसां, सीख मानो तो गुण थाई रे।।

३—तात वचन शिरधार ने, तुरंग किया राय नी भेटो रे।
विणज करे हीरां तणो, पिण प्रोहित सुं प्रीत नेटो रे।।

४—केईक दिना के आंतरे, मात पिता किनो कालो रे।
घर नो धुरन्धर ते थयो, ससार नी काची जालो रे।।

दोहा

१— सुख विलसे संसार ना, भामिनी ने भरतार।
न जाणे उग्यो आथम्यो, पुण्य जोगे संसार।।

२— एक दिवस प्रदेश थी, आया है समाचार।
लेखा ने सुलझावणो, वेगा आवो इणबार।।

३— प्रोहित भणी घर सूंपने, सेठ गयो परदेश।
प्रोहित पापी आतमा, नहीं धर्म नी रेश।।

ढाल ५ राग—चन्द्रा प्रभु मुझ मन भावे रे

१—मुझ मित्र की नार केहवी रे, आयो घर मझार।
रूप माहे रलीयावणी रे, देखी जाग्यो विकार।।
जो वो कर्मगत भारी रे, न्याय डुबोवे व्यभिचारी रे ।।टेर।।

२—पद्मोत्तर ने मणीरथ राजा, रावण लंका रो नाथ।
पर नारी ना नेह सूं रे, गमाई घर की आत।।

३ नया कपड़ा पहर ने रे, मुख आगल उभो मेल।
मुझ मित्र कह्यो तुझ भणी रे, म्हारो वचन न दीजो ठेल।।

४—प्रीत करो मुझ थी तुम्हेरे, भोगवो सुख संसार।
जौवन लावो लीजिये रे, बार बार नहीं अवतार॥

५—बचन सुणी ए विप्रना रे, बोली वचन करूर।
पर नारी वंछे पापीयो रे, फिट थारी पगड़ी में धूल॥

६—सती घणो निभ्रंच्छीयो रे, मूल थी पाड़ी माम।
निकल पापी यहां थकी रे, मत आइजे इण ठाम॥

७—मुंह लेई आयो घरे रे, गयो सेठ ने पास।
तुझ नारी व्यभिचारणी रे, सेठ सुणी हुओ उदास॥

दोहा

१— सेठ इण पर चिंतवे, आ बात मानी किम जाय।
वो नारी सीता सारखी, किम लागी पाणी में लाय॥

२— आट दोट मन में थयो, दुकान उभी छोड़।
नारी की परीक्षा भणी, आयो निज घर दौड़॥

३— रात पड़ी रवि आथम्यो, सूतो महल मझार।
नारी आय उभी तींहा, सज सोले शृंगार॥

४— मूल नहीं बतलावणो, नहीं आदर सम्मान।
नारी तुरत पाछी वली, आयी आपणे स्थान॥

५— मन शंका में निकल्या, पूरब चवदे क्रोड़।
महासती ए मोटकी, सणजो आलस छोड़॥

प्रक्षेप ढाल

राग—ख्याल की

सती मन आलोचे आतम सुधारे जिनवर ज्ञान से ॥टेर॥

१—पक्खी पर्व आराधती सरे, आलोचन विधी मांय।
आरती आया सोचती सरे, कैसा कलंक शिर आयरे ॥सती०॥

२—और कारण दिखे नहीं सरे, ब्राह्मण चुगली खाय।
पति वियोग पड़ावियो, सरे केसो कियो अन्याय रे। सती०॥

३—प्रभु तुम्हारी साख से सरे, दोप नहीं मुझ मांय।
कलंक सहित संजम लेणो, के मरण भलो नहीं थाय रे ॥सती०॥

४—इम पश्चाताप सती करे, पति खड़ा था बहार।
प्रच्छन्न पणे सहु सांभल्यो सरे, दिल पलटचो तिणवार रे ।।सती०।।
५—एकपक्षी सुण वारता, द्वेष घर्यो मैं मन्न।
अब निर्णय किया बिना खाणो नहीं मुझे अन्न ।।सती०।।
६—धाय माता ने पुछता, फिटकारी दियो सुनाय।
यो सोनो है सोलमो, थे कष्ट दियो बिन न्याय ।।सती०।।

ढाल ६ राग—आज शहर में योगीसर आया।

१—धाय भणी सेठ पुछी बातो, प्रोहितनी ए बाणी रे लोल।
ए सुलक्षणी सती उत्तम, ये महासती गुणखाणी रे लोल ।।
धन्य धन्य जे नर शील आराधे ।।टेर।।
२—प्रोहित मित्र कुपात्र निवारो, जात ऊँची गुण काला रे लोल।
उण दुःख दीयो सतो भणी, पिण ये रतनांरी माला रे लोल ।।
३—धाय बात सांची कही थे, तूं छे बड़ी प्रवीणी रे लोल।
मैं कह्यो न मान्यो तात केरो, यो कणमांगण मतिहीणोरे लोल ।।
४—नेह जोड्यो पाछो निज नारी सुं, क्षीर ने साकर जेमो रे लोल।
नारी जाणी शील सुहाणी, विप्र ने जाण्यो तेमो रे लोल ।।
५—घणा वर्ष लग सुख भोगवियो, भद्रकभावे थायो रे लोल।
दोनों ही काल करी ने उपन्या, जुगल पणा रे मायो रे लोल ।।
६—सेठ जीव नाभीराजा थया, सेठाणी मोरादेवी रे लोल।
कथाकार में मैं सांभलियो, जिणी पुत्र जनम्या जिनराई रे ।।
७—कोई कहे पेलरे भव सह्या, परीषा दिन रातो रे लोल।
ते तो जाणे केवलज्ञानी, कथाकार की बातो रे लोल ।।
८—पूर्वभव सम्बन्ध कह्यो मैं, ओछो अधिको होई रे लोल।
पूज्य "सबलदास" इम कहे, माने दोष मत लाग जो कोई रे ।।

दोहा
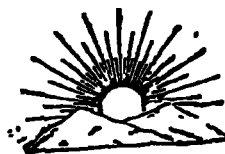
१— अवसर जे नर अटकले, ते तो चतुर सुजान।
दीपावे जिनधर्म ने, तेनो भण्यो प्रमाण ॥

२— किण विध धर्म दीपावियो, सांभल जो नर नार।
सेणा होवे साधु जी, लब्धितणां भण्डार ॥

ढाल १ राग—नणदल ए नणदल

१– पंच महाव्रत पालतां, विचरता नगर पुर ग्राम हो मुनिवर।
कठिन क्रिया जिणां आदरी, साधु सुदर्शन नाम हो मुनिवर ॥
साधु सदा ही सुहामणा ॥टेर॥

२—साधु सदा ही सुहामणा, पूरण ज्यांसु' प्रेम हो, मुनिवर।
हिवड़ा भीतर बस रह्या, हीरा जड़िया हेम हो, मुनिवर ॥

३—तप कर काया सोखवी, वैराग में भरपूर हो, मुनिवर।
आचारमें वली उजला, सत्यवादी ने शूर हो, मुनिवर ॥

४—जाणे सोनो ने पत्थरसारखो, त्रिया-तृणसमान हो मुनिवर।
शत्रु ने मित्र सारखा गिणे, निश्चल ज्यांरो ध्यान हो, मुनि० ॥

५—जीवण री वांछा नहीं, मरण तणो भय नाय हो, मुनिवर।
पूठ दे संसार ने निसरया,जेनी शास्त्र सूत्र रे माय हो मुनि० ॥

६—उग्र विहारी एकला, सहता शीत ने ताप हो, मुनिवर।
पूरण पराक्रमधारी है, परिहरया सहु पाप हो, मुनिवर ॥

७—लब्धि इणां ने ऊपनी, करता उग्र विहार हो, मुनिवर।
रिख रायचन्द कहे सांभलो, आगे बहु अधिकार हो, मुनिवर ॥

ढाल २ राग—झकड़ी

१— मगधदेशमें रे, राजगृही नगरी भली,
सुन्दर सोहेरे, सूत्र सिद्धान्त मांहे चली,
रिद्धि वृद्धि वरे, धन धान्य करी ने भरी,
महल मंदिर रे, जाणे इन्द्र पूरी जणी।

देवता नी पुरी सुं अधिकी, देखता सुहावणी।
वर्णन उववाई मांहे दाख्यो, लोक सुखी ने धनधणी ॥

२— राजा श्रेणिक रे, पटराणी चेलणा,
पियु साथे रे, नित करती खेलणा,
दिल दाता रे, न करे किणरी हेलणा,
सोले सिणगार रे, नित करती मेलणा;

नित नित नवलावेस पहरे, भोगवे सुख भरतार ना ॥
बाल पणा में समकित लोनी, पुण्य प्रगट्या इण नार ना ॥

३— चेलणा पुत्री रे, चेड़ाराय नृप तणी।
कर्मा जोगे रे, मिथ्यात्वी घर री धणी ॥
आप आपता रे गुरां रा वखाण कर रही।
नहीं हारे रे बेहु बराबर सही ॥

हारे नहीं ए बेहु बराबर, यों झोड़ न जावे दिन रात री।
राजा श्रेणिक चित्त में चितवे, यतन करूं इण बात री ॥

४— राजा श्रेणिक रे मन में विचार इसी करे।
बिन बुद्धज रे, काय तो कोई नहीं सरे ॥
तिण कारण रे एक उपाय इसो करूं।
स्त्री साधु रे, एकण जायगा में जरूं ॥

जड़ु एकण जायगा में, साधु आवे इहां खरी।
"ऋषि रायचंद" कहे बीच में, ऊंघ वाता मतो करी ॥

दोहा

१— विचरे जनपदो देश में, करता उग्र विहार।
सुदर्शन नामे साधुजी, समोसर्या तिणवार।

२— महला में बैठो थकी, पियु ने सुणावा काज।
राणी चेलणा गुण करे, धन्य दिहाड़ो आज ।।

ढाल ३ राग—मारी सजनी आज म्हांरा गुरांसा पधारसी जी ।

१— दृढ़ संजम तप धारी ।
ये तो एकला उग्र विहारी, हो ज्ञानी ।।
गुरुजी आपरां, दर्शन की वलिहारी ।।टेर।।

२— वारी वार हजारी, हो ज्ञानी गुरु जी ।
आपरां दर्शन की वलिहारी ।।

३— स्वामी राजगृही में आया ।
राणी चेलणां ने घणा सुहाया हो० ।।

४— मैं आवतां दूर सुं दीठा ।
मने लाग्या अमृत सरीसा मीठा हो० ।।

५— आप अठे पग धरीया ।
म्हारा देखंता रा नैण ज ठरीया हो० ।।

६— मैं चरण तुम्हारा भेटियां ।
मांरा भव भव रा दुःख मेटियां हो० ।।

७— पूरव सुकृत कीना ।
म्हारा ज्ञानी गुरु जी दर्शन दीना हो० ।।

८— पूरव सुकृत अतिशायी ।
म्हारा ज्ञानी गुरुजी की आई वधाई हो० ।।

९— म्हारां मनरा मनोरथ फलिया ।
मुँह मंगिया पासा ढलियां हो० ।।

१०— आज म्हारा ज्ञानी गुरु जी मिलिया ।
म्हारा भव-भव रा पातक टलियां हो० ।।

११— थे शील संयमरा दाता ।
आप संयम में रंग राता हो० ।।

१२— थे शीलांगरथ पर बैठा ।
थे सारथी मुक्ति ना सेठा हो० ।।

१३— धन्य दिहाड़ो आज।
म्हारा सरीया वंछित काज हो० ॥
१४— शीलसमुद्र में पेठा ।
मुक्ति महल रै द्वार मांहे बैठा हो० ॥
१५— थे अभयदानरा दाता।
थे तो संजम में रंगराता हो० ॥
१६— ढाल भई या तीजी।
राणी चेलणा इण पर रीझी हों० ॥
१७— ऋषि रायचंदजी वाणी।
श्री मुख थी वीर वखाणी हो० ॥
१८— सेणी श्राविका चेलणा राणी।
रायचंद कहे वीर वखाणी हो० ॥

दोहा

१— श्रेणिक रे समकित नहीं, तेह समय की बात।
राणी गुण इतरा किया, नृप माने नहीं तिल मात ॥
२— बली रानी चेलना कहे, सांभल जो महाराज।
मोटा गुरु छे माहरां, तिरण-तारण की जहाज ॥
३— भोग तजी जोग आदर्यो, करणी ज्यांरी श्रेयकार।
त्यागी कनक ने कामिनी, ते विरला अणगार ॥
४— श्रेणिक कहे राणी सुणो, म्हारां गुरु री होड़।
थांरा गुरु कदी ना करे, क्यों करे तूं झोड़ ॥
५— चेलना चरचा करे घणी, पिण पाछो ने देवे पांव।
करणी इणने पाधरी, युं राजा खोटा खेले दांव ॥
६— हलकारा ने हुकम कियो; जो वो शहर में जाय।
राणीरा गुरु कठे उतरे, मोने वेगा कहि जो आय ॥
७— हलकारा शहर जोयने, कहे सांभल जो महाराय।
महाराणी रा गुरु उतर्या, यक्षदेवरा माय ॥

८— राजा श्रेणिक तिण समें, एक वेश्या दिधी वाड़ ।
चौकी बेसाड़ी चहुं दिशे, वली जड़ीया जोर किंवाड़ ।।

९— खिष्ट राणी ने करवा भणी, श्रेणिक कीधा काम ।
पिण बात रो पेच हिवे सुणो, किणरी जावे माम ।।

ढाल ४ राग—चौपाई की

१— वेश्या देखी देवरां रे मांय ।
तब विचार कियो मुनिराय ।।

२— जड़ दियो आड़ो मांहे घाली नार ।
तो अठे दिसे कोई अवर विचार ।।

३— यो कीधो कोई घेखी काम ।
इण बातां साधा रो होसी कुनाम ।।

४— दिन उगां लोक देखसी नार ।
सांच कूड रो कुण काढ़सी तार ।।

५— जिनमारग जो नीचो जाय ।
ऊंचो आणे रो करू उपाय ।।

६— लब्ध काढ़ किया विस्तार ।
दूर उभी देखे वेश्या नार ।।

७— ओघो मुंहपति वस्त्र पातरा ।
बाल दीवी सब माया मातरा ।।

८— जोगी बण बैठो अवधूत ।
गोटो करने लगाई भभूत ।।

९— लाम्बा लटांरी जटा असराल ।
रुद्राक्ष की गलेमें माल ।।

१०— सिंदुर टीको आंख्यां लाल ।
बैठो बिछाय चित्तारी खाल ।।

११— हाथ में तुम्बी लोह रो कड़ो ।
बैठो राख रो ऊंचो कर दड़ो ।।

१२— हाथ में वड़ो हिरण रो सींग।
वण वैठो वावारो धींग।।

१३— वेश्या डरती वोली नार।
वावा म्होंने मत कर जो छार।।

१४— नेड़ी तूं मत आय अवार।
थर थर धूजी वेश्या नार।।

१५— टुक टुक वैश्या रही छे जोय।
रखे भस्म मारी पिण होय।।

१६— जो हूं निकलूं देवरां रे वार।
जाणो आई नवै संसार।।

१७— जुलक जुलक उभी जोवे दूर।
जोगी जोश चढ़्यो भर पूर।।

१८— श्रेणिक कह्यो राणी ने जाय।
थांरा गुरु में कला नहीं काय।।

१६— स्त्रीना वे सेवणहार।
तिण में नहीं कोई फरक लगार।।

२०— शंका वे तो देखो नचीत।
नहींतर राखो मुझ परतीत।।

२१— राणी कहे सुणजो महाराज।
हिवे किसो विन्याय करो काज।।

२२— वेश्या भेली राखसी सोय।
ते तो गुरु थारां ही होय।।

२३— थांरा गुरु जोगी होसी महाराय।
देखो चालो आपा दोनुं जाय।

२४— चवड़े देख लेसां महाराज।
जिण रां गुरु तिणरी जासी लाज।

२५— राय राणी आया देवरा रे वार।
वले घणा मिल्या नर नार।।

२६— देवरा रा खोल दिया किमाड़।
बैठा जोगी ने वेश्या नार॥

२७— सामो जिणसुं कुण मांडे सींग।
जाणे बैठो बाबा रो धींग॥

२८— राणी कहे सुणजो महाराज।
हिवे गुरु चेलारी किसी रही लाज॥

२९— हूं तो सांची तरह आपसुं खसी।
राणी राजा साथे हंसी॥

३०— हाक्यो बाक्यो राजा थयो।
ओ कठो पेठो, वो कठी गयो॥

३१— जिनमारग रो हुवो उद्योत।
दीप रही समकित की ज्योत॥

३२— अन्तसमय अवसाने आये।
आलोवणा लीधी मुनिराय॥

३३— अन्तसमय साधु अनशन करी।
गया मुनिवर स्वर्गे संचरी॥

३४— चेलणारी हुई चौथी ढाल।
समकित री ज्योति रसाल॥

३५— "ऋषि रायचंद" जोड़ी रीयां गाम।
श्रावक लोक वसे शुभ ठाम॥

३६— जेमलजीरे प्रसाद प्रमाण।
संवत अठारे तेतीसो जाण॥

३७— जेठसुदि बारस दिन जाण।
वीतराग रा वचन प्रमाण॥

२९ | धन्नाजी

दोहा

१— नवमा अंग तीजा वर्ग में, कह्या धन्ना रा भाव ।
सांभल जो चतुरां नरां, आलस अंग निवार ॥
२— वैरागी शील सेहरो, धन्य धन्ना अणगार ।
तेह तणां गुण वर्णवुं, पातिक दूर निवार ॥

ढाल १

१—नगरी काकंदी अति रलियावणी,
सहस्राम्रवन उद्यान, हो भविक जन ।
प्रजा लोक सुखीआ तिण नगरी में,
जित शत्रु राजान्, हो भविकजन ॥
भावधरी नें हो भवियण सांभलो ॥टेर॥

२— भद्रासार्थवाही वसे तिहां,
जाने गंज सके नहीं कोय हो ॥भ०॥
तस घर धन्ना ओ कुंवर जन्मिया,
रूप देखी ने हर्षित होय हो ॥भ० भा०॥

३—जोवन वेशमें आया जाणी करी,
परणाई बत्तीसी नार हो ॥भ०॥
महल तेंतीस में लीला कर रह्या ।
एक नाटकना झणकार हो० ॥भ० भा०॥

४— षट् रस भोजन धीजा नितनई,
घणा दासी ने घणा दास हो ॥भ०॥

क्रोड़ वत्तीसां रो सोवन डायचो ।
विलसे लील विलास हो ॥भ० भा०॥

५—बिचरत वीर जिनेश्वर समोसर्या,
लक्षण सहस्र ने आठ हो ॥भ०॥
बारह परिषदा हो आई वन्दवा,
लग रह्या धर्म का ठाठ हो ॥भ० भा०॥

६— करी सवारी ओ राजा संचर्या,
धरी कुणिक जिम कोड़ हो ॥भ०॥
पंच अभिगम दूरा मूकने ।
वन्द्या है बेकर जोड़ हो ॥भ० भा०॥

७—पहली ढाल सम्पूर्ण थाए थई,
समवसर्या जिनराज हो ॥भ०॥
नगरी में हगेमगे लागी अति घणी,
लोग टोले टोले जाय हो ॥भ० भा०॥

ढाल २

राग—आछे लाल री

१— धन्ना नाम कुंवार, बैठा है गोख मझार ।
सुन जो चित्तलाय, लोकां ने जातां देखियां जी ॥

२— कहे सेवक ने एम, लोक जावे छे केम ॥सुन०॥
किए कारण मेलो मण्डियो जी ॥

३— सेवक कहे कर जोड़, समवसर्या जिनराज ॥सुन०॥
लोक जावे छे वन्दवा जी ॥

४— सुण्या सेवक ना वैण, वाला लागा अमीय समान ॥सुन०॥
वन्दन ने मन हुलसियो जी ॥

५— सकल सजा शृंगार, बहु लोकां रे परिवार ॥सुन०॥
जमाली जिम चालिया जी ॥

६— आया तिहाँ जिनराज, पंच अभिगम सांच ॥सुन०॥
सन्मुख बैठा श्री वीर ने जी ॥

७— भगवन्त दे उपदेश, काल घटे छे हमेश ।।सुन०।।
जन्म मरण रा रोग लग रह्या जी ।।

८— जैसी उन्हाला की सांझ, तैसी संसार्यां की मौज ।।सुन०।।
सड़न पड़न अणी देह नो जी ।।

९— मेलो मण्डियो अचराल अणचिन्त्यो उठ जाय ।।सुन०।।
जीव बटाऊं पाहुणो जी ।।

१०— अस्थिर कुटुम्ब धन माल, कांई फंसीयो रे माया जाल ।।सुन०।।
भ्रमर कमल तणी परे जी ।।

११— सुण्या भगवन्त ना वैण, लागा वैरागी ने बाण ।।सुन०।।
धन्नाजी कहे कर जोड़ ने जी ।।

१२— हुं लेसु संयम भार, छोड़ बत्तीसी ही नार ।।सुन० ।
आंऊं में आज्ञा लेय ने जी ।।

१३— भाखे दीनदयाल, जिमे थांने सुख थाय ।।सुन०।।
ढ़ील न कीजे देवानुप्रिया जी ।।

१४— वंदया है दीनदयाल, या थई दूसरी ढाल ।।सुन०।।
घर आई माता जी ने किम कहे जी ।।

ढाल ३ राग—राणकपुरो रलियामणो रे लाल

कृपा करी ने दीजे आगन्या रे लाल ।।टेर।।

१— घर आई माता जी ने इम कहे रे लाल ।
हुं लेसु संयम भार ।।सुनो मात जी ।।
आज्ञा दीजे मुझ भणी रे लाल ।
करणी न ढील लिगार ।।सुनो मात जी ।।कृपा०।।

२— एह वचन श्रवणे सुणी रे लाल ।
माता जी गई मुर्च्छाय, ।।सुत सांभलो रे ।।
सावचेत थई माता इम कहे रे लाल ।
आज्ञा दीवो किम जाय ।।सुत०।।
चारित्र छे बच्चा दोहिलो रे लाल ।।टेर।।

३— पांचो ही महाव्रत पालना रे लाल।
करणो माथा रो लोच ॥सुत०॥
बाईस परिषह जीतना रे लाल।
मरण रो नहीं करणो सोच ॥सुत०॥

४— खड्गधारा नी परे चालणो रे लाल।
करणो उग्रविहार ॥सुत०॥
मोह माया दोनों जीतनां रे लाल।
शील पालणो नववाड़ ॥सुत०॥

५— सावद्य औषध करणो नहीं रे लाल।
दुष्कर मारग घोर ॥सुत०॥
हरगीज थांसु पले नहीं रे लाल।
मत करो झुठी झकझोर ॥सुत०॥

६— एकाएकज तूं मांहरे रे लाल।
आज्ञा देऊं कणी रीत ॥सुत०॥
ये कंचन, ये कामण्या रे लाल।
सुखविलसो घर प्रीत ॥सुत०॥

७— कुंवर कहे माता सुणो रे लाल।
हुं गयो नर्क निगोद ॥सुणो मात०॥
दुःख अनन्ता मैं सह्या रे लाल।
कह्यो कठा लग जाय ॥सुणो० कृपा०॥

८— वन मांहे एक मृगलो रे लाल।
कुण करे बींरी सार ॥सुणो०॥
मृगलां नीं परे विचरसूं रे लाल।
एकड़लो अणगार ॥सुणो० कृपा०॥

९— हरगिज तोरेसु नहीं रे लाल।
छोड़ सु मायाजाल ॥सुणो०॥
माता जी वरजी ने थाकिया रे लाल।
या थई तीसरी ढाल ॥सुणो० कृपा०॥

ढाल ४

राग—बिछियानी राग

१—रे लाला महाबल कुंवर तणी परे ।
माताजी ने उत्तर दीध रे लाला ।।
कृष्ण थावरचानी परे ।
दीक्षा दीनी मोटे मण्डाण रे लाला ।।
वरागी वैराग में झिल रह्या ।।टेर।।

२— रे लाला माला मोती सहु खोलिया ।
माता झेल्या खोला रे मांय रे,लाला ।।
ठलक ठलक आंसु पड़े ।
जाणे टूटो मोत्यांरो हार रे ।।ला०।।

३—रे लाला भगवंत ने दीनी भलावणी ।
पुत्र नैं दीधी सीख रे लाला ।।
किरिया में कसर राखो मती ।
गुरूरी आज्ञा में रहिजो ठीक रे ।।ला०।।

४— रे लाला माता वंदि निजस्थानक गई ।
धन्ना जी हुआ अणगार रे लाला ।।
समिति गुप्ति री खप करे ।
किरियारो कोड अपार रे ।।ला०।।

५—रे मुनि चरण वंद्या जिनराज रा ।
दीक्षा लीनी तीणहिज दिन रे लाला ।।
बेले बेले करसुं पारणो ।
जावज्जीवन पाड़ु भिन्नरे ।।

६— रे लाला आमिल कर सुं पारणे ।
आहार लेसुं खरड़े हाथ रे लाला ।।
कोई नाख्यो थको वंछे नहीं ।
एहवो लेसुं पारणे आहार रे ।।

७—रे मुनि जिम सुख होवे तिम करो ।
आज्ञा दीनी श्री जिनराज रे लाला ।।

धन्नाजी सुण राजी हुआ।
अब सारसुं आतम काज रे॥

८— रे लाला आयो वेला रो पारणो।
मुनि काकंदी नगरी में जाय रे लाला॥
गोतमस्वामी नी परें।
आय वीर ने बतायो आहार रे॥

९—रे लाला आहार मिलेतो पानी नहीं मिले।
पानी मिले तो नहीं मिले आहार रे॥
मुनि दीनपणो आण्यों नहीं।
क्रोधादिक जीत्या शुद्ध भाव रे॥

१०— रे लाला आज्ञा हुई जिनराज री।
जिम बिल मांहे पेसे भुजंग रे लाला॥
गृद्ध पणो आण्यो नहीं।
मुनि माण्ड्यो कर्मा सुं जंग रे॥

११- रे लाला विहार कियो जनपद देश में।
धन्नाजी वीर जी के संग रे लाला॥
सामायिक स्थविरा कने।
मुनि भण्या ग्यारह अंगरे॥

१२— रे मुनि तपस्या अति कठीन करी।
वली लीनी अतापना घोर रे लाला॥
शुद्ध ज्ञान में लयलीन हुआ।
दुष्कर करणी कीनी घोर रे॥

१३—रे मुनि री काया सूखी खंखर थई।
जाव खंधक नी परे जाण रे लाला॥
चौथी ढाल सम्पूर्ण थई।
वली आगे शरीर वखाण रे॥

ढाल ५ राग—शंकर बसे रे कैलाश में

श्री धन्ना मुनिश्वर तप तप्या॥टेर॥

१- सूखी तो छाल काष्ट नी पावडी।
एहवा पग दोई सूखारे॥

लोही ने मांस सूखी गयो।
दीसे दुर्बल लूखारे ॥श्री०॥
श्री धन्ना मुनिश्वर तप तप्या।

२— श्रुत मुगत्या सु लागी रे ॥
श्रुत लागी ज्यांरी मोखो ॥टेर॥
काया तो खंखर डरावणी।
सूखा सर्प नो खोखो रे ॥श्री०॥

३—मूंग उड़द नी कोमल फली।
वली सूखी तेहनी फलीया रे ॥
एहवो तो धन्ना मुनिराज नी।
सूखी पग नी अंगुलिया रे ॥श्री०॥

४— कागपक्षी ने मोरिया।
एवी सूखी ऋषि नी पिण्ड्यारे ॥
गोडा री गांठ वनास्पति।
पिण परिणाम चंगारे ॥श्री०॥

५—सांथल पिगु कुम्पल सारिखी।
कटि ऊंट अर्ध पगोरे ॥
पेट तो सूखो जाणे दीवड़्योडा।
पेठो ऊण्डो अथगो रे ॥

६— आरेसा उपरा ऊपरी मूकिया।
एवी पांसुल्या जाणो रे ॥
हाथ कड़ा आभरण जेवड़ां।
पांसली लारली पिछाणोरे ॥

७—छाती तो सुखी दोपट बीजणो।
बांया खेजड़ला नी फलियां रे ॥
हांथ रो पंजो वड़ नो पानडो।
कुलत्थ फली सूखी आंगुलिया रे ॥श्री०॥

८— गलो तो सूखो करवा जेवड़ो।
ढाढी आमकुली जानो रे ॥

सूखी जलोक होट जेवडा ।
जिह्वा सूखो साग पानो रे ॥श्री०॥

६—नाक बिजोरा री कांतड़ी ।
आंख्या छिद्र दोय वीणा रे ॥
अथवा तो तारा प्रभात रा ।
कांन कांदा छोत भीणा रे ॥श्री०॥

१०— उदर कान होट जिभिया ।
ज्यां में चाम-नसा जाणो रे ॥
सतरा बोला में घाल्या हाड़का ।
काया दीसे महाविकरालो रे ॥श्री०॥

११—ढ़ीलो पलाण तुरंगनो पावड़ो ।
एहवा लटके दोनों हाथों रे ॥
आयुष्य रे बल हाले चालता ।
धुजे कम्पणवायु माथो रे ॥श्री०॥

१२— बाजे निहाला तिलनी सांकली ।
एवा खड़ खड़ हाड़ो रे ॥
ढ़ांकी तो अगनि तणी परे ।
मांहे तेज घणो गाढ़ो रे ॥

१३—ढ़ाल थई एतो पांचमी ।
मुनि काया जोर कसी रे ॥
परवानी राखी कोई शरीर नी ।
सुरत मुगत्यां जाय वसी रे ॥

ढाल ६

नगरी राजगृही समोसर्या ॥ हो जिनंद ॥
करता उग्र विहार हो ॥टेर॥

१— राजा श्रेणिक आया वंदवा हो ॥ जि० ॥
साथे अभयकुंवार हो ॥

२— जिनवर दे उपदेशना ॥ हो श्रोताजन ॥
सकल जीवां हितकार हो ॥

३— श्रेणिक राय पूछा करे ॥ हो० ॥
मुनिवर चवदे हजार हो ॥
४— दुष्कर करणी निर्जरा ॥ हो० ॥
चवदा सहस्र में कुण थारे होय हो ॥
५— वीर जिनेश्वर इम कहे ॥ओ श्रेणिकराय॥
मुनिवर चवदे हजार हो ॥
६— दुष्कर करणी निर्जरा ॥ हो श्रे० ॥
मारे धन्ना नाम कुंवार हो ॥
७— श्रेणिक कहे कारण किसो ॥ हो जि० ॥
कह्यो लारलो विस्तार हो ॥
८— वीर वन्दी धन्ना जी कनैं ॥ हो श्रे० ॥
चरण वंद्या बारम्बार हो ॥
९— सुकृत मानव भव थां लियो ॥हो मोटा मुनि॥
धन थांरो अवतार हो ॥
१०— वीर जिनेश्वर गुण किया ॥हो मोटामुनि॥
दुष्कर करणी रा अवतार ॥
११— श्रेणिक वंदी निज स्थानक गया ॥ हो जि० ॥
मुनिवर रा गुण गावे हो ॥
१२— धन्ना जी रातरा चिंतवे ॥ हो जि० ॥
उपन्यो वैराग अपार हो ॥
१३— दान शील तप भावना ॥ हो जि० ॥
शिवपुरी मारग सार हो ॥
१४— छठी ढाल सम्पूर्ण थई ॥ हो जि० ॥
सुणो संथारारो सार हो ॥

ढाल ७   राग— हुं बलिहारी जाववा

१— धन्ना जी ऋषि मन चिंतवे,
तप करता टूंटी हम तणी काय के ।

वीर जिनन्द जी नें पूछ नें,
आज्ञा ले संथारो देसुं ठाय के ॥

२— प्रह उठी वन्दया श्री वीर नें,
श्री मुख आज्ञा दीवी फरमाय के ।
विमलगिरी स्थविरा संगे,
चाल्या सब संत सतियो ने खमाय के ॥

३— संथारो आयो एक मास को,
स्थविर पाछा आया वीरजी रे पास के ।
भण्डोपकरण सहुँ सूंपने,
गौतम स्वामी पुछै वेकर जोड़ के ॥

४— तप तप्या हो मुनिवर आकरो,
को स्वामी वासो कियो किण ठाम के ।
सागर तेतीसां रे आउखे
नो महीना में सर्वार्थसिद्ध पाय के ॥

५— महाविदेह क्षेत्र में सिझसी,
विस्तार नवमां अंग के माय के ।
सत ढ़ालियो सम्पूर्ण थयो,
"आशकरण" मुनिवर गुण गाय के ॥

६— संवत् अठारे इकसठें,
वैसाख विद पक्ष के माय के ।
विशलपुरी गुण गावियां,
रिख रायचंद जी के प्रसाद के ॥

७— वुद्धिजीसारू गुण वर्णव्या,
सूत्र रे अनुसारे जोय के ॥
ओछो जी अधिको जो कियो,
मिच्छामि दुक्कड़ं मुझने होय के ॥

दोहा

१— तेरमो परिषह वर्णवुं, वध है जिणरो नाम ।
मोक्षगामी मुनिवर सहे, ते सारे आतम काम ।।

२— मन दृढ़ राखी मुनिवरु, न आणे राग ने द्वेष ।
खन्दक नां शिष्य पांच से, सुणजो भाव विशेष ।।

ढाल १ राग—धन-धन शील सुहामणो

भवियण भाव सु सांभलो ।।टेर।।

१—भरतक्षेत्र मांहे भली, सावत्थी नगरी सोहे रे ।
स्वर्गपुरी की ओपमा, देखतां मन मोहे रे ।।भ०।।

२—भवियण भाव सुं सांभलो चित्त ठिकाणे कीजे रे ।
निद्रा नेड़ी मत आणजो, सुण सुण ने रस पीजे रे । भ०।।

३—सेठ सेनापति मन्त्रवी, वसे घणां व्यापारी रे ।
प्रदेशी आवे घणां, सुख विलसे नर नारी रे ।।भ०।।

४—राज्य करे रलीयामणो, राय जितशत्रु जाणी रे ।
राणी तेहने धारणी, रुपे जाणे इन्द्राणी रे ।।भ०।।

५—कुंवर खन्दक कला घणी, रूपे सुर अवतारी रे ।
सूत्र भण्यो भली परे, धर्म नी श्रद्धा धारी रे ।।भ०।।

६—जैन धर्म सांचो श्रद्धियो, नहीं माने मिथ्यातो जी ।
समकित में सेठों घणो, साधु सेवे दिन रातों रे ।।भ०।।

७—चर्चा में सेठों घणो, अन्यतीर्थि कोई आवे रे ।
खिष्ट तिणां ने करे तिहा, जीती कोई नहीं जावे रे ।।भ०।।

८—कुँवर में कमी कोई नहीं, सगली बातें सेणो रे।
उदार दिल नो छे घणी, अल्पभाषी मृदु वेणो रे ॥भ०॥

९—पुरन्दर यशा पुत्री भली, सुंदर छे मृगानेणी रे।
रूप जीवन आई भली, भणी गुणी ने हुई सेणी रे ॥भ०॥

१०—कन्या कुँवारी राय नी, थई परणावण जोगो रे।
गुण बुद्धि देखी पुत्री नी, सोचे कुंवर मिले जोगो रे ॥भ०॥

११—पहलो ढ़ाल मांहे किया, वहिन भाई ना वखाणो रे।
"रिख रायचंद" कहे सांभलो, आगे चतुर सुजाणो रे ॥भ०॥

ढाल २

राग—माधव इम बोले

१—कुम्भकारकटक नो धणी रे, कुंभकार राय जाण।
तेज प्रतापे रवि जिसो रे, कोई न लोपे आण रे॥
पृथ्वीपति राया ॥टेर॥

२—सेना चार प्रकार नी रे, भरिया भण्डार पूर।
कमी नहीं किण बात री रे, दुश्मन गया दूर रे ॥पृ०॥

३—रूपवंत ए राजवी रे, दीसे कुंवरी जोग।
पुत्री परणाई प्रेम सुं रे हर्षा सगला लोक र ॥पृ०॥

४—दत्त दायचो दीधो घणो रे, जितशत्रु महाराय।
बाई सासरे संचरी रे, तींहा रहे सुख माय रे ॥पृ०॥

५—सासरा माहें सुख घणो रे, कुँवरी ने चित्त चेन।
पिहर में व्हाली घणी रे, खन्दक कुँवर री बेन रे ॥पृ०॥

६—एकदा प्रोहत ने कह्यो रे, सावत्थी नगरी तूं जाय।
वस्तु अमोलक भेंटणों रे, मेल जो सुसरा ने पाय रे। पृ०॥

७—पालक तींहां थों आवीयो रे, सावत्थी नगरी रे मांय।
आशिर्वाद देई करी रे, उभा राजसभा रे मांय रे ॥पृ०॥

८—समाचार सगला कह्या रे, परवानो दी राय।
मिजमानी मेली आगले रे, आदर से लिराय रे ॥पृ०॥

६—राजा बैठो सिंहासने रे, कुंवर प्रजा तिहा जाण।
"रिख रायचंद" कहे सांभलो रे, दोनों राजा रा किया
बखाण रे ॥पृ०॥

दोहा

१— पालक प्रोहित तिण समे, राजसभा के मांय।
मिथ्या धर्म बखाणतां, नास्तिक मत थपाय ॥

२— शास्त्र नी जुगती करी, निषेध्यो स्कंदक कुमार।
पालक खीसाणो हुग्रो, भरी सभा मझार ॥

३— प्रोहित नो हांसो हुग्रो, घटयो सभा में तोल।
कुंवर मिथ्यात्व घटावियो, रह्यो सभा में बोल ॥

४— पालक खंदक ने ऊपरे, धर्यो घणेरो धेख।
द्वेष तणां फल पाडुवा, ग्रागे लीजो देख ॥

ढाल ३

राग—भरतेश्वर, तेरे तेला करे एम....

१—तिण काले ने तिण समे जी, करतां उग्रबिहार।
सावत्थी नगरी समोसर्या जी, साधां रे परिवार ॥जि० ज०॥

जिनेश्वर जगतारण जगदीश, मुनि सुव्रत विश्वावीस ॥टेर॥

२—प्रभू पधार्या बाग में जी, जोवतां जांरी वाट।
विधसुं वंदन ग्राविया जी, नर नार्यां रा ठाट ॥जि० ज०॥

३—कोणिकनी परे ग्रावियो जी, जीतशत्रु राजान्।
स्कंदक कुंवर तिहा ग्रावियो जी, सफल गिण्यो दिन जान ॥जि०ज०॥

४—दीधी धर्म नीं देशनां जी, भव जीवां नें काज।
जन्म मरण में बूड़ो मती जी, जो मिल्यो धर्म नो साज ॥जि० ज०॥

५—तन धन जोवन कारमो जी, ग्रस्थिर सहु संसार।
वाणी सुण वैरागीयो जी, स्कन्दकराय कुंवार ॥जि० ज०॥

६—कर जोड़ी कुंवर कहे जी, लेसुं संजम भार।
मात पिता ने पूछवें जी, छोडु वेग संसार ॥जि० ज०॥

७—यथासुखं जिनजी कह्यो जी, घर ग्रायो घर राग।
'रिख रायचंद' कहे तीजी ढ़ाल में जी, कंवर पाम्यो वैराग ॥जि० ज॥

ढाल ४ राग—राजवीया ने राजपियारो....

माता जी मोने अनुमति दीजे ।।टेर।।

१—तात मातरे पाए लागी, बोले वेकर जोड़ी जी ।
काया माया मैं जाणी काची, आयुष्य नी थिति थोड़ी जी ।।

२—माता जी मोने अनुमति दीजे, जेज हिवे नहीं कीजे जी ।
क्षिण क्षिण मांहे देही छीजे, इम जाणी आतम दमीजे जी ।।

३—वैण सुणी मुर्छाणी माता, बोले सुण मुझ जाया जी ।
तुं मुझ वालो बेटो एक, सुकोमल थारी काया जी ।।

४—जौवनवय में जोग न लीजे, सुख भोगवीजे सदाई रे ।
रमणी रिद्ध रो लावो लीजे, संपदा सखरी पाई जी ।।

५—कुँवर कहे काची सर्व माया, म्हारो मन नहीं लागे जी ।
मुनिसुव्रत स्वामी मुझ मिलीया, संजम लेसुं जां आगे जी ।।

६—उत्तर प्रत्युत्तर कीधा बहुलां, जमाली जिम जाणी जी ।
सहस्रपुरुष सिविका शृंगारी, कुँवर ने सुप्यों आणी जी ।।

७—मुनिसुव्रत स्वामी गुरु मिलीया, दीक्षा ली स्कंदक कुमारो जी ।
रायपुत्र पांचसे कुवरां सुं निकल्या स्कदक कुमारो जी ।।

८—पांचसे जणां सुं संजम लीधो, काटी जग नी फांसो जी ।
सूत्र सिद्धान्त भली तरे भणीया, आणी मन हुल्लासो जी ।।

९—अनुक्रमे पदवी पाया मोटी, आचारजनी जाणी जी ।
परिवार जांरे पांचसे चेला, सगलां उत्तम प्राणी जी ।।

१०—चौथी ढाले दीक्षा लीधी, पदवी मोटी पामी जी ।
रिख रायचंद कहे आगे सुणजो, किण गति रा होवे गामी जी ।।

ढाल ५ राग—जम्बुद्वीप मझार....

१— बीसमां जिनराय, मुनिसुव्रत भला ए ।
पग ज्यारां प्रणमी करी जी ।।

२— स्कंदक कहे छे एम, विहार हुं करुं ।
कुंभकारकटक भणी ए ।।

३— ..बहन वहनोई तिहां, ज्यां ने प्रतिबोधवा।
भगवंत विहार हुं करुं ए॥

४— भगवंत भाखे एम, जो तुम्हें जावसो।
तो थांने उपसर्ग होवसी ए॥

५— तुम विना आराधक होय, भगवंत भाखीयो।
होएा पदार्थ नहीं दाखीयो ए॥

६— करतां उग्रविहार, स्कंदक आचार्य ए।
पांचसे परिवारसुं ए॥

७— कुंभकटक है देश, नगर वसंत पुरे ए।
उद्याने आई उतर्या ए॥

८— पालक प्रोहित तेह, रीस ज पाछलो।
इएा मोंने खिष्ट कियो हुंतो ए॥

९— संजम ले आयो एथ, वैर वालु म्हारो।
परभव मैं करूं पोंचतो ए॥

१०— बाग,बाहर वालु रेत, आयो आधी रात रो।
प्रोहित छानो पापीयो ए॥

११— पांच से. खड्ग दिया, गाउ।
ढाला पांच से, गडाइ जुदी जुदी जायगा ए॥

१२— तीर कामठी तेह, वंदुक वर्च्छीया ए।
कुल्हाड़ी ने कटारीया ए॥

१३— संग्राम ना छे साज, धरतीमां धरदीयो ए।
प्रोहित कपट इसो कियो ए॥

१४— प्रोहित पापी जीव, कुवध केलवी।
साधां ने मारवा भएी ए॥

१५— महामिथ्यात्वी जीव, द्वेषी धर्मनो ए।
अभवीजीव ज जाएीये ए॥

१६— राते कपट वएाय प्रातः प्रोहतीयो ए।
राजाजी कने आवीयो ए॥

१७— प्रोहित माण्ड्यो जंजाल, पांचमी ढाल में ।
"रिख रायचंद" कहे सांभलो ए ।।

ढाल ६ राग—पुज्य पधारीया ए

कर्म छोड़े नहीं ए ।।टेर।।

१—स्कन्दक विराज्या बाग में ए, जावरणो वंदन काज के ।
सगपरण साला तरणो ए, वली धर्म नो राज के ।।कर्म।।

२—कर्म छोड़े नहीं केहने ए, कुण साधु ने कुरण चोर के ।
उदय हुग्रा पछे ए, किरण रो न चाले जोर के ।।कर्म।।

३—पालक कहे महाराय ने ए, किरण ने वंदन जावो ग्राज के ।
स्कदक ग्रायो बाग में ए, लेवरण ग्रापरो राज के ।।कर्म।।

४—कपटी भेष वरणावियो ए, पांचसे साथे सरदार के ।
जो वंदन जावसो ए, तो लेसी ग्रापने मार के ।।कर्म।।

५—म्हारो सांच मानो नहीं ए, ऐ लाया संग्रामनो साज के ।
छिपाया धूल में ए, ग्राप देखी जे महाराज के ।।कर्म०।।

६—इरण रे चारित्र नो मन को नहीं ए, पांचसे लायो उमराव के ।
नृप कहे सांची ग्रछे ए, तु ं कहे तिका बात के ।।कर्म०।।

७—पालक कहे महाराय ने ए, किसो राखो भ्रम के ।
उरा ग्रावो देखो इहां ए, इरण मोड़ा रा ए कर्म के ।।कर्म०।।

८—संग्राम नो साज देखाड़ीयो ए, कर कर ऊची धूड़ के ।
राजा मन में जारणीयो ए, पालक रे नहीं कूड़ के ।।कर्म।।

६—प्रोहित कहे महाराय ने ए, ग्रबे ग्रायो म्हारो सांच के ।
ज्यू ं नारणो दिखाय दे ए, हाथ में लेइने काच के ।।कर्म०।।

१०—राजा रो मन फेरीदियो ए, प्रोहित कपटी एम के ।
ग्रागे हुग्रा ते सांभलो ए, काचा कानारा नृप केम के ।।

११—राम रे मन पड़ गई ए, सीता केरी शंक के ।
धोबी रा वचन सु ं ए, देखो कर्मा रो वंक के ।।कर्म०।।

१२—शख राजा रे शंका पड़ी ए, पूछी नहीं कोई बात के।
कलावती राणी तणां ए, कपाया दोनु हाथ के ॥कर्म०॥

१३—चेलणा किण नें चितारीयो ए, कोप्यो श्रेणिक भूपाल के।
कह्यो अभय कुमार ने ए, दीजे अंतेउर प्रजाल के ॥कर्म०॥

१४—सती अंजना रे ऊपरे ए, रुठ्यो पवनकुमार के।
परणी ने पर हरी ए, वली दियो पग नो प्रहार के ॥कर्म०॥

१५—इणरीते आगे हुवा ए, राजा किणरा न होय के।
प्रोहित ने कहे राजवी ए, साधां सु दुश्मन होय के ॥कर्म०॥

१६—पालक ने राजा कहे ए, थें राख्यो म्हारो राज के।
तु साधर्मी हुओ ए, अब तोने भला यो काज के ॥कर्म०॥

१७—ओ मोने मारण आवीयो ए, ए मोड्यो पाखण्ड के।
पांच से भेला करी ए, दे मन आवे जो दण्ड के॥

१८—प्रोहित नां बहु चितीया ए, होणहार होवे जिम होय के।
साधां ने मोक्ष जावणो ए, कर्म न छोड़े कोय के॥

१९—प्रोहितपरिषहदिवे किण परे ए, थें सुण जो बाल गोपाल के।
"रिख रायचंद" इम कहे ए, पुरी थई छठी ढाल के॥

ढाल ७ राग—राजवीया ने राज पियारो

धन्य धन्य साधुजी सहे परिसो ॥टेर॥

१— पालक पापी अभवी प्राणी,
नगर बाहर मण्डाई घाणी रे।
पिलतां चेला अनुक्रमे,
गुरुगोड़े उभा रिखी आणी रे ॥ध०॥

२— धन्य धन्य साधू जी सहे परिसो,
कठिन कर्म ना तोड़ी जाला रे।
मुक्ति मंदिर में जाय विराज्या,
जन्म मरण फेरा टाला रे ॥ध०॥

३— प्रथम चेला ने घाणी में घाल्यो,
चारआहारना किया पच्चक्खाणी रे।

तिल भर द्वेष न धारियो मुनीश्वर,
केवल लेई पाया निर्वाणी रे ।।ध०।।

४— अनुक्रमे पिल्या पापी,
स्कन्दक आचार्य ना शिष्य रे ।
चार से ने अठाणुं चला,
किण नहीं आणी मन रीस रे ।।ध०।।

५— चार से ने अठाणु पिल्या,
रह्या आचारज देख रे ।
इहां लग तो गुरु रा मन में,
नहीं आयो कुछ वेख रे ।।ध०।।

६— बालक चेलो नानो रह्यो,
मोने देखतां मत पिलरे ।
नवदीक्षित है नानो चेलो,
कोमल इण रो डिल रे ।।ध०।।

७— मो प्रते जोयो किम जावे,
तुं पीलेला घाणी में घाल रे ।
इण ऊपर मारो मोह ज अधिको,
रह्या पालक ने पाल रे ।।ध०।।

८— पालक प्रोहत पाछो बोल्यो,
तुं मोने रह्यो पाल रे ।
पिण तोने दुःख देवण गाढो,
अभी पीलुं घाणी में घाल रे ।।ध०।।

९— जुलक जुलक चेला रे सामो,
रह्या आचारज जोई रे ।
तब चेले मन मांहे जाण्यो,
गुरु रे चिंता रो छेहन कोई रे ।।ध०।।

१०— चिंता देखी ने चेलो बोल्यो,
आप सोच करो छो केम रे ।
मुझ ऊपर मोह न राखो,
म्हारे मुगत जावण रो प्रेम रे ।।ध०।।

११— अकाममरण में कीधा अनन्ता,
गरज न सरी लिगारो रे।
अब के पण्डितमरण करी ने,
आप प्रसादे करुं खेवो पारो रे ।।घ०।।

१२— इतरे पालक आणी पकड्यो,
दीयो घाणी में घाल रे।
केवल लेइ मुगत सिधाया,
भव फेरा दिया टाल रे ।।घ०।।

१३— सातवीं ढाल में सिद्ध गति पाया,
स्कंदक आचार्य ना शीष्य रे।
"रिख रायचंद" कहे जाने नमाऊं,
कर जोड़ी ने मारा शीष रे ।।घ०।।

ढाल ८

बात सुणो स्कन्दक तणी ।।टेर।।

१— इण मूरख कह्यो नहीं मानीयो, ओ लागो म्हारी लारो रे।
पछे गुरु ने पीलीया, ये पालक पापी हत्यारो रे।।

२— बात सुणो स्कन्दक तणी, जाने आयो क्रोध अपारो रे।
विराधिक हुओ साध जी, जाय उपन्यो अग्निकुमारो रे।।

३— अवध करी ने जाणीयो, पालक कीधी घातो रे।
वैर पूरबलो सांभर्यो, हिवे छे इणरी बातो रे।।

४— साधु श्रावक ने टालने, वीच में लिया भूपालो रे।
पाप पालक ना प्रगट्या, भस्म किया सहु वालो रे।।

५— रैयत ने आल आयो नहीं, बेन पुरन्दर यशा टाली रे।
साधांने दुःख दियो ज्यांरे, पाप उदे हुआ तत्काली रे।।

६— अनर्थ ए मोटो हुओ, सांधा रो हुओ संहारो रे।
वार वार वाल्यो देश ने, नाम थयो दण्डाकारो रे।।

७— पुरन्दरयशा संजम लियो, तपस्या किनी घणी वाई रे।
स्वर्गे पहुँची साधवी, दीनी मुगति नी साई रे।।

८—चेला तो मुगति गया, गुरु हुआ अग्निकुमारो रे।
रीश कदे रूड़ी नहीं, क्षमा सुं सुख अपारो रे॥

९—स्कंदक आचारज जिम कियो, तिम साधु ने करणो नांई रे।
क्रोध तणा फल पाड़ुवा, क्षम्या सुं शिव सुख होई रे॥

१०—चेला परिवह जिम सही, कर दियो खेवो पारो रे।
तिम सेणो (सहनो) सर्व साधु ने, इम भाख्यो किरतारो रे॥

११—वध परिषह तेरमो, कह्यो उत्तराध्ययन मझारो रे।
दूजे अध्ययन में कथा कही, तिण रो ए अधिकारो रे॥

१२—पूज्य जयमलजीरा प्रसाद सुं "रिखरायचंद" जोड़ी ढालो रे।
चेत मास नागौर में, प्रीत साधा सुं पालो रे॥

३१ | मेतार्य मुनि

दोहा

१— श्री जिन समरुं भाव सुं सत्गुरु लागुं पाय ।
कथा अनुसारे गाव सुं मेतारज मुनीराय ॥

२— पूर्वभव दो मित्र थे, ब्राह्मण केरी जात ।
देशना सुणी ऋषि राज की, संजम लियो संघात ॥

३— संजम पाले भाव सुं तपस्या करे करूर ।
एक दिन मन में चितवे, पूर्व पाप अंकूर ॥

४— जैनधर्म स्वीकार छे, शंका नहीं लिगार ।
स्नान नहीं इण मार्ग में, एतो कही आचार ॥

५— कुलमद दुगुंछा भाव थी, नीच कुल बन्धन कीन ।
आलोयणा बिन सोच वी, सुर गति दोनुं लीन ॥

६— दोय मित्र तिहा देवता, वोले आपस मांय ।
जो पहले नरभव लहे,... घाली जे धर्म मांय ॥

७— संजम लेवाणो तिण भणी, करि कोई दाय उपाय ।
इम संकेत कीनो उभे, सुर भव आपस माय ॥

८— कुलमद जिन कीनो हुतो, ते पहले चव्यो तेथ ।
मातंग कुल में अवतर्यो, उदय कर्म के हेत ॥

९ - शेष पुण्य प्रतापथी, पायो सम्पति सार ।
किणविध ते सजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥

ढाल १ राग—सोवन सिंहासन रेवती

शेठ युगंधर दीपतो रे ।।टेर।।

१—शहर राजगृही दीप तुं, राज करे श्रेणिक राय रे।
शेठ युगंधर दीपतो, लक्ष्मीवंत कहाय रे।।शे०।।

२—श्रीमती नार सुलक्षणी, रूप गुणे अधिकाय रे।
अशुभ कर्म प्रभाव थी, मृत वंझणी ते थाय रे।।शे०।।

३—एकदा गर्भ रह्यो तेहने, चितवे ते मनमाय रे।
जोवे नहि वालक माहरे, धन रख बालक नांय रे।।शे०।।

४—जिम सन्तति रहे कुल विषे, तिम करूं कोई उपाय रे।
एटले आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे।।शे०।।

५—तिण ने एकांते लेई करी, दीयो घणो सन्मान रे।
सम्पति छे मुझ घर घणी, जीवे नहीं मुझ सन्तान रे।।शे०।।

६—जो तुझ होवे नन्दन कदा, गुप्त पणे घर मोय रे।
मेल जे तुं निशि समे, ठीक पड़े नही कोय रे।।शे०।।

७—द्रव्य देशुं तुझ सामटुं, होसी सुखी तुझ पूत रे।
प्रेम हुं राख शुं अतिघणो, रहसी मुझ घर तणो सूत रे।।शे०।।

८—राजी थई तिणे मानीयो, जनमीयो नन्द जिणवार रे।
प्रच्छन्न पणे तिणे मोकल्यो, ठीक नहि पुर नर नार रे।।शे।।

९—जनम महोत्सव सब ही कियो, दिवस थया जब बार रे।
दियो दशोट्टण जात में, बरतिया मंगलचार रे।।शे०।।

१०—नाम मेतारज थापी युं, प्रतिपालन करे पंच धाय रे।
पूर्व पुण्य प्रभाव थी, रूप गुणें अधिकाय रे।।शे०।।

११—कुलमद कियो तिण कर्म थी, महतर घर अवतार रें।
बीज शशी परें दिन दिने, वढे तस जश विस्तार रें।।शे०।।

१२—बहोतर कला में पण्डित थयो, आवियो योवन मांय रे।
'तिलोक रिख' कहे पहली ढाल में, पुण्य थी सुख सवाय रे।।शे०।।

दोहा

१— यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाई सात ।
पंच इन्द्रिय सुख भोगवे, आनन्द में दिन रात ॥
२— हवे तिण अवसर ने विषे, पूर्व कीनो करार ।
ते सुर आई उपदिशे, ले तु संजम भार ॥
३— तलालीन ते भोगवे, माने नहीं लगार ।
कीनी सगाई वली तिणों, ते सुणजो अधिकार ॥शे०॥

ढाल २

राग — इण सरवरीयारी पाल, उभी दोय रावली

१—आठमी कन्या तेह, परणवा उमाह्या ॥हा० प०॥
कीनी सजाई जान, जानी भेला थया ॥हा० जा०॥
केशरीया जामो पहर, मुकुट शिर पर धर्यों ॥हा० मु०॥
माथे बांध्यो मोड़, बींदनो वेश कह्यो ॥हा० बी०॥
२—शिरपर शिर पेज जड़ाव, तुर्रो झगमगे सही ॥मा० तु०॥
कलंगी तिण ऊपर जाण, अधिक भलकी रही ॥मा० अ०॥
झगमगे कुंडल कान, हार झगझग करे ॥मा० हार०॥
बाजुबन्द भुज दण्ड, पोंची कड़ाकर सिरे ॥मा० पो०॥
३—मुंदडी अंगुली के मांय, झलके हीरा तणी ॥मा० झ०॥
कमर कन्दोरो जड़ाव, सुवर्ण को खिखड़ी ॥मा० सु०॥
अत्तर अंग लगाय, तिलक भाले कर्यो ॥मा० ती०॥
कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहि उर्यो ॥मा० सु०॥
४—बेठो होय असवार, लाड़ो बण्यो सो सही ॥मा० ला०॥
गावे मंगल नार, अधिक उच्छा वही ॥मा० अ०॥
धप मप मादल नाद, के साद सुहामणा ॥मा० के०॥
धड़िन्दा धड़िन्दा ढ़ोल, तिड़ किड़ त्रांसा तणो ॥मा० ती०॥
५—चाल्या अधिक उत्साह, व्याह करवा भणी ॥मा० व्याव०॥
आया मध्य बजार, वणी शोभा घणी ॥मा० व०॥
तिण समे सो सुर कीध, वात कौतुक तणी ॥मा० वा०॥
मातंग मन दियो फेर, हेर अवसर अणी ॥मा० है,॥

६—लीनो हाथ में लट्ठ, घठ धीठो घणो ॥मा० घ०॥
आयो जानके मांय, घरी कुलंठ पणो ॥मा० घ०॥
माने नहीं कछु शंक, वंक एको जणो ॥मा० व०॥
आयो सो वींद हजूर, काम नहीं दूर तणो ॥मा० का०॥

७—सघलाही रह्या देख, बोले सुणो नन्दना ॥मा० बो०॥
हुं छुं सगो तुझ बाप, जाणे मत फन्दना ॥मा० जा०॥
सातकन्या ब्याही वणिक, परणाऊं एक माहरी ॥मा० प०॥
पकड़ी अश्व लगाम, कोई नहीं बाहरी ॥मा० को०॥

८—बदलायो चित्त लोक, धोको सबने पड्यो ॥मा० धो०॥
सांची दीसे ए बात, जोग इसड़ो घड्यो ॥मा० जो०॥
लोक गया सब ठाम, बींद रह्यो एकलो ॥मा० वी०।
अधिक खीसियाणो होय, देखे सो भूई तलो ॥मा० दे०॥

९- तिणसमे सो सुर वेण, कहे मेतार्य विषे ॥मा० क०॥
ले हुवे संजम ताम, कहे सो भूंडी दीसे ॥मा० क०॥
हुवे पाछो होय सुजस, परणुं कन्या वणिकनी ॥मा० प०॥
नवमी परणं भूप, धूया श्रेणिक नी ॥मा० गु०॥

१०—बारा वरस गृहवास, रहुं तदनंतरें ॥मा० रहु०॥
लेशुं पिछे संजम भार, वचन ए नहि फिरे ॥मा० व०॥
एम सुणी सुर वेग, सेण मन फेरियो ॥मा० से०॥
झूठी मातंग नी बात, वींद वली हेरीयो ॥मा० बि०॥

११—हुई सजाई सर्व, तिहा वली ब्याहनी ॥मा० ती०॥
आया सोही बाजार, बात थई न्यायनी ॥मा० बा०॥
महेतच आयो सो चाल, जान माहीं दौड़ी ने ॥मा० जा०॥
उण मदिरा पीध, बोले कर जोडी ने ॥मा० बो०।

१२—ए नहि माहरो नन्द, खोटो हुं बोलियो ॥मा० खो०॥
माफ करो अपराध, कह्यो बे तोलियो ॥मा० क०॥
भ्रमं टल्यो सहुलोक, कन्या परणी सही ॥मा० क०॥
'तिलोक रिख' कहे दुजी ढाल, दुविधा राखी नहीं ॥मा० दु०॥

दोहा

१— राज [illegible], [illegible] मे [illegible]।
दीनी बकरी [illegible], उगले रतन [illegible] ॥

२— रत्न राशि [illegible] करे, [illegible]।
पुरमे [illegible] ॥

ढाल ३

राग [illegible] मन वस्यो ॥

१– राय सुणी इम वारता, मन में विस्मय थाय ॥हो लाल॥
बकरी लावो वेग सुं, जेज करो मति काय ॥हो लाल॥
राय सुणी इम वारता ॥टेर॥

२—सुभट सुणी चल आवीया, सुगंधर ने गेह ॥हो लाल॥
मांगे बकरी शेठ थी, उगले रत्न छेह ॥हो लाल॥रा०॥

३—शेठ वदे सुभटां भणी, मैं नाहो मालक तास ॥हो लाल॥
मेतारज ने पूछी ने, लेई जावो थे उल्लास ॥हो लाल ॥रा०॥

४—कुंवर कने जाची तिका, सो बोले तिणवार ॥हो लाल॥
बकरी जीवन प्राण छे, रत्न पुंज दातार ॥हो लाल रा०॥

५—सुभट गया फिर राय पें, दाख्यां सहु समाचार ॥हो लाल॥
सुणी क्रोधातुर बोलीयो,जेज न करो लगार ॥हो लाल रा०॥

६—हलकार्यां सुभटा भणी, धसमस करता जाय ॥हो लाल॥
छाली लाया छोड़िने, पूछयो तिण सुं नाय ॥हो लाल रा०॥

७—राय कचेरी लाविया, क्षण अन्तर नी माय ॥हो लाल॥
बकरी छेरी तिण समे, दुर्गन्ध रही फैलाय ॥हो लाल रा०॥

८—सभा सहु व्याकुल थई, उठ चाल्या सहु लोक ॥हो लाल॥
छे भूप कारण किसो, बात थई ते फोक ॥हो लाल रा०॥

९—सुभट कही झूठी नहीं, एही रत्न दातार ॥हो लाल॥
पूछे कारण कुवर शुं, सुभट गया तिण वार ॥हो लाल रा०॥

१०—पूछ्यो कारण कुंमर थी, किण कारण दुर्गन्ध ॥हो लाल॥
उगले नहि किम रत्न तें, दाखो तेह प्रबन्ध ॥हो लाल रा०॥

११—सो कहे मुझ राजी करे, रत्न उगले श्रीकार ।।हो लाल।।
नहिं तोए रे बुरी, शंका नहिं लगार ।।हो लाल रा०।।

१२—राय कहे जे छालिका, देवे रत्न श्री मोय ।।हो लाज।।
मुख मांगी वस्तु तिका, देशु हुं खुश होय ।।हो लाल रा०।।

१३—सो कहे कन्या तुम तरणी, दो मुझने परणाय ।।हो लाल।।
रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तब राय ।।हो लाल रा०।।

१४—गुण मंजरी कन्या भली, कीधो ब्याह उत्साह ।।हो लाल।।
'तिलोक रिख' कहे तीजी ढाल में, कुंवरनो पुर्यो उमाह ।।हो लाल।।

दोहा

१— नव कन्या परणी भली, नव निधि पति जिम तेह ।
भोगवे सुख ससांरनां, दिन दिन वधते नेह ।।

२— वारा वर्ष इम बीतिया, सो सुर आयो चाल ।
कहे ले हवे तु वेग शुं, संजम चित्त उजमाल ।।

३— नहीं तो देऊं संकट घणो, इणमें फेर न फार ।
सियाल परे श्री वीर पे, लीधो संजम भार ।।

४— मन में ताम विचारियो, धिक् धिक् काम विकार ।
पायो हीनता लोक में, महतर घर अवतार ।।

५— हवे करणी दुष्कर करूं, कर्म करूं सब छार ।
मास मास तप धारियो, निरन्तर चौबिहार ।।

ढाल ४

राग—जमी कंदमे रे जीव जाई उपनो ।

१—नित नित प्रणमुं रे मेतारज मुनी, तारण तरण जहाज ।
परम वैरागी रे रागी धर्मनां साधे आतम काज ।।

नित नित प्रणमुं रे मेतारज मुनी ।।टेर।।

२—सुत्तर थिविरां पासे रे सीख्या स्थिर मनें, नव पूर्व के रो ज्ञान ।
ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो, ध्यावे निर्मल ध्यान ।।

३—कोई समे आया रे राजगृही वली, पारणो आयो रे तास ।
प्रभु आज्ञा लेई गोचरी पांगुर्या, भिक्षा निरवद्य काम ।।

१८—सोनी देखी रे थर थर धूजियो, कीधो महोटो अकाज।
मैं मूढ़ भावे रे निर अपराधीया, घात करी रिखराज ॥नि०॥

१९—राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करसी कुटम्ब संहार।
एम जाणी ने सहुं श्री वीर पें, लीधो संजम भार ॥नि०॥

२०—जप तप करणी रे कीधी सहु जणा, पाया सुर अवतार।
अनुक्रमे जासी रे कर्म खपाई ने, सहुं तो मोक्ष मझार ॥नि०॥

२१—नव कोटी धन नव कन्या तजी, नव विध ब्रह्मचर्य धार।
नव पूर्वधर नव संवर करी, पाया भव जल पार ॥नि०॥

२२—एहवा मुनिवर क्षमा सागरूं, तस गुण गाया उमाय।
'तिलोक रिख' दाखे रे चोथी, ढाल ए,सुणतां पातक जाय ॥नि०॥

२३—संवत उगणीसे रे गुणचालीशमे, आषाढ़ वदि पडवा वखाण।
दक्षिण देशे रे पनाशहर में, नानाकीपेठ में जाण ॥नि०॥

२४—जोड़ज गाई रे विपरीत जो कह्यो, मिच्छामि दुक्कडं मोय।
भणशे गुणशे रे विधि शुद्ध भाव शुं, तस घर मंगल होय ॥नि०॥

दोहा

१— सोदागर मिलिया पछे, रहे वस्तु की चाव।
बीच दलाल मिले नहीं तो फिगफर आवे भाव॥

२— घर बैठा ही भाव सूं, सब कारज सिद्ध थाय।
सेठ सुदर्शन किण विधे, गुरु ने वन्दन जाय॥

ढाल १ राग—आधाकर्मी रो दोषज

१— राजगृही श्रेणिक राजा जी रे,
समकित धारी चेलणा राणी रे।
कोम छत्तीसों वसता रे,
ज्यारां पुण्य जरा नहीं कसता रे॥

२— राजा ने विचारी ने करणो रे,
बिना सोचे पांव न धरणो रे।
बिना सोची जिबान देवे रे,
ते ने पीछे पछतावो होवे रे॥

३— ललितपुरुष षट् आया रे,
काम अपूर्व दिखाया रे।
तिण सुं राय लुभाणो रे,
दियो वचन चूक गयो स्याणो रे॥

४— कोई काज आज थे करसो रे,
तेनी सजा कभी नहीं पासो रे।

ते मद्य मांसना भोगी रे,
तेनी बुद्धि नहीं कोई जोगी रे ॥

५— तिहा रहे अर्जुनमाली रे
ते ने बंधुमती घर आली रे।
गांव बाहिर फूलवाडी रे,
तेना बाप दादा लगाडी रे ॥

६— छाव भर फूलड़ा लावे रे,
तेथी आजीविका चलावे रे।
प्रमोद महोत्सव आवे रे,
ले बंधुमती बाग में जावे रे ॥

७— ललीत पुरुष आगे बैठा रे,
देख बंधुमती मोह में पेठा रे।
पापमती तेने आवे रे,
छंहु मंदिर में छिप जावे रे ॥

८— बाप दादा सेवित जाणो रे,
मुद्गर पाणी यक्ष बखाणो रे।
फूल लेई अर्जुन तिहा आयो रे,
बंधुमती ने साथे लायो रे ॥

९— रख फूलड़ा ने शीष नमायो रे,
षट् ललीत पुरुष तिहां धाया रे।
गाढ़ बंधन दियो बांधी रे,
तेह नी नारी पिण विषय रस आंधी रे ॥

१०— शीलरा जतन न कीधा रे,
मोह अंध विषय रस पीधा रे।
धन मेणरया सती तारा रे,
सीता द्रौपदी ने शील प्यारा रे ॥

११— ज्यांरा परिणाम हुंता चोखा रे,
देव टाल्या घणा या दोखा रे।
ज्यांरा परिणाम हुंता लूखा रे,
वाने मिलीया दादा ने भूखा रे ॥

१२— अर्जुन ने रीसज आई रे,
खाली पत्थर सेव्यो बाप भाई रे।
देव शक्ती हुंती यदि वाको रे,
मारी केम गमावतो नारी रे॥

१३— जव देवने रीसज आई रे,
मारी काण न राखो कांई रे।
उठासू मुद्गर लियो हाथो रे,
सातो मार्या एकण साथो रे॥

दोहा

१— देव रीस उतरी नहीं, फिरे राजगृह वहार।
रोजाना ते मारतो, छह पुरुष एक नार॥

२— नव सो अठयोत्तर नर हण्या, एक सो त्रेसठ नार।
दिन तेरे पांच मास में, ग्यारा सो इकतालीस दिया मार॥

ढाल २ राग—चित्त समाधी होवे

१— राजगृही नगरी अति सुन्दर,
माथा रे तिलक समान रे माई।
एक करोड़ ने इगोत्तर लाख,
गाँव लागे तिण माय रे माई॥
पुण्य तणा फल मीठा जाणो॥

२— तिण रे मांहि नालंदी पाडो,
तिणरो घणो अधिकार रे माई।
चौदह तो चौमासा किया,
भगवंत श्री महावीर रे माई॥

३— लाखां घर ने घणा क्रोड़ीधज,
अधिको रिद्ध रो मान रे माई।
शालीभद्र सा सेठ वसे तिहा,
पुण्य तणा निधान रे माई॥

४— सेठ सुदर्शन वसे तिण माहीं,
धर्म धुरधंर धीरे रे माई।
इसड़ी वेला में वंदन जासी,
भगवंत श्री महावीर रे माई॥

दोहा

१— वीर जिनेश्वर समोसर्या, घणा मुनि परिवार।
गुणशील बाग में उतर्या, तप संयम गुण धार॥

२— दुंदुभि नाद सुणी करी, हुई नगरी में जाण।
दिल चाहे पण जावे नहीं, अर्जन नो भय आण॥

३— सुदर्शन मन चिंतवे, जाई करूं दर्शन।
चरण वंदी निज मात ना, इण पर किनो प्रश्न॥

ढाल ३

राग—सुग्रीव नगर सुंहावणो

१—हाथ जोड़ ने इम कहे जी, सांभल म्हारी जी माय।
आज्ञा दीजे मुझ भणी जी, मुझ मन याहिज चाय॥हे मायड़ी॥
मैं वंदु वीर जिनन्द॥टेर॥

२—मात कहे सुत सांभलो जी तारा मन में खांत।
यहाँ बैठा वन्दना करो ए, वीर जाणे सब बातरे जाया॥
तुं घर बैठा ही वांद॥टेर॥

३—वलता कुंवर इम कहे जी, सांभल मोरी बात।
घर बैठा वन्दन करूं, म्हारी जुगत नहीं छे बात॥ए जननी॥

४—ग्राम नगर आया सांभलुं जी, तो मन खुशियाली थाय।
भगवंत आया बाग में जी, यहाँ बैठुं किण न्याय॥ए मायड़ी॥

५—और साधु आया सांभलुं जी, तो पिण हर्ष अपार।
वक्ते विशेखे वीर जी, म्हारे समकित रा दातार॥

६—एकज सुत तुं मायरे जी, धन सुख माया अपार।
इतरा ने छिटकाय ने तूं मरण मुखे किम जाय ए जाया॥
तं अठेही जबैठो वांद॥टेर॥

७—ये सुख संपति सायवी जी, मिली अनन्ती वार।
दर्शन दुर्लभ वीरना जी, म्हारे जीवन प्राण आधार॥

८—मन दृढ़ता देखी करीजी, मन में सोच्यो रे माय।
गद् गद् नेणा इम कह्यो जी, ज्यू थाने सुखथाय रे जाया॥
थे वंदो वीर जिनन्द॥टेर॥

दोहा

१— घर सुं वाहिर निकल्या, चाल्या एका एक।
मेल झरोखा जालियां, देखे लोक अनेक॥

ढाल ४

राग—ऊँची बणाई एक सेवीकारे।

१—चोवटा बीचे होई निसर्या रे, पादविहारी चाल्या सेठ रे।
जावता देख्या साथे ना हुआ रे, कायर हीया रा रह्या वैठ रे॥
जोई जो कायर रो हियो थर हरे रे॥टेर॥

२—दुर्गुण ग्राही मुख सूं इम कहे रे, यश को भूखो दीसे सेठ रे।
खबरपड़सी बाहिरनिसर्या, पड़सी जदअर्जुनमाली री फेट रे॥

३—सेठजी नगरी बाहिरनिसर्या रे, अर्जुनने आतो लिया जाणरे॥
मुग्दर उलारे पल हजार नो रे, डेढ़ मन पक्कारो प्रमाण रे।

ढाल ५

राग—सुग्रीव नगर।

१—भूमी कपड़ा सूं पूंजने जी, बैठा तिण हिज ठाम।
ए उपसर्ग उपन्यो जी, आप देख रह्याछो स्वाम।
जिनेश्वर अब थारो रे आधार॥टेर॥

२—पेला व्रत जो आदर्या जी, तुम पासे जिनराज।
हिवड़ा व्रत छे मायरा जी, दो विध तीन प्रकार॥जिन॥

३—इण उपसर्ग सुं उबरूं जी, तो लेसुं अन्न पान।
नहीं तर माने आज से जी, जावजीव पच्चक्खाण॥

४—अर्जुन आयो उतावलो जी, फिरियो चहुं ओर आय।
सेठ सुदर्शन ऊपरे जी, वांरो हाथ नीचो नहीं नाय॥

५—झुक झुक देख्यो सेठ ने जी, मेखोमेख मिलाय।
नजर मिलन्ता वासी गयो जी, ले मुग्दर देवता जाय ।।जि०।।

ढाल ६ राग—हम्मरीया री

१—अर्जुन धरती ढल पड्यो, सेठ लीयो उठाय हो श्रोता।
हाथ जोड़ी अर्जुन कहे, इण विरीया कित जाय हो सायबा।
अर्ज करू यासु विनती ।।टेर।।

२—धर्म आचारज माहरा, भगवंत श्री महावीर हो अर्जुन।
जाने मैं वन्दन निसर्यो, सुधर्यो काज सधीर ।।हो अ।।
भव थिति पाकी हो तुम तणी ।।टेर।।

३—अर्जुन कहे हूं पापियो, क्या मुझ ने पिण साथ।
ले जाय हो सायबा, पतित पावन म्हारा वीर ।।हो अ०।।
तूं चाल थने ज्यु सुख थाय ।।टेर।।

४—अर्जुन सेठ दोनों चाल्या, आया भगवन्त पास ।।हो अ०।।
दर्शन देख जिनन्द रा, चरण वंदी बैठा पास, हो अर्जुन ।।

५—भगवन्त दीनी देशना सुणी सभी चित्त लाय ।।हो अ०।।
सोची श्रद्धी अर्जुन कहे, मैं लेसु संयम भार ।।हो अ०।।
अर्ज करू सुणो विनती ।।टेर।।

६—वलता वीर ऐसी कहे, ज्यु थाने सुख थाय ।।हो अ०।।
विश्वास नहीं इण श्वांस रो क्षिण २ माहे जाय। हो अ०।।
संयम लीनो भाव सुं ।।टेर।।

७—संयम लीनो भाव सूं दीधी समकित की नींव हो स्वामी।
बैले बेले पारणा करावो, जावोजीव हो स्वामी ।।

८—तिण नगरी में गोचरी, उठ्या अवसर देख ।।हो अ०।।
भात मिले तो पाणी नहीं मिले, धीरज धारी विशेख हो ।।

९—कोई मारे भाटा कांकरा कोई दे मुख सु गाल हो।
खम्या किधी अति घणी, ना आण्यो क्रोध लिगार हो ।।

७—ये सुख संपति सायवी जी, मिली अनन्ती वार।
दर्शन दुर्लभ वीरना जी, म्हारे जीवन प्राण आधार॥

८—मन दृढ़ता देखी करीजी, मन में सांच्यो रे माय।
गद् गद् नेणा इम कह्यां जी, ज्यू थाने सुखदाय रे जाया॥
थे वंदो वीर जिनन्द ॥टेर॥

दोहा

१— घर सुं बाहिर निकल्या, चाल्या एका एक।
मेल झरोखा जालियां, देखे लोक अनेक॥

ढाल ४

राग—ऊँची बणाई एक मेवीकारे।

१—चोवटा बीचे होई निसर्या रे, पाटविहाणी चाल्या सेठ रे।
जावता देख्या साथे ना हुआ रे, कायर हीया रा रह्या बैठ रे॥
जांई जो कायर रो हियो थर हरे रे ॥टेर॥

२—दुर्गुण ग्राही मुख सूं इम कहे रे, यश को भूखो दीसे सेठ रे।
खबरपड़सी बाहिरनिसर्यां, पड़सी जट अर्जुनमाली री फेट रे॥

३—सेठजी नगरी बाहिर निसर्या रे, अर्जुनने आतो लिया जाण रे॥
मुग्दर उलारे पल हजार नो रे, ईड़ मन पक्कारो प्रमाण रे।

ढाल ५

राग— सुग्रीव नगर।

१—भूमी कपड़ा सूं पूंजने जी, बैठा तिण हिज ठाम।
ए उपसर्ग उपन्यो जी, आप देख रह्याछो स्वाम।
जिनेश्वर अब थारो रे आधार ॥टेर॥

२—पेला व्रत जो आदर्या जी, तुम पासे जिनराज।
हिवड़ा व्रत छे मायरा जी, दो विध तीन प्रकार ॥जिन॥

३—इण उपसर्ग सुं उबरूं जी, तो लेसुं अन्न पान।
नहीं तर माने आज से जी, जावजीव पच्चक्खाण॥

४—अर्जुन आयां उतावलो जी, फिरियो चहुं ओर आय।
सेठ सुदर्शन ऊपरे जी, वांरो हाथ नीचो नहीं नाय॥

५—झुक झुक देख्यो सेठ ने जी, मेखोमेख मिलाय।
नजर मिलन्ता वासी गयो जी, ले मुग्दर देवता जाय ॥जि०॥

ढाल ६

राग—हम्मरीया री

१—अर्जुन धरती ढल पड्यो, सेठ लीयो उठाय हो श्रोता।
हाथ जोड़ी अर्जुन कहे, इण विरीया कित जाय हो सायवा।
अर्ज करु यासु विनती ॥टेर॥

२—धर्म आचारज माहरा, भगवंत श्री महावीर हो अर्जुन।
जाने मैं वन्दन निसर्यो, सुधर्यो काज सधीर ॥हो अ॥
भव थिति पाकी हो तुम तणी ॥टेर॥

३—अर्जुन कहे हूं पापियो, क्या मुझ ने पिण साथ।
ले जाय हो सायवा, पतित पावन म्हारा वीर ॥हो अ०॥
तूं चाल थने ज्युं सुख थाय ॥टेर॥

४—अर्जुन सेठ दोनों चाल्या, आया भगवन्त पास ॥हो अ०॥
दर्शन देख जिनन्द रा, चरण वंदी बैठा पास, हो अर्जुन ॥

५—भगवन्त दीनी देशना सुणी सभी चित्त लाय ॥हो अ०॥
सोची श्रद्धी अर्जुन कहे, मैं लेसुं संयम भार ॥हो अ०॥
अर्ज करु सुणो विनती ॥टेर॥

६—वलता वीर ऐसी कहे, ज्युं थाने सुख थाय ॥हो अ०॥
विश्वास नहीं इण श्वांस रो क्षिण २ माहे जाय। हो अ०॥
संयम लीनो भाव सुं ॥टेर॥

७—संयम लीनो भाव सूं दीधी समकित की नींव हो स्वामी।
बेले बेले पारणा करावो, जावोजीव हो स्वामी ॥

८—तिण नगरी में गोचरी, उठ्या अवसर देख ॥हो अ०॥
भात मिले तो पाणी नहीं मिले, धीरज धारी विशेख हो ॥

९—कोई मारे भाटा कांकरा कोई दे मुख सु गाल हो।
खम्या किवी अति घणी, ना आण्यो क्रोध लिगार हो ॥

ढाल ७

१— मुनि अर्जुन संजम लीयो।
प्रभू पासे पासे अभिग्रह किधो हो ॥
मुनिवर हृद क्षमा दिल धारी ॥टेर॥

२— जावजीव छठ छठ पारणा करवा।
संसार समुद्र ज तरवा हो ॥मु०॥

३— देह री ममता टाली।
कोई काटवा कर्मा री जाली हो ॥मु०॥

४— राजगृही में गोचरी सिधाया।
जहाँ कीनो छे पेली वार धावो हो ॥

५— छठ पारणे गोचरी जावे।
लोग देखी मुनि रीसन लावे हो ॥मु०॥

६— घर मांहि मुनिवर ने तेड़ें।
ज्यारां पातरा में धूलज रेडे हो ॥मु०॥

७— कोई एक तो मारे चपेटा।
कोई नाखे मुनिवर ने हेठा हो ॥मु०॥

८— कोई बाल जवान ने बुढ़ा।
मुनिने वयण सुणावे छे भूंडा हो ॥मु०॥

९— कोई कहे मारिया मुझ पिता।
कोई कहे पाप लागे इणरो मुखजोता हो ॥

१०— कोई कहे मारी मुझ माता।
कोई कहे याने डामज देवो करताता हो ॥

११— कोई कहे मारिया मुझ भाई।
यांने दीजै यमपुर पहुँचाई हो ॥

१२— कोई कहे मारी मुझ भगिनी।
याने देखता उठे हिये अगनी हो ॥

१३— कोई कहे मारी मुझ नारी।
याने दीजै मुख पर छारी हो ॥

१४— कोई कहे मारी मुझ बेटी।
याने काढ़ो पकड़ कर घेंटी रे ॥

१५— कोई कहे बेटो वहुग्रां मारी।
याने दिजो तीन वार धिक्कारी हो ॥

१६— कोई कहे मारीयो मुझ काको।
याने जल्दी दूरा हांको हो ॥

१७— कोई कहे मारी मुझ सासू ।
याने देखनां ग्रावे नयणां ग्रांसू हो ॥

१८— कोई कहे मार्यो मुसरो ने साल्गो।
यारो मुख करिजे कालो हो ॥

१९— कोई करे वचन प्रहारा।
कोई घाव देवे तलवारा हो ॥

२०— कोईक तो कचरो डाले।
कोईक तो पाणी हिलोले हो ॥

२१— कोईक पत्थर फेंके रीसे।
मुनि ने देखी ने दांतज पीसे हो ॥

२२— इण कर्म कीधा घणा खोटा।
यांने कोई न देसी रोटा हो ॥

२३— इण कारण संयम लीधो।
इण वेष मुनि नो कीधो हो ॥

२४— इत्यादिक सुणी जन-वाणी।
मुनि रीस नहीं दिल आणी हो ॥

२५— सुणी ने मन में एम विचारे।
मैं कीधा कर्म चंड़ाले हो ॥मु०॥

२६— मैं मारिया मनुष्य जीव सेती।
दुःख थोड़ो छे मुझने तेह थी हो ॥

२७— हण्या मनुष्य इग्यारे सौ ने इकताली।
म्हारी आत्मा हुई घणी काली हो ॥

२८— आर्त्त रौद्र ध्यान निवारे।
मनि धर्म शुक्ल चित्त धारे हो ॥

२९— अन्न मिले तो नही मिले पाणी।
पानी मिले तो नही मिले अन्न हो ॥

३०— छह मास चारित्र पाली।
दिया सगला पाप ने टाली हो ॥मु०॥

३१— तप करता शरीर सुखायो।
अन्तकृतजी में अधिकार जाणो हो ॥

३२— अर्धमास संलेखना आई।
अंत समय केवल शिव पाई हो ॥मु०॥

३३— क्षमा सहित तप करणी।
संसार समुद्र ज तरणी हो ॥मु०॥

३४— उगणीस सौ गुणतीस को सालो।
यह तो जोड्यो है सतढाल्यो हो ॥

३५— "तिलोकरिखजी" गुरु सेवीजे।
यह तो नरभव सफल करीजे हो ॥

३६— विपरीत जोड कोई दाखी।
मिच्छामि दुक्कडं छे सब साखी हो ॥
मुनिवर हद क्षमा दिलधारी ॥टेर॥
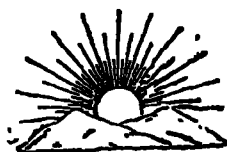
३३ | प्रत्येक बुद्ध

ढाल १ राग—हुं तुम आगल सूं कहुं कन्हैया

१—चंपा नगरी अति भली हूं वारी,
दधिवाहन राय भूपाल रे, हू वारी लाल।
पद्मावती री कुक्षे उपन्या हूं वारी,
कर्म किया चण्डाल रे।।हूं०।।
करकण्डू जी ने वन्दना हूं वारी।।टेर।।

२—करकंडु जी ने वंदना, हूं वारी,
पहला प्रत्येक बुद्ध रे।।हूं०।।
गिरवानां गुण गावतां, हूं वारी,
समकित थावे शुद्ध रे।।हूं० क०।।

३—लाधी हैं बांस की लाकड़ी, हूं वारी,
थया कचनपुरी रा राय रे।।हूं०।।
वाप सु संग्राम माण्डियो हुं वारी,
साध्वी दिया समझाय रे।।हूं० क०।।

४—वृषभरूप देखी करी हूं वारी,
प्रतिबोध पाम्या नरेश रे।।हूं०।।
उत्तम संयम आदर्यो हूं वारी,
देवता दियो मुनि वेश रे।।हूं० क०।।

५—कर्म खपाय मुक्ति गया हूं वारी,
करकण्डु ऋषिराय रे।।हूं०।।
"समय सुन्दर" कहे साधने हूं वारी,
नित्य नित्य प्रणमुं पाय रे।।हूं० क०।।

ढाल २ राग — दसवां स्वर्ग थकी चव्या जी

१—नगर कम्पिल पुर ना धणी जी, जय सेन नाम भूपाल।
न्याय नीति प्रजा पाले जी, गुणमाला पटनार ॥दु०॥
दुमोही लाल, बीजो प्रत्येक बुद्ध ॥टेर॥
२—धरती खणन्ता निसर्यो जी, मुकुट एक अभिराम।
बीजो मुख प्रतिबिम्बनो जी, दुमोही थयो जांरो नाम ॥दु०॥
३—मुकुट लेवा भणी मांडियो जी, चण्डप्रद्योतन संग्राम।
ते अन्यायी कुशीलियों जी, किम सरे ज्यारों काम ॥दु०॥
४—इन्द्र ध्वजा अति सिणगारीया जी, जोता तृप्ति नहीं थाय।
खलक लोक खेले रमे जी, मोच्छव माण्ड्यो राय ॥दु०॥
५—दुमोही तेहने देखियो जी, पड्यो मल मूत्र मझार।
हा ! हा !! शोभा कारमी जी, ए सहु अस्थिर संसार ॥दु०॥
६—वैरागे मन वाल ने जी, लीनो है संजम भार।
तप जप करणी आकरी जो, पाम्या है भवनो पार ॥दु०॥
७—बीजो प्रत्येक बुद्ध एहवो जी, दुमोही नाम ऋषि राय।
"समय सुन्दर" कहे साधु ने जी, प्रणम्या पातिक जाय ॥दु०॥

ढाल ३ राग—बीरा मारा गज थकी उतरो

१—नगर सुदर्शन सार जीहो,
मणिरथ राज करे तिहा।
२—कीनो है सब लो अन्याय, जीहो,
युगबाहु बंधव मारीया ॥
३—मेणरया गई नास, जीहो,
पुत्र जायो रे उजाड़ में ॥
४—पड़ी विद्याधर रे हाथ, जीहो,
शील पण राख्यो सती साबतो ॥
५—पद्मरथ नाम भूपाल, जीहो,
घुड़ला अपहरिया तिहा आविया ॥

६—ते तिहा दीठो बाल, जी हो,
पुत्र लेई पाछा वल्या ॥
(जी हो, पुत्र पाल मोटो कियो)

७—भोम्या नम्या सहुं श्राय जी, हो,
नमी एवो नाम थापीयो ॥

८—थया मिथिला नां राय, जी हो,
सहस्र अन्तेउरी सामठी ॥

९—दाह ज्वर चढ़ीयो देह, जी हो,
विन भुगत्या छूटे नहीं ॥

१०—सुण्यो है कंकरण को शोर, जी, हो,
चंदन घीसती कामण्या ॥

११—मन मांहे कियो रे विचार, जी हो,
कुटुम्ब विटम्ब सम जाणीयो ॥

१२—उपन्यो है जाति स्मरण ज्ञान, जी हो,
उत्तम संयम श्रादर्यो ॥

१३ इन्द्र परीक्षा कीध, जी हो,
चढ़ता परिणाम सुं निसर्या ॥

१४—"समय सुन्दर" कहे साधना जी हो,
नित्य नित्य प्रणमुं पाय ॥

ढाल ४ राग—आशावरी

१—पण्डुवर्धनपुर नो राजवी ॥मोरी सैया ॥
सिहरथ नाम नरिन्दो ए ॥

२—एक दिन घुड़ला अपहर्या ॥मो०॥
पड़ीयो अटवी दुःख दण्ड ए ॥

३—पर्वत ऊपर देखीयो ॥मो०॥
सप्तभूमिया आवास ए ॥

४—कनकमाला विद्याधरी ॥मो०॥
परण्या है राय हुल्लासो ए ॥

५—नगरी भणी राय संचर्यो ।।मो०।।
नग्गई नाम कहायो ए ।।

६—सैल करण राजा चल्यो ।।मो०।।
चतुरंगी सेना लार ए ।।

७—मार्ग में आम्बो फल्यो ।।मो०।।
फूटरा फल-फूल पान ए ।।

८—कोयलड़ी टहुका करे ।।मो०।।
मिजर रही लहकाय ए ।।

९—एक मिजर राजा ग्रही ।।मो०।।
ज्युं मंत्री प्रधान ए ।।

१०—राजा फिर ने आवियो ।मो०।।
वृक्ष देख्यो विन छायां ए ।।

११—हा ! हा!! शोभा कारमी ।।मो०।।
क्षण मांहे खेरू थाय ए ।।

१२—जातिस्मरण उपन्यो ।।मो०।।
लीनो संयम भार ए ।।

१३—"समय सुन्दर" कहे साधुजी ।।मो०।।
चौथो प्रत्येक बुद्ध ए ।।

राग—प्रभाती

ढाल ५

१—समकाले चारों चव्या,
समकाले हो थया कुल सिणगार ।।

सहेल्या ए, वंदु रुडा साध ने,
ज्यांने वंद्या हो जावे जन्म रा पाप ।।टेर।।

२—ए तो समकाले संयम लियो,
समकाले हो करतां उग्रविहार ।।स०।।

३—चारों दिशा सुं चारों आविया,
समकाले हो यक्ष देवरां रे माय ।।स०।।

४—यक्ष चमक रह्या देखने,
कीने आपुं वो म्हारी पूठ की वाण ॥स०॥

५—करकण्डु जी तरीणो काढ़ियो,
कानां मांसु हो, खाज खिणवारे काज ॥स०॥

६—दुमो ही कहे माया अजु रखी,
कांई छोड्यो हो सघलोई राज के ॥स०॥

७—नमी जी कहे निंदा मति करो,
निंदा मांहे हो कह्यो मोट को पाप ॥स०॥

८—निग्गई कहे निंदा नहीं,
हित कहतां हो पामे परम आनन्द ॥स०॥

९—समकाले जप तप किया,
समकाले हो दीना कर्म खपाय ॥स०॥

१०—समकाले केवल लह्यो,
समकाले हो पहुंच्या मोक्ष मझार ॥स०॥

११—उत्तराध्ययन में चालिया,
कथा मांहे हो, चारों प्रत्येक बुद्ध ॥स०॥

१२—"समय सुन्दर" कहे साधु नां,
गुण गायां हो, पाटणपुर शहर ॥स०॥

३४ विनयाराधना

दोहा

१— श्री जिनराज प्ररूपीयो, विनय मूल जिनधर्म।
इम जाणी भवी आदरो, टूटे आठों ही कर्म ॥

२— विनय विना शोभा नाहीं, नाक विना जिम नूर।
जीव विना जिम देहड़ी, शस्त्र विना जिम शूर ॥

३— नमसी सो सुख आपने, इणमें शंक न कोय।
घाली तराजू तोलीए, नमे सो भारी होय ॥

४— आंब आंबली जम्बुदिक, उत्तम वृक्ष नमन्त।
तिम सुगुणा जन जाणीये, मध्यम तरु अकडंत ॥

५— मात पिताथी अधिकतर, गुरू उपकार अपार।
टालो अशातना सर्व थें, जो तरणो संसार ॥

६— धर्म गुरू मत वीसरो, पल पल गुण करो याद।
सुगुणा जन सुणजो तुमें, गुरू गुण अगम अनाद ॥

ढाल १ राग—पास जिनेश्वर रे स्वामी

गुरु-गुण समरो रे भावे ॥टेर॥

१—गुरु-गुण समरो रे भावे, मोक्ष मार्ग गुरु बिना नहिं पावे।
गुरु-गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥गु०॥

२—मोती जैसा मेलारे कहीये, शक्कर सरीखा खारा मनइये।
सुमेरु ज्युं समरोरे न्हाना, अणगमता निज प्राण समाना ॥

३- अधीरज कुंजर रे जेहवा, केशरीसिंह जेम कायर कहवा।
गुणधर जेहवा ऐ विराधी, भारंडपंखी जिम परमादी ॥

४—सुर गुरु जेहवा रे अभणीया, वैश्रमणजेहवा मूंजी गोपणीया।
क्रोधी पूरा रे दीसे, टले नहीं जे कर्म शत्रु अरि से ॥

५—शशिसम उष्णता रे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो।
सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्री जिन जेहवा लोभी विख्याता ॥

६—शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भव तरणी।
भवजलतारक रे वाणी, दे उपदेश सदा सुखदाणी ॥

७—मोहनीकर्म रे अन्धो, करतो नीच अकारज धंधो।
दुर्गति पड़तो रे राखे, निर्वद्य वैण मधुर सत्य भाखे ॥

८—सत्गुरु करुणा रे कीनी, बोध बीज समकीत घट दीनी।
भर्म मिटायो रे भारी, सत्गुरु सम नहो कोई उपगारी ॥

९—महिपति संजती रे नामे, पहुंतो वन मृग मारण कामे।
गर्दभाली मुनिवर रे तार्यो, संजम लेई निज कारज सार्यो ॥

१०—परदेशी हत्या रे करतो, पाप करण सो रच न डरतो।
केशी गुरु तार्यो रे सोई, गुणचालीस दिन में सुर होई ॥

११—दृढ़प्रहारी रे नामे, चार हत्या करी जातो पर गामे।
सत्गुरु बोधज रे दीनो, संजम देई शिववासी सो कीनो ॥

१२—एम अनन्ता रे प्राणी, तरिया सत्गुरु की सुणी वाणी।
सेवा करसी रे भावे, सो नर भव भव में सुख पावे ॥

१३—जिणे गुरु आज्ञा रे धारी, सो जिन आज्ञा में नर नारी।
गुरुकी तो महिमा रे भारी, "तिलोक रिख" कहे नितबलिहारी ॥

दोहा

१— गुरु कारीगर सारिखा टांकी वचन उच्चार।
पत्थर की प्रतिमा करे, जिम सत्गुरु उपगार ॥

२— मूल तेंतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार।
गुरुनी टालो आशातना, जो तरणो संसार ॥

३— राग द्वेष पक्ष छोड़ जो, मत करजो मन रीश ।
टाल्याथी सुख पावसो, भाख्यो श्री जगदीश ।।

ढाल २ राग—निर्मल शुद्ध समकित जिण पाई

जाणी करे आशातना प्राणी,
जिणने आगे नरक निसाणी ।।टेर।।

१— अड़तो आगे पाछो बरोबर, उठै बैठे चाले ।
एक एक में तीन गणीजे, ए नव भेद दिखावे ।।जाणी०।।

२— गुरु संगाते थंडिल पहुंचा, शुचि करे पहेली चेन्नो ।
कोइक वन्दवा आवे तेहने, बतलावे गुरु पहलो ।।जा०।।

३— गुरु शिष्य आवे साथे उपाश्रय, पहेली ईर्या ठावे ।
अवराने आगल आलोवे, आहार पाणी जे लावे ।।जा०।।

४— गुरु पहेली बतलावे परने, देवण की मन वारो ।
गुरुने विन पूछ्यां पर सोंपे, सोलमी ये अवधारो ।।जा०।।

५— लूखो सूखो निरसो विरसो, गुरुने देनो चहावे ।
सरस आहार मन गमतो देखी, आप लेई हरखावे ।।जा०।।

६— रात्रे सूतो गरुजी पूछे, कुण सूतो कुण जागे ।
सुनकर उत्तर दे नहीं जाणी, कामज करणो लागे ।।जा०।।

७— गुरु बतलावे कारण पड़िया, उत्तर दे आसण बैठो ।
उठण केरो आलस अंगे, काम करण में ढींठो ।।

८— गुरुबतलायो कोईक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ।
जाणे कोईक काम बतासी, राखे मन अण मणियो ।।

९— गुरु बतलायो बैठो बैठो, शुं कहो ! शुं कहो, बोले ।
तहतवाणी मथेणवन्दामी, सो तो कहे ना भोले ।।

१०— गुरु गरड़ा तपसीनी वैयावच्च, करता निर्जरा भारी ।
एम सुणी सो कहे अपुठो, तुमने शुं नहिं प्यारी ।।

११— गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञान दीपक उजवालो ।
कहे अपुठो गुरु सूं मूरख, पोते क्यों नहीं चालो ।।जा०।।

१२— तुं तुंकारो देवे गुरु ने, ऐसो मूरख प्राणी।
गुरु उपदेश देवे भविजन ने, आणे चित्त अकुलाणी ।जा०॥

१३— गोचरी वेला हुई भाभेरी, दिन चढ्यो नहीं दीसे।
वखाण थोभे नहीं भूख्व लागी, वोले भरियो रीसे ॥जा०॥

१४— गुरुजी अर्थ करे भविजनने, बीच बीच मांही बोले।
कहे थाने शुद्ध अर्थ न आवे, वर्ष निकाल्या भोले ॥जा०॥

१५— गुरुजी कहेतां शिष्य पयंपे, याद पुरी नहीं थाने।
मैं कहु सावत वात वणाई, गुरु कथा छेदी वक्खाणे ॥

१६— गुरु वखाण करे तीण माही, कोईक काम वताई।
पर्षदामाही भेदज पाडे, मूरख समझे नाई ॥जा०॥

१७— गुरु वखाण करीने उठे, तिणहीज सभा मझारो।
सोहीज शास्त्र सोहीज गाथा, करे अर्थ विस्तारो ॥जा०॥

१८— हीणता जणावे निज गुरु केरी, पंडित पणो वतावे।
लोकसरावण सुण करमूरख, मनमें अति अकड़ावे ॥जा०॥

१९— गुरुना आसन ओधो पुंजणो, पग सुं ठोकर देवे।
गुरु ने आसणे सुवे वेसे, ऊंचो आसण सेवे ॥जा०॥

२०— गुरुनी प्रशंसा करे न पोते, सुणकर अति मुरझावे।
तेंतीस आशातना मूल कहीसो, जड़ामूलसुं ढावे ।जा०॥

२१— गुरुने आगे वस्तर केरी, पालठी मारी वंसे।
कर वान्धे किरसाण जुं भोलो, टेके बैठे विशेपे ॥जा०॥

२२— पाय पसारी आलस मोड़े, पग पर पग चढ़ावे।
विकथा मांड़े कड़का मोड़े, गुरुने नहीं मनावे ॥जा०॥

२३— हड़ हड़ हँसे शर्म नहीं राखे, जिम तिम बोले वाणी।
काम करे गुरुने विण पूछ्यां, बीच बीच बात ले ताणी ॥

२४— गुरुजी कोइक जिनस मंगावे, जावण को मन नाहीं।
उत्तर टाले चोज लगाई, ते सुण जो चित्त लाई ॥जा०॥

२५— हालवखत नहीं गोचरी केरी, अथवा नर नहीं घर में।
दिया होसी किंवाड़ बारणें, मिले न अण अवसर में ॥जा०॥

२६— वेहरावणरा भाव न दीसे, अथवा जिणरे नांई।
असुजता के सूजता होसी, वस्तु न मिलसी ठाई ॥जा०॥

२७— अवार तो हुं आखर सीखुं, लिखसुं पानो पूरो।
पलेवणो तथा थडिल जाणो, अथवा घर छे दूरो ॥जा०॥

२८— सोतो कन्जूस तथा मिथ्यात्वी, मुझने नहिं पीछाणे।
शर्म आवे मुझ भीख मांगता, जाऊं केम अजाणे ॥

२६— मुझने ठण्डवाय नहीं सोसे, तड़को चड़िया जासुं।
कहे उन्हालो पांव वले मुझ, दिनढ़लीयाथी सिधांसुं ॥जा०॥

३०— चौमासे कहे कीचड़ वहुलो, पग लपसे छे म्हारा।
भूख लागी थकेलो चढ़ीयो, पग अकड़्या छे सारा ॥जा०॥

३१— म्हारा शरीर में अड़चण दीसे, चालण शक्ती नांई।
एक बार में आणी दीधो, अब भेजो परताई ॥जा०॥

३२— एक काम करावे तिण में, जाणी ढ़ील लगावे।
जाणे जलदी करसुं कारज, फेर मुझ और वतावे ॥जा०॥

३३— विनय वन्दना करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सिखावो।
पाछे कर जो काम तुम्हारो, पहेला वोल वतावो ॥जा०॥

३४— संयम लीधो मैं तुम पासे, एता दिन के मांई।
काम काममे काल बीतावो, ज्ञान सिखावो नांई ॥जा०॥

३५— अवगुण आपणा देखं नाईं, बात करण को तसियो।
पेट भरीने निंदज लेवे, विकथा सणवा रसियो ॥जा०॥

३६— समीसांज थी पाय पसारे, भणियो सो न चितारे।
टेके बैठा अक्षर सीखं, भली सीख नहीं धारे ॥जा०॥

३७— गुरु की केहणी करे बैठ जुं अवगुण ताके पर का।
सुअर भिष्टा खावे खीर तज, ए, लक्षण तिण नरका ॥जा०॥

३८— अभिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे छन्दे।
आप करे गुरु छानो कारज, परना अवगुण विन्दे ॥जा०॥

३९— गुरु देखी ने अक्षर घोके, दीसे घणो सयाणो।
पीठ फेरीया छान्दे चाले, जाणे जग को राणो ॥जा०॥

४०— आपणे हाथे कागज बिगड़े, पन्ने फाड़े नाखे।
गुरु पूछ्या पर्गथि ज्यान जणू, रंच न नांव जाणे ॥जा०॥

४१— और आशातना भेद घणेरा, पूरा कह्या न जावे।
"तिलोक रिख" कहे ज्ञान दूसरो, अविनयपणो हर नाखे ॥जा०॥

दोहा

१— जे अविनय थी डरे नहीं, करे आशातना कोय।
ते दुःख किण परे भोगवे, सांभलजो भवी लोय॥

२— सड़्या कान की कूतरी, जीण घर जावे चाल।
नीकाले धुर धुर करे, इण विध होय हवाल॥

३— परभव किल्मिष देव में, उपजे सो अविनीत।
तिहांथी मरी चउगति में, होवे पूरी फजीत॥

४— गुरु बालक वृद्ध अणभण्या, ते पण अविनय टाल।
अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल॥

५— सूतो सिंह जगावणो, खेर अंगारे पाय।
गिरि खणवो,जेम नख थकी,पोते अशाता थाय॥

६— करतल मारे शक्ती पर, विष हलाहल खाय।
मिर्चा आंजे आंख में, पोते अशाता थाय॥

७— एतो देव प्रभाव थी, विघ्न करे नहीं काय।
आशातना फल ना टले, करतां कोई उपाय॥

८— एक वचन ज्ञानी तणां, जो धारे नर नार।
तासअविनय तजवो कह्यो, दशवैकालिक मझार॥

९— जिण पासे धारण कियो संजम शिव दातार।
तेहनी करे आशातनां, सो मूरख सरदार।

१०— नीतिशास्त्रे पुनः दाखीयो, सातवार होय श्वान।
सो भव लहे चांडालना, आगे लहे दुःख खान॥

११— गुरुनी निंदा जे करे, महापापी कहेवाय।
सर्व शास्त्रे दरसावियो, मुक्ती कदही न जाय॥

१२— के बहेरो के वोवड़ो, के दुर्बल के दीन।
जिन मारग पावे नहीं, जो करे गुरु की हीन ।।

१३— इम जाणी भवि प्राणिया, करो विनय गुरु देव।
ते सुणजो सुगुणा तमे, किण विध करी ये सेव ।।

ढाल ३ राग—सोई सयाणो अवसर साधे।

विनय करीजे भाई, विनय करीजे।
विनय करीने शिव रमणी वरीजे ।।टेर।।

१— श्री गुरु सेव करो मन रंगे,
मोह क्लेश कुमति सब भंगे।
संजम किरिया गुरु मुख धारो,
लुल २ नमन करी गुरु ठावो ।।वि०।।

२— गुरु बतलाया तहेत उच्चारो,
क्रोध मान सब दूर निवारो।
कठिण सुणी श्री गुरुजी की वाणी,
रीश करो मत हित पिछाणी ।।

३— फरमावे गुरु कामजो कोई,
जेज न करणी अवसर जोई।
गुरु मुझ ऊपर कृपा किनी,
निर्जरा रूप प्रसादी दीनी ।।वि०।।

४— अंग चेष्टा श्री गुरुकी देखी,
सो कारज करणो सुवि सेखी।
वैयावच्च करता आलस छोड़ो,
भक्ती किया पहले मत पोडो ।।वि०।।

५— प्रश्न पूछतां हाथ ज जोड़ो,
शीश नमावो मानज मोड़ो।
मधुर वचन प्रशंसा करके,
ज्ञान सीखो अति आनन्द धरके ।।वि०।।

६— छोटा मोटा सुं हिल मील रहीजे,
अधिक भण्या को गर्व न कीजे।

खारईसको किण सुं राखणो नाई,
मारो थारो करो मत काई ॥वि०॥

७— वाद विवाद छोड़ मत मांडो,
विकथा बात तणो रस छांडो।
वचन कहो मती कोई मर्मनो,
मनसे सदा डर राखो कर्मनो ॥

८— रोशवसे पातरां मत पटको,
झिजको झाई दुजापर तटको।
जेम तेम बड़ बड़ पण नहि करीगे,
लोक व्यवहार सुं अधिको डरिये ॥

९— ऊंचे शब्द करो मत हेला,
सुणकर लोक हो जावे जगुं भेला।
जैनमार्ग की लघुता आवे,
सांसारिक सगा गुणी दुःख पावे ॥वि०॥

१०— प्रियधर्मी को आस्ता छुटे,
क्रोध रिपु संजम धन लुटे।
ऐसो काम करो मत स्याणा,
इणभवे निन्दा आगे दुःख पाणा ॥

११— रिद्धि छोड़ी जिणरो गर्व न कीजे,
अधिक गुणी पर नजर जो दीजे।
आगल का अवगुण मत देखो,
अपणां अवगुण को करो लेखो ॥वि०॥

१२— बालक तरुण वृद्ध जो जो नरनारी,
सब थी जीकारे बोलो विचारी।
तुं तुं तुंकारो ओछी बोली,
करीये कछु नहीं ठट्ठोरोली ॥वि०॥

१३— नीचे देखी धीरे पग मेलो,
न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो।
संजम काम में निर्जरा जाणो,
उज्जवल भावे शंका मत आणो ॥वि०॥

१४— पंच व्यवहार प्रमाण करीजे,
निश्चयव्यवहार अरु नयसमजीजे।
उत्सर्ग अरु अपवाद पिछाणो,
सतगुरु वयण करो परमाणो ।।वि०।।

१५— इण विध करणी भवजल तरणी,
दुःख दुर्गति आपद भय हरणी।
त्रीजी ढ़ाले विनय रीत वरणी,
"तिलोक रिख" कहे शिववरणी ।।

दोहा

१— मान बढाई ईर्ष्या, क्रोध कपट दे टाल।
म्हांरो थारो छोड़ के, चाले रुड़ी चाल ।।

२— विनय करे गुरु देव को, करे आज्ञा प्रमाण।
तिण ने महागुण निपजे, ते सुणजो भवियाण ।।

ढाल ४

राग—रे भाई सेवो साधु सयाणा

रे विनय तणां फल मीठा, हलुकर्मी सुण कर हर खावे।
मुरझावे नर घिठां रे भाई, विनय तणा फल मीठा।।टेर।।

१—प्रगमे भलो ज्ञान विनीत शिष्य ने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे।
भर्म गया सुं समकित पुष्टि, समकीत सुं व्रत छाजे रे ।।भा०।।

२—व्रत पाल्यां सुं घन घन बाजे, आदर अधिको थावे।
खमा खमा करे नर नारी, मनगमती वित्त पावे रे ।।भा०।।

३—विनयवंत शिष्य ने सीख चोखी, होवे शुं शाताकारी।
इण भव माही ऋद्ध सिद्ध सम्पत, परभव में सुख त्यारी रे ।।भा०।।

४—होय आराधक सुर पद पावे, महेल मनोहर भारी।
रतन जडीत पंच रंग मनोहर, वास कुसुम छवि प्यारी ।।भा०।।

५—कंकर कंटक पंक रजादिक, नीच अपावन नांई।
जाली झरोखा झगमग दीपे, सुगन्ध रही महकाई रे ।।भा०।।

६—बत्तीस नाटक पड़े निस दिन जठे, राग छविशे आलापे।
घपमप घप मप वाजे मृदंगा, सुणतां श्रवण नहीं घापे रे ।।भा०।।

७—नाना प्रकार हार ज्यां लटके, तोरण छै पन प्रकारें।
आयडतां होय नाद मनोहर, जाणे कोई देवी उच्चारे ॥भा०॥

८—दोय सहस्र वर्ष छोटा नाटक में, मोटा में दश हजारो।
एक मुहूर्त को काल ज्युं वीते, विनय करणी फल धारो ॥भा०॥

९—पल्य सागर स्थिति एम निकाली, निकाली नवी नर थावे।
संजम धारी कर्म निवारी, ज्ञान केवल मोहि पावे रे ॥भा०॥

१०—होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो।
विनय करण फल पार न पावे, शास्त्र को भेद पहिचाणो रे ॥भा०॥

११—सुणतां तो आनंद वधावे, गुणतां बुद्धि प्रकाशो।
पालतां तो शिव नां फल लहीये, राखो चित्त विश्वासो र ॥भा०॥

१२—संवत् उगणीसे छत्तीस साले, तेरस वदि वैशाखे।
विनय फल ढाल रची पर चोथी, सर्व सिद्धान्त की साखे ॥भा०॥

१३—देश दक्षिण विचरतां आया, घानेरा हिवड़ा मझारो।
"तिलोक रिख" कहे मूल धर्म को, करवा पर उपगारो रे ॥भा०॥

१४—सुणकर रागद्वेष मत करजो, समुच्चय दियो उपदेशो।
नहीं मानो तो मरजो तुम्हारी, निज करणी फल लहेशो ॥भा०॥

१५—दान शीयल तप भावना भावो, ए जग में तंत सारो।
पालो आराधो विनय यथार्थ, उतर्या चाहो भव पारो ॥भा०॥

'कलश'

१—विनय करणी, दुःख हरणी, सुख निसरणी, जाणिये।
इणलोक शोभा, आगें शुभ गति, सिद्धांत न्याय वखाणिये॥
धर्म मूल सो, विनय दाख्यो, सीचे तो फल पाईये।
कहे "रिख तिलोक" भविका, आराध्या शिव जाईये॥

३५ | चार धर्मका संवाद

दोहा

१— प्रथम जिनेश्वर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ।
दान शील तप भावना, बोलु सहर्ष संवाद ॥

२— वीर जिनन्द समोसर्या, राजगृही उद्यान ।
समवशरण देवे रच्यो, बैठा श्री वर्धमान ॥

३— आई बारा परिषदा, सुणवां जिनवर वाण ।
दान कहे जग हुं बड़ो, मुझ ने प्रथम वखाण ॥

४— सांभल जो सहु को तुमे, कुण छे मुझ समान ।
अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिले दान ॥

५— प्रथम प्रहर दातार नो, सहु कोई ले नाम ।
दीधा री देवल चढ़े, सीझे वंछित काम ॥

६— तीर्थंकर ने पारणे, कुण करसी मुझ होड़ ।
वर्षा करूं सौनैया तणी, साढ़ी बारा क्रोड़ ॥

७— हुं जग सगलो वश करूं, छे मुझ मोटी बात ।
कुण कुण दान थकी तर्या, ते सुण जो अवदात ॥

ढाल १ राग—ललना

१— धन्नो सार्थवाह साधु ने, दीधो घृत नो दान ॥ललना॥
तीर्थंकर पद मैं दीयो, तिण से मुझ अभिमान ॥ललना॥
दान कहे जग हूं बड़ो ॥टेर॥

२— दान कहे जग हूं वड़ो, मुझ सरीखो नहीं कोय ॥ ल० ॥
ऋद्धि वृद्धि सुख सम्पदा, दाने दौलत होय ॥ ल० ॥

३— सुमुख नामे गाथापति, प्रतिलाभ्यो अणगार ।। ल० ।।
कुंवर सुबाहु सुत थयो, ते तो मुझ उपकार ।। ल० ।।

४— पांचसे मुनि ने पारणे, देतो वहरी आण ।। ल० ।।
भरत थयो चक्रवर्ती भलो ए तिण मुझ फल जाण ।। ल० ।।

५— मासखमण ने पारणे, प्रतिलाभ्यो ऋषिराय ।। ल० ।।
शालिभद्र सुख भोगव्यो, दान तणे सुपसाय ।। ल० ।।

६— आप्या उड़द नां बाकुला, उत्तम पात्र विशेष ।। ल० ।।
मूलदेव राजा थयो, दान तणां फल देख ।। ल० ।।

७— प्रथम जिनेश्वर ने पारणे, श्री श्रेयांस कुमार ।। ल० ।।
इक्षु रस वहराबियो, पाम्यो भव नो पार ।। ल० ।।

८— चन्दनबाला बाकुला, प्रतिलाभ्या महावीर ।। ल० ।।
पांच द्रव्य प्रकट थया, सुन्दर रूप शरीर ।। ल० ।।

९— पूर्वभव पारेवड़ो, शरण राख्यो सूर ।। ल० ।।
तीर्थंकर चक्रवर्ती तणो, प्रगट्यो पुण्य अंकुर ।। ल० ।।

१०— गज भवे सुसल्यो राखीयो, करुणा किधी सार ।। ल० ।।
श्रेणिक ने घर अवतर्यो, अगज मेघ कुमार ।। ल० ।।

११— इम अनेक में उद्धर्या, कहता न आवे पार ।। ल० ।।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, पहलो दियो अधिकार ।। ल० ।।

दोहा

१— शीयल कहे सुण दान तुं, किस्यो करे अहंकार ।
आड़म्बर आठे प्रहर, जाचक सुं व्यवहार ।।

२— अन्तराय वली ताह रे, भोग करम संसार ।
जिनवर कर नीचा करे, तुझने पड़ो धिक्कार ।।

३— गर्व मां कर रे दान तुं मुझ पूठे सहुं कोय ।
चाकर चाले आगले, तो शुं राजा होय ? ।।

४— जिनमन्दिर सोना तणो, नवुं निपजावे कोय ।
सोवनकोडी दान दे, शील समो नहिं होय ।।

३५ | चार धर्मका संवाद

दोहा

१— प्रथम जिनेश्वर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद।
दान शील तप भावना, बोलुं सहर्ष संवाद॥

२— वीर जिनन्द समोसर्या, राजगृही उद्यान।
समवशरण देवे रच्यो, बैठा श्री वर्धमान॥

३— आई बारा परिषदा, सुणवां जिनवर वाण।
दान कहे जग हुं बड़ो, मुझ ने प्रथम वखाण॥

४— सांभल जो सहु को तुमे, कुण छे मुझ समान।
अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिले दान॥

५— प्रथम प्रहर दातार नो, सहु कोई ले नाम।
दीधा री देवल चढ़े, सीझे वंछित काम॥

६— तीर्थंकर ने पारणे, कुण करसी मुझ होड़।
वर्षा करूं सौनैया तणी, साढ़ी बारा क्रोड़॥

७— हुं जग सगलो वश करूं, छे मुझ मोटी बात।
कुण कुण दान थकी तर्या, ते सुण जो अवदात॥

ढाल १ राग—ललना

१— धन्नो सार्थवाह साधु ने, दीधो घृत नो दान ॥ललना॥
तीर्थंकर पद मैं दीयो, तिण से मुझ अभिमान ॥ललना॥
दान कहे जग हूं वड़ो ॥टेर॥

२— दान कहे जग हूं वड़ो, मुझ सरीखो नहीं कोय॥ ल० ॥
ऋद्धि वृद्धि सुख सम्पदा, दाने दौलत होय॥ ल० ॥

३— सुमुख नामे गाथापति, प्रतिलाभ्यो अणगार ।। ल० ।।
कुंवर सुबाहु सुख लियो, ते तो मुझ उपकार ।। ल० ।।

४— पांचसे मुनि ने पारणे, देतो; वहरी आण ।। ल० ।।
भरत थयो चक्रवर्ती भलो ए पिण मुझ फल जाण ।। ल० ।।

५— मासखमण ने पारणे, प्रतिलाभ्यो ऋषिराय ।। ल० ।।
शालिभद्र सुख भोगव्यो, दान तणे सुपसाय ।। ल० ।।

६— आप्या उड़द नां बाकुला, उत्तम पात्र विशेख ।। ल० ।।
मूलदेव राजा थयो, दान तणां फल देख ।। ल० ।।

७— प्रथम जिनेश्वर ने पारणे, श्री श्रेयांस कुमार ।। ल० ।।
इक्षु रस बहराबियो, पाम्यो भव नो पार ।। ल० ।।

८— चन्दनबाला बाकुला, प्रतिलाभ्या महावीर ।। ल० ।।
पांच द्रव्य प्रकट थया, सुन्दर रूप शरीर ।। ल० ।।

९— पूर्वभव पारेवड़ो, शरणे राख्यो सूर ।। ल० ।।
तीर्थंकर चक्रवर्ती तणो, प्रगट्यो पुण्य अंकुर ।। ल० ।।

१०— गज भवे सुसल्यो राखीयो, करुणा किधी सार ।। ल० ।।
श्रेणिक ने घर अवतर्यो, अंगज मेघ कुमार ।। ल० ।।

११— इम अनेक में उद्धर्या, कहता न आवे पार ।। ल० ।।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, पहलो दियो अधिकार ।। ल० ।।

दोहा

१— शीयल कहे सुण दान तु, किस्यो करे अहंकार ।
आड़म्बर आठे प्रहर, जाचक सुं व्यवहार ।।

२— अन्तराय वली ताह रे, भोग करम संसार ।
जिनवर कर नीचा करे, तुझने पड़ो धिक्कार ।।

३— गर्व मां कर रे दान तुं मुझ पूठे सहुं कोय ।
चाकर चाले आगले, तो शुं राजा होय ? ।।

४— जिनमन्दिर सोना तणो, नवुं निपजावे कोय ।
सोवनकोडी दान दे, शील समो नहिं होय ।।

५— शीयले संकट सबही टले, शीले सुजस सौभाग।
शीले सुर सान्निध्य करे, शीयल बड़ो वैराग ॥

६— शीले सर्प न आभड़े, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि केहरी, भय जावे सब भाग ॥

७— जन्म मरण ना भय थकी, मैं छोड़ाव्या अनेक।
नाम कहुं छुं तेहना, सांभल जो सुविवेक ॥

ढाल २ राग—पास जिणंद जुहारी ए

१—शील कहे जग हुं बड़ो, मुझ बात सुणो अति मिठी रे।
लालच लावे लोकने, मैं दान तणी बातां दीठी रे ॥
शील कहे जग हुं बडो ॥टेर॥

२—कलह कारण जग जाणीये, वली व्रत नहीं पिण कांई रे।
ते नारद मैं सीझ्यो, जोवो मुझ अधिकांई रे ॥

३—बांहे पहेर्या बेरखा, शंख राजा दोषण दीधो रे।
काप्या हाथ कलावती, ते मैं नवपल्लव कीधा रे ॥

४—रावण घर सीता रही, तो रामचन्द्र घर आणी रे।
सीता कलंक उतारी युं, मैं पावक कीधो पाणी रे ॥

५—चम्पा पोल उघाड़ियां, चालनी काढ्यो नीरो रे।
सती सुभद्रा जश थयो, मैं तस कीधी भीरो रे ॥

६—राजा मारण मांडियो, अभिया दोषण दाख्यो रे।
शूली सिंहासण कियो, मैं सेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥

७—सीयल सन्नाह मन्त्रीश्वरू, आवतो अरिदल थम्भ्यो रे।
ते पिण सन्निध मैं करी, वली धर्म कारज आरंभ्यो रे ॥

८—पहेरण चीर प्रकट कियां, मैं अठोत्तरेसो वारो रे।
पाण्डव हारी द्रौपदी, मैं राखी माम उद्धारो रे ॥

९—ब्राह्मी चन्दनबालिका, वली शीलवती दमयन्ती रे।
चेड़ानी साते सुता, राजमती शिवा कुन्ती रे ॥

१०—इत्यादिक मै उद्धर्या, नर नारी केरा वृन्दो रे।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, पहलो मुझ आनन्दो रे ॥

दोहा

१— तप बोल्यो तटकी करी, दान ने तूं अव हील।
पण मुझ आगल आवियो, सांभल रे तूं शील।।

२— सरस भोजन ते तज्या, न गमे मीठा नाद।
देह तणी शोभा तजी, तुझने किसो स्वाद।।

३— नारी थकी डरतो रहे, काया किसो वखाण।
कूड़ कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण।।

४— कोई विरलो तुझने आदरे, छोड़ तुझ संसार।
आप एकलो भांजता, बीजा भांजे चार।।

५— कर्म नीकाचित तोड़वा, भंजु भव भय भीम।
अरिहंत मुझने आदरे, वर्ष छमासी सीम।।

६— रुचक नन्दीसर पर्वते, मुझ लब्धे मुनि जाय।
मेरु पर्वतकी चूलीका आनन्द अंग न माय।।

७— मोटा जोजन लाखनां, लघु कंथुवा आकार।
गज रथ पायक तणां, रूप करे अणगार।।

८— मुझ कर-स्पर्शे उपशमे, कुष्टादिक नो रोग।
लब्धि अठावीस उपजे, उत्तम तप संयोग।।

९— जे में तार्या ते कहुं, सुण जो मन उल्लास।
चमत्कार चित्त पामसो, दे सो मुझ शावास।।

ढाल ३ राग—नणदल ए

१— दृढ़प्रहारी अति पापीयो, हत्या किवी चार ।।हो सुंदर।।
ते में तीणए भव उधर्यो, मुक्यो मुगति मझार ।।हो सुंदर।।
तपसरीखो जग को नहीं ।।टेर।।

२— तप सरीखो जग को नहीं, तप करे कर्म नो सूड ।।हो सु०।।
तप करवो अति दोहिलो, तप मांहे न वहे कूड ।।हो सु०।।

३— सात माणस नित्य मारतो, करतो पाप अघोर ।।हो सु०।।
अर्जुनमाली में उद्धर्यो, छेद्या कर्म कठोर ।।हो सु०।।

४— नन्दीषेण ने मैं कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव ॥हो सु०॥
बहोत्तर सेंस अन्तेउरी, पुण्य भोगे नित्यमेव ॥हो सु०॥

५— रूप कुरुप कालो घणो, हरिकेशी चंडाल ।हो सु०॥
सुर नर कोडी सेवा करे, ते मैं कीध निहाल ।हो सु०॥

६— विष्णु कुंवर लब्धि कीयो, लाख जोजन नो रूप ।।हो सु०॥
श्री संघ केरे कारणे, मुझ में शक्ति अनूप ।।हो सु०॥

७— चवदे सेंस अणगार में, श्री धन्नो अणगार ।।हो सु०॥
वीर जिनन्द वखाणीयो, ये पिण मुझ अधिकार ।हो सु०॥

८— कृष्ण नरेसर आगले, दुक्कर करणी कीध ।।हो सु०॥
ढंढण नेमि प्रशंसीयो, मुझ शक्ते हुओ सीध ।।हो सु०॥

९— नन्दीषेण वहोरण गयो, गणिका कीधी हांस ।।हो सु०॥
वृष्टि करी सोनैया तणी, मैं तस पुरी आश ।।हो सु०॥

१०— इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपसी जीव ।।हो सु०॥
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी, राखो मेर अतीव ।।हो सु०॥

दोहा

१— भाव कहे तप तुं कर्यो, छेड़्यां करे कषाय ।
पूर्वकोडी तप तप्यो, खिण में खेरू थाय ॥

२— खंदक आचारज प्रते, ते बलाव्यो सर्वदेश ।
अशुभ नियाणो तुं करे, क्षम्या नहीं लवलेश ॥

३— द्वीपायण ऋषि दुहव्या, शम्ब प्रद्युम्न साह ।
तपसी क्रोध करी तिहा दीधो द्वारिका दाह ॥

४— दान शील तप सांभलो, मकरो झूठो गुमान ।
लोक सहु को साखदे, धर्म भाव प्रधान ॥

५— आप नपुंसक थें अणे, दे व्याकरण ते साख ।
काम सरे नहीं को तुमे, भाव भने मुझ पाख ॥

६— रस विना कनक न नीपजे, जल बिना तरु नहीं वृद्धि ।
रसवती नहीं लवण बिना तिम मुझ विन नहीं सिद्धि ॥

७— मंत्र तंत्र मणी औषधी, देव धर्म गुरु सेव।
भाव बिना ते सब वृथा, भाव फले नित्यमेव ॥

८— दान शील तप जे तुमे, निज निज कह्यां वृतान्त।
तिहां जो हूं न हूँ तो, तो कोई सिद्धि न जात ॥

९— भाव कहे मैं एकले, तार्या बहु नर नार।
सावधान थई सांभलो, नाम कहूं लो धार ॥

ढाल ४ राग—कपूर होवे अति ऊजलो रे

१—वन मांहे काउस्सग रह्यो रे प्रसन्नचन्द्र ऋषि राय।
तेने मैं कीधो केवली रे, तत्क्षिण कर्म खपाय ॥सौभागी॥
सौभागी सुन्दर भाव बड़ो रे संसार ॥टेर॥

२—थड़ ने डाली समो जी, एतो बीजा मुझ परिवार।
दाना दि बिन हूँ एकलो रे, पहुं चाँऊं भवपार ॥सौ० भा०॥

३—वंश ऊपर चढ़ियो खेलवारे, एलाची पुत्र अपार।
केवलज्ञानी मैं किया रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥सौ० भा०॥

४—भूख तृषा खमे अतिघणी रे, करतो कूर आहार।
केवल महिमा सुर करे रे, कुरगडु वे अणगार ॥सौ० भा०॥

५—लाभ थी लोभ वधे घणो रे, आण्यो मन वैराग।
कपिल मुनि थयो केवली रे, ते मुझने सौभाग ॥सौ० भा०॥

६—अर्णीका सुत गच्छ नो धणी जी, खिणजंघा बली जाण।
कीधो अन्ते गुरु केवली रे, गंगाजल गुण खान ॥सौ० भा०॥

७—पन्द्रे से तापस भणी रे, दीधी गौतम दीख।
तत्खीण कीधा केवली वे, जो मुझ मानी सीख ॥सौ० भा०॥

८—पालक घाणी पीलीया रे, खन्दक सूरि ना शिष्य।
जन्ममरण थी छोड़ाविया रे, आपे मुझ अशीष ॥सौ० भा०॥

९—चण्डरुद्र ने चलतां रे, दीधो दण्ड प्रहार।
नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पण तिणी वार ॥सौ० भा०॥

१० घन घन खाती खातर भणी रे, प्रतिलाभ्यो अणगार।
मृगलो भावना भावतो रे, गया पंचम कल्प मझार ।।सौ० भा०।।

११—निज अपराध खमावती रे, मुक्यो मन थी मान।
मृगावती ने मैं दीयो रे, निर्मल केवलज्ञान ।।सौ० भा०।।

१२—मरुदेवी गज उपरे रे, पेखी पुत्र नी रिद्ध।
मुझ ने मन मांहे धर्यो रे, तत्क्षण पाई सिद्ध ।।सौ० भा०।।

१३—वीर वदन चल्यो मारठो रे, चांप्यो चपल तुरंग।
दर्दुर नामे देवता रे, थयो ते मुझ ने संग ।।सौ० भा०।।

१४—प्रभु पांय वंदन निसरी रे, दुर्गला नामे नार।
कालधर्म वीच में करी रे, पहुंची स्वर्ग मझार ।।सौ० भा०।।

१५—काया नी शोभा कारमी रे, रूप रो कीसो अभिमान।
भरत आरेसा भवन में रे, पाम्यो है केवलज्ञान ।।सौ० भा०।।

१६—अपाड़ाटाकर कलानीलो रे, प्रगट्यो भरत स्वरूप।
नाटक करतां पामीयो रे, केवल ज्ञान अनूप ।।सौ० भा०।।

१७—दीक्षा दिन काउस्सगरह्यो रे, गजसुखमाल मसाण।
सोमले शीश प्रज्वालियो रे, सिद्ध हुआ सुजाण ।।सौ० भा०।।

१८—गुणसागर थयो केवली रे, सांभल पृथ्वीचन्द।
पोते केवल पामीयो रे, सेव करे सुर इन्द्र ।।सौ० भा०।।

१९—एम अनेक मैं उधर्या रे, मूक्या शिवपुरी वास।
"समय सुन्दर" प्रभु वीर जी रे, मुझ ने प्रथम प्रकास ।।सौ०।।

दोहा

१— वीर कहे तुमे सांभलो, दान शील तप भाव।
निंदा छे अति पापिणी, धर्म करे प्रसाव ।।

२— पर निंदा करतां थकां, पापे पिण्ड भराय।
राग द्वेष वाधे घणा, दुर्गति प्राणी जाय ।।

३— निंदक सरीखो पापीयो, भुण्डो कोय न दीठ।
वली चण्डाल समो कह्यो, निंदक मुख अदीठ ।।

४— आप प्रशंसा आपरी, करता इन्द्र नरिन्द्र ।
लघुता पामे लोक में, नासे निज गुण वृन्द ॥

५— को केहनी म करो तुमे, निन्दा ने अहंकार ।
आप आपणे ठामे रहो, सहु को भलो संसार ॥

६— तो पण अधिको भाव छे, एकाकी समरत्थ ।
दान शीयल तप तीन भला, पण भाव बिना अकथ ॥

७— अंजण आंखों आंजतां, अधिकी आणी रेख ।
रज मांही तज काढतां, अधिको भाव विशेख ॥

८— भगवंत हठ भांजण भणी, चारे सरीखा गिणन्त ।
चरी करी मुख आपणे, चतुर्विध धर्म भणंत ॥

ढाल ५ राग—चेतन चेतीए रे

१— वीर जिनेश्वर इम भणे रे, बैठी परिषदा बार ।
धर्म करो तुमे प्राणीया रे, जिम पामो भवपार रे ॥
धर्म भवियण हीये धरो ॥टेर॥

२— धर्म भवियण हीये धरो' धर्म ना चार प्रकारो रे ।
भविजन तुमे सांभलो रे, धर्म मुगति सुखकारो रे ॥

३— धर्मथकी धन संपजे रे, धर्मथकी सुख होय ।
धर्म थकी आरती टले रे, धर्म समो नहीं कोय रे ॥

४— दुर्गति पड़ता प्राणीयों रे, राखे श्री जिनधर्म ।
कुटुम्ब सहु को कारमो रे, मत भूलो भवि भर्म रे ॥

५— जीव जके सुखिया हुआरे, वले होसी रे जेह ।
ते जिनवर ना धर्म थी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥

६— सोले से ने छासठ समे रे, सांगानेर मझार ।
पद्म प्रभु सुपसायते रे, एह भण्यो अधिकार रे ॥

७— सोहम स्वामी परम्परा रे, खरतर गच्छ कुलचंद ।
युग प्रधान जग परगट्यो रे, श्री जिनचंद सुरिन्द रे ॥

८— तास शिष्य अति दीपतोरें विनयवंत जसवंत।
आचारज चढ़ती कला रे, जिनसिंह सुरी महंत रे॥

६— प्रथम शिष्य श्री पुज्यनारें, सकलचंद तस शिष्यो।
"समय सुन्दर" वाचक भणें रे, संघ सदा सुजगीषो रे॥

१ — दान शील तप भावनो रे, सरस रच्यो संवादो।
भणतां गुणतां भाव सुं. रिद्धि समृद्धि सुख सुप्रसादो रे॥

ढाल १

१— धम्मोमंगल महिमानिलो, धर्म समो नहीं कोय।
धर्म सु ं नमे देवी देवता, धर्मे शिघ सुख होय ।।धम्मो०।।

२— जीव दया नित्य पालिये, संयम सतरे प्रकार।
बारह भेदे तप तपे, ये हैं धर्म को सार ।।

३— ज्यों तरूवर नां फूलडे, भ्रमरो रस ले जाय।
त्यो संतोषे साधु आतमा, फूल ने पीड़ा नहीं थाय ।।

४— इण विध विचरे गोचरी, लेवे सुझतो आहार।
ऊँच नीच मध्यम कुले, धन धन ते अणगार ।।

५— मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहीं तृष्णा नहीं रोष।
मिले तो भाड़ो देवे देह ने, नहीं मिल्या रो सन्तोष ।।

६— घणां घरांरी गोचरी, थोड़ो थोड़ो लेवे आहार।
पांचो इन्द्रिय वश करे, सफल करे अवतार ।।

७— महाव्रत पाले निर्मला, टाले सगलाई दोष।
देवलोक निश्चय खरां, सूरत लागी ज्यांरी मोक्ष ।।

८— धन रो कैसो गारवो, रूप रो कैसो अभिमान।
भरत आरीसारा भवन में, पाया केवलज्ञान ।।

९— धन्य मरूदेवी माता जी ध्यायो है निर्मल ध्यान।
गज होदे वैठा थकां, पाया है केवलज्ञान ।।

१०— श्री आदेश्वरजीरा डीकरा, भरतादिक सो पूत।
इण भव थी मुक्ति सिधाविया, कर करणी करतूत॥

११— श्री आदेश्वरजीरी ड़ीकर्या, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय।
बेले बेले माण्ड्या पारणा, मुक्ति गया सिद्ध होय॥

१२— बाहुबलजीरो पोतरो, श्री श्रेयांसकुमार।
इक्षुरस बहिरावियो, भावे सुझतो आहार॥

१३— खाजा लाडू ने सूंखड़ी, पंच विगय परिहार।
वीर जिनन्द वखाणियो, धन्य धन्नो अणगार॥

१४— धन्ना नी परे नव जणां, तप कर झोशी देह।
धर्म तणे प्रसाद से, पहुंचा है स्वार्थसिद्ध तेह॥

१५— प्रदेशी पापी हूंतो, मिथ्यामत भरपूर।
केशीगुरु समझाविया, हुआ सूर्याभनामा सूर॥

१६— अर्जुन माली बहु कीनी, देवतां रा जोग सुं घात।
धर्म तणे प्रसाद से, मोक्ष मिली हाथोहाथ॥

१७— रूप स्वरूप में काला हूंता, हरिकेशी अणगार।
धर्म तणे प्रसाद से, पहुंचा है मोक्ष मझार॥

१८— नन्दन को जीव ड़ेड़को, आयो थो समकित सेव।
धर्म तणे प्रसाद से, हुआ दर्दुर नामां देव॥

१९— किड़ीयानी करूणा किनी, धर्मरूची अणगार।
दया तणे प्रसाद से, सर्वार्थसिद्ध मझार॥

२०— अम्बड़ जी का शिष्य सात सो, किधो पाणी रो नेम।
उनाला की रेणु में, राख्यो नेम सुं प्रेम॥

२१— खलल खलल नदीयां वहे, पिण नहीं आज्ञा रो जोग।
सूरां तो संथारो कियो, पहुंचा है पांचवे देवलोग॥

२२— ईर्या जोय ने चालणो, भाषा बोल विचार।
बाईस परिषह जीतणां, संजम खांड़ा री धार॥

२३— अध्ययन पहले द्रुम पुप्फियां, सखरो अर्थ विचार।
"पुण्यकलश" "शिष्य जेतसी", धर्म जय जय कार॥

ढाल २ राग—कपूर होवे अति उजलो

१— दीक्षा दोहिली आदरी, काम भोग घर छोड़।
संकल्प थी दुःख पग पगे जी, वैरागे मन मोड़॥
मुनिश्वर, धन धन ते अणगार॥टेर॥

२— घर छोड़ो ने निसरचा जी, लीधो संजम भार।
भोग छोड़ी जोग आदरचो जी, हूँ जाऊँ ज्यांरी वलिहार॥

३— मनवाले भूल चूकतोजी, मत करो ढील लिगार।
यो जग जाणो कारमो जी, कुण कंता कुण नार॥

४— करे अतापना आकरी जी, कोमल मती राखो देह।
राग-द्वेष तजो पाड़ुवा जी, जो सुख चावो अछेह॥

५— अग्निकुंड़ जलते पड़े जी, अगंधनकुल नो सर्प।
वमीयो विष वंछे नहीं जी, ज्युं कुल आपणो भंप॥

६— धिक् धिक् तुझ जीतव भणी जी, वमीयो वछे आहार।
जीवित वंछे मरणो भलो जी, निर्लज ने लाज न लीगार॥

७— नारी सारी पारकी जी, देख भरम मत भूल।
वाय झकोरे तरु पड़े जी, ऐसी स्थिती होसी डांवाडूल॥

८— घर घर फिरणो गोचरो जी, देखोला सुन्दर नार।
हड़वृक्ष री ओपमा जी, मोटो उठायो भार॥

९— हड़वृक्ष हेटो पड़े जी, वायु तणे संजोग।
अस्थिर होसी थांरी आत्मा जी, रूलसी घणो रे संसार॥

१०— जिम हस्ति अकुंश वसे जी, स्थिर राखो मन तेम।
राजमती सती वुझव्यो जी, ठाम आया रहनेम॥

११— अध्ययन श्रामण्य नाम पुब्विया जी, बीजे ये अधिकार।
पुण्यकलश—शिष्य "जेतसी" जी, प्रणमे सूत्र श्रेयकार॥

ढाल ३ राग—चेला जी रे आइ मन मांय

१— सुध साधु निर्ग्रन्थ, साधे मुक्तिनो पंथ।
आतम संवर्‍यो रे, संवर आदर्‍यो ए॥

२— दूषण टाले सदीव, तेहने एहवी सीख।
वीर जिनवर कहे ए, मुनिवर सरदहे ए॥

३— उद्देसिक अद्भूत, कृतगड़ लीधुं मूल।
नित्यपिड़ जाणियो ए, सामो आणीयो ए॥

४— न करे राई भात, न जीमे गृहीने पात्त।
रायपिंड ना करे ए, सेजांतर परिहरे ए॥

५— न राखे सन्निहिराय. दानशाला नहीं जाय।
वाय न विजणो ए. रंगन रिजणो ए॥

६— चोवा चन्दन चंपेल, तन न लगावे तेल।
नहीं जोवे आरसी ए, ते गुरू तारसी ए॥

७— न खेले पासा सार, मुख न कहे मार।
छत्र शिर ना घरे ए, गृही संग परहरे ए॥

८— आदरे तीन रतन, तेहनां करे जतन।
तीन बोल वरजणा ए, अग्ग-जल-अंगनाए॥

९— पीठ खाट पलंग, तजे तिगिच्छा अंग।
जुती नहीं पायतले ए, जीव दया पाले ए॥

१०— मूलादि कंद मूल, परहरे सचित फल फूल॥
तजे तिम सेलड़ी ए, लूण धूपेणावली ए॥

११— वमन विरेचन कर्म, करीने गुमावे धर्म।
दांत दांतण घसी ए, नाहीं लगावे मसी ए॥

१२— नहीं पेहरे हीर चीर, नहीं करे शोभा शरीर।
शरीर पीठी न मांजणो ए, आंख न आंजणो ए॥

१३— सूत्र ना बावन बोल, वर्जे साधु अमोल।
तप कीरिया करी ए, पंहूंचे शिवपुरी ए॥

१४— अध्ययन खुड्डीयार, नामे तीजो सार।
अर्थ अनेक छे ए, "जेतसी" मन वसे ए॥

ढाल ४

१— श्री महावीर भाखे एम, स्वामी सुधर्मा उपदेसीया।
जीओ मुनिराज, स्वामी सुधर्मा उपदेसीया॥

२— सुण सुण जम्बू स्वामी, चौथो अधीन छ जीव।
जीओ मुनिराज चौथो अधीन छह जीव॥

३— पृथ्वी पाणी तेऊ वाय, वनस्पति त्रस जाणिये जी ॥जि०॥

४— ए छह जीवनिकाय, हिंसा टालिने दया पालीयेजी॥

५— महाव्रत पांच सदीव, रात्रि भोजन टालियेजी॥

६— त्रिविधे त्रिविधे जावजीव, गर्हि निंदी पड़िक्कमीजी॥

७— दीक्षा लेई ने पूछे शिष्य, किम बोलु चालूं रहूंजी॥

८— समझावे गुरू एम, जयणा बोले ने जयणा चालजेजी॥

९— श्रीजिनशासन सार, प्रथम ज्ञान पछे दयाजी॥

१०— जीवाजीव विचार, जांणे अनुक्रम ज्ञानथी जी॥

११— केवलदर्शन नाण, उपजे कर्म खपाय ने जी ॥जि०॥

१२— छेहड़े लहे सिद्ध ठाण, अजरअमरसुख शाश्वता जी॥

१३— एह छह जीवनिकाय, सुणतां तन मन हूलसे जी॥

१४— श्रद्धे शुद्ध परिणाम, पुण्यकलश शिष्य 'जेतसी' जी ॥जि०॥

ढाल ५

राग— अनो तो पूरो उड़ियो गिरनारिया "कलश"

१— पांचमो पिंडेसणा अज्झयण, उद्देसी न लेवे साधु रे।
विधी लेई भात पाणी, करो तिरो संसार रे॥

२— दीक्षा पाले दोष टाले, धरे ध्यान समाध रे।
सूत्र सांचा अर्थ आछा, भणे गुणे ते साध रे॥

३— संचरे मुनि गोचरी कुं ग्राम नगर मझार रे।
जोय चाले शुद्ध पाले, हंसे न वोले लिगार रे॥

४— छकाय मर्दे साधु अर्थे, किया भोजन जेह रे॥
तेहने घरे जती वर्जे, दोषिलो आदि देह रे ॥दि०॥

२— दूषण टाले सदोव, तेहने एहवी सीख।
वीर जिनवर कहे ए, मुनिवर सरदहे ए॥

३— उद्देसिक अद्भूत, कृतगड़ लीधुं मूल।
नित्यपिंड जाणियो ए, सामो आणीयो ए॥

४— न करे राई भात, न जीमे गृहीने पात्र।
रायपिंड ना करे ए, सेजांतर परिहरे ए॥

५— न राखे सन्निहिराय, दानशाला नहीं जाय।
वाय न विजणो ए, रंगन रिंजणो ए॥

६— चोवा चन्दन चंपेल, तन न लगावे तेल।
नहीं जोवे आरसी ए, ते गुरू तारसी ए॥

७— न खेले पासा सार, मुख न कहे मार।
छत्र शिर ना धरे ए, गृही संग परहरे ए॥

८— आदरे तीन रतन, तेहनां करे जतन।
तीन बोल वरजणां ए, अग्न-जल-अंगनाए॥

९— पीठ खाट पलंग, तजे तिगिच्छा अंग।
जुती नहीं पायतले ए, जीव दया पाले ए॥

१०— मूलादि कंद मूल, परहरे सचित फल फूल॥
तजे तिम सेलड़ी ए, लूण धूपेणावली ए॥

११— वमन विरेचन कर्म, करीने गुमावे धर्म।
दांत दांतण घसी ए, नाहीं लगावे मसी ए॥

१२— नहीं पेहरे हीर चीर, नहीं करे शोभा शरीर।
शरीर पीठी न मांजणो ए, आंख न आंजणो ए॥

१३— सूत्र ना बावन बोल, वर्जे साधु अमोल।
तप कीरिया करी ए, पंहूंचे शिवपुरी ए॥

१४— अध्ययन खुड्डीयार, नामे तीजो सार।
अर्थ अनेक छे ए, "जेतसी" मन वसे ए॥

७—जीव इत्यादि पाले पग पगे, न करे रात विहार।
एक काय हणतां त्रस स्थावर हण्या, लहे दुर्गति अवतार॥
८—तप जप करणी दुःख हरणी करे, निर्मल नहीं अहंकार।
संवेगी सोभागी चद्र ज्यूं सोभतां, पहूंचे मुक्ति मझार॥
९—छठो मीठो लागे मोभणी, भलो धर्मार्थ काम।
नमें सुख पामे हो जेतसी, आतम उज्जवल परिणाम॥

ढाल ७ राग—आया रे ठग बाजिया····

१—साधु बूझो रे, भाषासमिति विचार, भाषा चार भेदे कही।
साधु बूझो रे, सत्य असत्य ने मिश्र, असत्यामृषा चौथी कही॥
२—साधु बूझो रे, भाषा निर्वद्य बोल, पहली ने चौथी वली।
साधु बूझो रे, भाषा न भाखे दोय, दूजी ने तीजो टली॥
३—साधु बूझो रे, निश्चय कठीन कठोर, शंकित सावद्य संलवे।
साधु बूझो रे, जेहथी लागे पाप, तेहवी वाणी न संलवे॥
४—साधु बूझो रे, चोरने न कहे चोर न कहे काणो काणा भणी।
साधु बूझो रे, पर पीड़ा हुई जेह, तेहवी वाण न बोलवी॥
५—साधु बूझो रे, असाधु ने न कहे साधु, साधु ने साधु बुलाय जे।
साधु बूझो रे, सुर नर तिर्यंच हार, कहि दोष न लगाय जे॥
६—साधु बूझो रे, सुवक्कशुद्धि अज्झयण, वोल घणा छे सातवें।
साधु बूझो रे, जेह थी लागे पाप, न पड़ीश तूं इण बात में॥
७—साधु बूझो रे, दस विध बोली सांच, अरिहंत आज्ञा छे इसी।
साधु बूझो रे, पुण्यकलश कहे सीष सूत्र रागे जेतसी॥

ढाल ८ राग—मन मोयो रे तुंगियांपुर

श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे॥टेर॥

१—श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे,
हिंसा टाली ने दया पालरे।
जो जो जाणे जीव छः कायना रे,
पग पग जयणा कर चाल रे॥

५— असरण पाण खादिम सादिम, लेवे सूझतो जेह रे।
असूझता मुनि दोष जाणी, कहे कल्पे न एह रे॥
६— विधे लेवे विधे आलोवे, विधे करे आहार रे।
लूखो सूखो अरस वीरस, हीले निंदे नहीं लिगार रे॥
७— पिंड निषेध्या, कुल निषेध्या, तजो भलो निर्दोष रे।
मुहादाई मुहाजीवी, बेहुं जासी मोक्ष रे॥दि०॥
८— काले जावे काले आवे, विचरे नही अकाल रे।
कालोकाले समाचरे ते, बंदु साधु त्रिकाल रे॥
९— वस्त्र पात्र सयण आसण, छत्ता नहीं देवे जेह रे।
जति रती ते रोष न करे, निंदे वंदे तेह रे॥
१०— तपचोर वय चौरादि, हुवै किलिषीदेव रे।
दुर्गत दुर्लभबोध जाणी, धर्ममारग सेव रे॥
११— सीख शिक्षा ग्रहण शिक्षा, ते लहे सुर लोय रे।
"जेतसी" कहे सूत्र मांहे, बोल बहुं छे जोय रे॥

ढाल ६

राग—इन्द्र इन्द्राणी हो सुखभर पोसरि

वैरागी निरागी हो सुधा साधु जी ॥टेर॥

१— वैरागी निरागी हो सुधा साधु जी नाण दंसण संपन्न।
वनवाड़ी में हो आय समोसर्या, सुमति गुप्ति प्रतिपन्न ॥वे०॥
२—मिल मिल राय राजा ने मूहता, ब्राह्मण क्षत्रिय लोग।
साधु ने पूछे हो किम छे थांहरो, आचार गोचर जोग॥
३—मुनिवर भाखं मारग मोक्ष नो, कठिन आचार विहार।
हुआो नै होसी ए धर्म कहेने, मुक्ति तणो दातार॥
४—छं व्रत पाले हो राखे छ जीव ने, नहीं स्नान शृंगार।
पल्यंक निषिद्या गृहभोजन तज्या, अकल्प ठाण अठार॥
५—तैल गुडादि स्निग्ध जैकरे, ते ग्रही नहीं अणगार।
नित तप भाखे इक भोजन करे, वर्जे विषय विकार॥
६—वस्त्रादि राखे संयम पालवा, न धरे ममता प्रेम।
विभूषा से बंध कर्म चीकणा, अकल्प कल्पै केम॥

७—जीव इत्यादि पाले पग पगे, न करे रात विहार।
एक काय हणतां त्रस स्थावर हण्या, लहे दुर्गति अवतार॥
८—तप जप करणी दुःख हरणी करे, निर्मल नहीं अहंकार।
संवेगी सोभागी चद्र ज्यूं सोभतां, पहूंचे मुक्ति मझार॥
९—छठो मीठो लागे मोभणी, भलो धर्मार्थ काम।
नमें सुख पामे हो जेतसी, आतम उज्जवल परिणाम॥

ढाल ७ राग—आया रे ठग वाजिया....

१—साधु बूझो रे, भाषासमिति विचार, भाषा चार भेदे कही।
साधु बूझो रे, सत्य असत्य ने मिश्र, असत्यामृपा चौथी कही॥
२—साधु बूझो रे, भाषा निर्वद्य बोल, पहली ने चौथी वली।
साधु बूझो रे, भाषा न भाखे दोय, दूजी ने तीजो टली॥
३—साधु बूझो रे, निश्चय कठीन कठोर, शंकित सावद्य संलवे।
साधु बूझो रे, जेहथी लागे पाप, तेहवी वाणी न संलवे॥
४—साधु बूझो रे, चोरने न कहे चोर न कहे काणो काणा भणी।
साधु बूझो रे, पर पीड़ा हुई जेह, तेहवी वाण न बोलवी॥
५—साधु बूझो रे, असाधु ने न कहे साधु, साधु ने साधु बुलाय जे।
साधु बूझो रे, सुर नर तिर्यंच हार, कहि दोप न लगाय जे॥
६—साधु बूझो रे, सुवक्कशुद्धि अज्झयण, बोल घणा छे सातवें।
साधु बूझो रे, जेह थी लागे पाप, न पड़ीश तूं इण वात में॥
७—साधु बूझो रे, दस विध बोली सांच, अरिहंत आज्ञा छे इसी।
साधु बूझो रे, पुण्यकलश कहे सीप सूत्र रागे जेतसी॥

ढाल ८ राग—मन मोयो रे तुंगियांपुर

श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे॥टेर॥
१—श्री जिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे,
हिंसा टाली ने दया पालरे।
जो जो जाणे जीव छः कायना रे,
पग पग जयणा कर चाल रे॥

२—टाले तो सूक्ष्म आठ विराधना रे,
टाले मद मत्सर ने प्रमाद रे।
तप जप खपकर काया सोखवे रे,
जीते इन्द्रियनां विषय स्वाद रे॥

३—जरा न करो देही जोजरी रे,
न वैदे रोग पीड़ा घट मांहि रे।
इन्द्रिय हीणी खीणी ना पड़ी रे,
तां लग कर धर्म संसार रे॥

४—क्रोधे तो वैर वधे घटे प्रीतड़ी रे,
माने तो विणसे विनय आचार रे।
माया मित्राई नासे जगत में रे,
लोभे तो विणसे सर्व गुणसार रे॥

५—ज्योतिष निमित्त स्वप्न फल जे कहे रे,
यंत्र मंत्र झाड़ा जुड़ाय रे।
टामण टूमण औषध केलवे रे,
ते किम तीरसी किम तारेय रे॥

६—भींत न जोवे नारी-चित्ररी रे,
वाले जिम लोचन रवि तेज रे।
हीणी खीणी वले वरसां सौ तणी
ब्रह्मचारी न धरे तिण सुं हेज रे॥

७—पक्षी का बच्छड़ा ड़रे विलाव थी रे,
ब्रह्मचारी नारी सुं तेम रे।
शोभा सिणगार ने षट्रस जीमणो रे,
तालपुट जहर करे एम रे॥

८—हाथ ने पांव वली छेद्या हुए रे,
कान ने नासिका वली जेह रे।
ते पिण ड़ोसी सौ वरसां तणी रे,
ब्रह्मचारी न धरे तिण सुं नेह रे॥

९—वसहि सयणासण पाय-पूंछणो रे,
पड़िलीह लीजे वारम्वार रे।

धन ते मुनिवर चन्द्र सूर्य समा रे,
आप तीरसी औरां ने तार रे॥

१०—आयारपणही नाम अध्ययन नां रे,
सखरा तो अर्थ विचार रे।
सिद्धांत साखे भाखे जेतसी रे,
सूत्र थी हो जो मुझ निस्तार रे॥

ढाल ९ राग—धारिणी समझावे हो मेघकुमार

ओलखड़ी करी जे हो, गीतारथ गुरुतणी ॥टेर॥

१—ओलखड़ी करी जे हो गीतारथ गुरुतणी क्रोध मान मद छोड़।
आसातना टाली नमिये पूजीये, वंदिये वेकर जोड़ ॥ओ०॥

२—सूत्र भणावे सखरी वाचना रे, पूछे पूछे अर्थ विचार।
चन्द्र सूर्य ज्यों गुरु ने सेविये, विनय कीजे वारम्बार॥

३—नवमां विनय समाधी अध्ययनना रें नया नया अर्थ विचार।
उद्देशे चौथे थेवरा वर्णव्या, समाधि रा स्थानक चार॥

४—पहली विनय समाधि नामे भली रे, बीजी सूत्र समाध।
तीजी तप चौथी आचारनी रे, ए चारों आराध ॥ओ०॥

५—समाधि आराधे ते शिवपद लहे रे, पामे अमर पद तेव।
करजोड़ी ने वंदे जेतसी रे गुणवंत श्री गुरुदेव॥

ढाल १० राग—भाव धरी ने पालजे....

अरिहंत वचने दीक्षा आदरी रे ॥टेर॥

१—अरिहंत वचने दीक्षा आदरी रे, नार वमे सुजाण।
दसवां भिक्खु नाम अध्ययन नां रे, वम्यो न वंछे जाण॥

२—खणे ने खणावे पृथ्वीकाय ने रे, पीवे न पीवावे नीर।
जले न जलावे तेउ काय ने रे, वींजे ने वींजावे समीर र ॥अ०॥

३—छेदे ने छेदावे हरितकाय ने रे, वरजे बीज सचित।
पचे न पचावे भोजन रसवती रे, त्रस थावर वध चित्त॥

४—क्रोध मान माया लोभ परिहरे, नहीं दे सावद्य उपदेश।
आप तिरे पर ने तारसी रे, सांचा ते दरवेश ॥अ०॥

५—राग द्वेष मद मत्सर परिहरे, न करे वणिज व्यापार।
तजे तमाशो हंसी मश्करी रे, वंछे नहीं लिगार॥

६—जहाज समान गुरुदेव मिल्या रे, अरू अटकी है म्हारी नाव।
डूबती ने पार लगावजो, ये छे म्हारा भाव हो ॥अ०॥

७—पांच महाव्रत पाले इन्द्रिय दमे रे, ग्राम कंटक सहे घोर।
श्मशाने पड़िमा पड़िवजे रे, तज्यो प्रतिबंध शरीर॥

८—मर्म न भाखे भलो रे, वांचे सूत्र सिद्धांत।
आतम ध्याने आतम उद्धरे रे, पामे परम पद अन्त॥

९—शय्यंभवस्वामी ए रच्यु रे, दशवैकालिक सूत्र।
सखरो शुद्ध आचार प्ररूपियो साधुनो रे, तार्यो मणक पूत॥

१०—जिम भाख्यो तिम पालनो रे, तो सुधरे बेहुं लोक।
इह लोके जश शोभा घणी रे, परलोके सुख ना थोक॥

११—संवत् सतरे सत्योतरे रे जी, बीकानेर मझार।
पुण्यकलश शिष्य भणे जेतसी रे, गीत रच्यो टकसार॥

३७ | आत्म निन्दा

दोहा

१— अरिहंत सिद्ध, अनंत गुण, धरिये शुद्ध मन ध्यान ।
सम्यग्ज्ञान प्रकट हुए, दूर हरण अज्ञान ।।

२— आचारज छत्तीस गुण, जिन गादीधर जाण ।
अंकुश धारो संघ में, वरतावे जिन आण ।।

३— वाणी द्वादस अंगनी, वंदन करी वरसाय ।।
दोष रहित निष्पक्ष लवे, ते प्रणमूं उवज्झाय ।।

४— अढ्ढीद्वीप मांहे नमूं, साधु सकल गुणधार ।
ज्ञानादि त्रिरत्न धर, साधे मोक्षद्वार ।।

५— आदि दोय पद देव छे, तिहुं पद में गुरु शुद्ध ।
चरण कमल तेहना नमूं, आपे निर्मल बुद्ध ।।

६— तसु प्रसाद चेतन तने, प्रगट्यो ज्ञान प्रकाश ।।
दिव्यहिये सम्यक्दशा, खोजत भद्र खुलास ।।

७— आतम निन्दा आपणी, जीव सदा करे जोय ।
पर निंदा है पाप सूं, हर्गिज भलो न होय ।।

ढाल १ राग—अंगीरी कश चंगी सुथण सावट

१— पर निंदा पचक्खाण, करो कोमल पणे ।।चेतनीया।।
आत्म निंदा प्रभाव, वधे गुण आपणे ।।चे०।।
मर्म लखो जिन धर्म, निर्वेरी मग खरो ।।चे०।।

२— तू दुश्मन तो दुश्मन, थारे घणा ।।चे०।।
तू सज्जन तो सज्जन, सारा आपणा ।।चे०।।

३— तू परने दुःख दाई, तो भव भव दुःखी ।।चे०।।
तू सहुने सुखदायक, तो पोते सुखी ।।चे०।।

४— छहुँ जीवनिकाय, जीवणो वंछे सही ।।चे०।।
लूटे छः कायारा प्राण, अनुकंपा थारे नहीं ।।चे०।।

५— यां जीवांरा वैर बदला, किम छूटसी ।।चे०।।
अलबत्त थारा प्राण, भवोभव लूटसी ।।चे०।।

६— हिंसा अनर्थ मूल, करतां नहीं डरे ।।चे०।।
उदय आसी फल तेह, निश्चय में तू मरे ।।चे०।।

७— पण जीवां रो वैर मरण थारे जाण ले ।।चे०।।
इण में झूठ न लेश, जिन वचन पिछाण ले ।।चे०।।

८— जीतब विधि इण लोक, वन्दन पूजा अर्चवा ।।चे०।।
चाहे तूं प्रशसा, जनम मरण मुकायवा ।।चे०।।

९— सब दुःख टालण निमित्त, छविध जीव हणे ।।चे०।।
तू अज्ञानी बाल निष्ठुर, निर्दय पणे ।।चे०।।

१०— ए हिंसा कर्मगठ, नरक मरी खलु ।।चे०।।
सूत्र आचारंग साख, उदेरस कुल वधुं ।।चे०।।

११— कारखाना छत्तीस, छःकाया मरण का ।।चे०।।
देव धर्म गुरु मोक्ष, निमित्त नही करण का ।।चे०।।

१२— अर्थ अनर्थ धर्म काज, हिंसा वरजीवली ।।चे०।।
प्रश्न व्याकरण मांय, प्ररुप्यो केवली ।।चे०।।

१३— माठी बुद्ध अबोध, तीके हिंसा करे ।।चे०।।
श्रीजिन वचन संभाल, भवि दिल में धरे ।।चे०।।

१४— क्रोध लोभ भय हास, तणी संगत रह्यो ।।चे०।।
बोले क्रूर कठोर कुमति के वश थयो ।।चे०।।

१५— पांच मोटका झूठ, वचन मुख मत कहो ।।चे०।।
सर्वथा प्रकारे झठ, तजो तो सुख लहो ।।चे०।।

१६— चोरी को मोटो दोष, परायो धन चहे ॥चे०॥
परधरण री परवासुं, जग में अपजस लहे ॥चे०॥

१७— देव मनुष्य तिर्यंच, सम्वन्धी कुशीलसुं ॥चे०॥
तृप्त कदापि न होय, विषय सुख लील सुं ॥चे०॥

१८— नर नारी को वेद, विकार विसारिये ॥चे०॥
वर्जे कुशील कुसंग, मदन मन मारिये ॥चे०॥

१९— नर नारी के संग, मथुन सेवतां ॥चे०॥
मरे सन्नी नव लाख, किंचित्, सुख वेवतां ॥चे०॥

२०— असन्नी री नहीं संख्या, श्री जिन भाखियो ॥चे०॥
पांच आश्रव में सरदार, मैथुन दाखियो ॥चे०॥

२१— दुर्गति को दातार, कहि जे परिग्रहो ॥चे०॥
तृष्णा परी रे निवार, हिये समता धरो ॥चे०॥

२२— मुर्च्छा दूरी निवार, भाव दोऊं तजो ॥चे०॥
पुदगल सुखनी चाह, मेट निज सुख भजो ॥चे०॥

२३— निज गुण अखै अडोल, अतोल अमोल है ॥चे०॥
पुद्गल सुख में भीनो, न चीनो पोल में ॥चे०॥

२४— भोलो थको तूं भूल, आश्रव में अलुंझियो ॥चे०॥
सेवे पाप अठार, बुरो तोने सूझियो ॥चे०॥

२५— पापी निर्लज नीच, निःशर्मो हुय गयो ॥चे०॥
माठा लखण मांय, भागल भूण्डो भयो ॥चे०॥

२६— कामी क्रोधी कुटिल, करापाती कुकर्मी ॥चे०॥
कपटी कुटिल कठोर, अपत तुं अधमी ॥चे०॥

२७— कायर कृपण करूर, कुबध उपजे खची ॥चे०॥
लंपट लोभी लबाड़, लोलुपी लालची ॥चे०॥

२८— अहंकारी अणखीलो, अपछन्दी उठी ॥चे०॥
श्रद्धे नहीं गुरु सीख, सुमति दिल में घटी ॥चे०॥

दोहा

१— हे चेतन मिथ्यातमे, भमियो आदि भूल।
अज्ञानी तूं बापड़ा, समकित से प्रतिकूल ॥

२— अति अज्ञानी आसता, महा मूल मिथ्यात।
तदपी तूं यामें तपे, संशय भर्म संगात ॥

३— तज मिथ्यात अज्ञान तम, समकित गुण कर शुद्ध।
विमलजोत विज्ञान के परचे होत प्रबुध ॥

४— काम स्नेह दृष्टि राग में, रहे सदा अनुरक्त।
रस साता रिद्धि गर्व में, आतम तूं आशक्त ॥

५— पतंग, अली, मृग, गज मच्छी, मरे एक में मुरझाय।
पांचो इन्द्रिय वश पड्यो, को हवाल तुझ थाय ॥

६— तूं भटके दुर्भव अति, सूझ न पड़े लिगार ॥
अष्टकर्म की बहूलता, बाकी बधु संसार ॥

७— दुश्मन तेरह कांठिया, जबर धाड़ायती जाण।
मुक्ती पुरी के पंथ में, करे धर्म धन हाण ॥

ढाल २

राग—कनक कचोला छोड़ लेणी वछ काछली

१— माठी लेश्या मांय, ध्यान माठो धरे ॥रे जीवा॥
माठी बुद्ध विचार, माठी चिंता करे ॥

२— माठा अध्यवसाय, परिणाम उपजे होये ॥रे जीव॥
माठा लक्षणधार, मोह मदिरा पीये ॥रे॥

३— अंतस दुर्मति दुष्टपणे तूं सेवसी ॥रे जीवा॥
जासी नरक निगोद, महादुःख वेवसी ॥रे०॥

४— कबहुक वेद विकार, विषय रस चितवे ॥
कबहु वितण्डा वाद, वृथा नायक चवे ॥रे जीव॥

५— बोले भुंडा बोल, मर्म मोसावले ॥रे जीवा॥
देवे कूड़ा आल, पोते भुंडो छाले ॥रे०॥

६— ताके पराया छिद्र, करे चुगली बुरी ॥रे०॥
परनिंदा पर मयल, चुंथे कर कर बुरी ॥रे०॥

७— छाती पराई वाले, ते अपनी बलें ।।रे०।।
पोखें घेख विशेष, वधे फोकट कले ।।रे०।।

८— दोष पराया काढ़, आपरणा जे ढ़के ।।रे०।।
अशुभ कर्म के बंध, उलझी अछत्तो वके ।।रे०।।

९— तिण निंदा रे पाप, आगे गूंगो थावसी ।।रे०।।
देव किल्मेषी होय, घरणो पछतावसी ।।रे०।।

१०— तूं आरणें अहंकार, मो सरिखो नहीं ।रे०।।
पूर्व पुण्य संजोग, पाई संपत सही ।।रे०।।

११— पुण्य क्षीरण हो जाय, पड़ेला निगोद में ।।रे०।।
रुलसी काल अनन्त, म फूले मोद में ।।रे०।।

१२— कबहुक भिष्ठारो जीव, हुवो तूं चुरणीयो ।।रे०।।
बोरकली रे माय, पगे चिथीजियो ।।रे०।।

१३— साधारण में उपज्यो, उदे आया पापड़ा ।।रे०।।
कवड़ी रे भाग अनन्त, बिकारणो तुं बापड़ा ।।रे०।।

१४— कबहूं रांक कंगाल-परणें मांगत फिर्यो ।।रे०।।
भिष्टारी ओड़ी उठाई, पोइस पोइस कर्यो रे ।।रे०।।

१५— अब के पुण्य पसाय, उत्तम खोली मली ।।रे०।।
मति कर मान गुमान, मान शिक्षा भली ।।रे०।।

१६— क्रोध लोभ मद माय, च्यार कषाय सुं० ।।रे०।।
हारे मानुष जन्म, विषैरी लाय सुं ।।रे०।।

१७— माने रति अरति, राग और द्वेष में ।।रे०।।
फसियो मोहजंजाल, विलमायो हर्ष ।।रे०।।

१८— सित्तर कोडाकोड़, सागर लग मोह सूं ।।रे०।।
न लहे शुद्ध विवेक, मिथ्या भ्रम छोह सू ।।रे०।।

१९— बंध तीस प्रकार महामोहरणी मुदे ।।रे०।।
प्रकृत्ति अट्ठावीस, हुवे पल पल उदे ।।रे०।।

२०— सकल कर्म मुख्य मोह, समझ कर तोड़िये ।।रे०।।
शील संतोष सुबुध, सुकृत मन जोड़िये ।।रे०।।

२१— दुःसह कर्म दुर्दन्त, चार घनघातिया ।।रे०।।
तोड़ सके तो तोड़, मोह संगातिया ।।रे०।।

२२— नवतत्त्व स्वरूप, हिया में धारिये ।।रे०।।
संवर निर्जरा मोक्ष, विशेष विचारिये ।।रे०।।

२३— शम संवेग निर्वेद, अनुकम्पा आसता ।।रे०।।
समकित लक्षण सेव, मिले सुख शास्वता ।।रे०।।

२४— ज्ञान दशन चारित्र, त्रिहु आराधिये ।।रे०।।
बारे भेदे तप, अहो निश साधिये ।।रे०।।

२५— शुक्ल ध्यान शुभ भाव, निरंतर ध्याइये ।।रे०।।
केवलदर्शन ज्ञान, परम पद पाईये ।।रे०।।

२६— एहवी सतुगुरु सीख, न श्रद्धे प्राणियाँ ।।रे०।।
कर्म शुभाशुभ संग, फिरेला ताणीयां ।।रे०।।

२७— लख चौरासी जुण, चउगती भटकसी ।।रे०।।
वलि वलि गर्भावास, उंधे शिर लटकसी ।।रे०।।

२८— प्रारम्भ में आगीवाण, पंच वणियो रहे ।।रे०।।
बड़पण खाटण काज, ईघ को ओछो कहे ।।रे०।।

२९—माड़ पंचपतहीण, तड़े अंग में पडे ।।रे०।।
जतो घर में भार, घणा खोटा घड़े ।।रे०।।

दोहा

१— तूं चेतन प्रमादवश, न डरे करतो पाप ।
भव भव मरसी भोलिया, सहसी घणा संताप ।।

२— पाप लगावे व्रत में, ए भूंडो आचार ।
अतिक्रम व्यक्तिक्रम में, अतिचार अनाचार ।।

३— ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ज्यो विराधना थाय ।
शून्य मनक्रिया करे, तो सारी निष्फल जाय ।।

४— आलोया निन्द्या विना, मरे विराधक होय ।
पहुंचे दुर्गति पाधरो, तप जप करणी खोय ।।

५— जो चाहे आराधना, ले प्रायश्चित्त गुरु साख।
ते सिद्ध गति गामी हुवे, जिनवाणी रस चाख।।

६— श्रुत ज्ञान को विनय तूं क्यों न करे रे जीव।
विनयहीन ने ज्ञान की, वृद्धी न होय कदीव।।

७— धन्य विनयी भव्य जीवते, पावे निर्मल ज्ञान।
श्रुत ज्ञान के विनय सूं, हुवे क्रोड़ कल्याण।।

ढाल ३ राग—आज नहेजा रे दीसे नाहलो

१— इणभव परभव सोगन लेने भांगीया।
सेविया पाप अठार, वीतरागरा वचन उलांगिया।।

२— अव्रत ने मिथ्यात्त्व, जोग प्रमाद कषाय वधारिया।
खोटा शास्त्र अभ्यासते, अज्ञान पणे अवधारिया।।

३— इत्यादिक अपराध, सहु आलोई निंदी पड़िक्कमी।
समकित व्रत संभाल, शुद्ध हुवो चेतन गुरु पद नमी।।

४— जो आराधक थाय तो, थारी भव थिति पाकी सही।
ए जिनशासन न्याय, पुण्यसंयोगे सत्संग लही।।

५— निवर्ते सावध्य योग ते, समाई सवर कहिये।
भावे शुद्ध परिणाम, भव निधि तिरिये।।

६— मोटी नाव है पच्चक्खाण, देशव्रत सर्व व्रत इसी।
समता रूप समाध, सूत्र वचने जिन भाखी जीसी।।

७— दोय घड़ी रे काल तूं व्यवहार समाई आदरे।
आर्त्त रौद्र परिणाम, संकल्प विकल्प चेतन किम करे।।

८— बैठे मूंडो बांध, तूं जाणे मैं समाई करी।
न मिटे माठो ध्यान मन शुद्ध करणो खराखटी।।

९— शुद्ध समायिक धार, चन्द्रलेहा राणी केवल लयो।
चंद्रावंतसकराय, स्वर्ग वार में पोसा में गयो।।

१०— उपशम सवर विवेक, चोर चेलायती शुभ ध्यानी थयो।
अरु प्रदेशी राय, समता करने सुधर्म सुर भयो।।

११— देवतणां उपसर्ग, कामदेव पोषा में लिया।
उत्तम पुरुष अनेक, इम शुभ गति पामिया॥

१२— तुं भरोसे मत भूल, वा समाई तोसूं किम वणे।
आत्मनिन्दा अभ्यास, कर्म घटावो रे चेतन आपणे॥

१३— तुं सम्यग्दृष्टि कहाय, धर्म को धोरी रे चेतन वाजियो
म पड़े पाप मझार, जो परमेश्वर सेती लाजियो॥

१४— प्रकट छाना रे पाप, केवलियां सुं न छिपे एक ही।
उदासीनता आण, निष्फल थाय पाप अनेक ही॥

१५— चक्रवर्ती पद पाय, भरत निकाचित पाप न बांधियो।
ते समदृष्टि पसाय, उदासीनता में चित्त साधियो॥

१६— उदय कर्म सुख भोगतो, पिण अरुचि पुद्गल सुख तणी।
अनित्यभावना भाय, केवल पाम्यो रे खट खण्डरा धणी॥

१७— श्रेणिक ने कृष्ण समकित संभाल, आतम निन्दा रे चेतन आपणी।
धीरज दिल में धार, प्रगटे निज ज्ञान दशावणी।

१८— धारिया गुण इकवीस, दृढ़धर्मी बारे चाव सुं॥
शंखपोखली आद, आनन्दादिक दश शुद्ध भाव सुं।

१९— पड़िमाधारी एह ज्यां, उत्कृष्टी किरिया आदरी॥
पाम्या देव विमाण, सिद्ध गत पासी एक नर भव करी।

२०— तुं जाणे रे जीव, देशव्रती श्रावक पोते हुवो।
न टले प्रगट इग्यार, तो तुं देशव्रत सेती जुवो॥

२१— पाल सके तो पाल, लीधा ते श्रावकव्रत निर्मला।
संयम तप कर संतोष, विषे कषाय पाड़जो पातला॥

२२— आणे मन वैराग, भावे सर्व व्रतनी भावना।
सत् चित्त् आनन्द ध्याये, निज आतम गुणध्यावना॥

२३— नित्य सुमरे नवकार, चवदेपूर्व मांहे सार छे।
सुधरे जन्म सुजाण, इण भव पर भव शरण आधार है॥

२४— धन्य धन्य गजसुखमाल, सारो तन अग्नि में पजल्यो ।
सुमरतां आत्म स्वरूप, पिण उपसर्ग थी मन न चल्यो ॥

२५— खंधक रिखना शिष्य, पालक पापी घाणी में पोलिया ।
नाणी रीस लगार; वैरभाव पूर्ण पोसी लिया ॥

२६— खंदक रिखनी खाल, राय उतारी वर काचर तणे ।
मैतारज मुनिराय, मार्यो सुवर्णकार निर्दय पणे ॥

२७— इम अनेक अणगार, समता सागर प्रगटिया केवली ।
एहवी समता रे आण, तो तुं थासी रे जीव अनन्तबली ॥

दोहा

१— पद्‌गल सुख की ममत से, भूल गयो मत हीण ।
ज्युं मदिरावश मानवी, होत कर्दम में लीन ॥

२— काम धेनु अरु कल्पवृक्ष, चिन्तामणी चित्राबेल ।
काम कुंभ पारस सुधा, अमृत घुटका केल ॥

३— रसायण रसकुंपिका, अष्टसिद्धि नवनिद्धि ।
चक्रवर्तादिक राज श्री, रतन चतुर्दश रिद्धि ॥

४— हेम रजत हीरा पन्ना, मणि माणक परवाल ।
गउमेदक ने लसणिया, मुक्त पिरोजा लाल ॥

५— पुद्‌गल वस्तु अनित्य सब, मिले टले बहुबार ।
तुं यांकी ममता धरे, करा कुड़ो अहंकार ॥

६— गले मिले ने वीखरे, बादल जेम विचार ।
पुद्‌गल वस्तु स्थिर नही, अशाश्वतो असार ॥

७— सड़े पड़े विणसे मुकर, देह औदारिक होय ।
तूं यामे मूर्च्छित हुवे, मरसी नर भव खोय ॥

ढाल ४ राग—दो रे जीवा थें दान सुपातर बिन दीधा पामी जे केम

१—सुमत सखी के संग न बैठे कुमति दुतीसंग खेले रे ।
ताते तूं पुद्‌गल को रसियो, आशा अछती जे लेरे ॥
चेतन आतम निन्दा कीजो ॥टेर॥

२—चेतन आतम निन्दा कीजो, परम धर्म रस पीजो रे।
निज सुख भूल रमे पुद्गल में, दुर्मत सूं मत धीजो रे॥

३—पुद्गल सुख रे कारण चेतन, कृतघ्न पापी कहावे रे।
पार को कीधो गुण नही माने, तूं उल्टो ओगुण गावे रे॥

४—पोते प्रीत करी जिण सेती, कपट घणो उर राखे रे।
ठगाई करने धन लेवे तूं, मित्र द्रोह अभिलाखे रे॥

५—मिष्ठवचन परतीत उपजावे, आगलो भरोसो माने रे।
तिण ने मारे के फंदे में पटके, तूं विश्वासघाती नहीं छाने रे॥

६--धरजा मरजा ने विसरजा ए वी करतो न लाजे रे।
थापण राख पराई नटसी, तो खोटाकर्मी तूं बाजै रे॥

७—खोटी करवत इत्यादि करने, पाप अठारे बधासी रे।
पचसी कुंभीपाक नर्क में, पछे घणो पछतासी रे॥

८—तूं नहीं केहनो कोई नही थारो, अन्तर ज्ञान विचारो रे।
आप आप रो मतलब खेले, सहुं ने स्वार्थ प्यारो रे॥

९—सज्जन कुटुम्ब तणे वश पड़ियो, बंधण प्रेम बंधाणो रे।
हारे मानुष जन्म पदारथ, फेर न आसी टाणो रे॥

१०—पुण्य संजोगे आय मिल्या छे, सज्जन कुटुम्बी सारा रे।
होत विजोगे सब उठ जासी, थासी न्यारा न्यारा रे॥

११—यो संसार स्वप्नवत् झूठो, इन्द्रजाल की माया रे।
लख चौरासी खेल खेलियो, भेष अवरके पाया रे॥

१२—भर्म कर्म के संग भुलानो, जगत जाल में खूतो रे।
जन्म मरण जंजाल विलोके, मोह निन्दा में सूतो रे॥

१३—जगतजाल में ख्याल वृथा है, तू भोला किम भूले रे।
मोह निद्रा सूं जाग चिदानन्द, निज समकित सुख भूले रे॥

१४—निश्चयदेव आतमा गुरु आतमा धर्म पिछाणो रे।
आतम अनुभव तीन तत्त्व है निश्चय समकित मानो रे॥

१५—आतमनिन्दा सिखावण एहवी, चिंतवता कर्म टूटे रे।
सुणता गुणता गुरुप्रसदे, जन्म मरण सूं छूटे रे॥

१६—अवेदी अलेशी अविकारी, सिद्ध स्वरूप संभालो रे।
सोहं स्वरूप "विनयचन्द" तूं हित अहित कल्पना टालो रे॥

"कलश"

१— कुमठ गोकलचन्द जेवा, तात मुझ धर्मी लहे।
श्री पुज्य हमीर मुनि गुरु भेट के, जिनमत गहे॥

२— उगणीसो इकवीस वरसे, फाल्गुण सुद तृतीया खरी।
सुकृत कारण दुरित हारण, आतम निन्दा म्हें करी॥

३८ | विदुषी महासती श्री सोहनकुँवर जी

परिचय रेखा

सवैया

१—आदि अनादि अनूप अनन्त अगोचर भी अपनो प्रन छारी
होकर भक्ति अधीन वही, भगवन्त सु सन्तन के भय हारी ॥
एक नहीं चउवीस विलोकहु देह अहा ! जग में जिन धारी ।
या हित भक्ति भगीरथि की "ललितांगज" जावतु है बलिहारी ।

दोहा

१— जो जन जग में जन्म ले, करे आत्म-कल्याण ।
नित्य करें उसको नमन, मुक्ति अहो तजि मान ॥

राग—जाओ जाओ रे मेरे साधु

तरणी चाहो वैतरणी तो तो करलो उत्तम करणी ॥टेर॥

१—रहनेमी गिरिनार गुहा में, वाणी दुर्मुख वरणी ।
दूर करी उसकी दुविधा को, नेमनाथ की घरणी ॥तरणी ॥

२—शुभ करणी कर चन्दनबाला चढ़गी मोक्ष निसरणी ।
सूत्रों में जिसकी शोभा को, स्वयं सुधर्मा वरणी ॥तरणी॥

२—भूतकाल की भव्य कथायें, कितनी जाये वरणी ।
व्याकुल दुख हरणी करणी की, सीता विश्वंभरणी ॥तरणीं॥

४—संप्रति में भी शीलशिरोमणि, सोहनकुँवरी गुरुणी।
वैतरणी तरणी जिसकी यह, कथा सुनो मन हरणी ।।तरणी।।
५—कलिमल हरणी करणीकर्ता को जाये जो जरणी।
धन्य वही जग में 'ललितांगज' धन्य वही है धरणी ।।तरणी।।

राग—राधेश्याम

१—श्री वीर भूमि मेवाड-मध्य, अति सुन्दर सेरा प्रान्त अहा।
शुचि वसन रूप तरु से शोभित हैं गगनचुम्बि गिरिराज महा ।।
कल कल अरु छल छल झरनों की, वजती सितार पुनि मधुर जहां।
जिसकी आभा को चकित-चित्त हो अलकाधिप आलोक रहा ।।
२—आम्रादिक मधुर फलों का है, जो प्रान्त मनोहर कोष महा।
सौरभमय सुमनों का सुन्दर, वहता समीर निशिद्योस वहां ।।
मन-इच्छित मिलती कर्षों को, शीतोष्णा दोनो फसल जहां।
क्या कहूँ अधिक अनुकम्पा है, जिस पै प्राकृतिक अनूप अहा ।।
३—उस सेरा प्रान्त-बीच सुन्दर, शोभे है ग्राम त्रिपाल सही।
जो स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक तीनों में छाना छुपा नहीं ।।
लिखने को जिस का ललित चरित, 'ललितांगज' लेखिनी हुलस रही।
अवतार लिया आदर्श अहा। गुरुणी श्री सोहन कुँवर वही ।।

लावनी राग— बिन काज आज महाराज लाज जा मोरी ।।

२ ४ ६ १
विधि वेद अंक विधु वर्ष महा सुखदाई।
तिथि अक्षय को यह अक्षय छवि प्रकटाई। टेर।।

१— हे जाति जशोधर ओसवाल जग मांहीं।
जिसमें कुल भोगल-सोलंकी छवि छाई ।।
जो वीतराग पद पंकज का अनुयायी।
प्रकटी उस कुल की पेखों यह पुण्याई।
लघु लेखिनि जिसका लिखे चरित हुलसाई ।।निधि।।
२— थे पिता "रोडमल" जिसके जग विख्याता।
विदुषी गुलाव कुँवरी थी जिसकी माता।

श्री प्यारचंद अरु भैरव दो थे भ्राता।
आलोक ज्ञान वैराग्य जिन्हें हर्षाता।

सौरभ गुलाब की उन पर यह प्रकटाई ।।निधि।।

३— पुत्री का भावी सुख दुःख पूछनतांई।
घर जोसी जी के शेठ गया हुलसाई ।।
दैवज्ञ देखि ग्रह-कुण्डलि गिरा सुनाई।
यह भक्ति भगीरथी तुमरे घर चलि आई।

इसलिये नाम शुभ इसका खिमिया बाई ।।निधि।।

४— द्वितियेन्दु ज्योति ज्यों नित्य वृद्धि को पावे।
कन्या-द्युति त्यों ही दिन-दिन बढ़ती जावे।
जो अष्ट-सिद्धि नव-निधि सी प्रकट लखावे।
मँगनी-हित जिसके कई शेठ चलि जावे।

है पुण्य तणो कवि किंकर यह प्रभुताई ।निधि।।

राग—मोहन गारो रे०।।

वर्ष दो मांही जी २ ए हुया जबै श्री खिमियाबाई जी ।टेर।

१— दुलावतों का गढ़ है सुन्दर, मेदपाट के मांही जी।
तखत कुँवर के साथ करी है सुखद सगाई जी ।।

२— जोरी जुगल अनूपम एहो, भव्यों के मन भाई जी।
किन्तु आतमा क्रूर काल की, अति कलपाई जी ।वर्ष।

३— अकस्मात् इण कारण उण हो, आपत्ती यह ढाई जी।
तन चेतनता रोडमल की, गो गट काई जी ।वर्ष।

४— उण विरिया तिरपाल-निवासी, सारा लोग लुगाई जी।
अंखियन से अंसुअन की धारा, अहो बहाई जी ।वर्ष।

५— परउपकारी हरणी धर्म-प्राण हा गो कितशेठसिधाई जी।
दीनन की उण विन अब करि हे, कौन सहाई जी ।।वर्ष।।

दोहा

१— इण विधि आखा गाम में, शोक तणो हा ! शोर।
जोर-जोर सू सब करे, हा ! अकाज भो घोर ॥

२— छाती माथो कूटती, अंर्धांगिनि अणमाप।
पति-विरहानल में पड़ी, पेखो करे प्रलाप ॥

राग—मोहन गारो रे०॥

हुओ ओ कांई जी २ क्यूं प्राण नाथ ऐ बोले नांई जी ॥टेर॥
१—तन जीवन धन को चेतन बिन, लखि गुलाब कुरलाई जी।
एड़ी मौन आज अलबेसर ! क्यूं अपनाई जी ॥हुवो०॥
२—मो सूं हा ! अपराध इसो पिउ ! कह दो हुयगो कांई जी।
किण कारण ओ कियो रूसणो, दो फरमाई जी ॥हुवो०॥
३—बालूड़ा बेहद, विलपै अ, आँसूड़ा दृग ढाई जी।
आप विना कुण है अब थाँरो, कहो सहाई जी ॥हुओ०॥
४—कुत्सित करणी किण भव री आ, हाय उदय हो आई जी।
अधविच में वहती रे वाले, मने वहाई जी ॥हुवो०॥
५—सुण उणारो ओ करुणाक्रन्दन, कुलदेवी कलपाई जी।
शीघ्र आय उण रे सन्मुख हों, गिरा सुनाई जी ॥हुवो०॥
६—नर सुर असुर नाग किन्नर है, जूण जिती जग मांही जी।
तन-नश्वरता किण ही अपणी, नहीं मिटाई जी ॥हुवो०॥
७—इण कारण तूं थिर चित करने, कर शुभ कर्म कमाई जी।
शील सलूनी तोरो रच्छक, है जिनराई जी ॥हुओ०।

राग- जाओ जाओ ओ मेरे साधु।

टारे टारे नवकार मंत्र यह, विपदा सगरी टारे ॥टेर॥
१—देवी कहे सती ! सुन मेरी, नयनां अश्रु न ढारे।
सजनी ! जप नवकार मंत्र जो, तोरी विपद विडारे ॥टारे॥

२—स्थूलिभद्र जिणरे बल देखो, वेश्या री मति-वारे।
श्री श्रीपाल भूप पुनि जा-बल, सूरों सिर पग धारे ।।टारे।।

३—दमयन्ती कुन्ती कौशल्या ,मैना काज सुधारे।
भूत काल की भव्य कथायें, कितनी अहो उचारे ।।टारे।।

४—निर्मल मन हो नवपद की जो, प्राणी सेवा सारे।
शिवरमणी भी फिरती मित्रो, उणरे लारे-लारे ।।टारे।।

लावणी-अष्टपदी राग—नेम की जान बनी भ री० ।

सुरी री सीख सती मानी, लगन उर नवपद री ठानी ।।टेर।।
लगन जो साचे मन लागे, सफल वो अवस हुवे सागे।
पेखलो परतख सब भाई, सती रे लिव री सफलाई ।।

दोहा

अमर-गच्छ के सन्त श्री—नेमिचन्द कविराय।
ललित लगन से प्रेरित होवे, गये ग्राम में आय।।

मिलत

१— जिन्हों से सुन के जिनवाणी ।।सुरी०।।
इसो गुरु ज्ञान-सुधा पायो, सती मन पीकर हरषायो।
विचारे उर में धर क्षमता, जगत री झूठी है ममता ।।

दोहा

छाया जिणरी है परे, काया थिर वो नांय।
राव रंक की गिनती क्या है, स्वयं अहो जिनराय ।।

मिलत

२— एक दिन हुयगे जो फानी ।।सुरी०।।
अखै सुख धर्म बीच राजे, जिसे लखि भव भय सब भाजे।
सु-मन हो सेवा जो साजे, सिंह सम निर्भय वो गाजे ।।

दोहा

मैना सुलसा सी अहो, एक न हुई अनेक।
ग्रन्थों में जिनकी गरिमा को, दृग उघार लो देख ॥

मिलत

३— नहीं है जिनकी छवि छानि ॥सरी॥
सोच यों सोच मोच वाई, रमयो योग-हृदय-मांई।
किन्तु सुत-सुता ओर भाल्यो, नयन से आँसू तब राल्यो।

दोहा

मो विन याँरी कौन हा ! करि है सार-सँभाल।
जला रही है एक यही अव, योकु चिन्ता-ज्वाल ॥

मिलत

४— आड आ मोटी अटकानी ॥सुरी०॥
देखि जल माता के नैनों, हुओ वड-सुत को यों कैनो।
अश्रु क्यों आयें नयनन में, कहो दुख कांई मन में ॥

दोहा

जननी जल्द जनाय दे, मन कल्पे है मोर।
सादर शीस नमाय के सरे, करूँ अरज कर जोर।

मिलत

५— रखे वा वात मन्त छानी ॥सुणी०॥
प्यार जो अरजी गुदराई, उसे द्रुत भैरु अपनाई।
समर्थन कियो क्षमा वाई, मुदित मन होकर तव माई ॥

दोहा

हृदय समाई वात जो, दी उन को दरशाय।
वात मात की सुनकर तीनों, यों वोले हरषाय ॥

मिलत

६— हमारे मन भी यह मानी ॥सुरी०॥

दोहा

प्यारचन्द भैरव क्षमा, यें तीनों इक-साथ।
अरज करें यो मात से, जोडी दोनों हाथ॥

राग—जाओ-जाओ जी मेरे साधु० ।

लेलो लेलो जी जी जल्दी लेलो, संयम शिव सुखदाई। टेर॥

१—परतख ही परखो गुरु-गंगा, घर वैठे चलि आई।
इच्छा पूरण करने में अव, देर करो क्यों माई ॥लेलो०॥

२—जैसे दावी किस्तूरी की, सौरभ रहती नांई।
वैसी ही सव जान गये हैं, इनके मन की भाई ॥लेलो०॥

३—गढ़ दुलावतों से दौड़े, सम्वन्धी तब आई।
करी सगाई हम ना छोरे, ऐसी वात सुनाई ॥लेलो०॥

४—सजन सनेही मिल समजावे, पै वे समझे नांई।
आखिर गये झगड़ते दोनों, राज कचहरी मांई ॥लेलो०॥

५—न्यायी हाकिम ने खिमिया को, अपने पास वुलाई।
साम दाम अरु दण्ड भेद से, वहुतेरी समजाई ॥लेलो०॥

६—हाकिम कहे मानजा नहितर, दूंला खाल खिंचाई।
तव तो अपनी भाषा में यों; वोली खिमिया वाई ॥लेलो०॥

७—दरखत ऊपर वांध कोअड़ा, मारो आप भलाई।
तन करदो चेतन विन तो भी, मैं परणी जूं नांई ॥लेलो०॥

दोहा

१— नन्ही ऊमर में निरखि, प्रज्ञा अहो! प्रवीन।
हाकिम साहिव भी हुये, विस्मय वीच विलीन॥

२— धर्म अर्थ अरु काम पुनि, मोक्ष पदारथ चार।
नर सेवे हो निडर निज, इच्छा के अनुसार॥

राग—इक तीर फेंकता जा, तिरछी कवान वाले ...

ऐसा विचार करके, हाकिम हुकम सुनावे।
कानून से रुकावट, शुभ काम में न आवे ।।टेर।।

१— एकान्त सत्य करणी, कानून से परे है।
इस हेतु हम उसे तो, हाँ रोकने न पावें ।।ऐसा०।।

२— नर-योनि में निराला, स्वात्माभिमान सोहे।
उसको बताओ हम किस, कानून से हटावे ।।ऐसा०।।

३— निज बुद्धि के मुआफिक, मैंने इसे टटोली।
मरना भला, न करना, यह तो विवाह च्हावे ।।ऐसा०।।

४— है रंग ना पतंगी, जिसको कि आप धोये।
यह रंग है किरमची, धोया धुला न जावे । ऐसा०।।

५— ये आपके रु मेरे, रोके नहीं रुकेगी।
अतएव खुश मना हो, आज्ञा इसे दिरावे ।।ऐसा०।।

६— सुन फैसला सयाना, ललितांगज हरपकर।
"सत्योक्ति माम् पुनातु," कह शीस को झुकावे ।।

राग—अगर है मोक्ष की वांछा

हुआ यह हुक्म जब जाहिर, मोद सबने मनाया है।
चतुर्विध संघ में मित्रों ! बड़ा आनन्द छाया है ।।टेर।।

१— सु गुरु पै मुदित-मन आकर, सविधि कर वन्दना सादर।
विजय का वृत्त सब उनको, उन्होंने कह सुनाया है ।हुआ।

२— विनय फिर यो करे सब ही, रखे जो धर्म पै आस्ता।
वरे वह विजय लक्ष्मी को, नजर यह स्पष्ट आया है ।हुआ।

३— खड़े पद-पंकजों में ये, पिपासु धर्म के प्राणी।
कृपालू कर कृपा करिये, इन्हों पै छत्र छाया है ।हुआ।

४— महाव्रत पंच की शिक्षा, भरी भिक्षा इन्हें देकर।
शरण में शीघ्र ही लीजे, कलपती इनकी काया है ।हुआ।

५— विनय श्री संघ का गुरु ने, किया स्वीकार खुश होकर।
धरा शिर हाथ बच्चों के, सभी जन मोद पाया है।हुआ।

'हरिगीतिका'

१— गुरुदेव के पद पंकज में, अब प्यार भैरव तो रहे।
स्वीकार सादर द्रुत करें, गुरुदेव जो इनको कहे।
अध्ययन दशवैकाल नंदी, सूत्र का सुन्दर करें।
यम नियम प्रत्याख्यान पौषध आदि शुचितप को वरे॥

२— आलोक इनकी वृत्ति निर्मल, सुगुरु खुश हो यों भने।
वैरागियो! हैं चाबने ये, सार के कैसे चने।
गुरुदेव की महती कृपा लखि, बाल विनती यों करे।
क्या कठिन है संसार में, जिसके कि शिर गुरुकर धरे॥

दोहा

१— इस प्रकार अवलोकिये गुरु की सेवा मांय।
वैरागी दोनों रहे, हिय में अति हरषाय।

राग—राधेश्याम

१— करते विहार ग्रामानुग्राम,
शिवगंज पधारे सद्गुरु जब।
मन मुदित हुआ श्री संघ करे,
गुरु से सविनय यो विनती तब॥

२— है योग्य उभय वैरागी,
अब दीक्षा लेने के स्वामी।
इसलिये महोत्सव करने का,
दो हुक्म हमें अन्तर्यामी॥

३— शिवगंज संघ का अति आग्रह,
आलोक वदे यों गुरु-ज्ञानी।

"यतनीयम् शुभे यथाशक्ति,"
हैं सुन्दर यह आगम वानी ॥

४— आदेश गुरु का ऐसा पा,
श्री संघ मुदित-मन को आला ।
तन मन से दीक्षोत्सव प्रबंध,
आदर्श किया है तत्काला ॥

५— दीक्षोत्सव देखन सहधर्मी,
चलि दूर-दूर से आये हैं ।
वे आत्मानंदी दृश्य देखी,
मन अपने अति हर्षाये हैं ॥

६— है धन्य अहा ! ये आत्माएँ जो,
भव भय को दूर निवारा है ।
लो कह कर के सब एक स्वर,
जय जय जय शब्द उचारा है ॥

दोहा

१— इस प्रकार आनन्द युत, दीक्षा ले दुहुँ भ्रात ।
ज्ञान ध्यान सीखे सदा, विचरे गुरु के साथ ॥

लावनी

राग—बिन काज आज महाराज

अब सुनो सभी नर नार चित्त निज थिर कर ।
खिमिया गुलाब की कथा नींद को परिहर ॥टेर॥

१— श्री रायकुँवर जी महासती सद्गुरुणी ।
थी अमरगच्छ की सतियों बीच शिरोमणी ।
जो संयम निष्ठा उत्तम करते करणी ।
जिनकी ये दोनों बनी अहो ! अनुचरणी ।
यों करें विनय उनके पद पद्म पकर कर ॥अब॥

२— हैं अबलाएँ हम दोनों अति दुखियारिन।
अविलम्ब हमारी विपदा करो निवारन॥
है विरुद आपका भव्य तिरन अरु तारन।
इस हेतु बनावें आप हमें सुखियारन॥
कर कृपा दिरावे संयम हमें शिवशंकर ॥अब॥

३— नयनन में इनके गुरुणी जी लखि पानी।
करुणाकर करुणा भरी वदे यों वानी॥
जो जपे जाप नवकार मंत्र को प्रानी।
तो हो जावे उसके सघरे दुख फानी।
यह कथन सत्य है झूठ न एक रती भर ॥अब॥

४— इस हेतु प्रथम निज दिनचर्या शुभ कीजे।
व्रत पोषध प्रत्याख्यान बीज त्रित दीजे॥
सविनय कर सेवा गुरु ज्ञानामृत पीजे।
जिससे हाँ, ममता-नागिन का मद छीजे॥
हो अभय वरो फिर तुम दोनों संयम वर ॥अब॥

५— सुन सदुपदेश यो दोनों गुरुणी जी का।
मन सोचे पाया कैसा गुटका घी का।
अब तो ये दोनों तप से तन को तावे।
अरु ज्ञान ध्यान करने में चित्त लगावे।
कर करणी गुरुणी जी का लीना मन-हर ॥अब॥

६— यों करणी इनकी उत्तम लखि गुरुणी जी।
अविलम्ब उचारे वाणी मनहरणी जी।
अब सिद्ध मनोरथ करो सफल करणी जी।
संयम-तरणी चढ़ तिरलो वैतरणी जी।
पा ऐसी आज्ञा, परम-शान्ति ली उर धर ॥अब॥

७— अविलम्ब हि उन ने जोशी को बुलाया।
अरु दीक्षा लेने हेतु लग्न दिखलाया।
दैवज्ञ देखि पंचांग रु वचन सुनाया।
अति-उत्तम मुहूरत भाग्य विवश यह आया।
मत करना इसमें फेर-फार इक-पल-भर॥

९ ५ ८ १

८— निधि परमेष्ठी-निधि-विधु वत्सर मनभाया।
आषाढ़पुरी तृतिया का मुहुरत आया।
पचभदरा सुन्दर शहर मरुस्थल माही।
दी दीक्षा इन को वहाँ नेमी-गुरुराई।
श्री रायकुंवर की शिष्याएं घोषित कर ॥अव॥

राग—दिल जाने से फिदा हूँ।

गुरुदेव ने इन्हें जब, संयम सुधा पिलाया।
सानन्द पी हृदय में शुचि योग को रमाया ॥टेर॥

१— बनके जु मोक्ष पथ के, दोनों पथिक सयाने।
निज ध्येय साधन में, आदर्श जो लगाया ।गुरुदेव।

२— अभ्यास शास्त्र का फिर, करने लगी मनोहर।
जिसको विलोकि जियरा, कलि-कालका जलाया ।गुरु०।

३— दीक्षा लिये इन्हों को, षड्मास ही हुए थे।
शिर-छत्र हाय उनका, उसने उहो उठाया ।गुरु०।

४— नर नाग क्या सुरासुर, सर्वज्ञ-सिद्ध हमारे।
भोगे अवश्य जैसा, जिसने करम कमाया ।गुरु०।

राग—राधेश्याम

१— शुचि संयम लिये इन्हें मित्रों!
हां एक अयन भी हुआ नहीं।
हत्यारो काल अचानक आ,
शिर-छत्र इन्हों का हरा सही॥

२— श्री रायकँवर जी गुरणी जी,
रयणी मे सोते स्वप्न लखा।
अति-मोटा कुंभ सरिसा मुक्ता,
उस स्वप्न में उनने जु लखा॥

३— वे समजगये संकेत महा,
यात्रा का अन्तिम है एहो।

अतएव सजग होकर सत्वर,
जो किये कृत्य पड़िलेहो ॥

४— ऐसा विचार निश्चय करके,
अविलम्ब संघ को बुलवाया ।
अरु चौविहार उपवास शाख,
उनको से पचखा मन भाया ॥

दोहा

१— करके शुचि संलेखना, हो समाधि में लीन ।
ज्योति ज्योति में जा मिली, पेखो परम प्रवीन ॥

राग—राधेश्याम

१— बिन चेतन के तन को निहार,
सद्गुरुणी जी की शिष्याएँ ।
हा ! कर्ण-कटु करुणा क्रन्दन,
करती वे यो है कल्पाएँ ॥

२— यों करी मौन धारण जिसका,
कहिये करुणा कर क्या कारण ॥
हा दयानिधे ! करुणासागर !
हा अशरण-शरण, तरण तारण ॥

३— अपराध हुआ क्या हम से जो !
यों आप सद्य मुख मोर लिया ।
भयभीत हुई भव-भय से हम,
चित चरणों में तुमरेजु दिया ॥

४— तुम आश्रय किसके छोर गये,
हमको हा ! स्वामिनि ! बतलाओ ।
कलपाओ मत यों मधुर गिरा,
इक वेर कृपा कर फरमाओ ॥

५— यो विलपे हैं सब शिष्याएँ,
हो व्यथित शोक के बानों से ।

क्रन्दन पै सोहनकँवरी का,
हा! सुना न जाये कानों से ॥

६— कारन ही इसको हुये नहीं,
षड् मास हि दीक्षा लिये सही।
इसलिये व्यथा इसके दिल की,
"कवि किंकर" कैसे जाय कही ॥

७— श्रद्धेय सद्गुरु श्री नेमिचन्द्र,
कर करुणा धैर्य बंधाया है।
अरु चौमासा में शास्त्र ज्ञान,
दे इसका दुक्ख मिटाया है ॥

दोहा

१— ऐसे वर्षावास दो, सद्गुरु अपने पास।
कर वाया है करकृपा, सुन्दरशास्त्राभ्यास ॥

राग—राधेश्याम

१— यों पाकर सद्गुरु से प्रबोध,
कर आत्म-शोध के भाव जगे।
इस कारन नश्वर तन से तप,
आदर्श अहो! करने जु लगे ॥

२— उपदेश इन्हों का सुनकर के,
मन वशीकरण का घबराया।
इस हेतु इन्हों के वचनों में,
आ अपना गौरव प्रकटाया ॥

३— सानन्द सिंह सी गुंजाते,
जयकारी जब ये जिनवाणी।
हो जाते मन्त्रमुग्ध तब से,
सुनते थे शुच-मन जो प्राणी ॥

'कुण्डलिया'

१— नर से नारायण बने, जाको जन्म प्रमान।
नर होकर खर जो बने, वो है नीच महान॥
वो है नीच महान, ज्ञान अपना जो खोवे।
रोवे बागों पाड़-पाड़, पै अब क्या होवे॥
या-हित करयो बन्धु! कर्म करते हो! खर से।
कर करणी उत्कृष्ट, बनो नारायण नर से॥

दोहा

१— आगे मूँठी बांध हम, जायें हाथ पसार।
करणी अब ऐसी करें, अवरन लें अवतार॥

२— बिजुरी, सो वैभव निरखि, रे मन! तू मत फूल।
कर में हैं कणपाणि तो, वहती नदियों भूल॥

३— उपदेशामृत पान कर, इनका परमोदार।
मंत्र-मुग्ध से मन हि मन, हो जाते नर-नार॥

राग—राधेश्याम

१—सुनते ये कानों, व्याध-व्यथित, है महारानी जी अमुक अहो।
तत्काल उन्हों के निकट जाय, यों कहते क्या है दुःख कहो॥
२—तन-मन से सेवा करने में, लग जाते दिन अरु रात अहा।
है सेवा धर्म गहन अति ही, जो योगिन के भी अगम अहा॥
३—भर यौवन में मन्मथ-मुद्रा, जिनके पद-पंकज-तले रही।
लखि छवियों जिनके लारलार, रति की मति भी हा मले रही॥
४—जो चार-चार महिनों तक भी, तन के वस्त्र नहीं धोते थे।
तप तपते तब तो दिन में वे, नहिं एक मिनिट भी सोते थे॥
५—ये हुये वर्ष सोलह के जब, तप मास-खमण का घोर किया।
आलोक जिसे आ-बाल-वृद्ध-मन मुदित हुए धन्यवाद दिया॥
६—जब करते मास खमण तब भी, व्याख्यान हमेशा फरमाते।
आलोक प्रभा इनकी अद्भुत, मन में मिथ्यात्वी भरमाते॥

दोहा

१— इस विध अति आनन्द-प्रद, जिनवाणी का स्रोत।
यत्र तत्र सुन्दर बहा, करने धर्मोद्योत ॥

राग—राधेश्याम

१—आहार पौरसी प्रथम बाद, आजीवन जिनने सदा किया।
प्रत्येक पारणा तप का फिर, तज तीन पौरसी बाद किया ॥

२— मिष्टान्न त्याग रस त्याग और, फिर विगय त्याग छोटे-मोटे।
घुटते सदैव हां रहते थे, पचखाण के यों सुन्दर घोटे ॥

३—अस्वस्थ अवस्था में केवल, इन का प्रतिबन्ध खुला करते।
पनि दोनों आठम चौदस को, प्रतिमास न भोजन जो करते ॥

४—उपवास की गिनती कौन करे जिन किये अहो ! अस्सी बेला।
फिर किये मौन रख जीवन में, निर्जल जिनने इकसठ तेला ॥

५—चोले की संख्या पैंसठ हैं, चालीस किये जिन पंचोले।
छः छः भी जिन चालीस किये, सातों के आये दो झोले ॥

६—कीवी पचास अट्ठायें जिन, दस नव के थोक किये मनहरे।
दो दफे किये दस दस रु दफे—दो एकादश हां अति सुन्दर ॥

७—फिर किये बार दो बारह अरु, तेरह की संख्या एक सही।
चौदह भी एक बार जानों, पन्द्रह भी हां उससे अधिक नहीं ॥

८—सोलह का थोक तीन विरिया, अरु, सतरह दोय दफे जानों।
अट्ठारह एक दफे सुन्दर, उन्नीस एक फिर पहिचानो ॥

९—जिन किये बीस दो दफे और, इकवीस एक विरिया सुन्दर।
बावीस दोय, तेवीस एक, चोवीस किये जिन दो मनहर ॥

१०—शुचि मास-खमण जिन तीन किये, इक किया थोक तेतीसों का।
इस भांति तपाया तन को जिन भंजन हित भव-भय का धोखा ॥

११—षट् शास्त्र विशारद पूज्यपाद, आचार्य जवाहिरलाल अहा।
पुनि जैन-दिवाकर, जग वल्लभ, श्री चौथमल्ल मुनिराज महा ॥

१२—सानन्द चतुर्विध-संघ अहो !, होकर प्रसन्न अपने मन में।
है दिया प्रवर्तिनि पद इन को, अजमेर महा-सम्मेलन में ॥

दोहा

१— पाई प्रभुता प्रबल यों, कर करणी उत्कृष्ट।
तदपि इनके वदन पै निरख्यो मद निःकृष्ट ॥

राग—राधेश्याम

१—है नेश्रायित जिन की सुन्दर, शिष्याएँ जिनका नाम अहा।
श्री प्यार कंवर अरु पदम कंवर, पुनि मोहन मनोज्ञ महा ॥
२—श्री गेंदकँवर अरु देवकंवर, श्री राजकंवर जी महासती।
श्री विमल कँवर अरु सजन कंवर, सौभाग्य कँवर जी महासती ॥
३—श्री चतुर कँवर पुनि प्यार कँवर, परताप कँवर सन्मति धारी।
सेवा गुलाब सद्गुरणी की, आदर्श करी हां अविकारी ॥
४—है विनयवती कैलाश कंवर, अरु कुसुमवती विदुषी भारी।
व्याकरण मध्यमा पास अहो ! है पुष्पवती सन्मति वारी ॥
५—श्री प्रभावती जी पुण्यात्मा, श्रीमती और मोहनकंवरी।
श्री प्रेम कँवर अरु चाँद कंवर, पुनि चन्द्रवती सद्बोध भरी ॥
६—श्री रतन कंवर अरु दाखाँ जी, है सुगुनवती जी अति नीकी।
पुनि रूप कंवर परकाशकंवर, ये नेश्रायित गुरुणी जी की ॥
७—इन में से कितनी ही सतियें, कर करणी उत्तम स्वर्ग गई।
सेवा गुरुणी जी की साजे, जो संप्रति में मोजूद सही ॥

दोहा

१— किन किन गाम रु शहर में, गुरुणी जी चौमास।
कियै विगत उनकी सुनो, उर में धरी उल्लास ॥

चौपाई

१—संयम ले पचभदरा मांहीं,
कियो प्रथम चौमास वहाँ ही।

पुनि झाडोल गाम पहचानो,
तत् पश्चात थांवला जानो ॥

२—श्री सनवाड़ और पुनि घासा,
चन्देरा उदयापुर खासा।
गोगुन्दा है ग्राम मनोहर,
और भीलवाड़ा अति सुन्दर ॥

३—पुनि डबोक, नाई पहिचानो,
घाणेराव सादड़ी जानो।
सुखद देलवाड़ा जग ज्हारी,
और सलोदा शाताकारी ॥

४—ग्राम डूंगले कर चौमासा,
भरी भावुकों की मन आशा।
श्री इन्दौर शहर अति मोटा,
और किया पावन पुर कोटा ॥

५—मदनगंज, जयपुर, अजमेरा,
ब्यावर अरु जेवाजा हेरा।
नाथदुवारा परम प्रवीना,
अरु पीपाड़ भक्ति रस भीना ॥

६—जस धारी जोधाणां मांही,
धर्म ज्योति आदर्श जगाई।
अन्तिम चौमासा पाली कर,
निर्मल ध्यान निरंजन का धर ॥

७—वेद (४) नेत्र (२) नभ (०) कर (२) वर्षाला,
भादो सुदि तेरस तिथि आला।
सोहनकंवर समाधी ठाई,
ज्योति ज्योति में अहो ! रमाई ॥

८—पाली संघ भक्ति रस भीना,
निर्वाणोत्सव सुन्दर कीना।